डुग्गर की बावलियाँ

- एक सर्वेक्षण

शिव निर्मोही

अक्षय प्रकाशन,
अंसारी रोड, नई दिल्ली।

Duggar Ki Bawalian

- Ek Servekshan

By : Shiv 'Nirmohi'

पुस्तक का नाम : डुग्गर की बावलियाँ
- एक सर्वेक्षण

लेखक : शिव निर्मोही

प्रकाशक
अक्षय प्रकाशन,
अंसारी रोड, नई दिल्ली।
दूरभाष : 23280601/9910902828

प्रकाशन वर्ष : जनवरी, 2021
प्रतियाँ : 500

मूल्य : 350/- (तीन सौ पचास रुपये)

मुद्रक :
ओम ऑफसैट,
दिल्ली।

प्रस्तावना

डुग्गर की ऐतिहासिक सांस्कृतिक और जल धरोहरों पर मैंने जो शोध कार्य प्रारम्भ किया यह पुस्तक उसी कार्य की अगली कड़ी है।

डुग्गर के जल संरक्षण पर सन 2007 में मेरी पहली पुस्तक डुग्गर की नदियाँ प्रकाशित हुई। नदियों पर शोध करते मुझे अनुभव हुआ कि इन का प्रमुख स्रोत डुग्गर के सर भी हैं। अत: मैंने सरों की भी खोज की और सन 2018 में मेरी पुस्तक 'डुग्गर के सर' प्रकाशित हुई। सरों के साथ-साथ मैंने तड़ागों और तालाबों पर भी शोध किया। परिणाम स्वरूप मेरी पुस्तक 'डुग्गर के तालाब' भी इसी वर्ष प्रकाशन में आई।

वर्ष 2019 में मैंने डुग्गर के प्रमुख जलस्रोतों पर शोध कार्य प्रारम्भ किया। जलस्रोतों में प्रमुख थे- बावलियाँ, कुएँ, चश्में, कूहलें आदि। मैंने इस वर्ष बावलियों पर पुस्तक लिखने की मन बनाया।

मैंने सन 1980 से शोध यात्राएँ प्रारम्भ की थीं। मैं डुग्गर के मंदिरों, दुर्गों, गुफाओं, शिलालेखों आदि की खोज में जहाँ-जहाँ जाता था उस स्थान की जल-धरोहरों का भी अवलोकन करके उन्हें अपनी डायरी में लिख लेता था।

मार्च 2020 में कोरोना का प्रभाव जब जम्मू कश्मीर में भी स्पष्ट दिखाई देने लगा तो प्रशासन ने जम्मू-कश्मीर में भी लाकडाउन घोषित कर दिया। इन दिनों मैं हाऊसिंग कालोनी ऊधमपुर में था। मेरी कुछ डायरियाँ पैंथल (कटड़ा-वैष्णो देवी) में थीं और कुछ मेरे पास ऊधमपुर में थीं।

मैंने अपनी डायरियों को खोला, पढ़ा और बावलियों की एक सूची तैयार की। किन्तु कुछ बावलियाँ ऐसी भी थीं जिन का मैंने नाम तो सुना था किन्तु उन का अवलोकन नहीं किया था। इस संदर्भ में मैंने अपने मित्रों से दूरभाष पर सम्पर्क किया और उनसे बावलियों के

विवरण माँगें। उन्होंने मुझे पूरा सहयोग दिया। परिणामस्वरूप मैं पांडुलिपि तैयार करने में सफल रहा। मुझे जिन मित्रों से सहयोग मिला उनमें प्रमुख थे - शिव दोवलिया, खजूर सिंह, ओंकार पाधा, रोहित शर्मा, मास्टर ध्यान सिंह, राज राही, टाकन दास, गोपाल कृष्ण कोमल, रमालो राम, सुभाष ब्राह्मणु, ओम प्रकाश, प्रकाश प्रेमी इत्यादि। मैंने इस शोध कार्य में देश बन्धु डोगरा नूतन जी का भी सक्रिय सहयोग प्राप्त किया।

डुग्गर की बावलियों पर प्रकाशित सामग्री भी उपलब्ध थी। इस क्षेत्र में डा. अशोक जेरथ की दो पुस्तकें फोक-आर्ट ऑफ डुग्गर-भाग एक तथा फोक आर्ट ऑफ डुग्गर- भाग दो मेरे लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई। वास्तव में डा. जेरथ पहले शोधकर्ता थे जिन्होंने इस क्षेत्र के विद्वानों का ध्यान जल धरोहर के संरक्षण की ओर आकर्षित किया।

डा. प्रियतम कृष्ण कौल ने भी जम्मू के पूर्वोत्तर क्षेत्र पर जो पुस्तकें लिखी थीं उनसे भी मुझे इस पुस्तक के लिए सामग्री उपलब्ध हुई।

जे.के. अकैदमी आफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज की ओर से प्रकाशित 'शीराजा डोगरी' में जल संरक्षण पर जो लेख प्रकाशित हुए थे, मैंने उनको भी इस पुस्तक में उद्धृत किया है। मैं डुग्गर की सभी बावलियों को इस पुस्तक में स्थान नहीं दे सका। मैंने केवल उन्हीं बावलियों को इस पुस्तक में समाहित किया है जिनका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक दृष्टि से विशेष महत्व रहा है।

इस पुस्तक को लिखने का मेरा विशेष लक्ष्य यह है कि मैं डुग्गर की इस अमूल्य धरोहर के सरंक्षण के प्रति अपने प्रदेश के लोगों को सचेत करूँ। इस दिशा में पंचायतों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकती है।

- शिव निर्मोही

विषय सूची

प्रथम अध्याय : डुग्गर की बावलियाँ

डुग्गर : भौगोलिकता

डुग्गर जिसे जम्मू-मण्डल के नाम से भी अभिहित किया जाता है, केन्द्र शासित जम्मू-कश्मीर का एक भूखंड है। विश्व मानचित्र में यह भू-भाग भू-मध्य रेखा से सवा बतीस से सवा चौंतीस अंश उतर से एवं प्रधान मध्याह्न रेखा से साढे तिहतर अंश पूर्व से साढे छिहतर अंश पूर्व के बीच स्थित है।

डुग्गर के पश्चिम एवं दक्षिण-पश्चिम में पाकिस्तान उतर में कश्मीर घाटी, पूर्व में लद्दाख का लेह जनपद दक्षिण में पंजाब और हिमाचल प्रदेश के राज्य हैं। यह भूखंड 26,089 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। इस का कुछ पश्चिमी भाग पाकाधिकृत कश्मीर के अवैध कब्जे में है।

लोक परम्परा ने डुग्गर को पहाड़, डुग्गर और चिम्भाल तीन खंडों में विभाजित किया है। किन्तु भूगर्भ शास्त्रियों ने मैदानी खंड, शिवालिक पर्वत श्रेणी खंड तथा मध्य हिमालय या पवर्तीय खंड ये तीन विभाग धरातल के अनुरूप विभक्त किए हैं।

मैदानी खंड पंजाब के मैदान का ही प्रक्षिप्त भाग है। यह नदी निर्मित जलोड़ मैदान है। यह भाग रावी, चिनाब तथा उन की सहायक नदियों, उप नदियों यथा उज्झ, बसन्तर, देवक, जम्मू-तवी, मनावर तवी, आदि द्वारा लाई गई सामग्री के विक्षिप्त होने से बना है। यह सात किलोमीटर से लेकर बत्तीस किलोमीटर तक चौड़ा है और इसकी औसत ऊँचाई सागर तल से 325 से 350 मीटर तक है।

शिवालिक पहाड़ियों का विस्तार रावी और जेहलम नदियों के बीच दो-सौ किलोमीटर तक है। इस खंड की औसत चौड़ाई बीस से पच्चास किलोमीटर तक तथा सागर तल से ऊँचाई 600 से 1200 मीटर तक है।

मध्य हिमालय अथवा लघु हिमाचल का क्षेत्र पुंछ, राजौरी, डोडा तथा ऊधमपुर के कुछ भागों में परिव्याप्त है। इस खंड के पर्वत पूर्वी-भाग में 60 किलोमीटर चौड़े हैं और जम्मू क्षेत्र के पश्चिमी भाग में मात्र दस किलोमीटर चौड़े हैं।

जलवायु

जलवायु की दृष्टि से यह क्षेत्र उपोष्ण आर्द्र प्रकार का है। यहाँ ग्रीष्म कालीन तापमान 35 डिग्री से 40 डिग्री सैल्सियस तक और शीतकाल में 10 डिग्री से 15 डिग्री सैल्सियस तक रहता है। जम्मू मंडल की औसत वर्षा 12 सैंटीमीटर के लगभग होती है।

यह भूखंड खनिज सम्पदा से समृद्ध है। प्राकृतिक वनस्पतियों का यह क्षेत्र खजाना है। चीड़ देवदार, सिल्वर, फर के अतिरिक्त पौष्टिक घास तथा अनेक प्रकार की जड़ी बूटियाँ यहाँ उपलब्ध हैं।

जल संसाधन

जल संसाधन की दृष्टि से यह भूखंड अति समृद्ध है। इस क्षेत्र में जल के निम्न स्रोत हैं :

नदियाँ : डुग्गर संस्कृति में नदियों को माता के समान पूजा जाता है। डुग्गर में नदियों, उप नदियों तथा जल-धाराओं का जाल सा बिछा है। इन नदियों में चन्द्रभागा, तवी, अंजसी, अंस, नीली तवी, पुंछ तवी, विश्वान्तर (बसन्तर) भिद्य (बेई) इरावती (रावी) भरूद्ध वृधा, क्षातोदरी तथा सेवा आदि प्रमुख हैं। डुग्गर के अधिकांश गाँव और नगर इन्हीं नदियों के तटों के साथ बसे हैं।

सर : डुग्गर में प्राकृतिक सरों की संख्या पचहतर के लगभग है। केवल कपिलास पर्वत में दस सर स्थित हैं जिनमें कैलाश झील मुख्य है। पीर पंचाल क्षेत्र में 19 सर हैं जबकि शिवालिक क्षेत्र में 9 है। डुग्गर की गई नदियाँ और उपनदियाँ इन्हीं से निःसृत हैं।

जलकुंड : डुग्गर में जलकुंड भी अति पावन माने जाते हैं। इन में नाग देवताओं का वास माना जाता है। कई जल कुंड तो लोक तीर्थ के रूप

में जाने जाते हैं, यथा, रामकुंड, धनसर, नंदी कुंड, गौरी कुंड, सुन्नी कुंड इत्यादि।

कूप (कुआं) : डुग्गर के कंडी और मैदानी भाग में जल का प्रमुख संसाधन कूप है। कुछ कुएँ शिवालिक और अर्द्ध पहाड़ी क्षेत्र में भी उपलब्ध हैं। डुग्गर में सर्वाधिक कुएँ हीरानगर, रणवीर सिंह पुरा, साम्बा, जम्मू और कुछ कठुआ में हैं। कुओं के भी नाम हैं यथा बड़ा कुआँ, चाँदी शाह का कुआँ, चन्नन खूह, हिरखै दा खूह इत्यादि।

चश्में (सूहटे) : डुग्गर के लघु-हिमालय क्षेत्र में जिस के अतंर्गत चिनाब घाटी और पीर पंचाल का क्षेत्र आता है, प्राकृतिक चश्मों के लिए अति प्रसिद्ध है।

नाग : डोडा जनपद और किश्तवाड़ के अतिरिक्त शिवालिक क्षेत्र के एक बड़े भाग में प्राकृतिक चश्मों को 'नाग' कहा जाता है। लोक श्रुति है कि नाग लोग जल के विशेषज्ञ थे, अतः उन्होंने भूमि के भीतर जल के भंडारों की खोज की और उन्हें लोकहित में प्रयोग किया।

नाड़ू : डुग्गर के पवर्तीय क्षेत्र में प्राकृतिक चश्मों के जल को एक विशेष नाली के द्वारा नीचे गिराया जाता है। ऐसे चश्मों को 'नाड़ू' नाम से अभिहित किया जाता है। डुग्गर में ऐसे नाडुओं की संख्या सैंकड़ों में है।

तालाब : डुग्गर में जल के संरक्षण के लिए जो कृत्रिम सर बनाये जाते हैं, उन्हें तालाब कहते हैं। तालाबों में पूरा वर्ष पानी भरा रहता है। पशु-पक्षियों के लिए ये तालाब प्यास बुझाने का मुख्य साधन हैं। ग्रीष्म ऋतु में जब जल का अभाव खटकने लगता है तब तालाब मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

कूहलें : डुग्गर के पर्वतीय क्षेत्र में नहरें खोदना तो असंभव है। अतः उनकी पूर्ति कूहलों द्वारा की जाती है। पहाड़ियों को खोदकर आधा मीटर अथवा अधिक से अधिक एक मीटर जमीन में कूहलें निकाली जाती हैं। इन कूहलों से खेतों की सिंचाई भी की जा सकती है। डुग्गर में ऐसी कूहलों की संख्या सैंकड़ों में है। कुछ प्रसिद्ध कूहलें हैं : रूह्ले दी

कूहल, भूतें वाली कूहल, दुल्लो दी कूहल आदि।

बावली

डुग्गर में बावली को 'बाँ' नाम से अभिहित किया जाता है। इस के अन्य पर्यायवाची शब्द हैं - बौली, बावड़ी तथा नौन इत्यादि।

बावली से तात्पर्य है एक छोटा सा जलाशय जो शिलाखंडों, प्रस्तर-शिलाओं से चश्मा या चश्में के निकट निर्मित हो।

बावली-कला का उद्भव

डुग्गर के कला विद् डा. ललित गुप्ता के शब्दों में 'आज तक शोध के उपरान्त जो पुरानी बावड़ी मिली है वह नंदपुर, बबौर मंदिर मनवाल के अहाते में स्थित है। यह मंदिर के पूर्व में बनी हुई है जो चार वर्ष पूर्व (सन 1999 ई.) पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा किए गए उत्खन्न द्वारा प्राप्त हुई है।

पुरावेता नंद बबौर मंदिर को लगभग एक हजार वर्ष प्राचीन मानते हैं, अत: लगता है कि 8वीं या 9वीं शताब्दी में डुग्गर में बावली कला का विकास हो चुका था।

एक मत यह भी है कि मुस्लिम काल में राजस्थान से जब बड़ी संख्या में हिन्दू पलायन करके शिवालिक क्षेत्र में आए तो उनके साथ प्रस्तर शिल्पी भी थे। जब राजस्थान से आए कुछ राजवंशों के लोगों ने डुग्गर में छोटे-छोटे राजवाड़े स्थापित कर लिए तो उन्होंने अपने शिल्पियों को बावड़ियों के निर्माण का काम सौंपा। इस प्रकार 15वीं शताब्दी से डुग्गर में बावली निर्माण की परम्परा चली, जो आज तक किसी न किसी रूप में जीवित है।

राजस्थान के प्रस्तर शिल्पियों को अपने प्रदेश का 'ऊँट' पशु अति पसंद था। अत: उन्होंने अपने इस पशु को इस क्षेत्र की बावलियों में संस्थापित मूर्तियों में समुचित स्थान दिया।

वास्तुकला की दृष्टि से बावलियों का वर्गीकरण

वास्तुकला की दृष्टि से डुग्गर की बावलियों को निम्न वर्गों में

रखा जा सकता है :

कूप शैली की बावलियाँ

इस शैली का एक नाम राजस्थानी शैली भी है। इस शैली में राजस्थान और गुजरात में जो बावलियाँ बनी हैं उन के भीतर भूमिगत कक्ष भी बने हैं जिन में राजा-महाराजा या धनाढ्य लोग विश्राम-स्थल के रूप में प्रयुक्त करते थे। पहले ऐसी कुएँ वाली बावड़ियाँ बहुमंजिली होती थी जिनमें एक साथ कई व्यक्ति बैठ सकते थे। इन बावलियों के तलों के आधार पर स्तम्भ डा. ललित गुप्ता के शब्दों में कलात्मक होते थे। इन में गुलकारी या पंखुड़ी दार नमूने भी उत्कीर्ण होते थे। खम्भों के नीचे और ऊपर जो चौकोर कुंभे रखे जाते थे उन पर अकसर बेलबूटे बनाये जाते थे।

राजस्थान की भाँति डुग्गर प्रदेश में भी कुछ बावड़ियाँ देखने में आई हैं। भले ही ये उन की भाँति उतनी गहरी और बहु मंजिली नहीं है पर वास्तुकला की दृष्टि से काफी कुछ उनसे मेल खाती हैं। इस तर्ज के कुएँ और बावड़ियाँ डा. गुप्ता के अनुसार बझालता, सकेतर, बावे दे झाड़ (झिड़ी) में भी हैं।

कूप-बावड़ी के भीतर गढ़े हुए पत्थरों की सीढ़ियाँ हैं। इनमें जो ताकचे बने हैं उन पर प्रायः नाग प्रतिमाएँ जड़ित हैं।

डा. ललित गुप्ता के अनुसार कूप शैली में बनी प्रायः सभी बावलियाँ अठारहवीं से बीसवीं सदी के बीच की हैं। इन की वास्तुकला सराहनीय है।

प्रायः माता वैष्णो देवी के पुराने पगडंडी मार्ग पर जितनी भी बावलियाँ बनी हैं, वे इसी शैली में हैं। इस शैली में बनी बावलियों में मूर्तियों का अभाव है।

पहाड़ी शैली की बावलियाँ

इस शैली में बनी बावलियों को प्रायः 'नौन' नाम से अभिहित किया जाता है। ऐसी बावलियाँ जिला कठुआ, डोडा और किश्तवाड़ में

बड़ी संख्या में निर्मित है। डा. ललित गुप्ता का मत है कि 'नौन' बड़ी बावली को कहा जाता है, किन्तु ऐसा है नहीं। बावली और नौन में वास्तु शैली की दृष्टि से बहुत सी समानताएँ भी हैं और विषमताएँ भी हैं।

जो पहाड़ी शैली में बावलियाँ निर्मित हैं वे प्राय: अनालंकृत लगती हैं। उनमें मूर्तियों का अभाव है। इस का एक कारण सम्भवत: यह है कि इस क्षेत्र की शिलाएँ कठोर हैं जबकि शिवालिक क्षेत्र की शिलाएँ बलुआ पत्थर की हैं। उन पर तक्षर्ण-कार्य सुगमता से किया जा सकता है।

पहाड़ी शैली में निर्मित बावलियाँ आकार में चाहे बड़ी हैं किन्तु कला-विहिन सी लगती हैं। इनमें वह सौंदर्य नहीं झलकता है जो शिवालिक क्षेत्र की बावलियों में देखा जाता है।

पहाड़ी शैली की इन बावलियों में जो शिलाखंड जड़ित हैं, वे स्थानीय तो हैं किन्तु अपरिष्कृत हैं। इन बावलियों में विशेष विशिष्टता यह है कि इन के सिंह मुख बहुत ऊँचाई पर बने होते हैं। ये कलात्मक होते हैं। इन से जब जल की धारा बावली में गिरती है तो इस का परिदृश्य अति सुन्दर और सुहाना लगता है।

पहाड़ी शैली के बने जो नौन हमें पहाड़ी क्षेत्र में उपलब्ध हैं वे पहाड़ी संस्कृति का दिग्दर्शन भी कराते हैं।

इन बावलियों की दो उपशैलियाँ भी हैं। एक को नाग (चश्मा) तथा दूसरे को नाड़ू कहते हैं। नाग का जल बावली में गिरता है जबकि नाड़ू का पानी खुले में बहता है।

अर्द्ध पहाड़ी शैली की बावलियाँ

डुग्गर के शिवालिक और मैदानी भूखंड में जो बावलियाँ निर्मित हैं, वे अर्द्ध पहाड़ी शैली में निर्मित है। ये बावलियाँ छोटी भी हैं और बड़ी भी हैं।

बावली में जल संरक्षण की व्यवस्था होती है। अत: जिस स्थान पर इस शैली की बावलियाँ बनाई जाती हैं उस स्थान की पहले खुदाई

की जाती है। आवश्यकतानुसार इन्हें एक, डेढ या दो मीटर तक खोदा जाता है। यह बावली वर्गाकार भी हो सकती है और आयताकार भी।

अर्द्ध पहाड़ी क्षेत्र में बावली निर्माण का कार्य प्रस्तर कला में दक्ष एक शिल्पकार करता है जिस का काम प्रस्तर शिलाओं को तराशना और मूर्तियाँ बनाना है। डोगरी में इसे 'बटैहड़ा' कहते हैं जिस का अर्थ है - बट्टे (पत्थर) का काम करने वाला।

बटैहड़ा बलुआ पत्थर की पहले शिलाएँ तैयार करता है। ये शिलाएँ दो प्रकार की होती हैं। बावली के भीतर जो शिलाएँ छोटी-छोटी अट्टारिकाओं में जड़ी जाती हैं, बटैहड़ा उन्हें बड़ी दक्षता के साथ इस प्रकार जोड़ता है कि उनके मध्य का भाग दिखाई ही न दे। यदि ऐसा न हो तो पानी रिसने का डर रहता है। जिन शिलाओं का प्रयोग अट्टारिकाओं अथवा पीठिका के निर्माण के लिए किया जाता है, वे आकार में बड़ी होती है। बटैहड़ा उन शिलाओं को अपनी कला से तक्षित कर के उनका रूप संवार देता है।

अर्द्ध पहाड़ी बावली का एक भाग खुला होता है। इसी भाग से लोग बावली में प्रवेश करते हैं। बावली के शेष तीनों भाग दीवारगिर, अट्टारिका अथवा पीठिका से परिसीमित रहते हैं। इससे बावली को सुदृढ़ता मिलती है और वह टकाऊँ रहती है।

कई बावलियों में अट्टारिकाओं की संख्या दो या तीन भी होता है। एक अट्टारिका बनाने के बाद थोड़ा सा स्थान छोड़कर दूसरी अट्टारिका खड़ी की जाती है। इन अट्टारिकाओं की पीठिकाओं में मूर्तियों से सजाया जाता है। कई बावलियों की अट्टारिकाओं के मुख-भाग में छोटे-छोटे अलंकृत स्तम्भ भी शोभायमान हैं। इन से बावलियों की सुदृढ़ता तथा सौंदर्य में वृद्धि होती है।

प्राय: अर्द्ध पहाड़ी बावलियों में जल का स्रोत बावली के भीतर होता है। कई ऐसी बावलियाँ हैं जिनमें सिंह मुख से पानी गिराया जाता है। 'शिल्पकार' इस बात का पूरा ध्यान रखता है कि किसी भी स्थिति में स्रोत बंद न हो। इस के लिए वह विशेष व्यवस्था भी करता है।

प्राय: बावलियों के निकट वृक्षारोपण किया जाता है। इस से प्रत्यक्ष लाभ यह पहुँचता है कि बावली का स्थल शीतल रहता है। ऐसे स्थान को यहाँ अधिक संख्या में बावली के निकट वृक्ष हों 'बन्नी' कहा जाता है। बावली के निकट लाभार्थियों के उठने और बैठने की व्यवस्था भी की जाती है।

सादी बावली

उपरोक्त शैलियों के अतिरिक्त डुग्गर में सादी बावलियों के निर्माण की परम्परा भी रही है। इस प्रकार की बावली में विशेष धन की आवश्यकता नहीं होती। प्राय: गाँव के लोग सामूहिक रूप में इन बावलियों का निर्माण करते हैं।

सादी बावली लगभग एक या डेढ़ मीटर गहरी होती है। इस के भीतरी-भाग में अट्टारिकाओं का अभाव होता है। इस के ऊपरी-भाग में कुछेक शिलाखंडों को जोड़कर अट्टारी तैयार की जाती है।

सादी बावली में नाग मूर्ति के अतिरिक्त अन्य मूर्तियों का प्रदर्शन नहीं किया जाता। ऐसी बावलियों का निर्माण पशुओं को पानी पिलाने, कपड़े धोने, बर्तन साफ करने के लिए किया जाता है।

कई स्थानों में पुरूषों के लिए अलग तथा महिलाओं के लिए कुछ दूरी पर अलग बावली निर्मित की गई है।

सांस्कृतिक महत्व

डुग्गर की बावलियों का धर्म और संस्कृति की दृष्टि से अत्याधिक महत्व है। डुग्गर का लोक-मानस जलदान को अन्नदान से भी अधिक श्रेष्ठ मानता है। पद्म पुराण में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि जलदान से ऊपर और कोई दान नहीं है। जिसके जलाशय में गौ, ब्राह्मण और साधु जल पीते हैं वह अपने कुल को तार देता है। शिव पुराण में भी लिखा है कि जलाशय का निर्माण इस लोक में और परलोक में महान आनन्द की प्राप्ति करवाने वाला है। अत: मनुष्य को चाहिए कि वह कुआँ, बावली, तालाब बनवाए। बावली या कुएँ से जब

जल निकलता है तो वह पुरूष के समस्त पापों को हर लेता है। हमारे पुराणों में यह भी लिखा है कि अन्नदान से मनुष्य को परम गति प्राप्त होती है। उसे इस लोक और परलोक में सुख की प्राप्ति होती है किन्तु जलदान सभी दानों से उतम है। यह समस्त जीवन-समूह चराचर को तृप्त करता है।

शायद यही कारण है कि डुग्गर प्रदेश के महाराजाओं, राजाओं, सामन्तों, रानियों और उनके दास-दासियों ने स्थान-स्थान पर बावलियों का निर्माण करवा कर समाज में यश अर्जित किया है। बावलियों के निर्माण में धनाढ्य भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने अपनी अर्जित सम्पति का एक भाग बावलियों के निर्माण पर खर्च किया है।

डुग्गर की लोक आस्था इन बावलियों से जुड़ी हुई है। शायद यही कारण है कि बावलियों के निकट कुल देवी देवताओं के देहरे और देहरियाँ बनाने की परम्परा आज भी प्रचलित है। प्राय: बावलियों के निकट ही यज्ञों और हवनों का आयोजन किया जाता है। डुग्गर का प्रसिद्ध लोकोत्सव जातर भी बावलियों के निकट निर्मित देहरों में आयोजित होता है। प्राय: मिंजर का मेला भी बावली स्थल में मनाया जाता है जिसमें केवल महिलाएँ और बच्चे भाग लेते हैं।

अमूल्य धरोहर

बावलियाँ हमारे पूर्वजों की निर्मितियाँ हैं। इन में हमारी लोक कलाएँ समाहित हैं। इन में जड़ित एक-एक शिला हमारे कुशल कलाकारों की दक्षता का प्रमाण है। इन बावलियों की पीठिकाओं में जड़ित एक-एक मूर्ति हमारी धार्मिक-आस्था, विश्वास और स्थानीय इतिहास की गवाह है। जो हम पुस्तकों में नहीं लिख सके वह हम इन मौन मूर्तियों से जान सकते हैं।

धनुषधाारियों की वेश-भूषा देखकर हम अनुमान लगा सकते हैं कि आदि काल में हमारी वेष-भूषा कैसी थी। हमारे अस्त्र-शस्त्र कैसे थे। हमारी जीवन शैली कैसी थी। इस प्रकार अश्वारोहियों को हम शस्त्र उठाये हुए देखते हैं तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे पूर्वजों को

अपनी जन्म भूमि की रक्षार्थ कितना संघर्ष करना पड़ा था। हमारे प्रदेश की कितनी ही ऐतिहासिक घटनाओं का पिटारा इन मूर्ति में बंद है।

इन मूर्तियों में रानी की मूर्ति, पालकी पर सवार नायिका की मूर्तियाँ है। सती होने जा रही वीरांगना की मूर्ति है। सिर कटे नायक की मूर्ति है। ये सभी मूर्तियाँ हमारी अतीत की सचित्र व्याख्या करती हैं। मूर्तियों में हम नायकों को धनुष उठाये देखते हैं, खड्ग उठाये देखते हैं, बन्दूक उठाये देखते हैं तो हमें स्वयंमेव ही काल बोध होता है।

इन मूर्तियों में नागों की मूर्तियाँ नाग-काल पर प्रकाश डालती हैं। हमारे आदि शाासक नाग थे। वे ही बाद में हमारे देवता बने। क्यों बने? उन्होंने लोक-कल्याणार्थ कई काम किए। वे पानी के देवता थे। उन्होंने हमें जल दिया और हमने उन्हें देवता का पद दिया। हमारा अतीत, हमारा इतिहास, हमारी परम्पराएँ इन बावलियों के साथ जुड़ी हुई हैं। अत: ये हमारी अमूल्य धरोहर है।

आधुनिकता के इस दौर में हमारी आवश्यकताएँ बदल गई हैं। हमें घरों में नलों द्वारा जल उपलब्ध करवाया जा रहा है। अत: हम बावलियों के महत्व को भूलते जा रहे हैं। धीरे-धीरे हमारी यह अमूल्य धरोहर लुप्त हो रही है। बावली की अट्टारिका टूट रही है। हमारी आस्था का प्रतीक मूर्तियाँ छिन्न भिन्न हो रही हैं। बावलियाँ भी उपेक्षा के कारण खंडहरों में बदल रही हैं। किन्तु हम इन के प्रति सचेत नहीं है। आज आवश्यकता है कि हम अपनी इस अमूल्य धरोहर के संरक्षण के लिए सचेत हो जाएं। इस दिशा में ग्राम पंचायतें इन के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। सरकार यदि पंचायतों को दिशा निर्देश तथा आर्थिक सहयोग दे तो हमारी यह अमूल्य धरोहर संरक्षित रह सकती है।

मूर्ति कला वैभव

डुग्गर का लोग मानस धर्म भीरू रहा है। वह आदिकाल से मूर्ति पूजक रहा है। नगरों में तो मूर्ति-पूजकों ने भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया किन्तु लोक समाज धन और साधनों के अभाव में ऐसा नहीं

कर सका। वह अपने इष्ट देवताओं की मूर्तियों को केवल जलाशयों यथा बावलियों में ही संस्थापित कर पाया। किन्तु इस का एक लाभ यह भी हुआ कि लोग-कलाएँ लोक-समाज में जीवित रहीं और आज के इस वैज्ञानिक युग में भी ये फल-फूल रही हैं।

डुग्गर की बावलियाँ इस दृष्टि से सर्वोत्कृट हैं कि ये लोक आस्था का केन्द्र हैं। प्रात:काल ग्रामीण समाज के लोग जब स्नानार्थ इन बावलियों में आते हैं तो वे स्नान के बाद लोक विधि के अनुसार अपने इष्ट देवों, कुलदेवी देवताओं की पूजा भी करते हैं। इस से वे अध्यात्मिक दृष्टि से भी इन बावलियों के साथ जुड़े रहते हैं।

डुग्गर के पूरे समाज में इष्ट देवता के रूप में 'शिव' सर्वमान्य हैं। शायद यही कारण है कि पूरे डुग्गर प्रदेश की बावलियों में हमें शिव और शिव परिवार की मूर्तियाँ संस्थापित मिलती हैं। शिव के गले में आभूषण नाग है। डुग्गर में नाग देवता के रूप में मान्य हैं। अत: डुग्गर की बावलियों में हमें सर्वाधिक मूर्तियाँ नागों की मिलती हैं। नाग मूर्तियों में नागपाश, नाग मंडल, फणधर तथा सर्पिल आकार की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं। इन के अतिरिक्त स्थानीय नाग मूर्तियों से ये बावलियाँ भरी पड़ी हैं।

ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, कृष्ण, राम परिवार, नृसिंहावतार, मत्स्यावतार, बराहावतार के अतिरिक्त बौद्ध-अवतार की मूर्तियों को भी इन बावलियों की पीठिकाओं में सुसज्जित देखा जा सकता है। शक्ति पूजा का डुग्गर में विशेष प्रचलन रहा है, अत: शक्तियों की मूर्तियाँ उन के वाहनों के साथ इन बावलियों में प्रतिष्ठित हैं।

डुग्गर की बावलियों में पशु-पक्षियों, जल जीवधारियों की मूर्तियाँ भी उपलब्ध हैं। स्थानीय लोग नायकों, लोक नायिकाओं, युद्धवीरों, शस्त्रधारियों की मूर्तियों को भी इन बावलियों में देखा जा सकता है। ये सभी मूर्तियाँ अलंकृत हैं और सजीव लगती हैं।

द्वितीय अध्याय

ऊधमपुर जनपद की बावलियाँ

ऊधमपुर डुग्गर प्रदेश का एक विशाल और विस्तृत जनपद है। इस जनपद का अधिकांश भूखंड शिवालिक पर्वत श्रृंखला में परिसीमित है। शिवालिक की श्रृंखला में जो पहाड़ियाँ परिगणित हैं। उनको भी तीन वर्गों में रखा गया है, यथा ऊपरी पहाड़ियाँ, मध्य की पहाड़ियाँ तथा निचली पहाड़ियाँ। इन पहाड़ियों को इस क्षेत्र में 'धार' नाम से भी अभिहित किया जाता है। ऊधमपुर जनपद में ऐसी धारों को संख्या दर्जनों में है। ये धारें छह सौ मीटर से लेकर बारह सौ मीटर तक ऊँची हैं। ये धारें वन-सम्पदा से समृद्ध हैं, अत: वर्षा ऋतु में इस क्षेत्र में पर्याप्त वर्षा होती है।

ऊधमपुर जनपद का कुल क्षेत्र फल 5,87,896 एकड़ है। सन 2011 की जनगणना के अनुसार इस जनपद की कुल जनसंख्या 5,57,689 थी। इनमें ग्रामीण क्षेत्र की संख्या 4,49,481 और नगरवासियों की संख्या 1,08,208 थी।

इस पूरे जनपद में 357 गाँव हैं। सन 2015-2016 में गाँवों के विकास के लिए 204 पंचायतों का गठन किया गया।

प्रशासनिक दृष्टि से यह जनपद आठ तहसीलों में विभाजित है जिन के नाम हैं - ऊधमपुर, रामनगर, चनैनी, मझालता, बसन्तगढ़, लाटी, पंचैरी और मोंगरी।

यह जिला सोलह उप विकास खंडों में विभाजित है जिनके नाम हैं - ऊधमपुर, पंचैरी, चनैनी, मझालता, रामनगर, घोरड़ी, डुडु-बसन्तगढ़, लाटी-मरोठी, चनूनता, जगानु, खून, कुलबन्ता, सेवना, पारलीधार, नरसू, टिक्करी तथा मौंगरी।

सन 2011 की जनगणना के अनुसार इस जनपद में कुल घर 99,808 थे।

जल स्रोत

इस पूरे जनपद में उपलब्ध होने वाले पाँच प्रकार के जलस्रोतों में तालाब, बावली, कुआँ, कूल और सूह्टे (चश्में) हैं। कुएँ तो बहुत ही कम हैं किन्तु बावलियों की संख्या अत्याधिक है। इस जनपद में शायद ही कोई ऐसा गाँव हो जिसमें कोई बावली न हो। कई गाँव ऐसे भी हैं, जहाँ तीन से भी अधिक बावलियाँ हैं।

ऊधमपुर के अन्तर्गत एक भूखंड -बुल्वालता' है। लोक परम्परा के अनुसार इस क्षेत्र की हवा, बावलियाँ, पीपल, बोहड़ और वाके (अफवाहें) जगत प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार पूरा ऊधमपुर जनपद बावलियों के कारण पूरे प्रदेश में प्रसिद्ध है।

ऊधमपुर की बावलियाँ एक प्रकार से लोक तीर्थ हैं। इन बावलियों में लोक देवी-देवताओं, लोक नायकों तथा लोक सेवियों की जो मूर्तियाँ जड़ित हैं, वे लोक आस्था से जुड़ी हुई हैं। इस जनपद के लोग बावलियों का जल ग्रहण ही नहीं करते हैं अपितु इन के जल से अपने इष्ट देवों का अभिषेक भी करते हैं।

ये बावलियाँ इस जनपद की उन्नत प्रस्तर-तक्षण कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन बावलियों के अवलोकन से इस जनपद की लोक संस्कृति की झलक मिलती है।

ऊधमपुर जनपद में एक सर्वेक्षण के अनुसार ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व की 205 बावलियाँ हैं। इन में 45 बावलियाँ ऊधमपुर में, 64 बावलियाँ चनैनी क्षेत्र में, 28 बावलियाँ घोरड़ी उप विकास खंड में, 32 बावलियाँ रामनगर और मझालता क्षेत्र में और 36 बावलियाँ मोंगरी पंचैरी क्षेत्र में हैं।

इस अध्याय में अति प्रसिद्ध ऐतिहासिक और लोक-आस्था से जुड़ी कुछेक बावलियों का विवरण ही प्रस्तुत किया गया है।

पाठक इन का अध्ययन करके शेष बावलियों की उत्कृष्टता का अनुमान लगा सकते हैं।

संगूर की बावली (बड्डी बाँ)

यह बावली ऊधमपुर के बाड़ेयाँ मुहल्ला के अंतर्गत संगूर स्थान में अवस्थित है। बावली जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय-मार्ग के नीचे है। सड़क से बावली तक जाने के लिए सोपान पथ बना है।

यह बावली ऊधमपुर क्षेत्र की सबसे भव्य, विशाल और विस्तृत बावली है, शायद इसी कारण से इस बावली को 'बड्डी बावली' के नाम से अभिहित किया जाता है।

पूर्वोन्मुख यह बावली अनुमानत: बीस मीटर वर्ग क्षेत्र में परिव्याप्त है। इस बावली के निकट ही दो नव निर्मित मंदिर और संतों की कुटिया है।

मूल बावली का अब पुर्नोद्धार किया गया है, किन्तु इस का वास्तु विन्यास पहले जैसा ही है।

बावली वर्गाकार है। इस की प्रत्येक भुजा अनुमानत: तीन मीटर है। यह बावली तीनों ओर से ऊँची दीवार गिरों से घिरी है, अत: सुरक्षित लगती है। दीवार गिरों में जो पीठिकाएँ बनी हैं वे तीन स्तरों में हैं।

बावली के भीतर प्रस्तर शिलाओं से जो छोटी-छोटी अट्टारिकाएँ बनाई गई हैं, उन की संख्या नौ है।

बावली की पीठिकाएँ प्रस्तर मूर्तियों से सुसज्जित हैं। इस बावली की पहली पीठिका में 11 मूर्तियाँ, दूसरी में 13 मूर्तियाँ और तीसरी में केवल 2 ही मूर्तियाँ है, शेष मूर्तियाँ यहाँ से हटा ली गई हैं। इस प्रकार इस बावली में 26 मूर्तियाँ जड़ित हैं। इन मूर्तियों का क्रम इस प्रकार है :

पहली : यह किसी देवता की विकृत मूर्ति है।

दूसरी : यह सिंहासनारूढ़ किसी देवी की मूर्ति है।

तीसरी : यह भी देवी की मूर्ति है जिस के हाथों में शस्त्र हैं।

चौथी : यह अश्वारोही किसी लोक नायक की मूर्ति है।

5वीं : यह एक स्थानी सामंत की मूर्ति है जो अश्वारोही है।

6वीं : यह भी किसी अश्वारोही की मूर्ति है।

7वीं : यह हनुमान की मूर्ति प्रतीत होती है।

8वीं : इस मूर्ति में एक डिजायन बना है।

9वीं : इस मूर्ति में एक लोक नायक को अश्वारूढ़ होकर युद्ध के लिए प्रस्थान करते दिखा गया है।

10वीं : यह एक देवी की मूर्ति है।

11वीं : यह मूर्ति प्रहरी की लगती है।

12वीं : यह अश्वारोही एक नायक की मूर्ति है।

13वीं : यह गर्दन रहित किसी युद्धवीर की मूर्ति है।

14वीं : यह पालकी पर सवार किसी रानी की मूर्ति है।

15वीं : यह एक वीर योद्धा की मूर्ति है।

16वीं : यह मूर्ति भी एक युद्धवीर की है।

17वीं : यह शिव पार्वती की युग्म मूर्ति है।

18वीं : यह एक सेना नायक की मूर्ति है।

19वीं : यह मूर्ति भी एक अश्वारूढ़ सेना नायक की है।

20वीं : यह मूर्ति युद्धवीर की है।

21वीं : यह मूर्ति पहली पीठिका में जड़ित है। यह शिव पार्वती की युग्म प्रतिमा है।

22वीं : यह मूर्ति भी सेना नायक की है जो अश्वारूढ़ है।

23वीं : यह भी अश्वारूढ़ युद्धवीर की मूर्ति है।

24वीं : यह मूर्ति भी अश्वारूढ़ वीर योद्धा की है।

25वीं : यह मूर्ति गणेश जी की है। यह एक कलात्मक मूर्ति है।

26वीं : यह सबसे भव्य और आकर्षक कुंडली मार कर बैठे

नाग देवता की मूर्ति है।

नाग मूर्ति के नीचे दो सिंह मुख बने हैं। उन से जलधाराएँ बावली में गिर रही हैं। बावली लबालब पानी से भरी हुई है। इस का जो जल बावली से बाहर उछलता है, वह नीचे बहता है। बावली के नीचे खेत हैं। यह पानी खेतों में उगी सब्जियों का पोषण करता है।

यह बावली अब ऊपर से आवेष्टित है। इस से वृक्षों के पते बावली में नहीं गिरते हैं जिसे से इस बावली की जल स्वच्छ और निर्मल रहता है।

इस बावली के निकट दो मंदिर हैं। एक मंदिर भगवान शिव का और दूसरा मंदिर देवी भगवती का है। जो शिव मंदिर है उस की दीवारों में पाँच मूर्तियाँ जड़ित हैं जो अति प्राचीन लगती हैं। लगता है ये मूर्तियाँ बावली से सम्बद्ध रही होंगी।

इन में पहली मूर्ति एक नाग देवता की है जिसकी टाँगें सर्पमयी और धड़ मानव का है। यह एक विलक्षण मूर्ति है। मूर्ति में देवता के हाथ में धनुष है। दूसरी मूर्ति भी नाग युद्धवीरों की लगती है। इन दोनों के हाथों में धनुष हैं। इन की वेशभूषा अलग है। तीसरी मूर्ति हनुमान की है जबकि चौथी मूर्ति शिव पार्वती की है। यह एक विलक्षण और कलात्मक मूर्ति है।

मंदिर के महन्त दिगाम्बर मुकेश गिरी के अनुसार एक बार शिव पार्वती घूमते फिरते इस स्थान पर आए। गर्मियों के दिन थे। पार्वती ने भगवान शिव से कहा - मैं अपने बाल धोना चाहती हूँ। यहाँ पानी नहीं है। शिव भगवान ने नाग देवता को जल प्रगट करने का आदेश दिया। तभी धरती से जलस्रोत फूट पड़ा। पार्वती ने बाल धोए और कुछ समय वहाँ विश्राम करने के बाद वे वहाँ से आगे बढ़े। जाते-जाते नाग को वहीं बने रहने का आदेश दिया।

महन्त जी के अनुसार नाग देवता आज भी इस बावली में रहते हैं और कभी-कभी श्रद्धालुओं को दर्शन भी देते हैं।

वैसे इस बावली की वास्तुकला का अध्ययन करने से इतना सुस्पष्ट हो जाता है कि यह बावली प्राचीन है।

नाड़ू वाली बावली

'बड्डी बाँ' से पच्चास मीटर आगे राष्ट्रीय-मार्ग से बीस मीटर नीचे एक और बावली है जिसे नाड़ू वाली बावली के नाम से अभिहित किया जाता है।

बावली तक पहुँचने के लिए दो सोपान पथ बने हैं। एक मंदिर से नीचे जाता है और दूसरा पहली बावली की ओर जाता है।

यहाँ दो बावलियाँ हैं। एक बड़ी बावली और एक छोटी बावली। बड़ी बावली में एक नल से पानी नीचे गिरता है। पहले यह नल पत्थर का था अब लोहे का है। पानी जिस स्थान पर गिरता था वहाँ एक जल कुंड जैसा बना था किन्तु अब वह किसी कारण बंद है। अत: बहता जल निकट प्रवाहित जलधारा में जा मिलता है।

दूसरी बावली में छोटे बड़े छह 'नाड़ू' हैं। पहले इन नाड़ुओं का जल एक बड़ी बावली में गिरता था किन्तु अब बावली तो भर गई हैं किन्तु उसकी अट्टारिकाएँ आज भी द्रष्टव्य हैं।

सबसे बड़ी अट्टारिका अब दीवारगिर जैसी लगती है। पुर्न-निर्माण करते समय इसका स्वरूप ही बदल गया है। इस दीवार में जो छोटी सी पीठिका बनी है उसमें सात मूर्तियाँ जड़ित हैं। ये मूर्तियाँ आकार में छोटी हैं।

पहली मूर्ति नाग देवता की है। दूसरी मूर्ति एक महिला की है। महिला ने एक बच्चे को उठाया हुआ है। लगता है इस बावली में कोई दुर्घटना घटित हुई होगी। जिस का प्रतीक यह मूर्ति है। तीसरी मूर्ति एक रानी की है। रानी को पालकी में बैठे दिखाया गया है। पालकी को दो कहारों ने उठाया है। चौथी मूर्ति मत्स्यावतार की है। 5वीं मूर्ति भी पालकी पर बैठी किसी रानी की है। 6वीं मूर्ति मुरलीधर कृष्ण की है। यह मूर्ति परवर्ती लगती है। 7वीं मूर्ति दो द्वारपालों की है।

कहते हैं कि इस क्षेत्र में कभी 108 बावलियाँ थीं। जिनमें अधिकांश के अवशेष आज भी उपलब्ध हैं।

देविका की बावलियाँ

ऊधमपुर में प्रवाहित देविका नदी के तट के साथ-साथ कई बावलियाँ द्रष्टव्य हैं जो वास्तुकला की दृष्टि से अर्द्ध पहाड़ी शैली में निर्मित हैं। इन बावलियों में निम्न बावलियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं:

नन्द बुच्चा की बावली

यह बावली पावन देविका नदी के पूर्वी तट से 7 मीटर की दूरी पर निर्मित है। इस बावली का निर्माण स्थानीय धनाढ्य व्यक्ति नन्द बुच्चा ने लोक कल्याण की भावना से करवाया।

पश्चिमोन्मुख इस बावली की दायीं-बायीं अट्टारिकाएँ एक-एक मीटर ऊँची हैं। इस के पूर्वी भाग में एक दीवारगिर बनी है जो इस बावली की सुरक्षा के लिए निर्मित है। इसी दीवार गिर में एक पीठिका सी बनी है। इस पीठिका में बड़े सलीके से मूर्तियों को सजा कर रखा गया है। ये सभी मूर्तियाँ स्थानीय बलुआ पत्थर से निर्मित हैं। इन्हें स्थानीय बटैहड़ों (प्रस्तर शिल्पियों) से बड़ी दक्षता से तक्षित किया है। इन मूर्तियों की कुल संख्या दस है। इन का विवरण इस प्रकार है :

पहली : अश्वारूढ़ सामंत या राजा की मूर्ति
दूसरी : कूर्मावतार की मूर्ति
तीसरी : भगवान नृसिंह भगवान की मूर्ति
चौथी : भगवान विष्णु की मूर्ति
5वीं : नाग की मूर्ति
6वीं : हनुमान की मूर्ति
7वीं : भगवान कृष्ण की मूर्ति
8वीं : अलंकृत शिला
9वीं : शिव-पार्वती की युग्म मूर्ति
10वीं : स्थानीय लोक देवी की मूर्ति

बावली-दो

यह बावली छोटे कूप के आकार में है। जल स्तर भूमि-तल से नीचे है, अतः नीचे उतरने के लिए छोटे-छोटे सोपान बने हैं। श्रद्धालु जल प्राप्त करने के लिए सोपान उतर पर नीचे जाते हैं।

यह बावली अनुमानतः चार मीटर के घेरे में है। श्रद्धालु इस बावली के जल को अति पावन मानते हैं। प्रायः शिव भक्त इस बावली के जल से ही पुराने कामेश्वर मंदिर में स्थापित शिवलिंग का जलाभिषेक करते हैं।

आज से अस्सी वर्ष पूर्व इस बावली के ऊपरी भाग मे एक पाठशाला थी जिस का भवन आज भी द्रष्टव्य है।

बावली - तीन

यह बावली भी दूसरी बावली के निकट निर्मित है। वास्तु-कला की दृष्टि से यह दूसरी बावली की ही अनुकृति लगती है कूप शैली में निर्मित इस बावली में भी छोटे-छोटे सोपान निर्मित हैं। इस बावली का जल भी अति पावन माना जाता है। देवी -देवताओं की पूजा में भी इन बावलियों का जल प्रयोग किया जाता है।

ये बावलियाँ स्थानीय संस्कृति का केन्द्र भी हैं। इन बावलियों के निकट भगवान कामेश्वर के दो मंदिर निर्मित हैं। जिन में एक मंदिर प्राचीन और एक नया है। अब इन बावलियाँ के निकट ही देविका जी का मंदिर और एक विशाल शिव प्रतिमा बनी है। इन के अतिरिक्त बावलियों के स्थल के निकट कई मंदिर, भवन और स्मारक हैं जिन का अवलोकन पर्यटक भी करते हैं।

मंगू की बावली

यह बावली ऊधमपुर के श्मशान घाट के नीचे देविका नदी के पश्चिमी तट पर अवस्थित है। देविका का प्रसिद्ध रघुनाथ मंदिर इस बावली के निकट है।

यह बावली तीन ओर से दीवार गिर से गिरी हुई है। प्रत्येक

दीवार गिर की ऊँचाई अनुमानतः एक मीटर है। इस की उतरी दीवार के ऊपर एक पीठिका बनी है। इस पीठिका के ऊपर लोक-देवताओं, लोक देवियों और पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ सुसज्जित हैं। आकार में यह मूर्तियाँ एक फुट के लगभग ऊँची और नौ ईंच तक चौड़ी हैं। ये मूर्तियाँ बलुआ पत्थर पर उकेरी गई हैं। मूर्तियाँ प्राचीन लगती हैं। इन्हें पहचानना कठिन है।

बावली में दो जल की पतली धाराएँ गिरती हैं। इन धाराओं को नलों द्वारा बावली में गिराया जाता है। बावली का परिवेश दस मीटर के लगभग है। बावली के साथ नहाने का स्थान खुला है। यह स्थान प्रस्तर शिलाओं से आवेष्टित है।

इस बावली की पश्चिमी दीवारगिर के साथ एक भव्य अलंकृत शिला प्रदर्शित है। यह शिला प्राचीन लगती है। इस शिला में बहुत ही सुन्दर पुष्पाकृतियाँ निर्मित हैं।

इस बावली का अवलोकन करने से लगता है कि मूल बावली की अट्टारिकाएँ अब लुप्त हैं। उनके स्थान पर कहीं-कहीं ईंटों तथा पत्थरों से चिनाई की गई है।

लोक पम्परा के अनुसार इस बावली का निर्माण 'मंगु' नामक एक व्यक्ति ने लोक कल्याण की भावना से करवाया है। मंगु जाति का मेघ था।

इस बावली का जल देविका नदी में गिरता है, अतः इसके जल को भी पावन माना जाता है।

भगतों की बावली

यह बावली ऊधमपुर श्मशान घाट से अनुमानतः बीस मीटर नीचे है। पूर्वोन्मुख इस बावली की पश्चिमी दीवार में एक शिलालेख जड़ित है जो देवनागरी लिपि में है।

इस शिलालेख में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है - यह बावली स्व. श्री गोपाल दास भगत श्रीमती राजपति की याद में (निवासी मरमत

डिस्ट्रिक डोडा) उनके सुपुत्र श्री धर्मचन्द भगत जी ने 1.9.2009 में बनवाई।

इस बावली क अवलोकन करने से लगता है कि इस स्थान पर लोक शैली में निर्मित एक प्राचीन बावली पहले से ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थी। धर्मचन्द ने इस बावली का नये ढंग से पुर्ननिर्माण करवाया।

बावली के मुख-नाग में जो नाग मूर्ति जड़ित है उसे देखने से लगता है कि यह मूर्ति पुरानी है। नाग मूर्ति के नीचे से एक नल से पानी की एक धारा नीचे तो गिरती है किन्तु उस का जल बावली से कुछ दूसरी पर गिरता है। बावली जलकुंड आकार की है और इस का परिवेश चार मीटर के लगभग है। यह बावली कम गहरी है।

बावली के उतरी भाग में छह पुरानी मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। लगता है कि ये मूर्तियाँ पहले पीठिका में जड़ित रही होंगी। बावली का पुर्न-निर्माण करते समय इन्हें मूल स्थान से हटा कर.दीवार के साथ रखा गया है। इन में पहली मूर्ति लोक देवता की है। दूसरी मूर्ति लोक नायक की है। तीसरी मूर्ति किसी रानी की है। चौथी मूर्ति हनुमान की लगती है। पाँचवीं मूर्ति लोक नायिका की है और छटी मूर्ति किसी लोक नायक की है।

इस बावली का उपयोग बहुत कम लोग करते हैं। अतः यह स्थान वीरान सा दिखाई देता है।

रानी की बावली

यह ऐतिहासिक बावली ऊधमपुर में प्रवाहित पावन देविका नदी के पूर्वी तट के साथ सरकारी स्कूल के पार्श्व में अवस्थित है। इस बावली का निर्माण डोगरा शासन काल में राजमहल के निर्माण के साथ-साथ किया गया।

यह बावली विशेष रूप से रानियों के स्नानार्थ निर्मित की गई थी, अतः इस में महल से आने और जाने के लिए एक विशेष मार्ग बनाया गया था जिस के दोनों ओर ऊँची-ऊँची दीवारें थीं। रानियों के

नीचे उतरने के लिए एक सोपान पथ भी बना था।

बताते हैं कि जिन दिनों राजा केदार चन्द की रानी और राजा राम सिंह की बेटी ऊधमपुर के महल में रहती थी तो वह प्रतिदिन अपनी दासियों को साथ लेकर इस बावली में स्नान करने आती थी। पर्व-त्योहार के अवसर पर रानियाँ दान पुण्य भी यहाँ करती थीं।

यह बावली पक्की है किन्तु अब यह जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इस की अट्टारिकाओं में जड़ित तक्षित शिलाएँ ही दिखाई देती है।

स्थानीय पुरावेता अनिल पावा ने इस बावली के संरक्षण के लिए अधिकारिओं से सम्पर्क तो किया किन्तु अभी तक इस बावली का पुर्नोद्धार नहीं किया गया। इस बावली तक जाने के लिए जो दीवारें बनी थीं वे भी अब धराशायी हैं और उन के अवशेष भी नहीं बचे हैं।

यह बावली ऊधमपुर की ऐतिहासिक धरोहर है, अतः इस का संरक्षण किया जाना चाहिए।

बल्लन बावली

यह बावली ऊधमपुर के पूर्व में स्याल सल्लन गाँव में जागृति-संस्थान से पच्चास मीटर आगे सड़क से 5 मीटर नीचे द्रष्टव्य है। यह बावली वास्तु विन्यास की दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि में परिगणित है। इस बावली में जो शिलाखंड जड़ित हैं, वे तक्षित और अलंकृत हैं।

वर्गाकार यह बावली अनुमानतः छह मीटर के घेरे में है। इसके भीतर छोटी शिलाएँ और ऊपरी भाग में बड़ी शिलाओं का उपयोग किया गया है।

बावली के शिखर भाग में भगवान विष्णु की जो प्रतिमा प्रतिष्ठित है वह मूर्तिकला का अनुपलब्ध नमूना है। इस क्षेत्र मे ऐसी और कोई दूसरी मूर्ति द्रष्टव्य नहीं है। शिल्पकार ने अंगों और प्रत्यंगों का तक्षण बड़ी कुशलता से किया है। प्रख्यात इतिहासकार सुखदेव सिंह चाड़क के अनुसार यह मूर्ति तीन सौ वर्ष पुरानी लगती है। मूर्ति 88 ईंच ऊँची और 47 ईंच चौड़ी है।

सड़क के विकास के समय इस बावली से मूर्तियाँ उठा कर निकट स्थित शिव मंदिर में स्थापित की गई हैं। इन मूर्तियों में सिंह वाहिनी दुर्गा, नन्दी पर आरूढ़ शिव-पार्वती, पद्मासन में बैठे मुनीषी, ब्रह्मा-विष्णु, महेश तथा कृष्ण लीला से सम्बन्धित कई मूर्तियाँ क्रम से रखी गई हैं। किन्तु हनुमान की मूर्ति उन से अलग रखी गई है। कमल पर आरूढ़ वैष्णवी तथा मोर पर सवार कार्तिकेय की मूर्तियाँ भी यहाँ प्रदर्शित हैं।

स्याल सल्लन गाँव में प्रवाहित नाले के तटों के साथ छोटी-बड़ी पाँच और बावलियाँ भी उपलब्ध है। किन्तु में ये बावलियाँ अट्टारिकाओं से विहिन हैं। इन के ललाट में नाग मूर्तियाँ जड़ित हैं। इन बावलियों का लगता है मुरम्मत करते समय कला सौंदर्य के संरक्षण की ओर ध्यान नहीं दिया गया।

साकन बावली

ऊधमपुर की अति प्रसिद्ध बावलियों में एक बावली साकन बावली भी है। यह बावली वास्तु विन्यास की दृष्टि से पहाड़ी शैली में है। इस बावली के निर्माण में जिन प्रस्तर शिलाओं का प्रयोग किया गया है, वे स्थानीय हैं। शिल्पकारों ने इस बावली के निर्माण में अपनी कुशलता और दक्षता का परिचय दिया है।

यह बावली रेलवे स्टेशन ऊधमपुर के निकट जिस स्थान पर अवस्थित है, वहाँ अब कुछ दुकानों निर्मित हैं। यह बावली दुकानों के मध्य में एक बड़े प्राचीन वृक्ष के नीचे निर्मित है। इस बावली के निकट ही एक मंदिर है जो लोक-आस्था का केन्द्र है।

पूर्वोन्मुख यह बावली अनुमानतः छह मीटर के घेरे में है। बावली के ऊपरी भाग में जो पीठिकाएँ बनी हैं, वे अति सुन्दर और कलात्मक मूर्तियों से सुसज्जित हैं। बताते हैं कि इन मूर्तियों की संख्या पहले सहतर के लगभग थी किन्तु अब बीस के करीब हैं। अधिकांश मूर्तियाँ पैराणिक देवी-देवताओं, लोक देवी-देवताओं वं लोक नायकों की हैं। इन मूर्तियों का दिग्दर्शन करने से लगता है कि सामन्त काल में

ऊधमपुर क्षेत्र में मूर्ति-निर्माण कला उच्च शिखर पर थी।

इस बावली से सम्बन्धित कई दन्त कथाएँ प्रचलन में हैं। एक कथा के अनुसार इस बावली का निर्माण एक सम्पन्न परिवार की सौत ने करवाया। सौत को डोगरी में 'साकन' कहते हैं, अत: इस बावली का नाम इसी नाम से प्रचलन में आया। यह एक दर्शनीय बावली है।

दन्देयाल की बावली

यह बावली कल्लर पंचायत के अन्तर्गत दन्देयाल गाँव के स्वामी नित्यानन्द धाम के भीतर अवस्थित है। उतरोन्मुख यह बावली स्वामी नित्यानन्द के नाम समर्पित है, अत: कई लोग इसे स्वामी जी की बावली भी कहते हैं।

स्वामी नित्यानन्द जी का जन्म वि. सम्वत् 1927 (सन 1871 ई) की ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को पंडित चन्द्र मौली के घर कल्लर गाँव में हुआ था। उन का अध्यात्मवाद में लगाव बाल्याकाल से ही था। वे साधना करने इस बावली में भी आते थे। कहते हैं कि स्वामी जी के इस स्थान पर आने से पूर्व यह बावली सूख गई थी किन्तु जैसे ही स्वामी जी के पद यहाँ पड़े यह बावली पुन: जल से लबालब भर गई।

यह शिलाखंडों से निर्मित एक सुन्दर बावली है। इसका वास्तुविन्यास पहाड़ी शैली में है। इस बावली का निर्माण जिन बट्टाहडों (शिल्पकार) ने किया है वे स्थानीय लगते हैं।

यह बावली सामान्य-आकार में है। यह अनुमानत: आठ मीटर क्षेत्र में परिसीमित है। इस के इर्द-गिर्द छायादार वृक्ष हैं, अत: यहाँ का वातावरण अति शीतल है।

ऊधमपुर के समाज-सेवक श्री प्रभाकर जी स्वामी नित्यानन्द जी महाराज की इस तपस्थली को विकसित करने में प्रयासरत हैं।

इस बावली का जल शारीरिक रोगों को दूर करता है। मनुष्य में ऊर्जा पैदा करता है और मन तथा चित को शान्त रखता है।

इस बावली का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम है।

मदन चोरा की बावलियाँ

मदन चोरा की बावलियाँ ऊधमपुर नगर के उतर में स्थित गंगेड़ा पहाड़ी के क्षेत्र में अवस्थित हैं। ये बावलियाँ पुरानी पगडंडी के साथ-साथ बनी हैं। इन बावलियों की संख्या दो है, बड़ी बावली को राजा की बावली और दूसरी बावली को रानी की बावली कहा जाता है।

राजा की बावली

जिस स्थान पर यह बावली निर्मित है कहते हैं कि वहाँ पहले एक पुराना महल था। महल के साथ एक नृसिंह मंदिर भी है। स्थानीय वयोवृद्ध समाज सेवक मोहन लाल मगोत्रा के अनुसार इस महल का निर्माण मुगल काल में राजस्थान से पलायन करने के बाद गंगेड़ा पहाड़ी पर बसे दो भाईयों ने करवाया था। जिन के नाम जोध सिंह और जय सिंह थे। बाद में गंगेड़ा जागीर के सरदार भी इसी महल में रहने लगे।

सन 1820 ई. के बाद किश्तवाड़ का दौरा लगाने राजा गुलाब सिंह का बड़ा बेटा ऊधम सिंह किश्तवाड़ आया। वह कुछ दिन किश्तवाड़ में रहा और बाद में वजीर लखपत के साथ वापस लौटते समय एक रात के लिए वह मदन चौरा के महल में भी रहा। उसी महल में विश्राम करते समय उसने गंगेड़ा पहाड़ी के नीचे परिसीमित चरागाह में एक नगर अपने नाम पर बसाने की परिकल्पना की।

सन 1840 ई. में एक दुर्घटना में लाहौर में उस की मृत्यु हो गई तो महाराजा गुलाब सिंह ने उस की स्मृति में ऊधमपुर नगर बसाया। जिस महल में कुंवर ऊधम सिंह ने रात्रि विश्राम किया था, वहाँ एक नृसिंह मंदिर और एक विशाल बावली का निर्माण करवाया। यह बावली अनुमानतः दस मीटर क्षेत्र में परिसीमित है। इस की अट्टारिकाएँ डेढ़ मीटर ऊँची हैं। इन अट्टारिकाओं को सुन्दर कलात्मक मूर्तियों से सुसज्जित किया गया है। इन मूर्तियों की संख्या बत्तीस है। मूर्तियों का विवरण इस प्रकार है :

पहली मूर्ति अश्वारूढ़ महाराजा रणजीत सिंह की है। इस मूर्ति में एक बाज को महाराजा के एक हाथ में पकड़े हुए दिखाया गया है।

दूसरी मूर्ति राजा ऊधमसिंह और वजीर लखपत की है। दोनों के हाथों मं तलवार और ढाल है। तीसरी मूर्ति अश्वारोही राजा ऊधम सिंह की बताई जाती है। चौथी मूर्ति में राजा ऊधम सिंह को घोड़े की सवारी करते दिखाया गया है। पाँचवीं मूर्ति एक देवी की है जिस के हाथों में अस्त्र और शस्त्र हैं। छटी मूर्ति में राजा ऊधम सिंह को घोड़े पर सवार दिखाया गया है। सातवीं मूर्ति एक युद्धवीर की है जिस के एक हाथ में कबूतर है। आठवीं मूर्ति राम-सीता और लक्षमण की है।

नौवीं मूर्ति नृसिंहावतार की है जबकि दसवीं मूर्ति भगवान कृष्ण की है। 11वीं मूर्ति कमलासीन एक देवी की है। 12वीं मूर्ति श्रवण कुमार की है और तेरहवीं मूर्ति एक शिव भक्त की है। 14वीं मूर्ति जगन्नाथ की है। इस में कृष्ण सुभद्रा और बलराम को अंकित किया गया है। 15वीं मूर्ति नाग देवता की है।

16वीं मूर्ति चर्तुभुजा ब्रह्मा की है। ब्रह्मा के हाथ में वेद हैं। 17वीं मूर्ति में नंदी पर सवार शिव और पार्वती हैं। 18वीं मूर्ति भगवान विष्णु की है। वे शेषनाग की शैय्या में विश्रामरत हैं। 19वीं मूर्ति विष्णु और लक्ष्मी की है। विष्णु की नाभि से विकसित कमल पर ब्रह्मा को बैठे हुए दिखाया गया है। 20वीं मूर्ति एक अश्वमुखी देवता की है।

21वीं मूर्ति मत्स्यावतार की है। इस मूर्ति में कमर के ऊपर का शरीर मनुष्य का है और नीचे मच्छली का आकार बना है। 22वीं मूर्ति कुर्मावतार की है। 23वीं मूर्ति सूर्य भगवान की है। 24वीं मूर्ति एक नायिका की है। 25वीं मूर्ति में परशुराम को सशस्त्र दिखाया गया है।

26वीं मूर्ति एक दंडाधिकारी की है। 27वीं मूर्ति में एक देवी को असुरमर्दन करते दिखाया गया है। 29वीं मूर्ति एक चतुर्भुजी देवी की है। 30वीं मूर्ति भगवान कृष्ण की है। 31वीं मूर्ति भैरव की है और 32वीं मूर्ति वीर हनुमान की है।

ये सभी मूर्तियाँ संरक्षित हैं।

रानी की बावली

यह बावली राजा की बावली से अनुमानतः डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर उतर की ओर अवस्थित है। वास्तु कला की दृष्टि से यह एक अलंकृत और भव्य बावली है। आकार में यह राजा की बावली से छोटी है। यह अनुमानतः आठ मीटर क्षेत्र में परिसीमित है। इस की अट्टारिकाएँ अलंकृत शिलाखंडों से निर्मित है। इनके ऊपर जो पीठिकाएँ बनी हैं वे सुन्दर मूर्तियों से सुशोभित हैं। बताया जाता है कि इस बावली का निर्माण रानी रक्वाल ने अपनी दोनों सती बहुँओं की स्मृति में करवाया। इन में एक का नाम रानी सुखदेवी और दूसरी का नाम रानी खुशवंत देवी था। ये दोनों राजा ऊधमसिंह की पत्नियाँ थीं।

अब यह बावली जीर्णावस्था में वीरान पड़ी हुई है। इस में जड़ित मूर्तियाँ की संख्या बाईस हैं। इन मूर्तियों का क्रम इस प्रकार है: पहली मूर्ति हनुमान की है। दूसरी मूर्ति हाथी पर सवार एक राजा की है। तीसरी मूर्ति मत्स्यावतार की और चौथी मूर्ति एक तवस्वी की है। पाँचवीं मूर्ति अलंकृत है। छटी मूर्ति में कृष्ण के साथ गोपियों को दिखाया गया है। सातवीं मूर्ति एक युद्धवीर की है जिसके एक हाथ में तलवार है। आठवीं मूर्ति पालकी पर सवार एक नायिका की है। नौवीं मूर्ति अश्वारोही एक योद्धा की है। दसवीं मूर्ति एक देवी की है। 11वीं मूर्ति सरस्वती की है और 12वीं मूर्ति में ब्रह्मा की हाथ में वेद दिखाए गए हैं। 13वीं मूर्ति एक नाग राजा की है। 14वीं मूर्ति में एक अश्वारोही योद्धा को दिखाया गया है। 15वीं मूर्ति एक वीरांगना की है जो सती होने जा रही है। 16वीं मूर्ति एक दिव्य देवी की है। 17वीं मूर्ति में अंलकरण बना है। 18वीं मूर्ति भगवान गणेश की है। 19वीं मूर्ति में कृष्ण बलराम और सुभद्रा को दिखाया गया है। 20वीं मूर्ति एक देवी की है। 21वीं मूर्ति अनुमान की है। 22वीं मूर्ति विकृत है। ये सभी मूर्तियाँ राजा की बावली की मूर्तियों की अनुकृति लगती हैं।

राजा की बावली और रानी की बावली पर विषय सामग्री तथा चित्र स्थानीय पत्रकार कृष्ण कुमार से सधन्यवाद प्राप्त

गुप्ता गंगा

जखैनी ऊधमपुर में गुज्जर होस्टल से आधा किलोमीटर दूर गंगेड़ा पहाड़ी में एक और छोटी सी चश्मा आकार की एक बावली है जिसे स्थानीय लोग गुप्त गंगा के नाम से अभिहित करते हैं।

यहाँ की बावली से जो जल बाहर की ओर उछलता है, वह एक जलधारा के रूप में दक्षिण की ओर उन्मुख होता है। स्थानीय लोग इस जलधारा को अति पावन मानते हैं और गुप्त गंगा नाम से अभिहित करते हैं।

गरड़ गंगा

गंगेड़ा पहाड़ी से ही एक और जलधारा एक चश्में से निःसृत है। इस जलधारा को गरड़ गंगा नाम से अभिहित किया जाता है। जिस चश्में से यह जल धारा निकलती है उसे शिलाखंडों से आवेष्टित करके एक बावली का रूप देने का प्रयास किया गया है।

नारदा गंगा

गंगेड़ा पहाड़ी से ही एक और पतली जलधारा निःसृत है। स्थानीय लोग इस जलधारा को नारदा गंगा के नाम से अभिहित करते हैं। जिस स्थान से यह जलधारा निःसृत है, उसे शिलाखंडों से सुरक्षित किया गया है। इस जलधारा को भी अति पावन माना जाता है।

शारदा गंगा

गंगेड़ा पहाड़ी में ही एक और जलधारा निःसृत है जिसे शारदा गंगा के नाम से स्थानीय लोग पुकारते हैं। इस जल धारा के निकट ही शारदा देवी का शक्ति स्थल है।

इन जल धाराओं को भी देविका नदी का ही रूप माना जाता है।

गंगेड़ा से निःसृत जलधाराओं से सम्बन्धित सूचनाएँ ऊधमपुर के वयोवृद्ध समाज सेवक मोहन लाल मगोत्रा से सधन्यवाद प्राप्त

गंगेड़ा की बावलियाँ

गंगेड़ा पहाड़ी पर बसा एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गाँव है। गंगेड़ा पहाड़ी ऊधमपुर के उतर में है। इसी पहाड़ी के नीचे सरकार द्वारा विकसित हाऊसिंग कॉलोनी है। हाऊसिंग कफलोनी से एक सड़क गंगेड़ा की पहाड़ी की ओर जाती है। तीन सौ मीटर चढ़ाई चढ़ने के बाद गंगेड़ा की बावलियाँ दृष्टिगत होती हैं। ये बावलियाँ संख्या में दो हैं और इन के साथ ही एक स्नानागार भी बना है। इन बावलियों का विवरण निम्न है।

बावली-एक

यह बावली पीपल के प्राचीन वृक्ष के नीचे अवस्थित है। बावली को सुरक्षित रखने के लिए एक सुदृढ़ प्रस्तर शिलाओं से निर्मित आधा मीटर ऊँची दीवार गिर है। ऊपर चढ़ने के लिए सोपान बना है।

बावली के चारों ओर एक पीठिका सी बनी है जिसमें व्यक्तियों के बैठने की समुचित व्यवस्था है। पीठिका से नीचे उतरने के लिए पाँच सोपान बने हैं जिनकी लम्बाई-पौन-पौन मीटर है।

सोपान उतरते ही बावली दृष्टिगोचर होती है। बावली दक्षिणोन्मुखी है। इस का भीतरी घेरा पाँच मीटर लगता है। बावली के उतरी भाग में पीपल का वृक्ष है। पीपल का एक भाग इस बावली के भीतर है।

बावली के भीतर सात लघु अट्टारिकाएँ बनी हैं। ये सभी छोटी शिलाओं से जड़ित हैं। बावली में जल ऊपरी स्तर तक रहता है किन्तु कभी-कभी नीचे भी चला जाता है। यदि जल बावली से बाहर को उछले तो उसके निष्कासन की भी व्यवस्था है।

यह बावली ऊपर से अच्छादित है। इस कारण यह निर्मल और स्वच्छ भी दिखाई देती है।

पंचायत विभाग द्वारा बावली का पुर्नोद्धार करते समय बावली से मूर्तियाँ हटा ली गई हैं, फिर भी पीठिका की दीवार के साथ तीन निम्न मूर्तियाँ अब भी जड़ित हैं -

1. राजस्थानी वेशभूषा में स्थानीय राजा। राजा के एक हाथ में धनुष बाण है।
2. सिंहासारूढ़देवी
3. भगवान शिव की मूर्ति जिन के गले में नाग लिपटा है।

बावली-दो

यह भव्य बावली है। आकार में यह वर्गाकार है। यह अनुमानतः दस मीटर के घेरे में है। इस की प्रत्येक भुजा डेढ़ मीटर है। बावली के भीतरी-भाग में जो छोटी-छोटी अटारियाँ बनी हैं। उनकी संख्या पाँच है।

यह बावली भी दक्षिणोन्मुखी है। इसके तीनों ओर एक-एक मीटर दीवारगिर हैं और उनके ऊपर पीठिकाएँ बनी हैं।

बावली की उतरी दीवार में सात मूर्तियाँ जड़ित है जिन का विवरण इस प्रकार हैं :

1. पहली मूर्ति में फूल बना है।
2. दूसरी मूर्ति कमलासीन देवी है।
3. तीसरी मूर्ति नाग राजा की है।
4. चौथी मूर्ति मयूर पर सवार भगवान कार्तिकेय की है।
5. पाँचवीं मूर्ति वीर हनुमान की है।
6. छटी मूर्ति गणेश जी की है।
7. सातवीं मूर्ति में एक फूल बना है।

निर्माता: कहा जाता है कि इन बावलियों का निर्माण गंगेड़ा के चन्देल राजा ज्ञान चन्द ने या उस के किसी वंशज ने करवाया है। किन्तु जनश्रुति है कि राजा ज्ञानचन्द एक सूफी पीर से प्रेरित होकर मुसलमान बना। मुसलमान सामंत द्वारा मूर्तियों की स्थापना करवाना उपयुक्त नहीं लगता अतः स्थानीय विद्वान इन बावलियों को राजा ज्ञान सिंह से भी पहले की निर्मिति मानते हैं। वास्तुकारों के अनुसार ये बावलियाँ 17वीं सदी की निर्मितियाँ हो सकती हैं। इन बावलियों का जल शीतल और स्वादिष्ट है।

लौण्डना की बावली

नाग देवता लौण्डना को समर्पित सांस्कृतिक स्थल पर निर्मित यह बावली लोक तीर्थ के रूप में ऊधमपुर क्षेत्र में विख्यात है। यह बावली ऊधमपुर के दक्षिण में 7 किलोमीटर की दूरी पर बट्टल बालियाँ गाँव में अवस्थित है। यह बावली अनुमानत: छह मीटर घेरे में है। इस बावली को स्थानीय प्रस्तर शिलाओं से अलंकृत किया गया है।

इस बावली के सिंह मुख से जब जलधारा गिरती है तो उस का वेग बड़ा तीव्र होता है। पुण्य तिथियों पर सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालु इस बावली में स्नान करते हैं। लोक विश्वास है कि जो व्यक्ति इस बावली में स्नान करता है वह शारीरिक और मानसिक व्याधियों से मुक्ति पाता है। इस बावली की उतरी पीठिका में बाबा लौण्डना की भव्य मूर्ति जड़ित है। कई मूतियों में बाबा लौण्डना को हाथ में धनुष पकड़े हुए भी अंकित किया गया है।

लोक मान्यता है कि बाबा लौण्डना नाग काल में ऊधमपुर क्षेत्र का एक शक्ति शाली योद्धा था। उस का एक भाई 'बोला' और एक बहन 'चीची' भी थी। दोनों भाईयों में किसी कारण युद्ध हुआ जिसमें 'बोला' मारा गया। 'चीची' का मंदिर निकटस्थ पहाड़ी पर बना है।

लौण्डना बाबा की बावली में बड़ी संख्या में चर्म रोगी और बांझ महिलाएँ भी स्नान करने आती हैं। जिन महिलाओं का गर्भ में भ्रूण गिर जाए वे भी इस बावली में स्नान करने आती हैं। इस बावली के निकट ही एक और छोटी बावली है। कई श्रद्धालु उस बावली में स्नान करने के बाद देवता की मंडी में जाते हैं। देवता की मंडी बावली के निकट ही स्थित है। इस में नाग देवता के कई पुरावशेष द्रष्टव्य हैं।

जिस स्थान में यह बावली है उसे रठियान कहते हैं।

खोलड बावली (खोलड बाँ)

यह बावली 'कांगलु दी करलाई' में अवस्थित है। इस का एक नाम 'बावे दी बाँ' भी है। कई लोग इसे करलाई की बावली भी कहते हैं। यह बावली मंदिर परिसर के भीतर है, अत: इस का उपयोग श्रद्धालु

देव पूजा के लिए भी करते हैं।

इस बावली का उल्लेख डा. अशोक जेरथ ने अपनी पुस्तक फोक-आर्ट ऑफ डुग्गर में भी किया है। यह बावली सुन्दर और अलंकृत मूर्तियों के लिए भी प्रसिद्ध रही है।

सड़क से कुछेक सोपान उतरने के पश्चात् दुग्धाधारी मंदिर के पार्श्व में इस बावली का अवलोकन किया जा सकता है। यह बावली तक्षित प्रस्तर शिलाओं से निर्मित है। इस का वास्तु विन्यास अर्द्ध पहाड़ी शैली में है। इस बावली में जो मूर्तियाँ संस्थापित हैं, उन का क्रमांक इस प्रकार है :

पहली : अलंकृत प्रस्तर शिला जिस पर एक पता तक्षित है।
दूसरी : अश्वारूढ़ एक वीर योद्धा की मूर्ति
तीसरी : लोकदेवी की छोटी मूर्ति
चौथी : पालकी पर सवार नायिका की मूर्ति
5वी : शिव की मूर्ति
6वीं : हनुमाान की मूर्ति
7वीं : मत्स्यावतार की मूर्ति
8वीं : एक किशोर की मूर्ति
9वी : पालकी पर सवार एक नायिका की मूर्ति, पालकी को दो कहार उठाए हुए हैं। नाायिका के पीछे घुड़-सवार
10वीं : शिव-पार्वती और गणेश की मूर्ति
11वीं : अश्वोराही की मूर्ति
12वीं : माता-पिता को बैंगी पर बैठा कर यात्रा करते श्रवण कुमार की मूर्ति

यह बावली दर्शनीय हैं।

रम्बल सूलाह की बावली

यह बावली जखैनी पंचायत के अन्तर्गत राष्ट्रीय राज मार्ग से अनुमानतः तीस मीटर की दूरी पर शारदा पहाड़ी के दामन में निर्मित है। इस बावली के पूर्व में नव निर्मित मस्जिद तथा जखैनी पार्क अवस्थित

है। बावली तक पहुँचने के लिए एक कच्ची पगडंडी बनी है।

बावली परिसर में एक प्राचीन पीपल का वृक्ष और एक छोटा शिव मंदिर भी है।

यह बावली पूर्वोन्मुखी है। इस के तीन और जो अट्टारिकाएँ बनी हैं उनकी पीठिकाओं में मूर्तियाँ सुसज्जित हैं। यह बावली वर्गाकार है। इस की प्रत्येक भुजा डेढ़ मीटर है।

पंचायत विभाग द्वारा इन मूर्तियों को मूल स्थान से हटाने के कारण ये अब इधर-उधर बिखरी पड़ी हैं पंचायत-विभाग ने बावली का नव निर्माण करते समय बावली की वास्तुकला का ध्यान नहीं रखा है।

इस बावली में अब केवल तेरह ही मूर्तियाँ द्रष्टव्य हैं। इन मर्तियों में कई मूर्तियाँ अति प्राचीन हैं और उन का स्वरूप विकृत हो चुका है। जो मूर्तियाँ द्रष्टव्य हैं उनमें दक्षिण की पीठिका में मूर्तियों को दो पंक्तियों में रखा गया है। पहली पंक्ति में पहली मूर्ति विकृत है। दूसरी मूर्ति में सिंहासनारूढ़ एक देवता को बैठे हुए दिखाया गया है। उसके दोनों ओर दो परिचारिकाएँ अंकित हैं। तीसरी मूर्ति एक अश्वारोही की है। चौथी मूर्ति सम्भवतः नायिका की रही होगी। यह मूर्ति अब विकृत हो चुकी है। पाँचवीं मूर्ति में एक देवता को सिंहसनारूढ़ दिखाया गया है। उसके दोनों ओर महिला परिचायिकाएँ तक्षित हैं। छटी मूर्ति एक शिशु के साथ एक महिला की है।

बावली की उतरी दीवार में भी चार मूर्तियाँ शोभायमान हैं। पहली मूर्ति किसी लोक देवता की है। दूसरी मूर्ति अश्वारोही युद्धवीर की है। तीसरी मूर्ति किसी देवी की है और चौथी मूर्ति भी किसी देवी-देवता की ही है।

बावली की पश्चिमी दीवार में तीन मूर्तियाँ संस्थापित हैं। पहली मूर्ति एक अश्वारोही की है। दूसरी मूर्ति नायिका की है और तीसरी मूर्ति विकृत है।

पुर्नोद्धार के बावजूद यह बावली एक खंडहर की भांति दिखाई देती है।

सनसू की बावली

नागदेवता सनसू को समर्पित यह अलंकृत बावली ऊधमपुर के पश्चिम में बिरमां पुल के निकट अवस्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग से जो सड़क क्रिमची-पंचैरी की ओर जाती है यह बावली उस के उतर में है।

इस बावली में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस की शिलाएँ जिन शिल्पकारों ने तक्षित की हैं, वे स्थानीय हैं।

बावली सड़क के साथ ही है, अतः पैदल या वाहन से यहाँ तक पहुँचा जा सकता है।

इस बावली के दक्षिण और पश्चिम में जो ऊँची-ऊँची अट्टारिकाएँ खड़ी हैं, वे तक्षित शिलाओं, सुन्दर मूर्तियों तथा सुदृढ़ शिलाखंडों से निर्मित हैं। बावली वर्गाकार है और यह अनुमानतः छह मीटर क्षेत्र में परिसीमित है।

यह बावली सेना शिविर के निकट है, अतः यह प्रत्येक दृष्टि से सुरक्षित है। बावली में प्रवेश के लिए जो मार्ग बना है वह उतरोन्मुख है। बावली में जड़ित मूर्तियों में सबसे आकर्षक मूर्ति नाग देवता 'सनसू' की है। स्थानीय लोगों में देवता के प्रति पूर्ण-आस्था है, अतः वे लोक विधि से देवता का बावली के जल से अभिषेक करते हैं।

इस बावली का जल अति निर्मित और स्वादिष्ट है, अतः जो यात्री पैदल-यात्रा करते हैं, वे इस बावली के शीतल जल से अपनी प्यास बुझाते हैं।

इस बावली के संरक्षण की अति आवश्यकता है। पंचायत-विभाग को इस बावली का पुर्नोद्धार करना चाहिए।

सरमैड़ी की बावली

इस बावली का एक नाम 'रानी की बावली' भी है। यह कलात्मक बावली ऊधमपुर के पश्चिम में दस किलोमीटर की दूरी पर सरमैड़ी गाँव में अवस्थित है।

यह गाँव ऊधमपुर क्रिमची सड़क पर बिरमां पुल से अनुमानतः

चार किलोमीटर दूर है। गाँव तक पहुँचने के लिए एक मार्ग पैदल और दूसरा सड़क से है। बावली तक वाहन सेवा उपलब्ध है।

यह बावली आधा कनाल भूखंड में परिसीमित है। बावली परिसर में एक शिव मंदिर भी निर्मित है। गाँववासी सबसे पहले बावली में स्नान करते हैं तदुपरान्त वे भगवान शिव के मंदिर में जाते हैं। लोक आस्था मंदिर और बावली से जुड़ी हुई है।

बावली स्थापत्य : यह बावली वर्गाकार है। इस की प्रत्येक भुजा 8 मी. x 8 मी. के लगभग है। बावली भूमितल से बहुत नीचे है। अतः बावली से जल ग्रहण करने के लिए गाँव वासियों को सीढ़ियाँ उतर कर नीचे जाना पड़ता है। जहाँ सीढ़ियाँ समाप्त होती हैं, वहाँ एक तोरण सा बना हुआ है। इस तोरण के स्तम्भ एक मीटर के लगभग ऊँचे हैं। गाँव की महिलाएँ सीढ़ियाँ उतरकर जब घड़े उठा कर नीचे जाती थीं तो वे तोरण के निकट रूक जाती थीं। फिर एक-एक के क्रम से घड़ों में जल भरती थीं।

यह बावली सुरक्षा की दृष्टि से चारों ओर से दीवारगिर से घिरी हुई है। दीवारगिर की दूसरी ओर अट्टारिकाएँ बनी हैं जिनमें बैठकर गाँव की महिलाएँ तथा पुरूष गप्प-छप्प भी करते थे।

इस बावली का मुख्य-भाग दक्षिणोन्मुख है।

शिलालेख

इस बावली की मुख्य अट्टारिका में एक शिलालेख जड़ित है जो दो भाषाओं में है। देव नागरी में लिखित शिलालेख की शब्दावली इस प्रकार है :

श्री रघुनाथ ही सहाय

हर खास अवाम की सेवा में बाजिह होवे कि तहसील ऊधमपुर में मौजह सरमैड़ी और उसके मुतलेयात देहात में पानी की कमी की वजह से वाशिन्दगान देहात मजकोरा की तकलीफ को महसूस फरमा कर स्वर्गवासी जनरल सरकार राजा अमर सिंह जी बहादुर की रानी

श्रीमती भतियाली जी ने दिली भाव से इस बावली की तामीर करवा कर वक्फ 24 बैसाख 1995 विक्रमी (तदानुसार सन 1959 ई) को धर्म शास्त्रों के मुताबिक मोक्ष-प्रतिष्ठा करवा कर इस बावली को रफाग आम के लिए परमान्त के अर्पण किया।

रानी भतियाली : रानी भतियाली जम्मू व कश्मीर के महाराजा हरि सिंह (1926 - 1948 ई) की माताश्री थीं। वे महाराजा प्रताप सिंह (1885-1925 ई) के छोटे भाई राजा अमर की पत्नी थीं

वे भूति राजवंश की बेटी थीं। उनके पिता का नाम राजा प्रताप सिंह था। वे भूति के अन्तिम राजा थे। उनके तीन पुत्र व एक पुत्री थी। उनकी जागीर जम्मू के निकट मल्हाड़ी में थी। उन्होंने अपनी इकलौती बेटी का विवाह राजा अमर सिंह से किया था।

सरमैड़ी भूति राज्य का कभी एक भाग था। रानी को अपनी जन्म भूमि से बहुत प्रेम था। अत: उसने अपने मायके के लोगों के कल्याण के लिए इस बावली और शिव मंदिर का निर्माण करवाया।

यह बावली अपने मूल रूप में आज भी देखी जा सकती है। इस का निर्माण जिन शिल्पकारों ने किया है, नि:सदेह वे अपनी कला में दक्ष थे।

पतला गाँव की बावलियाँ

ये बावलियाँ पतला गाँव में स्थित मेला का बाग में अवस्थित हैं। मेला का बाग सरमैड़ी से अढ़ाई किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम की ओर स्थित है। यह बाग छायादार वृक्षों से आच्छादित है। इसी बाग में शिलाखंडों से निर्मित पाँच सुन्दर बावलियाँ हैं जो पर्यटकों का ध्यान भर-बस अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

इन बावलियों तक पहुँचने के लिए एक मार्ग चक्क रक्वाल से भी जाता है। चक्क रक्वाल से ये बावलियाँ तीन किलोमीटर के लगभग पूर्व में स्थित हैं।

स्थापत्य की दृष्टि से बावलियाँ सामान्य कोटि की हैं। इस में

प्रयुक्त शिलाखंड भी स्थानीय लगते हैं। किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से इन बावलियों का विशेष महत्व है। जिन दिनों सड़कें नहीं थीं तब ऊधमपुर से यात्री कटड़ा माता वैष्णो देवी इसी मार्ग से जाते थे। वे इन बावलियों की अट्टारिकाओं में बैठ कर कुछ पल विश्राम करते, साथ लाया खाना खाते और फिर अपना थैला उठाकर चक्क रक्वाल, के मार्ग से थाती से होते सुन्दरानी आते। सुन्दरानी से झज्झर नाला पार करके वे पैंथल से होते हुए कटड़ा पहुँचते। यह मार्ग आज भी बहुत रमणीक है।

स्योट और राजपुरा के दुर्ग भी इन्हीं बावलियों के निकट हैं, अतः इन बावलियों का ऐतिहासिक महत्व भी रहा है।

पतला गाँव में मेला बाग के भीतर केवल पाँच ही बावलियाँ आज द्रष्टव्य हैं। लोक श्रुति है कि कभी यहाँ कई और भी बावलियाँ थीं। इन बावलियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

बावली-एक

यह बावली वर्गाकार है। यह तीनों ओर से एक मीटर ऊँची दीवार से घिरी हुई है। इस का मुख भाग दक्षिण की ओर है। इस की अट्टारिकाएँ छोटी-छोटी प्रस्तर-शिलाओं से बनी हैं। इस में जल लबालब भरा रहता है। जो जल बावली के बाहर उछलता है, वह निकट के खेतों में चला जाता है।

बावली-दो

यह बावली भी वर्गाकार है। इस की प्रत्येक भुजा 1.5 मी. x 1.5 मी. है। इस बावली की छह अट्टारिकाएँ हैं। इन में जो शिलाखंड जड़ित हैं उन पर हलका तक्षण कार्य हुआ है। इस बावली की दक्षिणी दीवार में मस्त्य अवतार, भगवान मूरलीधर, गणेश, काली माता, हनुमान और नाग की मूर्तियाँ हैं। इस की पश्चिम दीवार में बरहावतार लोक नायकों तथा लोक देवियों की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। इस बावली की कई शिलाओं पर सुन्दर अलंकरण बने हैं जो देखने में बहुत ही आकर्षक हैं।

यह इस बाग की मुख्य बावली है।

बावली-तीन

यह बावली वर्गाकार है। इस की प्रत्येक भुजा 1.5 X 1.5 मीटर है। इस में जो जल धारा नीचे गिरती है, वह सिंह मुख से होकर गुजरती है। इस बावली का सिंह मुख्य शिला को कुरेद कर बनाया गया है जो देखने में अति आकर्षक है।

इस बावली की जल धारा जो उछल कर बाहर निकलती है, वह बाग में स्थित वृक्षों, पौधों को सिंचित करती है। जिस से वे हरे-भरे रहते हैं।

बावली-चार

यह बावली आयताकार है। इस की लम्बाई अनुमानतः तीन मीटर और चौड़ाई दो मीटर है। इस बावली की मुख्य अट्टारिका में चर्तुभज देवी की भव्य और आकर्षक मूर्ति जड़ित है। यह मूर्ति कला की अद्‌भुत अभिव्यक्ति लगती है। जिस शिल्पकार ने इस मूर्ति को तक्षित किया है वह निःसंदेह कला-विशारद रहा होगा। देवी जिस सिंहासन पर आरूढ़ है, वह अलंकृत है।

बावली-पाँच

यह सामान्य कोटि की बावली है। इस बावली की अट्टारिकाओं में एक ओर हनुमान की मूर्ति प्रदर्शित है तो दूसरी ओर लोक-देवी देवताओं की मूर्तियाँ सुसज्जित हैं। ये सभी मूर्तियाँ बलुआ पत्थर पर बनी हैं। इन बावलियों के निकट ही शिव मंदिर निर्मित है। मंदिर के गर्भगृह में शिव पार्वती की युग्म मूर्ति संस्थापित हैं।

शिलालेख

मुख्य बावली की अट्टारिका में एक शिला-लेख जड़ित है। यह शिलालेख जिस शिला पट्ट पर उत्कीर्ण है, वह 15फीट लम्बा और 12 फीट चौड़ा है।

शिलालेख में पाँच पंक्तियाँ देवनागरी में हैं और पाँच ही पंक्तियाँ डोगरी में हैं। फारसी में भी इस में लिखा है।

शिलालेख में जो शब्द देवनागरी में उत्कीर्ण हैं, वे इस प्रकार हैं :

ओं श्री गणेशाय नम:

ओं

यह बावली पंडित देवाराम तथा गोविन्दराम बन्नी धर्मार्थ वास्ते बनाया है। संवत श्री राजा विक्रमादित्य 1922

फारसी में इस का देवनागरी रूपान्तरण इस प्रकार है :

यह इमारत बावली पंडित देवी राम, गोविन्दराम साकन हाल जम्मू तहमीर करवाई

महाराजा साह रणबीर सिंह

बहादुर बाली जम्मू-कश्मीर।

व्याख्या : इस बावली का निर्माण जम्मू निवासी पंडित देवी राम गोविन्द राम ने वि. सम्वत 1922 (तदानुसार सन 1866 ई.) में जम्मू कश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह के शासनकाल में जन-कल्याण की भावना से बरवाया।

माना जाता है कि जम्मू निवासी पंडित देवी राम, गोविन्दराम का कोई न कोई सम्बन्ध इस गाँव से रहा होगा। तभी तो उन्होंने इस गाँव में इन भव्य बावलियों, शिव मंदिर और विश्रामालय का निर्माण करवाया।

विश्रामालय तो अब नष्ट हो चुका है किन्तु उसके कुछेक पुरावशेष इस बाग में आज भी द्रष्टव्य हैं।

यह स्थल किसी समय एक सांस्कृतिक केन्द्र था किन्तु अब नये युग में सड़कों के विस्तारीकरण से यह उपेक्षित है। कोई भी पर्यटक यहाँ नहीं आता है।

इस स्थल के संरक्षण की आवश्यकता है।

फ्लाटा की बावली

यह भव्य, विलक्षण एवं अलंकृत बावली जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय-मार्ग पर स्थित फ्लाटा गाँव में सड़क के नीचे नव निर्मित मंदिर परिसर में अवस्थित है। यह गाँव जम्मू के पूर्वोत्तर में अनुमानत: पच्चास किलोमीटर की दूरी पर दुद्धर और नीली नाला संगम स्थल के निकट स्थित है। सड़क से बावली तक पहुँचने के लिए सोपान पथ निर्मित है। सोपानों की कुल संख्या बारह है।

उतरोन्मुख यह बावली वर्गाकार है। इस की प्रत्येक भुजा अनुमानत: सवा दो मीटर (7.5' x 7.5') है। बावली तीन ओर से सुदृढ़ अट्टारिकाओं से सुज्जित है। बावली के निचले भाग में भी जो प्रस्तर शिलाओं से छोटी-छोटी अट्टारिकाएँ बनी हैं, वे भी देखने में कलात्मक लगती है। इस बावली का जल स्वच्छ और निर्मल है।

बावली का जल जो बाहर को उछलता है वह नीचे खेतों की ओर चला जाता है। इस का उपयोग सिंचाई के लिए किया जा सकता है।

इस बावली की मुख्य अट्टारिका में एक शिलालेख जड़ित है। यह शिलालेख देव नागरी और फारसी लिपि में लिखित है। यह शिलालेख पठनीय है। इस में लिखा है :

इस बावली का निर्माण प्रेमदासी खिदमत गारा महाराणी साहिबा जम्मू-कश्मीर ने वि. सम्वत् 1980 (तदानुसार सन 1924) में करवाया।

इस शिलालेख से सुस्पष्ट है कि इस बावली का निर्माण महारानी (शायद महारानी चाड़की) की दासी जिस का नाम प्रेम दासी था, ने वि. सम्वत् 1980 तदानुसार सन 1924 ई. में करवाया। यह माना जा सकता है कि यह बावली लगभग सौ वर्ष पुरानी है।

प्रेम दासी के विषय में कहा जाता है कि वह इसी क्षेत्र की बेटी थी, उसने राज दरबार में रानी की सेवा से जो धन कमाया वह जनहित में यहाँ खर्च किया।

इस बावली में जो विशिष्टताएँ हैं उन में एक यह है कि इस की अट्टारिकाओं की पीठिकाएँ अति सुन्दर मूर्तियों से अलंकृत हैं। इन मूर्तियों की संख्या 24 है। इन मूर्तियों का विवरण इस प्रकार है :

पहली : हाथ जोड़ कर विश्राम मुद्रा में तक्षित एक देवता की मूर्ति
दूसरी : भक्तों से घिरे शिव पार्वती की मूर्ति
तीसरी : चार शिष्यों के साथ खड़े महात्मा बुद्ध की मूर्ति
चौथी : भगवान विष्णु की मूर्ति
5वीं : एक चर्तुभुज देवता की मूर्ति
6वीं : स्वामी दपात्रेय की मूर्ति
7वीं : भगवान बराह की मूर्ति
8वीं : महातमा बुद्ध की मूर्ति
9वीं : उतिष्ठावस्था में अंकित लोक देवताओं की मूर्ति
10वीं : गाय भक्त की मूर्ति
11वीं : राम-सीता और लक्ष्मण की मूर्ति
12वीं : कश्यप-अवतार की मूर्ति
13वीं : गणेश की मूर्ति
14वीं : दो शिष्यों के साथ खड़े एक गुरु की मूर्ति
15वीं : एक शिष्य के साथ खड़े गुरु की मूर्ति
16वीं : हनुमान की मूर्ति
17वीं : एक घुड़सवार सामंत की मूर्ति
18वीं : तीन देवताओं की मूर्ति
19वीं : ब्रह्मा की मूर्ति
20वीं : मत्स्यावतार की मूर्ति
21वीं : गरूढ़ की मूर्ति
22वीं : मल्ल युद्ध करते दो पहलवानों की मूर्ति
23वीं : एक गुरु की शिष्यों के साथ मूर्ति
24वीं : दो लोकदेवताओं की मूर्ति

ये मूर्तियाँ बलुआ पत्थर को उकेर कर बनाई गई हैं। ये मूर्तियाँ 1'.25" x 1' आकार में हैं।

प्रसिद्ध कलाविद् डा. अशोक जेरथ ने भी इस बावली का उल्लेख अपनी पुस्तक फोक आर्ट आफ डुग्गर में सविस्तार किया है।

गोपालपुर की बावली

यह बावली बड़ौला के पूर्व में सुनाड़ी गाँव के निकट स्थित ऐतिहासिक स्थल गोपालपुर में अवस्थित है। गोपालपुर एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल है। इस स्थान का विकास राजा धनसार देव के पुत्र गोपाल देव ने एक राजधानी के रूप में किया। स्थानीय लोगों के अनुसार किसी समय गोपालपुर पहाड़ी के नीचे एक सौ आठ बावलियाँ और चश्मे थे किन्तु भूस्खलन के कारण धीरे-धीरे भूमिगत होते गए। वर्तमान बावली भी इस स्थान का उत्खनन करते समय प्रकट हुई।

यह बावली अब मूल स्थिति में नहीं है। इस का पुर्नोद्धार तो किया गया है किन्तु वास्तु-शिल्प से छेड़खानी नहीं की गई है। उतरोन्मुख यह बावली शीतल जल के साथ पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध है। वास्तु शिल्प की दृष्टि से यह बावली अर्द्ध पहाड़ी शैली में है। इस बावली की अट्टारिकाएँ तीनों ओर से बावली को घेरे हुए हैं। बावली के बाहर भी प्रस्तर-शिलाएँ जडित हैं। इस से बाहर का गंदा पानी इस में नहीं गिरता है और यह बावली स्वच्छ रहती है।

एक जनश्रुति के अनुसार इस बावली का निर्माण राजा गोपालदेव ने आज से लगभग डेढ सौ वर्ष पूर्व जनहित में किया। उसके शासनकाल में धीवर इस बावली का जल मटकों में भरकर महलों में पहुँचाते थे। इस बावली से बीस मीटर ऊपर गोपालपुर दुर्ग के पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। इन्हीं अवशेषों की शिलाओं से स्थानीय लोगों ने बावली के निकट ही एक शक्ति मंदिर का निर्माण किया है। यह बावली दर्शनीय है।

जिज्ज कोटली की बावली

दुद्धर नदी के पूर्वोत्तर तट पर बसे थाती क्षेत्र के साथ ही जिज्ज राजपूतों का एक गाँव है जिसे जिज्ज कोटली नाम से अभिहित किया जाता है। इस गाँव में एक अति सुन्दर बावली है जिसे स्थानीय लोग

'जिज्जों की बावली' भी कहते हैं। यह बावली देखने में अति सुन्दर है। पश्चिमोन्मुख इस बावली की अट्टारिकाएँ अलंकृत शिलाखंडों से आवेष्टित हैं इस बावली के सौंदर्य का एक मुख कारण इस में जड़ित पक्षियों की मूर्तियाँ हैं। प्राय: बुलबालता क्षेत्र में ऐसी बावलियाँ नहीं हैं। ऐसा लगता है कि इस बावली के शिल्पकार बाहर के रहे होंगे।

यह बावली अपने मूल रूप में आज भी द्रष्टव्य है। इस बावली से जो जल बाहर को उछलता है, उसका उपयोग सब्जियोंकी सिंचाई के लिए किया जाता है।

बटैंक की बावली

यह एक कलात्मक और ऐतिहासिक बावली है। यह पक्की बावली है। कटड़ा-वैष्णोदेवी और पैंथल से जो यात्री पैदल पुराने मार्ग से ऊधमपुर आते थे वे अल्पकाल के लिए इस बावली की अट्टारिका में बैठ कर विश्राम करते थे। बटैंक पहुँचने का अर्थ था ऊधमपुर के निकट पहुँचना।

इस बावली की अट्टारिकाएँ अलंकृत हैं। ये स्थानीय देवी-देवताओं और पौराणिक देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित हैं। बावली के साथ ही एक नागर शैली का मंदिर भी है। कहा जाता है कि किसी रानी ने लोक कल्याण की भावना से इस बावली और मंदिर का निर्माण करवाया।

डा. अशोक जेरथ ने भी अपनी पुस्तक फोक आर्ट ऑफ डुग्गर में इस बावली का भी उल्लेख किया है।

इस बावली की पीठिकाओं में प्रदर्शित मूर्तियाँ भी दर्शनीय हैं। इन मूर्तियों का क्रमांक इस प्रकार है :

पहली : मूरली बजाते श्री कृष्ण की मूर्ति
दूसरी : अलंकृत शिला
तीसरी : गरूढ़ की मूर्ति
चौथी : एक पावन वृक्ष की मूर्ति
5वी : ब्रह्मा की मूर्ति। मूर्ति में ब्रह्मा के हाथों में पावनग्रंथ है।
6वी : अलंकरण

7वीं : एक घुड़सवार की मूर्ति। इस मूर्ति में घुड़सवार के दायें हाथ में 'बाज' दिखाया गया है।

डा. अशोक जेरथ के अनुसार यह मूर्ति मियां डीडो की हो सकती है। मियां डीडो एक क्रांतिकारी योद्धा था। वह पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह के उस आदेश की धज्जियाँ उड़ना चाहता था जिसमें उन्होंने उन के अतिरिक्त राज्य के किसी भी नागरिक को 'बाज' पालने की अनुमति नहीं थी।

कुछ स्थानीय लोगों का मत है कि यह मूर्ति गुरु गोविन्द सिंह की भी हो सकती है। गुरु गोविन्द सिंह त्रिकूट देवी के दर्शनार्थ अनुमानत: सन 1692 ई. में शिवालिक क्षेत्र में आए तो थे किन्तु वे इस ओर भी आए थे, इस का उल्लेख किसी पुस्तक में नहीं मिलता।

बटैंक की बावली को 'रानी की बावली' भी कहा जाता है। इस बावली का निर्माण किस रानी ने कब करवाया था इस का कोई उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु अनुमान यह लगाया जा सकता है कि यह बावली रानी रक्वाली की निर्मिति हो सकती हैं। रानी रक्वाली का मायका इसी क्षेत्र में था, अत: रानी का लगाव इस क्षेत्र से था।

केरणी पंतों की बावली (बाँ)

यह बावली बटांक बावली क्षेत्र में ही अवस्थित है। कहा जाता है कि इस बावली का निर्माण ब्राह्मणों की एक उपशाखा केरणी पंडितों के किसी पूर्वज ने लोक कल्याण की भावना से करवाया। पहले जो पगडंडी ऊधमपुर से कटड़ा की ओर जाती थी यह बावली उसी मार्ग पर स्थित थी। बावली का जल अति शीतल था, अत: यात्री यहाँ कुछ समय के लिए विश्राम करते और इस बावली के जल से अपनी प्यास बुझाते।

यह बावली शिलाखंडों से मंडित है। इस की अट्टारिकाओं में जो मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं, वे लोक आस्था का प्रतीक हैं। इन मूर्तियों की संख्या दस है। इन का विवरण निम्न है।

पहली : शिला पर बना सुन्दर अलंकरण
दूसरी : नाग मूर्ति। इस मूर्ति में नाग की जिह्वा बाहर की ओर निकली है।
तीसरी : अलंकरण जो शिला पर उकेरा गया है।
चौथी : गणेश की मूर्ति
5वीं : शतनानन अर्थात छह मुखों की मूर्ति
6वीं : सेनानायक की मूर्ति
7वीं : पालकी में सवार रानी की मूर्ति। पालकी को दो कहारों ने उठाया है।
8वीं बावली निर्माता ब्राह्मण की मूर्ति
9वीं हनुमान की मूर्ति
10वीं अलंकरण

यह बावली दर्शनीय है। इस बावली का उल्लेख डा. अशोक जेरथ ने भी अपनी पुस्तक फोक आर्ट ऑफ डुग्गर में किया है।

कलिठियों की बावली (बाँ)

डा. अशोक जेरथ की पुस्तक फोर्ट आर्ट ऑफ डुग्गर के अनुसार यह बलबालतता क्षेत्र की विशाल और भव्य बावलियों में एक है। यह बावली 25' x 20' (अनुमानत: 6 मी. x 3 मी.) वर्ग क्षेत्र में परिसीमित है। इस की अट्टारिकाओं में जो अलंकृत पीठिकाएँ बनी हैं। उनमें 24 मूर्तियाँ स्थापित हैं जो कला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। इन मूर्तियों का विवरण निम्न है :

1. हाथी पर सवार सामंत। उसके छह अंगरक्षक भी साथ हैं।
2 पालकी में सवार नायिका। उसके साथ घुड़सवार नायक।
3. घुड़सवार नायक
4. पालकी में सवार नायिका
5. घोड़े पर सवार सामंत।
6. हुक्का पीते सामंत की मूर्ति।

बावली की दूसरी पीठिका में निम्न मूर्तियाँ सुसज्जित हैं।

1. धावक की मूर्ति
2. सामंत की मूर्ति
3. पालकी में बैठी नायिका
4. घुड़सवार नायक
5. पालकी में सवार रानी
6. मत्स्य अवतार की मूर्ति
7. शेषनाग की मूर्ति जो शैय्या में विश्रामरत हैं
8. ब्रह्मा की मूर्ति
9. नागराज की मूर्ति
10. हनुमान की मूर्ति

इस की तीसरी अट्टारिका में निम्न सात मूर्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

1. गणेश की मूर्ति
2. राम सीता और लक्ष्मण की मूर्ति
3. ब्रह्मा जी की मूर्ति
4. एक व्यक्ति की दो शिशुओं के साथ मूर्ति
5. ब्रह्मा जी की मूर्ति
6. भैंस पर सवार एक दम्पति की मूर्ति
7. सूर्य की मूर्ति

वास्तुकला की दृष्टि से यह सामान्य कोटि की बावली है।

मनगोत्रों की बावली

यह एक छोटी सी बावली है। यह बावली 10 फुट लम्बी और सात फुट चौड़ी (अनुमानत: 3 मी. x 2 मी.) है। इस बावली के ललाट-भाग में नाग मूर्ति जड़ित है जो कला की दृष्टि से दर्शनीय है। इस में जड़ित गणेश की मूर्ति भी कला की दृष्टि से श्रेष्ठ है। इस बावली में एक मूर्ति ऐसी भी है जिसमें एक व्यक्ति को एक शिशु के साथ अंकित किया गया है। ये सभी मूर्तियाँ बलुआ प्रस्तर शिलाओं पर तक्षित हैं। इन्हें स्थानीय बटैहड़ों (प्रस्तर-शिल्पकार) ने बड़ी दक्षता के साथ तक्षित किया है।

इन मूर्तियों में देवी-देवताओं के साथ-साथ स्थानीय सामंतों तथा नायक-नायिकओं की मूर्तियाँ भी संस्थापित हैं। इन मूर्तियों में स्थानीय संस्कृति मुखरिक है।

सालन बावली

डुग्गर प्रदेश की अति सुन्दर बावलियों में सालन-बावली की परिगणना भी की जाती है। वास्तु विन्यास की दृष्टि से यह बेजोड़ बावली है।

पूर्वोन्मुख इस बावली का घेरा अनुमानतः बीस मीटर के लगभग है। यह एक वर्गाकार बावली है। इस की प्रत्येक भुजा नौ मीटर के लगभग है।

यह बावली दुद्धर नदी में उपलब्ध बलुआ शिलाखंडों से बनी है। शिल्पकारों ने इस बावली की एक-एक शिला को जिस कुशलता से तराशा है उससे यह एक सजीव बावली लगती है।

यह बावली ऊधमपुर के पश्चिम में बड़ौला गाँव के साथ दुद्धर उप नदी की तटीय पठार पर निर्मित है। बावली तक वाहन सेवा उपलब्ध है। प्रायः जो पर्यटक अपनी गाड़ियों में सवार हो कर आते हैं। वे सीधे बावली तक पहुँच जाते हैं। बड़ौला ऊधमपुर से अनुमानतः 12 कि.मी. दूर है।

जिस स्थान पर यह बावली स्थित है, वहाँ का प्राकृतिक परिदृश्य अति रमणीक और मनमोहक है। बावली के साथ ही खुले खेत हैं। जो पानी इस बावली से बाहर आता है, वह खेतों में चला जाता है। इससे किसानों को बड़ा लाभ पहुँचता है।

बावली के निकट मेघों की एक बस्ती है। वे इस बावली की स्वच्छता का पूरा ध्यान रखते हैं। इस बस्ती के मास्टर कुलदीप चन्द्र भगत के अनुसार गर्मियों में इस बावली में मेला सा लग जाता है। आस-पास के गाँवों से सैंकड़ों की संख्या में ग्रामवासी इस बावली का जल लेने आते हैं और वे घड़ों में जल भर कर अपने-अपने गाँवों की ओर प्रस्थान करते हैं।

इस बावली के निर्माता से संबंधित लोगों के मत भिन्न-भिन्न हैं। स्थानीय मास्टर कुलदीप चन्द्र भगत के अनुसार इस बावली का निर्माण स्यालकोट के राजा सालवाहन ने करवाया। राजा सालवाहन का समय दसवीं सदी है। यह बावली इतनी प्राचीन नहीं है, अतः यह मत भ्रामक है।

दूसरा मत यह है कि किसी रानी ने इस बावली का निर्माण करवाया। इसी कारण इस बावली का एक नाम रानी की बावली भी है। वह रानी कौन थी? एक मत यह है कि वह राजा धनसार देव की पत्नी थी। दूसरा मत यह है कि वह रानी धनसार देव की बहू थी। वैसे धनसार देव के नाम से एक बावली 'सोढन' में है। सम्भव है कि उसी के परिवार की किसी रानी ने इस बावली का निर्माण करवाया होगा।

डा. अशोक जेरथ के अनुसार इस बावली का निर्माण दो स्थानीय लोगों ने करवाया जिनके नाम साला और लोनी थे। दोनों के नाम पर इस बावली को सालन कहा जाने लगा।

वैसे इस बावली का अवलोकन करने से लगता है कि यह बावली अढ़ाई-तीन सौ वर्ष पुरानी है। सम्भव है कि इस का निर्माण राजवंश के ही किसी सदस्य ने लोक कल्याण की भावना से करवाया होगा। इतनी भव्य बावली का निर्माण वैसे भी कोई राज परिवार का व्यक्ति या कोई धनाढ्य व्यक्ति ही करवा सकता है।

इस बावली की तीनों अट्टारिकाएँ देव मूर्तियों से सुसज्जित हैं। इस मूर्तियों की कुल संख्या 52 है। ये मूर्तियाँ बलुआ प्रस्तर शिलाओं को तक्षित करके बनाई गई हैं। इन मूर्तियों का विवरण निम्न है।

बायीं अट्टारिका में प्रतिष्ठित मूर्तियाँ

1. एक मानव की मूर्ति
2. नाग देवता की मूर्ति
3. महाकाली की मूर्ति
4. मत्स्यावतार की मूर्ति
5. एक धनुषधारी की मूर्ति

6. हनुमान की वृक्षारोपण करने की मूर्ति
7. एक धनुषधारी की मूर्ति
8. बाँसुरी बजाते भगवान कृष्ण की गोपियों के साथ मूर्ति
9. कश्यपावतार की मूर्ति
10. गणेश की मूर्ति
11. नन्दी पर आरूढ़ शिव पार्वती की मूर्ति
12. दैत्य का कटा सिर हाथ में उठाये युद्धवीर की मूर्ति
13. भगवान राम की धनुष के साथ मूर्ति
14. वराह-अवतार की मूर्ति

मध्य अट्टारिका में संस्थापित मूर्तियाँ

1. नृसिंह-अवतार की मूर्ति
2. ब्रह्मा की मूर्ति
3. पालकी पर सवार एक नायिका की मूर्ति
4. हाथ में ग्रंथ उठाये ब्रह्मा की मूर्ति
5. लोक देवता की मूर्ति
6. धनुष उठाये एक घुड़सवार सामंत की मूर्ति
7. हाथी पर सवार राजा की मूर्ति
8. गोपियों के साथ कृष्ण की मूर्ति
9. पीठ पर उठाये एक व्यक्ति को लेकर जाते हुए दूसरे व्यक्ति की मूर्ति
10. ध्वज उठा कर गमन करते युद्धवीर की मूर्ति
11. अश्वारूढ़ युद्धवीर की मूर्ति
12. पालकी पर बैठी रानी की मूर्ति
13. ध्वज उठाये एक सैनिक की मूर्ति
14. अश्वारोही युद्धवीर की मूर्ति
15. नाग देवता की मूर्ति
16. लोक देवी की मूर्ति

दायीं अट्टारिका में स्थापित मूर्तियाँ

1. धनुषधारी की मूर्ति

2. अश्वारोही की मूर्ति
3. विकृत
4. शिव-पार्वती की मूर्ति
5. धनुष बाण उठाये एक दम्पति की मूर्ति। इन के साथ एक बालक भी है।
6. पालकी पर सवार नायिका की मूर्ति
7. तलवार उठाये एक युद्धवीर की मूर्ति
8. पालकी पर सवार रानी की मूर्ति
9. अलंकरण
10. पवित्र ग्रंथ हाथ में उठाये ब्रह्मा की मूर्ति
11. खड़ग उठाये एक युद्धवीर की मूर्ति
12. एक अश्वारोही की मूर्ति

ललाट भाग में संस्थापित मूर्तियाँ

1. त्रिदेव (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) की मूर्ति
2. हनुमान की मूर्ति
3. काली नाग का मंथन करते कृष्ण की मूर्ति
4. सिंहारूढ़ दुर्गा की मूर्ति
5. हनुमान की मूर्ति
6. कुलदेव की मूर्ति
7. त्रिमूर्ति
8. कुलदेवता की मूर्ति

ललाट के ऊपरी भाग में प्रदर्शित मूर्तियाँ

1. अश्वारोही नायक की मूर्ति
2. पालकी पर सवार नायिका की मूर्ति

सालन बावली लगता है बलबालता क्षेत्र की सबसे विशाल ओर सुन्दर बावली है। यह बावली अनुमानतः बीस वर्ग मीटर क्षेत्र में परिसीमित है। इस की एक-एक शिला अलंकृत है। यह बावली आकार में एक छोटा सरोवर दिखाई देती है। इसका वास्तु-सौंदर्य अनुपम है।

इस बावली का जल अति निर्मल, स्वच्छ, स्वादिष्ट, रूविकार, पाचन शक्ति बढ़ाने वाला, क्षुदा और बुद्धि को बढ़ाने वाला है। शायद यही कारण है कि स्थानीय लोग इस बावली के जल का उपयोग आज भी अपने घरों में करते हैं।

जिब की बावलियाँ

जिब ऊधमपुर के पश्चिम में एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गाँव है। इस गाँव के दक्षिण में प्रवाहित नीली नाला के तटीय भाग में पाँच बावलियाँ हैं जबकि तीन छोटी बावलियाँ हैं। एक बावली में देव नागरी में लिखित एक शिलालेख भी है जिसमें बावली के निर्माता का नाम अंकित है। खोजू शाह के महल के पुरावशेष से जो मार्ग वनेश्वर मंदिर की ओर जाता है प्राय: ये सभी बावलियाँ उसी मार्ग के आगे पीछे हैं।

डा. अशोक जेरथ का मत है कि वनेश्वर मंदिर की बाह्य दीवार की पीठिका में जो मूर्तियाँ संस्थापित हैं वे भी किसी लुप्त बावली का अवशेष लगती है।

माना जाता है कि वनेश्वर मंदिर के निकट कोई बावली रही होगी जो भूस्खलन या किसी अन्य कारण से लुप्त हो गई है। अब उस बावली की मूर्तियों को मंदिर परिसर में संरक्षित किया गया है। ये मूर्तियाँ शिल्प और कला की दृष्टि से बलबालता की मूर्ति-कला शैली का अनुसरण करती प्रतीत होती है।

इन मूर्तियों का विवरण इस प्रकार है :

1. एक अश्वारोही की मूर्ति। मूर्ति में घोड़े के साथ एक व्यक्ति भी चित्रित है।
2. नंदी पर आरूढ़ शिव-पार्वती की मूर्ति
3. पालकी पर सवार एक नायिका की मूर्ति
4. हनुमान की मूर्ति
5. हाथ में पवित्र पुस्तक पकड़े ब्रह्मा की मूर्ति
6. भगवान कृष्ण सुभद्रा तथा बलराम की मूर्ति

इन मूर्तियों के मध्य-भाग में टाकरी में लिखित एक शिलालेख भी द्रष्टव्य है जिसे अभी तक पढा नहीं जा सका।

ये बावलियाँ जिब के प्राचीन बनेश्वर मंदिर के आस-पास हैं, अतः श्रद्धालु तथा स्थानीय लोग इन बावलियों का उपयोग करते हैं।

रानी की बावली (रानी बाँ) मगैनी

ऊधमपुर से अनुमानतः दस किलोमीटर दूर और गढ़ी के उतर-पूर्व में तीन किलोमीटर की दूरी पर भी एक विशाल बावली है जिसे स्थानीय लोग 'रानी बाँ' नाम से अभिहित करते हैं।

डा. अशोक जेरथ के अनुसार यह बावली तीस फुट (अनुमानतः साढे आठ मीटर) लम्बी और 20 फुट (साढे छह मीटर) चौड़ी है। इस बावली के तीनों ओर सुन्दर अट्टारिकाएँ हैं। इस बावली के ललाट भाग में जो नाग देवता की मूर्ति जड़ित है, वह दर्शनीय है। इस बावली की अधिकांश मूर्तियाँ लुप्त हैं। इस बावली का निर्माण एक जनश्रुति के अनुसार रानी रक्वाल ने गाँव के लोगों की प्यास बुझाने के लिए किया। रानी रक्वाल मगैनी गाँव के ही निकट चक्क रक्वाल से थी। एक अनुमान के अनुसार यह बावली डेढ़ सौ वर्ष पुरानी है। एक समय था जब यह बावली पानी से लबालब भरी रहती थी किन्तु अब यह सूख गई है। डा. अशोक जेरथ ने अपनी पुस्तक ' फोक आर्ट ऑफ डुग्गर' में इस बावली का उल्लेख करते हुए लिखा है कि इस बावली के पुर्नोद्धार के लिए स्थानीय लोगों की ओर से कोई प्रयास नहीं किया गया।

इस बावली के तक्षित शिलाखंडों तथा प्रस्तर शिलाओं का अवलोकन करने से लगता है कि यह बावली अपने मूल रूप में बहुत ही सुन्दर और आकर्षक रही होगी। इस बावली के निकट ही एक प्राचीन महल के पुरावशेष द्रष्टव्य हैं। जो पर्यटक इस ओर आते हैं वे इस स्थान का प्राकृतिक सौंदर्य देख कर बहुत ही प्रभावित होते हैं।

यह बावली हमारी अमूल्य धरोहर है इस का संरक्षण किया जाना चाहिए।

कालटा की बावली

यह बावली जिब के अन्तर्गत कालटा गाँव में एक जलधारा के पूर्वी तट पर निर्मित है। दक्षिणोन्मुख यह बावली अनुमानतः आठ मीटर घेरे में है। इस बावली के तीनों ओर शिलाखंडों से निर्मित अट्टारिकाएँ बनी हैं जो वास्तु-कला की दृष्टि से सामान्य हैं। बावली की मुख्य अट्टारिका में एक नाग मूर्ति जड़ित है। इसी मूर्ति को इस बावली का रक्षक माना जाता है।

बावली का जो पानी बाहर की ओर उछलता है वह नाले की ओर चला जाता है। इस बावली के इर्द-गिर्द खेत ही खेत हैं जिस कारण यह स्थान सर-सब्ज दिखाई देता है।

यह बावली जिस गाँव में स्थित है उसका ऐतिहासिक महत्व भी है। जम्मू नरेश महाराजा रणजीत देव ने सन 1751 ई. में बलबालता का क्षेत्र जागीर के रूप में अपने भाई धनसार देव को प्रदान किया तो उसने अपना महल इसी बावली के निकट निर्मित किया तब उस महल को राजा का महल नाम से अभिहित किया जाता था। अब वह महल धराशायी है, किन्तु उसके पुरावशेष बालनगर के निकट आज भी द्रष्टव्य हैं। इस बावली के निर्माण के विषय में कहा जाता है कि यह बलबाल-काल की निर्मिति है। इस बावली का जल आज भी निर्मल तथा पीने मे स्वादिष्ट है।

स्थानीय लोग इस बावली का उपयोग आज भी करते है। कहा जाता है कि इस बावली में स्थापित नाग देवता कभी-कभी स्थानीय लोगों को दर्शन भी देते हैं। जिस वर्ष नाग देवता के दर्शन होते हैं। उस वर्ष खेतों से उपज भरपूर होती है।

डबरैह की बावली

सांस्कृतिक महत्व की यह बावली ऊधमपुर के पश्चिम में ऊधमपुर-पंचैरी सड़क से कोई तीन सौ मीटर की दूरी पर डबरैह स्थान में राज महल के निकट एक प्राचीन वृक्ष के नीचे अवस्थित है।

पश्चिमोन्मुख इस बावली के पूर्वी-भाग में एक दीवार गिर तथा

उतरी और दक्षिणी भाग में दो सामान्य कोटि की पीठिकाएँ हैं। स्थानीय लोग प्रात: सांय इन पीठिकाओं में बैठ कर जल के घड़े भरने के उपरान्त गप्प-छप्प करते हैं। महिलाएँ भी इस बावली में जल भरने आती हैं तो वे भी कुछ पल यहाँ बैठ कर लोक गीत गुनगुनाती हैं।

इस बावली के निकट ही एक समतल मैदान है। उस मैदान में दक्षिण में एक लेटवां लम्बी चट्टान है। उस चट्टान को कुरेद कर साधकों ने एक बड़ी गुफा का निर्माण किया है। गुफा के भीतर मूर्ति रखने का स्थान तो बना है किन्तु मूर्ति गायब है।

इसी प्रकार इस बावली के पश्चिम में तीन सौ मीटर की दूरी पर सात छोटी-छोटी गुफाएँ द्रष्टव्य हैं जो साधकों की साधना के लिए बनाई गई लगती हैं। इन गुफाओं में तीन गुफाएँ बाहर और भीतर से अलंकृत हैं।

लगता है कि जिस स्थान पर यह बावली स्थित है वहाँ पहले कोई धार्मिक प्रतिष्ठान रहा होगा। सम्भव है कि वह बौद्ध प्रतिष्ठान ही हो। यदि ऐसा ही होगा तो इस बावली का महत्व और भी बढ़ जाता है। वैसे इस बावली का अनुशीलन करने से लगता है कि भूति राजवंश के किसी राजा ने महल बनाते समय इस बावली का भी पुर्न निर्माण करवाया है। वास्तु-विन्यास की दृष्टि से यह सामान्य कोटि की बावली है।

सोढन की बावली

यह बावली जिला ऊधमपुर के अन्तर्गत खंडुई ग्राम के निकट सोढन स्थान पर अवस्थित है। खंडुई का एक नाम सीन ब्राह्मणां भी है। बावली तक पहुँचने के लिए एक मार्ग चढ़ेई से भी जाता है। चढ़ेई गढ़ी सड़क के पश्चिम-दक्षिण में यह बावली स्थित है, अत: पर्यटक दुद्धर पुल के निकट उतर कर पैदल या वाहन से बावली तक पहुँचते हैं। दूसरा मार्ग ऊधमपुर से कटड़ा वाया थाती का सड़क मार्ग है। यदि पर्यटक चाहें तो वे अपने वाहन से भी इस बावली तक पहुँच सकते हैं।

सोढन में जिस स्थान में यह बावली निर्मित है उसके निकट ही

एक शिव मंदिर है। पर्यटक पहले बावली में पवित्र होने जाते हैं और बाद में मंदिर में प्रवेश करते हैं।

सोढन की यह बावली प्रत्येक दृष्टि से भव्य और विशाल है। यह लगभग बीस मीटर क्षेत्र तक परिसीमित है। यह तीन ओर से तो ऊँची-ऊँची अट्टारिकाओं से घिरी हुई है। इस की अट्टारिकाएँ भी तक्षित शिला खंडों से निर्मित हैं। ये अट्टारिकाएँ शिल्पकारों की कुशल तक्षण कला की परिचायक हैं। ये अट्टारिकाएँ सुन्दर मूर्तियों से सुसज्जित हैं। इन मूर्तियों की संख्या 25 हैं। प्रत्येक मूर्ति प्रस्तर शिला पर उकेरी गई है। ये शिलाएँ बलुआ पत्थर की हैं, तथा वर्षा व ठंडक के कारण कुछ-कुछ फीकी सी भी पड़ गई हैं।

इन मूर्तियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

पहली : यह मूर्ति किसी लोक देवता की है।

दूसरी : इस मूर्ति में राजा-रानी और एक सेवक को अंकित किया गया है।

तीसरी : घुड़ सवार किसी योद्धा की है।

चौथी : यह मूर्ति राजा मंडलीक की है।

5वीं : इस मूर्ति में रानी ने एक बच्चे को अपनी गोद में रखा है।

6वीं : इस मूर्ति में राजा घोड़े पर सवार है और उसके चार सेवक घोड़े के पीछे चल रहे हैं।

7वीं : यह एक रानी की मूर्ति है।

8वीं : यह रानी की मूर्ति है।

9वीं : इस मूर्ति में एक घुड़ सवार अंकित है।

10वीं : यह मूर्ति बराह भगवान की है।

11वीं : यह मूर्ति हँस वाहिनी की है।

12वीं : यह मूर्ति गायत्री की है।

13वीं : यह मूर्ति मत्स्यावतार की है।

14वीं : यह मूर्ति भगवान कृष्ण की है।

15वीं : यह राम लक्ष्मण की मूर्ति है।

16वीं : इस मूर्ति में घुड़ सवार एक योद्धा अंकित है।
17वीं : यह एक देवी की मूर्ति है।
18वीं : यह राजा मंडलीक की मूर्ति है।
19वीं : यह एक देवी की मूर्ति है।
20वीं : यह हनुमान की मूर्ति है।
21वीं : यह लोक देवता की मूर्ति है।
22वीं : यह भगवान शिव की मूर्ति है।
23वीं : यह गणेश जी की मूर्ति है।
24वीं : यह भी गणेश जी की मूर्ति है।
25वीं : यह देवी की मूर्ति है।

माना जाता है कि इस बावली का निर्माण भी शिवमंदिर के साथ बलबालता के राजा धनसार देव से सन 1865 के लगभग करवाया होगा। यह बावली आज भी अपने मूल रूप में द्रष्टव्य है।

चढ़ेयाई की बावलियाँ

जिला ऊधमपुर की उपतहसील टिक्करी के अन्तर्गत टिक्करी से 7 कि.मी. उतर-पूर्व में एक ऐतिहासिक गाँव है - चढ़ेयाई। यह गाँव भव्य और विशाल बावलियों के लिए पूरे डुग्गर प्रदेश में प्रसिद्ध है। ऊधमपुर से वाया थाती भी इस गाँव तक पहुँचा जा सकता है। बावलियों तक वाहन सेवा भी उपलब्ध है। किन्तु अधिकांश यात्री कटड़ा वैष्णो देवी से इस स्थल पर पर्यटन के लिए आते हैं। कटड़ा से यह स्थान पूर्व दिशा में 13 कि.म. दूर है।

इस गाँव में एक प्राचीन बाग है। कहते हैं कि स्थानीय सामंत घग्घा सिंह ने 17वीं सदी में यह बाग लगवाया था। बाद में यह बाग उसी के नाम से 'घग्घा बाग' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस बाग में चिनार, सफेदा, बेद, चम्बा आदि कई प्रकार के प्राचीन वृक्ष हैं जिन की शीतल छाया से यह बाग आच्छादित रहता है।

इसी बाग के उतर में दो मीटर ऊँची पीठिका पर नागर शैली में निर्मित रघुनाथ मंदिर है जिसमें राम, सीता और लक्षमण की मूर्तियाँ

सुसज्जित हैं। इसी मंदिर के साथ बाबा ब्रह्मचारी का समाधि मंदिर और एक शिला को उकेर कर बनाई गई हनुमान की विशाल मूर्ति है। इन धार्मिक स्थलों के नीचे बावलियों का समूह है जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

जलकुण्ड

रघुनाथ मंदिर के दो मीटर नीचे एक अष्टकोणीय जलकुंड है। जलकुंड अनुमानत: 7 मीटर के घेरे में है। पूरा जलकुंड प्रस्तर शिलाओं से आवेष्टित है। इस कुंड की गहराई अनुमानत: दो मीटर है। यह जलकुंड पूरा वर्ष लबालब भरा रहता है। इसका जल जो उछल कर बाहर निकलता है उसे पत्थर की छोटी-छोटी नालियों से बावलियों में गिराया जाता है।

बावली-एक

यह अति सुन्दर बावली है। पूर्वोन्मुख इस बावली के प्रवेश द्वार पर द्वारपालों की आदमकद दो मूर्तियाँ बनी हैं। इन दोनों के हाथों में दंड है। इस बावली में जलकुंड की एक धारा दो मीटर ऊँचाई से गिरती है। इस से यह बावली जल से भरी रहती है। इस का जो जल उछलता है, वह खेतों में चला जाता है। किसान उस जल का उपयोग सब्जियों के सींचने के लिए करते हैं।

बावली के तीनों ओर अलंकृत अट्टारिकाएँ बनी हैं जिनमें देवी देवताओं की मूर्तियाँ सुसज्जित हैं। यह बावली वर्गाकार है और देखने में एक छोटा जलाशय जैसी दिखाई देती है। इस बावली की लम्बाई अनुमानत: 6 मीटर है और चौड़ाई भी इतनी ही है।

इस बावली के प्रवेश द्वार पर जो कलात्मक तोरण बना है उसके स्तम्भ अब गिरने लगे हैं। तोरण के स्तम्भों पर अति सुन्दर जया मातिक आकृतियाँ बनी हैं। बावली की दीवारगिरों के साथ जो पीठिकाएँ बनी हैं उन में देवी-देवताओं की मूर्तियों को सुव्यवस्थित ढंग से सजाया गया है।

बावली की दक्षिणी दीवार के साथ जो पीठिका बनी है उसमें 13 देव मूर्तियाँ विराजमान हैं। ये सभी मूर्तियाँ तक्षण-कला की दृष्टि से बेजोड़ हैं। जलप्रपात के साथ जो दायीं ओर पीठिका बनी है उसमें 11 और बायीं ओर की पीठिका में भी 11 मूर्तियाँ संस्थापित हैं। बावली के उतर में जो दीवार है उस में 10 मूर्तियाँ स्थापित हैं। इस प्रकार इस बावली में कुल 45 मूर्तियाँ हैं। इन सभी मूर्तियों को पहचान पाना कठिन है। वैसे लगता है कि इसका विषय पुराण हैं।

इस बावली की मूर्तियों में एक मूर्ति ऊँट की भी है। यह मूर्ति अति आकर्षक है। इस मूर्ति को देखकर यह सिद्ध हो जाता है कि इस बावली के शिल्पकार राजस्थान के ही होंगे।

वैसे भी लोक परम्परा के अनुसार राजा घग्घा सिंह जिज्ज के शासन काल में राजस्थान में दुर्भिक्ष पड़ा तो वहाँ से कई शिल्पकार अपने परिवारों को साथ लेकर शिवालिक की ओर आए। वे राजा घग्घा सिंह से मिले तो उसने इन शिल्पकारों का घग्घा की बावलियों के निर्माण का काम सौंपा। शिल्पकारों को रोजगार मिल गया और उन्होंने दतचित होकर इन बावलियों का निर्माण किया।

इस बावली के विषय में एक और दन्त कथा जुड़ी है। एक बार एक महिला अपनी छोटी बच्ची के साथ इस बावली में वस्त्र धोने आई। बच्ची बावली की पीठिका में बैठकर खेल रही थी। वह अचानक इस बावली में गिरी। माँ भी बच्ची को बचाने के लिए बावली में छलांग लगाकर कूद पड़ी। बाद में लोगों ने उन दोनों को मृतावस्था में बाहर निकाला। तब से यह बावली अभिशप्त मानी जाने लगी। लोगों ने इस बावली का बहिष्कार कर कर दिया जिस कारण अब यह भग्नावस्था में द्रष्टव्य है।

बावली-दो

यह बावली मंदिर के लिए बने सोपान पथ के पूर्व में है। यह पहली बावली से 10 मीटर दूर है। इस बावली की लम्बाई 4.5 मीटर और चौड़ाई 3.5 मीटर के करीब है। इस की गहराई अनुमानत: 1.75

मीटर है। इस बावली के तीनों ओर ऊँची-ऊँची अट्टारिकाएँ तो बनी हैं किन्तु बिना मूर्तियों के यह बावली खाली-खाली सी लगती है। इस बावली का उपयोग स्थानीय लोग बहुत ही कम करते हैं, अतः यह वीरान सी लगती है।

बावली-तीन

यह बावली प्राचीन चिनार वृक्ष के नीचे है। यह देखने में आकर्षक और सुन्दर है। इसके निर्माण में तक्षित शिलाखंडों का उपयोग किया गया है।

यह बावली आयताकार है। इस की लम्बाई अनुमानतः 5 मीटर और चौड़ाई 4.5 मीटर है। इस की केवल दो ही अट्टारिकाएँ हैं। पहली अट्टारिका बावली के जलकुंड से आधा मीटर और दूसरी एक मीटर ऊँची है। इस की पश्चिमी अट्टारिका में नौ मूर्तियाँ सुसज्जित हैं। ये सभी मूर्तियाँ देवी-देवताओं तथा प्रतीक चिह्नों से संबंधित हैं। इस बावली की उतरी और पूर्वी अट्टारिका में 27 मूर्तियाँ भी दृष्टिगत हैं। 9 मूर्तियाँ पूर्वी भाग में और 18 उतरी भाग में हैं। इस का पश्चिमी भाग खाली है। इस बावली का जलस्रोत बावली के भीतर ही है। इस का जो जल बाहर को उछलता है, वह एक जलधारा के रूप में बड़ी बावली में गिरता है। यह बावली दक्षिणोन्मुख है।

बावली-चार

यह बावली वास्तु विन्यास की दृष्टि से एक उत्कृष्ट नमूना है। यह एक विशाल और भव्य बावली है। यह आकार में एक छोटा सा जलाशय दिखाई देती है।

इस बावली में बावली तीन का जल एक पत्थर की लम्बी नाली द्वारा पाँच मीटर की ऊँचाई से मध्य-भाग में गिराया गया है। जल धारा को सहारा देने के लिए इस बावली के उतरी-भाग में एक बड़ा सा स्तम्भ बना है। इससे पत्थर की नाली सुरक्षित रहती है और जल भी मध्य भाग में गिरता है। जल एक प्रपात के रूप में गिरता है, अतः पर्यटक को यह दृश्य अति आकर्षक लगता है।

यह विशाल बावली वर्गाकार है। यह अनुमानतः 64 वर्ग मीटर में परिसीमित है। इस की प्रत्येक भुजा 8 मीटर के लगभग है।

यह बावली दक्षिणोन्मुखी है। इस बावली में प्रवेश के लिए जो प्रवेश द्वार बना है उसके दोनों ओर द्वारपालों की आदम कद मूर्तियाँ संस्थापित हैं। ये दोनों मूर्तियाँ कला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं।

इस बावली की सुरक्षा के लिए तीनों ओर से दिवारगिर बने हैं। जो दीवार उतर में है वह दो मीटर ऊँची है। पूर्व और पश्चिम में जो दीवारों के साथ पीठिकाएँ बनी हैं उन में सुन्दर देव मूर्तियाँ स्थापित हैं। इन मूर्तियों की कुल संख्या 72 है। इन में 24 मूर्तियाँ पूर्व की पीठिका में, 24 मूर्तियाँ पश्चिमी पीठिका में और इतनी ही उतरी पीठिका में प्रतिष्ठित हैं। इन मूर्तियों के कारण यह बावली एक दिव्य मंदिर जैसी दिखाई देती है।

निर्माता : इन सभी बावलियों का निर्माण लोक परम्परा के अनुसार चढ़ेयाई के राजा घग्घा सिंह जिज्ज ने 17वीं सदी के मध्य में राजस्थान के शिल्पकारों को रोजगार देने के उद्देश्य से करवाया। घग्घा सिंह के वंशजों ने सन 1835 तक इन बावलियों को संरक्षण दिया और वे इन की देखभाल करते रहे।

महाराजा गुलाब सिंह ने अनुमानतः सन 1835 में चढ़ेयाई राज्य को अपने अधिकार में लिया तो यह स्थल वीरान हो गया। इस स्थल को कोई राजकीय संरक्षण नहीं मिला। डोगरा शासल काल में इस स्थल पर केवल एक रघुनाथ मंदिर निर्मित हुआ जिस का पहला पुजारी हरिया था। उन के बाद उसका पुत्र कपिल मुनि उनके बाद उनका पुत्र अमर नाथ इस मंदिर का पुजारी बना। अब मुल्खराज इस मंदिर के पुजारी हैं। इन बावलियों की देखभाल पुजारी कुल के लोग कई वर्षों से कर रहे हैं। किन्तु धन के अभाव में वे भी असमर्थ हैं।

संत ब्रह्मचारी

इन बावलियों से जुड़ी एक लोक आस्था यह भी है कि 17वीं सदी में पांगी-पाडर से एक संत चढ़ेयाई में आया। उसने इन बावलियों

के निकट ही शीतला माता मंदिर में डेरा जमाया। वह उच्च कोटि का संत था। राजा घग्घा सिंह उसका बड़ा सम्मान करता था। उसी संत के अनुरोध पर घग्घा सिंह ने इन बावलियों का निर्माण करवाया।

ब्रह्मचारी संत की समाधि इन्हीं बावलियों के निकट माता शीतला मंदिर के पास है। स्थानीय लोग आज भी उस संत के सम्मान में यज्ञों का प्रति वर्ष आयोजन करते हैं।

स्वामी नित्यानन्द

स्थानीय लोगों के अनुसार घग्घा बाग में स्वामी नित्यानन्द जी भी कुछ वर्ष सन 1920 और 1925 के बीच रहे। उन्होंने यहाँ कई वृक्ष लगवाये। चिनार का वृक्ष कहते हैं कि उन्हीं के हाथ से लगाया गया है। उन्होंने इन बावलियों का अपने ढ़ंग से संरक्षण किया। वे उच्च कोटि के संत थे और महाराजा प्रताप सिंह के राजगुरु थे।

पुरातत्व विभाग

जम्मू कश्मीर राज्य का पुरातत्व विभाग इन बावलियों के संरक्षण के लिए संकल्पबद्ध है। विभाग की ओर से एक नाम पट्ट भी लगाया गया है। विभाग के नाम पट्ट के अनुसार इन बावलियों का निर्माण 15वीं शताब्दी में स्थानीय जागीरदार राजा चग्गर सिंह ने करवाया। विभाग ने इस पूरे क्षेत्र की तारबन्दी का प्रयास किया है।

भारतीय पर्यटन विभाग

भारतीय पर्यटन विभाग भी इन बावलियों के संरक्षण के लिए आगे आया है। विभाग की ओर से इस स्थल के विकास के लिए करोड़ों रूपयों की योजना का प्रारूप तैयार किया गया है। आशा है उसे शीघ्र ही क्रियान्वित किया जाएगा।

घग्घा बाग की ये बावलियाँ डुग्गर की अमूल्य जल धरोहर हैं। इन का संरक्षण यथा शीघ्र किया जाना चाहिए।

गिरिहार की बावली

यह बावली घग्घा बाग की बावलियों से एक सौ मीटर पीछे

चढ़ेयाई-मुत्तल सड़क से कुछ नीचे गिरिहार स्थान में अवस्थित है। ज्ञानकोट इस बावली से अढ़ाई सौ मीटर की दूरी पर सड़क के पश्चिम में है। माना जाता है कि ज्ञानकोट की पहाड़ी से एक जलधारा जो भूमिगत रूप में प्रवाहित है, यहाँ प्रकट होती है।

गिरिहार बावली पश्चिमोन्मुखी है। इस में जो जलधारा प्रणाली के रूप में गिरती है उस का मुख-भाग कलात्मक है। बावली का आकार वर्गाकार है और यह अनुमानतः दस मीटर के घेरे में है।

इस बावली के भीतर और बाहर जो अट्टारिकाएँ जड़ित हैं, वे प्रस्तर-शिलाओं से निर्मित हैं। बावली के भीतर जो शिलाएँ जड़ित हैं, वे छोटी हैं और बाहरी भाग में जड़ित शिलाएँ बड़ी हैं।

यह बावली मूर्ति शून्य लगती है। इस बावली का जल अति शीतल और स्वादिष्ट है, शायद यही कारण है कि दूर-दूर से लोग यहाँ पानी भरने के लिए आते हैं।

इस बावली के निकट गोसाईयों के कई घर हैं। सम्भवतः इसी कारण इस बावली का नाम जाति के आधार पर गिरिहार पड़ा है।

प्रायः सभी जातियों की महिलाएँ प्रातः और सांयकाल के समय अपने-अपने घड़े उठाकर इस बावली में पानी भरने आती हैं। अट्टारिकाओं में कुछ देर के लिए घड़े रख कर सुस्ताती हैं और कभी लोकगीत भी गाती हैं। एक लोकगीत के बोल इस प्रकार हैं :

घड़ा चुक्की आऊं गिरिहर चलियाँ
अग्गें मिली सरकार जी,
आऊं शरमोकल पिच्छे हट्टी गेई
नेई होइयां अक्खियां चार जी।

सुन्दरां की बावली

यह बावली टिक्करी से चढ़ेयाई सड़क के उतर में सुन्दरानी नामक गाँव में में अवस्थित है। बावली सड़क से केवल तीस मीटर दूर है, अतः बड़ी सहजता से बावली तक पहुँचा जा सकता है।

पश्चिमोन्मुख इस बावली की अट्टारिकाएँ दोनों ओर से एक-एक मीटर ऊँची हैं। किन्तु मुख-भाग की दीवार इन से ऊँची है।

बावली वर्गाकार है और अनुमानतः दस मीटर के घेरे में हैं। इस में जड़ित शिलाखंड स्थानीय हैं किन्तु कुशल शिल्पकारों के हाथों तक्षित होने के कारण अलंकृत लगते हैं। बावली में जो जलधारा गिरती है उसे प्रणाली द्वारा लाया गया है।

इस बावली का निर्माण लोकश्रुति के अनुसार सुन्दरां नामक एक रानी ने करवाया था। सुन्दरां रानी कौन थी जिसके नाम से यह गाँव बसा है और गाँव में यह बावली निर्मित है।

एक मत यह है कि वह स्थानीय किसी जिज्ज राजा की रानी थी। रानी अति सुन्दर थी। राजा उससे बहुत ही प्यार करता था। सुन्दरां रानी की सुन्दरता पर लोक लोक गीत भी रचे गए यथा :

सुर्ग सुन्दरी रानी सुन्दरां, राजेगी मती प्यारी ओ

रानी हंस्सै फुल्ल जे खिलदे, अवाज कोयल थमां प्यार हो। आदि।

एक मत यह भी है कि सुन्दरां जिज्ज राजा की बेटी थी। उस का विवाह पांवला (डेरा बंदा बहादुर रियासी) में बंदा बहादुर के पोते से हुआ था। उसी ने अपने मायके में इस सुन्दर बावली का निर्माण जनहित में किया।

गढ़ी की बावली

यह बावली गढ़ी में निर्मित मुख्य मंदिर के निकट अवस्थित है। इस बावली का वास्तु विन्यास फ्लाटा की बावली से मिलता जुलता है। वैसे आकार में यह बावली फ्लाटा की बावली से छोटी लगती है। इस की शिलाएँ भी उखड़ी लगती हैं। लगता है कि इस बावली का मंदिर बनाते समय पुर्नोद्धार किया गया है। इस बावली में भी एक शिलालेख जड़ित है जिसमें लिखा है :

बुआ प्रेमदासी खिदमतगारा महाराणी साहिबा ने इस बावली का

निर्माण करवाया।

बुआ प्रेमदासी की अपने मायके के लोगों के लिए यह दूसरी भेंट है।

बुआ प्रेमदासी धार्मिक महिला थी, वह जम्मू के राजमहल में रानी की सेवा से जो धन प्राप्त करती थी वह लोक हित में व्यय कर देती थी।

मांडा की बावली

राष्ट्रीय राजमार्ग पर सड़क के दोनों ओर बसा एक पहाड़ी गाँव है - मांडा। यह गाँव टिक्करी से तीन किलोमीटर ऊधमपुर की ओर स्थित है। इस गाँव में राष्ट्रीय राज मार्ग के एक कोने में एक बावली के पुरावशेष बचे हैं। इसी बावली को मांडा की बावली कहते हैं।

वास्तु विन्यास की दृष्टि से यह वर्गाकार बावली है। इस की प्रत्येक भुजा एक मीटर है। यह कम गहरी है। इस बावली की दक्षिणी दीवार में एक शिलालेख जड़ित है जिस पर लिखा है :

बाओली ठाकुर दासी कटोची

खिदमत गारा श्री महाराणी साहिबा दी

बिसाख 1979 (तदानुसार 1923 ई.) लगता है कि ठाकुर दासी भी बुआ प्रेमदासी की ही भाँति महारानी की दासी थी। उन दिनों रानियों की दासियों को अविवाहित रहना पड़ता था। वे अपनी कोई निशाली छोड़ जाती थीं। यह बावली भी एक दासी की निशाली है।

मालतू की बावली

यह बावली टिक्करी गाँव में राष्ट्रीय मार्ग जम्मू कश्मीर के पश्चिम में भगवान भूतेश्वर मंदिर के पार्श्व में निर्मित है। आकार में यह छोटी बावली है। यह वर्गाकार है और इस की प्रत्येक भुजा 1.50 मी. x 1.50 मीटर है। बावली के पूर्व में एक छोटी सी पीठिका बनी है जिसमें मुख्य मूर्ति नाग देवता की है। अन्य मूर्तियाँ देवी-देवताओं की है। राष्ट्रीय मार्ग के विस्तारीकरण से इस बावली को भी क्षति पहुँची है। इस

बावली की मूर्तियाँ बावली से हटा कर मंदिर-परिसर में रख दी गई हैं।

इस बावली के मुख-भाग में एक शिलालेख जड़ित है जिसमें देवनागरी में लिखा है :

सम्वत् 1973 जेठ पृ. 18 बाओली श्री राणी साहिब पठाणी जी की वजीरनी मालतू ने बनवाई। खर्च रूपये 160 हुआ। ग्राम टिक्करी बिच शुभ।

भावार्थ : इस बावली का निर्माण वि. सम्वत् 1973 (सन 1917 ई.) मास ज्येष्ठ तिथि 18 को रानी पठानी की वजीरनी (सलाहकार) मालतू ने 160 रूपये खर्च करके टिक्करी गाँव में करवाया।

मालतू के विषय में कहा जाता है कि वह राजा राम सिंह की रानी पठानियां की सलाहकार थीं। उसके मायके गोल गाँव में जिस परिवार में थे स्थानीय लोक उसे 'सरदारों का घर' कहते थे। इस परिवार के कुछ लोग महाराजा प्रताप सिंह (1885-1925 ई.) के शासन काल में उच्च पदों पर आसीन थे।

टिक्करी में बावली के स्थान पर सन 1947 से पूर्व एक अपूर्व बैसाखी का तीन-दिवसीय मेला आयोजित होता था जिसमें हज़ारों की संख्या में दूर-दूर से लोग भाग लेने आते थे।

अब यह बावली भग्नावस्था में देखी जा सकती है।

लैहनु की बावली

यह बावली टिक्करी से अढ़ाई कि.मी. उतर में स्थित लैहनू गाँव में घने छायादार वृक्षों के बीच में अवस्थित है। पश्चिमोन्मुख इस बावली की दो पीठिकाएँ एक-एक मीटर ऊँची हैं। इस के पूर्व में जो दीवार गिर है उसके मध्य में नाग मूर्ति संस्थापित है। कुछ स्थानीय देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी शोभायमान हैं।

यह बावली अनुमानतः दस मीटर घेरे में परिसीमित है। इस बावली के निर्माण में जिन बलुआ शिलाखंडों का उपयोग हुआ है, बताते हैं कि ये झज्झर नाला से लाए गए हैं।

इस बावली के निकट ही मन्दिरों का समूह है। इन मंदिरों में एक विशाल शनिदेव का मंदिर भी है जिसके दर्शनार्थ हज़ारों की संख्या में लोग आते हैं, वे इस बावली के पावन जल से देवी-देवताओं का अभिषेक भी करते हैं।

जनश्रुति के अनुसार इस बावली का निर्माण किसी महिला ने लोक कल्याण की भावना से करवाया।

सड़क बनने से पहले जो लोग पैंथल से टिक्करी आते थे। वे लैहनु के मार्ग से आते थे। वे विश्राम के लिए कुछ क्षण इस बावली में बैठ कर इसके शीतल जल का उपयोग करते थे।

लैहनु गाँव के प्रेमनाथ बैगड़ा को यह श्रेय प्राप्त था कि वे इस बावली की सफाई प्रति मास स्थानीय युवकों के सहयोग से करवाते थे। उनके समय में बावली स्थल पर हवन-यज्ञों का आयोजन भी होता था।

शीतल जल के कारण यह बावली अपने क्षेत्र में आज भी बहुत प्रसिद्ध है। स्थानीय महिलाएँ प्रातः और सायं यहाँ जब जल भरने आती हैं तो इस स्थल का वातावरण उल्लासमय हो जाता है।

मंथल की बावली

यह बावली जम्मू कश्मीर राष्ट्रीय मार्ग पर स्थित 'मंथल' नामक स्थान पर एक छोटे से पहाड़ी टीले के नीचे निर्मित है। उतरोन्मुख इस बावली की तीनों अट्टारिकाएँ वास्तु-कला की दृष्टि से सामान्य कोटि की हैं। बावली सड़क से दस मीटर दूर है।

कभी मंथल यात्रियों के लिए विश्राम स्थल होता था। पैंथल, कटड़ा, सूल, सीढ़ा आदि गाँवों के लोग बस पर सवार होने के लिए मंथल पहुँचते थे। मंथल में यात्रियों की सुविधा के लिए कुछ दूकानें भी थीं, कुछ अब भी हैं। यात्रियों की प्यास बुझाने के लिए तब यही बावली थी। इस बावली के ललाट-भाग में जो नाग मूर्ति जड़ित है, वह स्थानीय बटैहड़े द्वारा तक्षित लगती है। अन्य मूर्तियाँ देवी-देवताओं से संबंधित हैं।

इस बावली के ऊपरी भाग में एक छोटा सा शिव मंदिर है। जिस स्थान पर यह बावली है वह छायादार वृक्षों से आच्छादित है।

टिक्करी की बावलियाँ

टिक्करी में कुल मिलाकर पाँच बावलियाँ हैं। बड़ी बावली टिक्करी चौक के निकट स्थित है। चौक से ही एक संकरा मार्ग बावली की ओर जाता है। यह बावली दक्षिणोन्मुखी है। इस के तीनों ओर शिलाखंडों से निर्मित अनालंकृत अट्टारिकाएँ हैं। इस मुख्य अट्टारिका में पौराणिक देव-देवताओं की थोड़ी सी मूर्तियाँ है। किन्तु मुख्य मूर्ति नाग देवता की है जिसे इस बावली का स्वामी भी माना जाता है। इस बावली के जल का उपयोग स्थानीय लोग आज भी करते हैं। वास्तु कला की दृष्टि से यह सामान्य कोटि की बावली है।

टिक्करी की दूसरी बावली पुट्ठी-खड्ड के दक्षिणी तट के साथ बनी है। यह भी सामान्य कोटि की छोटी सी बावली है। इस बावली का उपयोग चनास के बड़ेयाल मुहल्ला के लोग तथा अन्य जातियों के आज भी करते हैं।

टिक्करी की तीसरी बावली टिक्करी चौक से दो सौ मीटर आगे टिक्करी कटड़ा मार्ग के कुछ नीचे स्थित है। यह साधारण कोटि की बावली है। टिक्करी में एक बावली भूतेश्वर मंदिर परिसर में है और एक बावली टिक्करी लैहनू मार्ग के पूर्व में घने वृक्षों के मध्य में स्थित है।

कोटली (जालन्धरा माता) की बावली

यह बावली तवी नदी के पूर्वी तट पर स्थित कोटली गाँव में माता जालन्धरा देवी मंदिर के उतर में कोई दो-सौ मीटर की दूरी पर अवस्थित है। इस बावली तक पहुँचने के लिए लड्डन तक वाहन सेवा उपलब्ध है। इस के आगे डेढ़ किलोमीटर की चढ़ाई चढ़ने के बाद यह बावली दृष्टि गोचर होती है। पश्चिमोन्मुख इस बावली के प्रवेश द्वार पर दो आदम कद द्वारपालों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। दोनों द्वारपाल उतिष्ठ स्थिति में हैं और उनके मुख्य भाग में बड़ी-बड़ी मूछें हैं।

यह बावली वर्गाकार है और सुन्दर पीठिकाओं के कारण अति आकर्षक लगती है।

बावली पूरा वर्ष शीतल जल से भरी रहती है। इससे जो जल बाहर को उछलता है, वह खेतों में चला जाता है।

बावली के शिलाखंड कई स्थानों से उखड़े हुए भी हैं, लगता है इस बावली की गई वर्षों से मुरम्मत नहीं की गई है। इस बावली के उतर में कैरा और दक्षिण में थनोवा गाँव हैं। कहते हैं कि उन्हीं की पहाड़ियों से एक जलधारा इस बावली में गिरती है।

जनश्रुति है कि चनैनी के राजाओं में से किसी एक ने सम्भवतः केदारचन्द ने इस बावली का पुर्नोद्धार किया। किन्तु कुछ स्थानीय लोगों के अनुसार रामनगर के राजा सुचेत सिंह ने इस स्थान पर दुर्ग बनवाते समय इस बावली का भी पुनर्निर्माण करवाया। माना जाता है कि 1830 ई. में यह बावली नये रूप में तैयार थी।

अब पुनः यह बावली जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इस के संरक्षण की आवश्यकता है।

लड्डन की बावलियाँ

लड्डन और जालन्धरा माता देवी मंदिर के मार्ग में डा. अशोक जेरथ ने जिन दो बावलियों का उल्लेख अपनी पुस्तक फोक आर्ट आफ डुग्गर भाग एक में किया है उनमें एक बावली तो अब सूख गई है और दूसरी बावली जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। डा. अशोक जेरथ ने इन बावलियों में जो प्रस्तर मूर्तियाँ बिखरी पड़ी देखी थीं उनमें कई उपलब्ध हैं और कई लुप्त हैं।

उपलब्ध मूर्तियों में उल्लेखनीय निम्न हैं :

1. ऊँट की मूर्ति स्वामी के साथ
2. बाँसुरी वादन करते श्री कृष्ण की मूर्ति
3. नाग देवता की मूर्ति
4. कुंडली आकार में नाग की मूर्ति

5. पालकी पर सवार एक नायिका की मूर्ति।

पालकी को कुम्हार उठाए हुए हैं और उनके पीछे घोड़े पर सवार नायक अंकित है। इन मूर्तियों के अतिरिक्त और भी कई मूर्तियाँ बावली के इर्द-गिर्द बिखरी पड़ी हैं जिन्हें संरक्षिण रखने की आवश्यकता है। लड्डन क्षेत्र में इन बावलियों के अतिरिक्त और भी कई बावलियों के अवशेष तवी नदी के तट के साथ बसे गाँवों में उपलब्ध हैं। ये सभी बावलियाँ अर्द्ध पहाड़ी शैली में निर्मित हैं।

इन बावलियों में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन के ललाट में नाग मूर्तियाँ जड़ित हैं। डुग्गर निवासी नागों को जल का देवता मानते हैं। माना जाता है कि नागों के पास एक ऐसी विद्या थी जिससे वे भूमिगत जल को ढूंढ लेते थे। शायद यही कारण है कि डुग्गर की अधिकांश बावलियाँ नागों के नाम समर्पित हैं।

राधा की बावली

यह आकर्षक बावली ऊधमपुर से 12 कि.मी. पूर्व में स्थित जगानु गाँव में अवस्थित है। बावली गाँव से दो सौ मीटर नीचे तवी नदी की ओर जाने वाली पगडंडी के पूर्व में है। यह अति आकर्षक बावली है। शिल्पकारों ने इस का निर्माण बलुआ शिलाखंडों से किया है। उतरोन्मुख इस बावली में जिस सिंहमुख से जल की पतली धारा गिरती है, वह तक्षित और आकर्षक है। बावली अनुमानतः पाँच मीटर भूखंड में परिसीमित है। यह सुन्दर और तक्षित शिलाखंडों से सुसज्जित है। गाँव के लोग इस बावली के जल का घरों में आज भी उपयोग करते हैं।

एक लोकश्रुति के अनुसार इस बावली का निर्माण राधा ने जन कल्याणार्थ करवाया। इस बावली के संरक्षण की आवश्यकता है।

धन्दाल की बावली

यह बावली जगानु से 8 मीटर की दूरी पर धन्दाल गाँव में अवस्थित है। बावली तक पहुँचने के लिए वाहन सेवा उपलब्ध है।

यह बावली अनुमानतः आठ वर्ग मीटर भूखंड में परिसीमित है।

यह अट्टारिकाओं से सुसज्जित है। इसमें जड़ित शिलाखंड तक्षित और आकर्षक हैं। बावली में सिंहमुख से जल की धारा बड़े वेग से जब गिरती है तो उस की ध्वनि दूर तक सुनाई देती है।

धन्दाल राजपूतों का गाँव है। माना जाता है कि इस बावली का निर्माण भी किसी राजपूत सामंत ने जनहित में करवाया होगा। वैसे भी इस भव्य बावली के निर्माण में निर्माणकर्ता ने दिल खोलकर धन खर्च किया है। बावली का जल स्वच्छ और निर्मल है।

अनसू की बावली

यह बावली ऊधमपुर कालडी सड़क के निकट 'अनसू' नामक स्थान में अवस्थित है। तवी पुल से इस की दूरी अनुमानतः छह किलोमीटर है। इस बावली का एक नाम 'पांडवों की बावली' भी है। जनश्रुति है कि अपने बनवास काल में पांडव इस क्षेत्र में आए थे और उन्होंने रात्रि-विश्राम के समय इस बावली का निर्माण किया था। इस बावली में पांडवों से संबंधित एक मूर्ति भी है जिसमें पांडवों को कौरवों के साथ चौपड़ खेलते दिखाया गया है। किन्तु लोक परम्परा इस बावली को 'अनसू' नाग की निर्मिति मानती है।

खड़कसू की बावली

नाग देवता खड़कसू के नाम निर्मित यह बावली लोक शैली में निर्मित है। बावली के ललाट भाग में नाग देवता की जो मूर्ति जड़ित है, वह दर्शनीय है। इस बावली के निर्माण में स्थानीय प्रस्तर शिलाओं का उपयोग हुआ है। खड़कसू बावली का अवलोकन करने से लगता है कि यह ऊधमपुर की प्राचीनतम बावलियों में एक है। इस बावली का जल दर्पण की भाँति निर्मल है।

बटाली की बावली

यह बावली पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज ऊधमपुर के निकट बटाली रक्ख क्षेत्र में अवस्थित है। जो सड़क उमाड़ा मोड़ ऊधमपुर से नयनसू की ओर जाती है, यह बावली उसी सड़क के साथ ही निर्मित है।

बावली के निकट कई आदमकद देव मूर्तियाँ यहाँ द्रष्टव्य हैं जो स्थानीय प्रस्तर कला का उत्कृष्ट नमूना हैं बावली के चारों ओर छायादार वृक्ष हैं, अतः इस स्थान का वातावरण शाँत और शीतल है।

बावली का अवलोकन करने से लगता है कि इस का निर्माण नयसू मंदिर के साथ-साथ किया गया होगा। यह एक आकर्षक और निर्मल जल की बावली है।

डोडन की बावली

धार रोड़ ऊधमपुर के जो चन्नी मोड़ स्थान है, यह बावली वहीं निर्मित है। यह बावली लोक शैली में है और इस का घेरा अनुमानतः छह मीटर है। इस बावली का निर्माण तक्षित शिला खंडों से किया गया है। आकार की दृष्टि से यह सामान्य कोटि की बावली है।

मियां बाग की बावली

यह बावली ऊधमपुर-धार रोड़ के कशीराह मोड़ के पास ही निर्मित है। इस बावली के निकट ही एक मंदिर भी है। इस बावली के चारों ओर छायादार वृक्ष हैं, अतः यह स्थान गर्मियों में भी ठंडा रहता है।

कल्लर गाँव के लोग भी इस बावली में स्नानार्थ आते हैं। वे जाते समय पानी के बर्तन भी भर कर ले जाते हैं। इस बावली का जल कहते हैं कि जठराग्नि को भड़काता है। शिलाखंडों से निर्मित यह बावली अट्टारिकाओं से सुसज्जित है।

स्याल सल्लन की बावलियाँ

स्याल सल्लन ऊधमपुर की सल्लन उप जाति के नाम पर बसा एक पुराना सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गाँव है। यह गाँव ऊधमपुर के पूर्व में एक नाला के तट के साथ बसा है। इस गाँव में पुरानी पाँच बावलियाँ हैं जो पूरा वर्ष पानी से लबालब भरी रहती हैं। ये पाँचों बावलियाँ स्थानीय शैली में निर्मित हैं। इन का वास्तु विन्यास ऊधमपुर की शेष बावलियों जैसा ही है। स्याल-सल्लन गाँव में जितने भी मुहल्ले हैं, उतनी ही बावलियाँ हैं। एक समय था जब गाँव के लोग बावलियों

का जल मटकों या घड़ों में भरकर घर ले जाते थे किन्तु अब ऐसा नहीं है।

अब ये बावलियाँ वीरान सी लगती हैं। इनकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

चढ़त की बावलियाँ

चढ़त ऊधमपुर जनपद के अन्तर्गत एक पहाड़ी गाँव है। यह गाँव सुन्दर बावलियों के कारण पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध है। यह गाँव चढ़तेयाल उप जाति के ठक्कर राजपूतों की जागीर रहा है, अत: इस क्षेत्र के विकास के लिए चढ़तेयालों का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने जल संरक्षण के लिए इस क्षेत्र में कई बावलियों का निर्माण करवाया जिनमें निम्न उल्लेखनीय हैं :

कोपड़ की बावली

यह शिलाखंडों से निर्मित एक सामान्य कोटि की बावली है। इस बावली की मुख्य पीठिका में जो नाग की मूर्ति जड़ित है, वह दर्शनीय है। स्थानीय लोग इस बावली का उपयोग आज भी करते हैं।

रांचड़ू की बावली

यह बावली जिस स्थान पर स्थित है उसे कसुंडा भी कहते हैं। लोकश्रुति है कि इस बावली का निर्माण स्थानीय रांचड़ू नामक एक व्यक्ति ने जनहित में करवाया था।

नाड़ी की बावली

यह बावली पहाड़ी के शिखर पर स्थित है। इस बावली के निकट स्थानीय लोक देवता 'जुग्ग' का मंदिर भी है। यहाँ गर्मियों में देवता के सम्मान में बहुम बड़ा मेला आयोजित होता है। श्रद्धालु नाड़ी की बावली के जल से देवता का अभिषेक करते हैं।

मनेह की बावलियाँ

मनेह स्थान के इर्द-गिर्द निम्न पाँच बावलियाँ हैं :

1. हट्टी की बावली

2. पल्दर की बावली

3. देहड़ा की बावली

इन के अतिरिक्त दो छोटी-छोटी बावलियाँ और भी हैं। इन बावलियों का उपयोग स्थानीय लोग आज भी करते हैं।

बलिनाला की बावलियाँ

बलिनाला ऊधमपुर से अनुमानतः दस किलोमीटर की दूरी पर राष्ट्रीय राजपथ के उतर में एक पहाड़ी पर बसा अति सुरम्य गाँव है। यह गाँव सड़क द्वारा ऊधमपुर से जुड़ा हुआ है। ऊधमपुर से एक सड़क गंडाला से बलिनाला जाती है और दूसरी राष्ट्रीय राजपथ से भी जाती है।

इस गाँव में ऐतिहासिक महत्व की दो बावलियाँ हैं। इन का संक्षिप्त विवरण निम्न है :

रानी की बावली

यह बावली बलि गाँव में नाईयों के घर के निकट है। यह एक अलंकृत एवं दर्शनीय बावली है। यह बावली दस मीटर के घेरे में है। इसके तीनों ओर ऊँची अट्टारिकाएँ हैं जिन के ऊपर यात्री सुविधानुसार बैठ सकते हैं।

बावली में जिन शिलाखंडों का प्रयोग हुआ है, वे स्थानीय हैं और तक्षित हैं।

लोकपरम्परा के अनुसासर इस बावली का निर्माण किसी रानी ने यात्रियों की सुविधा के लिए अपने निजी कोश से करवाया। रानी कौन थी? इस का उतर स्पष्ट नहीं मिला। एक स्थानीय नागरिक के अनुसार रानी का मायका बलिनाला में था।

राजा की बावली

बलि गाँव में जो राजकीय स्कूल है, यह बावली उसके निकट है। बावली यात्रियों की सुविधाा के लिए बनाई गई थी, अतः यह गाँव से कुछ दूरी पर अवस्थित है। इस बावली का अवलोकन करने से लगता है कि यह प्राचीन है। अब यह प्रयोग में कम आती है, अतः

उपेक्षा के कारण वीरान सी लगती है।

लोकश्रुति है कि किसी स्थानीय राजा ने लोक कल्याण की भावना से इस बावली का तथा उस की पत्नी ने दूसरी बावली का निर्माण करवाया। यह बावली शिलाखंडों से सुसज्जित है।

चनैनी के लेखक श्री गोपाल शर्मा के मतानुसार ये दोनों बावलियाँ जम्मू के डोगरा राज-परिवार की निर्मितियाँ हैं। डोगरा काल में जब जम्मू श्रीनगर सड़क का निर्माण नहीं हुआ था तब डोगरा राजा और उनके परिवार के सदस्य बलिनाला के रास्ते से श्रीनगर जाते थे।

बलिनाला से एक पगडंडी बनी थी जिस पर घोड़े और खच्चर राज परिवार का सामान लेकर चलते थे। राज परिवार के लोगों के लिए मार्ग में विश्राम के लिए विशेष प्रकार की शिलाएँ रखी गई थीं। इन शिलाओं में कुछ देर बैठने के बाद वे लोग आगे बढ़ते थे।

गोपाल शर्मा के अनुसार यह डोगरा राजाओं का निजी मार्ग था। जब सड़क बन गई तो जन साधारण के लिए यह मार्ग खोल दिया गया।

गुज्जर और बकरवाल आज भी इसी मार्ग से कश्मीर जाते हैं। वे इन बावलियों के निकट बैठ कर विश्राम करते हैं।

चनैनी की बावलियाँ

चनैनी जम्मू कश्मीर राष्ट्रीय राजमार्ग के पूर्व-दक्षिण में मादा पहाड़ की ढलान में बसा एक पवर्तीय नगर है। ऊधमपुर से इस की दूरी केवल 23 कि.मी. है। यह उपनगर चन्देल राजाओं की अनुमानतः सात सौ वर्ष तक राजधानी रहा है। इस उपनगर का प्राचीन नाम चन्देल नगरी था जो बाद में बिगड़ते-बिगड़ते चनैनी नाम से प्रसिद्ध हुआ।

चनैनी राज्य हिमतल राज्य के ही अन्तर्गत था। किन्तु हिमतल राज्य की सीमाएँ दूर-दूर तक फैली थीं। चीनी यात्री हयुन्सांग ने अपनी पुस्तक सी.यू. में लिखा है वह सन 633 में सागल कोट से हिमतल देश गया तो वहाँ उस ने एक बौद्ध प्रतिष्ठान भी देखा। इस पूरे क्षेत्र में कई ऐतिहासिक स्मारक और धरोहर उपलब्ध हैं जिन का अवलोकन करने

से लगता है कि कला और संस्कृति की दृष्टि से यह क्षेत्र शताब्दियों से प्रख्यात रहा है।

धरोहर की दृष्टि से इस क्षेत्र में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और जल संरक्षण संबंधी धराहरें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

जल धरोहरों के रूप में चनैनी क्षेत्र में प्रवाहित नदियों, जलधाराओं, सरों, तालाबों, चश्मों तथा बावलियों का नाम लिया जा सकता है।

जल धरोहर की दृष्टि से चनैनी का क्षेत्र अति समृद्ध है। तौषी, देविका, भागीरथ आदि नदियाँ और कई जल धाराएँ इस क्षेत्र में प्रवाहित हैं। राम रचना पिंयार आदि सर भी इस क्षेत्र में है। किन्तु जल संरक्षण की दृष्टि से चनैनी की बावलियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। चनैनी क्षेत्र की प्रसिद्ध बावलियाँ निम्न हैं :

(बड़ी बावली) मरदाना बावली

चनैनी की बड़ी बावली को स्थानीय लोग 'मरदाना बावली' भी कहते हैं। इस का एक कारण यह भी है कि इस में केवल पुरुष ही स्नान करते हैं। महिलाओं के लिए इस में अलग से स्नानागार नहीं हैं। यहाँ मर्द खुले में स्नान करना पसंद करते हैं।

यह बावली–चनैनी उपनगर के उतर में और बस अड्डा के उतर–पश्चिम में केवल एक सौ मीटर की दूरी पर स्थित है।

डुग्गर के प्रख्यात कलाविद् विद्‌यारत्न खजूरिया ने इस बावली का निरीक्षण 27 जुलाई 1974 में किया। उन्होंने डोगरी में लिखित अपनी पुस्तक 'सम्भाल उस कल्लै दी' में इस बावली के विषय में विस्तार से लिखा है।

यह बावली कला विन्यास की दृष्टि से डुग्गर की शेष बावलियों से भिन्न है। इस बावली के चारों ओर एक मीटर ऊँची नींव है। उसके साथ ही थोड़ा सा स्थान छोड़ कर तीन कोणीय एक घेरा जैसा बना है। उस घेरे के ऊपर 35 मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। इन मूर्तियों में एक

मूर्ति किसी राजा की भी है। यह मूर्ति सम्भवत: उसी राजा की होगी जिस राजा ने इस बावली का निर्माण करवाया है। इस मूर्ति में कोई शिलालेख नहीं है, अत: इस बावली के निर्माण काल अथवा निर्माता के विषय में विश्वास के साथ कुछ भी नहीं कहा जा सकता। एक अनुमान के अनुसार यह बावली डेढ़ सौ वर्ष पुरानी मानी जाती है।

इस बावली के दायीं ओर जो अट्टारिका है उस में 11 मूर्तियाँ संस्थापित हैं। ये मूर्तियाँ स्थानीय प्रस्तर शिलाओं पर उत्कीर्ण हैं। इन मूर्तियों का विवरण इस प्रकार है :

1. हाथी की मूर्ति
2. घुड़ सवार की मूर्ति
3. इक तारा पकड़े एक घुड़ सवार की मूर्ति
4. पालकी में बैठी रानी की मूर्ति
5. हाथी पर सवार राजा की मूर्ति
6. रानी की मूर्ति
7. युद्धवीर की मूर्ति
8. बामन अवतार की मूर्ति
9. नृसिंह अवतार की मूर्ति
10. सूर्य की मूर्ति
11. पुजारी की मूर्ति

इस बावली की उतरी दीवार में जो मूर्तियाँ जड़ित हैं, उन का विवरण इस प्रकार है :

12. राम लक्ष्मण की मूर्ति
13. शिव पार्वती की मूर्ति
14. विष्णु भगवान की मूर्ति
15. देवता की मूर्ति
16. दुर्गा की मूर्ति
17. गणेश की मूर्ति
18. ज्योमिति
19. राजा की मूर्ति

20. चतुर्भुजी देवता की मूर्ति
21. हनुमान की मूर्ति
22. रेखाएँ
23. कार्तिकेय भगवान की मूर्ति
24. मत्स्यावतार की मूर्ति
25. बराह अवतार की मूर्ति

इस बावली की बायीं अट्टारिका में जो मूर्तियाँ जड़ित हैं उन का विवरण इस प्रकार है :

26. राजा की मूर्ति
27. लव की मूर्ति
28. ?
29. मल्लयुद्ध का दृश्य
30. डफली बजाते एक व्यक्ति की मूर्ति
31. साँढनी पर सवार एक देवता की मूर्ति
32. एक युद्धवीर की मूर्ति
33. श्रवण कुमार की मूर्ति
34. नाग पर आरूढ़ एक देवता की मूर्ति

(सम्भवतः कृष्ण का नाग मर्दन इस में दिखाया गया है)

इस बावली का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से अत्याधिक महत्व है। इस बावली में जिन राजाओं, रानियों, युद्धवीरों की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं, उन का चनैनी के इतिहास में विशेष स्थान रहा होगा। कलाकारों ने उन की शौर्य गाथाओं को इन मूर्तियों में अंकित करने का प्रयास किया है। पशुओं की मूर्तियों से भी लगता है किसी ऐतिहासिक घटनाओं का इन में अंकन है।

इसी प्रकार पौराणिक देवी देवताओं की मूर्तियाँ स्थानीय लोक आस्था का प्रतीक हैं। चनैनी के नागरिक इस बावली में स्नान करने के बाद देव पूजा इसी बावली में बैठ कर करते होंगे।

इस बावली के निकट ही एक शिव मंदिर है जो बस अड्डा

के निकट है। स्थानीय लोग इस बावली में स्नान करने के बाद वहाँ भी जाते होंगे।

यह बावली चनैनी में जल संरक्षण का मुख्य केन्द्र रही है। चनैनी की यह बड़ी बावली अतिपावन मानी जाती है, अतः लोग इस की स्वच्छता पर विशेष ध्यान देते हैं।

रैंकी कोट की बावलियाँ

रैंकी कोट की बावलियाँ तहसील चनैनी के अन्तर्गत चनैनी-सुद्ध महादेव सड़क पर रैंकी कोट गाँव में अवस्थित हैं। रैंकी कोट सुद्ध महादेव के पश्चिम उतर में एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा एक अति सुन्दर गाँव है। यह गाँव चनैनी से अनुमानतः 15 किलोमीटर पूर्व में है।

रैंकी जाने के लिए सड़क से एक पगडंडी जाती है। जो लगभग आधा किलोमीटर लम्बी है। पगडंडी चढ़ने के लिए सोपान बने हैं।

बावली का स्थापत्य

स्थापत्य कला की दृष्टि से यह उत्कृष्ट बावली है। यह गाँव के मध्य में है, अतः स्थानीय लोग इस का उपयोग आज भी करते हैं। पूर्वोन्मुख इस बावली के तीन ओर दीवारगिर बने हैं। पश्चिमोन्मुख दीवार की ऊँचाई डेढ़ मीटर के करीब है जबकि दक्षिण और उतर की ओर बने दीवारगिर सवा मीटर के करीब ऊँचे हैं।

बावली भीतर से वर्गाकार है। इस की भीतरी अट्टारिकाएँ सुन्दर मूर्तियों से सुशोभित हैं। इस बावली में संस्थापित मूर्तियों की कुल संख्या 32 है। इन मूर्तियों का विवरण निम्न है :

पहली : मूर्ति में कमल का फूल उत्कीर्ण है।
दूसरी : मूर्ति किसी स्थानीय देवी की है।
तीसरी : मूर्ति विकृत है।
चौथी : मूर्ति में किसी देवता को सिंहासनारूढ़ दिखाया गया है।
5वीं : मूर्ति विकृत है।
6वीं : मूर्ति भगवान विष्णु और लक्ष्मी की है।
7वीं : मूर्ति अस्पष्ट है।

8वीं : मूर्ति सूर्य की है।
9वीं : विकृत है।
10वीं : मूर्ति भी अस्पष्ट है।
11वीं : मूर्ति किसी देवी की है।
12वीं : मूर्ति कुर्मावतार की है।
13वीं : मूर्ति हनुमान की है।
14वीं : मूर्ति लोक देवी और देवता की है।
15वीं : मूर्ति सूर्य की है।
16वीं : मूर्ति धनुषधारी वीर योद्धा की है जिस की वेशभूषा राजस्थानी है।
17वीं : मूर्ति अश्वारूढ़ किसी स्थानीय सामंत की है।
18वीं : मूर्ति अस्पष्ट है।
19वीं : मूर्ति भी अस्पष्ट है।
20वीं : मूर्ति नाग देवता की है।
21वीं : मूर्ति विकृत है।
22वीं : मूर्ति घुड़सवार किसी वीर योद्धा की है।
23वीं : मूर्ति किसी राजा की है।
24वीं : मूर्ति में फूल की आकृति बनी है।
25वीं : मूर्ति कूर्म अवतार की है।
26वीं : मूर्ति मत्स्य अवतार की है।
27वीं : मूर्ति में पुष्प का चित्र बना है।
28वीं : मूर्ति भगवान कृष्ण की है।
29वीं : मूर्ति विकृत है।
30वीं : मूर्ति नृसिंह भगवान की है।
31वीं : मूर्ति अस्पष्ट है।
32वीं : मूर्ति में एक सुन्दर फूल का आकार बना है।

नाग राजा और रानी की मूर्ति

इस बावली के दक्षिणी भाग में एक चबूतरा बना है। इसी चबूतरा में नाग राजा और नाग रानी की मूर्ति संस्थापित है। यह मूर्ति

कला की दृष्टि से बेजोड़ है। इस मूर्ति में नाग राजा का कमर के ऊपर का शरीर मानव जैसा है और उस की टाँगें सर्पमयी है। इसी प्रकार रानी का ऊपरी शरीर नारी जैसा और निचला शरीर सर्पिनी जैसा है। मूर्ति में इन दोनों की टाँगें एक दूसरे की टाँगों में उलझी हुई दृष्टिगत होती हैं।

यह मूर्ति जिस शिलापट पर बनी है वह हल्के काले रंग में है और कहा जाता है कि यह शिला विशेष रूप से भद्रवाह से लाई गई थी और शिला अनुमानतः पौन मीटर लम्बी और आधा मीटर चौड़ी है।

देखने में यह मूर्ति बहुत ही विलक्षण और रहस्यमयी लगती है।

शिलालेख

इस मूर्ति के शिखर-भाग में शारदा लिपि में एक शिलालेख उत्कीर्ण है जिस का देवनागरी रूपान्तरण इस प्रकार है :

'संवत 7 दिन प्र. सुति श्री सप्तमी स्वाति अमित धर पुत्र श्री वरन सह प्रतिष्ठत'। यह शिला लेख एक पंक्ति में है।

व्याख्या : वरूण देवता को साक्षी मानकर अमित धर ने नागमूर्ति की संस्थापना ज्येष्ठ मास की सप्तमी को सम्वत 07 में की।

इस शिलालेख की एक अन्य विद्वान ने व्याख्या इन शब्दों में की है :

वरन शाह के पुत्र अमित धर ने इस मूर्ति की संस्थापना 7 ज्येष्ठ सम्वत 07 को की।

डा. प्रियतम कृष्ण कौल ने इस शिलालेख की व्याख्या अंग्रेजी में इन शब्दों में की है :

On the auspicious day of the Seventh day on Moon lit night, the month of Jaistha in the year 7th this (Panilar and emage) was constructed by the beneficies son of Amit Dar, alongwith varune (The God of Ocean)

इस शिलालेख का रचनात्मक विद्वानों ने 12वीं और 13वीं सदी के बीच माना है।

अमित धर कौन था?

इस का संतोष जनक उतर नहीं मिलता। एक अनुमान यह है कि वह बब्बापुर के धर वंशीय राजाओं का ही कोई वंशज रहा होगा। वह 12वीं या 13वीं सदी में सुद्ध महादेव की यात्रा पर आया होगा। गौरी कुंड जाते समय उसने रैंकी कोट मे जल का अभाव देखते हुए तीर्थ-यात्रियों के लिए इस बावली का निर्माण करवाया होगा। उसी ने इस नाग मूर्ति की भी संस्थापना की होगी।

स्थानीय जनश्रुति के अनुसार नाग मूर्ति पहले रैंकी कोट के घने वन में पड़ी हुई थी। एक साधु ने उसे देखा। वह मूर्ति को उठा लाया और उसने इसे यहाँ बावली के निकट स्थापित की।

सन 1992 ई. में एक बंगाली साधु जिस का नाम हरिहरदास त्यागी था तीर्थ यात्रा करते हुए रैंकी में आया। वह इस मूर्ति को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने आसपास के क्षेत्र का भ्रमण किया तो उसे नाग संस्कृति से संबंधित कई अवशेष मिले जिन्हें वह अपने साथ ले गया। बाद में उसने रैंकी क्षेत्र पर एक लेख 'नाग जाति के संस्कृति चिह्न' हरियाणा से प्रकाशित हिन्दू आजकल पत्रिका में छपवाया। उसका यह लेख 2 मई सन 1993 में प्रकाशित हुआ। किन्तु जो अमूल्य प्राचीन वस्तुएँ वह साधु अपने साथ ले गया, वे अब कहाँ है। इस की जानकारी किसी को नहीं है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार साधु का देहावसान वृद्धाश्रम अम्बफला जम्मू में एक दशक पूर्व हुआ।

स्थानीय इतिहास

स्थानीय नागरिक दूनी चन्द के अनुसार रैंकी की बावली का निर्माण स्थानीय राणा 'रंगैलू' ने करवाया। राणा रंगैलू ने इस गाँव में एक दुर्ग और महल बनवाया। दुर्ग के पुरावशेष आज भी रैंकी गाँव की एक पहाड़ी पर बिखरे पड़े हैं। स्थानीय नागरिक राणा रंगैलू के वंशज 'रंगेयाल' कहलवाए। वे नाग पूजक थे। गौरी कुंड तक का क्षेत्र उनके अधिकार में था।

आठ सौ वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में हन्ताल बाहर से आए। उन्होंने

पहले मान तलाई पर अधिकार क़िया और बाद में रैंकी कोट को घेरे में लेकर उस में आग लगा दी। रेंकी कोट में रंगेयाल योद्धा बिना लड़े ही आग की लपटों का शिकार हुए और सभी मर गए। हन्तालों ने रैंकी दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इस राजवंश की एक महिला जो मायके गई हुई थी वह बच गई। उसके पेट में एक बच्चा था। उसी बच्चे से रंगेयाल वंश चला।

नागमूर्ति

स्थानीय लोगों के अनुसार रैंकी की बावली में जो नागमूर्ति प्रतिष्ठित है, वह भुड़दार देवता की है। भुड़दार राजा वासुकि नाग का पुत्र था। रंगेयाल उसे अपना कुल देवता मानते थे, अत: उन्होंने ही इस मूर्ति को बनवाया और इस बावली में संस्थापित किया। नाग संस्कृति के कई पुरावशेष आज भी इस बावली के इर्द गिर्द उपलब्ध हैं, यथा : नाग देवता के पाँव के निशान, पुराने कोह्लू के निशान, काली माता मंदिर की मूर्तियाँ तथा एक प्राचीन जलाशय आदि।

बावली-दो

स्थानीय लोगों के अनुसार रैंकीकोट में कभी एक दर्जन के लगभग बावलियाँ थीं जिन के पुरावशेष गौरी कुंड की पहाड़ी तक आज भी द्रष्टव्य हैं। किन्तु कुछ बावलियाँ प्राचीन रूप में अब भी बची है जिन में रैंक कोट की दूसरी बावली भी एक है। यह बावली अष्ठकोणीय है। यह दो मीटर लम्बी और दो ही मीटर चौड़ी है। इस बावली की दो अट्टारिकाएँ हैं। बड़ी अट्टारिका के मध्य-भाग में नाग-मूर्ति जड़ित है।

स्थानीय लोग इसे नाग देवता की बावली ही मानते हैं। इस बावली के जल का उपयोग स्थानीय लोग आज भी करते हैं। यह बावली सड़क से दो सौ मीटर दूर खुले खेतों के निकट स्थित है।

पाप नाशिनी बावली

यह बावली डुग्गर के प्रसिद्ध पौराणिक एवं ऐतिहासिक उप नगर सुद्ध महादेव में एक छोटी सी पहाड़ी के आँचल में अवस्थित है।

सुद्ध महादेव जम्मू से 107 कि.मी. की दूरी पर चनैनी के पूर्व दक्षिण में शिवालिक पर्वत शृंखला की गोद में बसा एक अति रमणीक स्थल है।

बस अड्डा सुद्ध महादेव से जो सड़क मान तलाई को जाती है, बस उसी सड़क के उतर में सुद्ध महादेव मंदिर से लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर यह बावली द्रष्टव्य है।

इस बावली का उल्लेख कई धार्मिक ग्रंथों में भी मिलता है। प्राय: जो यात्री सुद्ध महादेव में शिव मंदिर में दर्शन करने आते हैं, वे पहले इसी बावली में स्नान करते है। लोक विश्वास है कि व्यक्ति जाने या अनजाने में यदि कोई पाप करता है और इस बावली में बैठ कर भगवान शिव का ध्यान करके प्रायश्चित करता है तो भगवान शिव उसके पापों का शमन करते हैं।

वैसे भी लोक परम्परा के अनुसार इस बावली में स्नान करने के बाद ही महादेव-मंदिर में जाना चाहिए। लोक विश्वास है कि इस बावली के जल में कई औषधीय गुण भी हैं। यदि इसके जल में स्नान किया जाए या इस जल का उपयोग प्यास बुझाने के लिए किया जाए तो कई शारीरिक व्याधियाँ दूर होती हैं। यह बावली सड़क से केवल 15 मीटर दूर है, अत: बड़ी सहजकता के साथ सीढ़ियाँ चढ़ कर बावली तक पहुँचा जा सकता है। यह बावली छायादार वृक्षों से आवेष्टित है। अत: यह स्थान शीतल लगता है।

डुग्गर के प्रसिद्ध कला विद् विद्यारत्न खजूरिया ने इस बावली पर शोध किया है। उनके अनुसार यह बावली वर्गाकार है। इस की प्रत्येक भुजा 6 मी. x 6 मी. है। इस बावली में जल धारा सिंह मुख से गिरती है। यह जलधारा अति पावन मानी जाती है। लोक विश्वास है कि यह जलधारा देविका का ही एक रूप है।

इस बावली में 12 मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :

पूर्वी दीवार में चार मूर्तियाँ ब्रह्मा, विष्णु, शिव पार्वती और नंदी

पर आरूढ़ शिव की है।

उतरी दीवार में छह मूर्तियाँ हैं, जो क्रम से इस प्रकार हैं :

1. सीता राम और लक्ष्मण की मूर्ति
2. सहस्त्र बाहू और परसराम के मल्लयुद्ध की मूर्ति
3. चतुर्भुज गणेश की मूर्ति
4. मत्स्य अवतार की मूर्ति
5. वामन अवतार की मूर्ति
6. भगवान विष्णु की मूर्ति

पश्चिमी दीवार में तीन मूर्तियाँ सुशोभित हैं :

1. नृसिंह अवतार की मूर्ति
2. जगन्नाथ भगवान की मूर्ति
3. किसी अज्ञात देवता की मूर्ति

इस बावली में एक शिलालेख भी जड़ित है जिस की शब्दावली डोगरी में है। शिलालेख इस प्रकार है :

ए बौली त्रौं कारीगिरें बनाई, पुरमण्डल दा नत्थु, ऊधमपुरै दे निक्का ते विजे राम।

(यह बावली तीन कारीगिरों ने निर्मित की। पुरमंडल का नत्थु, ऊधमपुर से निक्का और विजेराम।

पुरमंडल का नत्थु अपने समय का महान शिल्पकार था। उसके हाथ की घड़ी मूर्तियाँ कलापक्ष की दृष्टि से उन्नत हैं।

विद्यारत्न खजूरिया के शब्दों में यह बावली कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है।

सुद्ध महादेव पुस्तक के लेखक अयोध्या नाथ केरणी के अनुसार पाप नाशनी बावली पहले जीर्ण शीर्ण अवस्था में थी। इस की प्रस्तर शिलाएँ उखड़ी हुई थी। इस बावली की ऐसी स्थिति का देखते हुए सुद्ध महादेव उपनगर के ही मसु शाह ने इस बावली के पुर्नोद्धार का निर्णय लिया। वे जाति के परोच थे। उनके पास पर्याप्त धन था।

मसु शाह ने पुरमंडल से दो शिल्पकार बुलवाए और उन की सहायता हेतु सुद्ध महादेव के राम चन्द तथा अन्य मजदूर भी काम पर लगाए। सर्व प्रथम पत्थर तराशने का काम किया गया तदनन्तर मूर्तियाँ बनाने का काम भी आरंभ किया गया, मूर्तियों का आकार सामान्य है।

केरणी के अनुसार जो मूर्तियाँ जड़ित हैं उनका क्रम इस प्रकार है :

1. घुड़सवार राजा से मिलने जाता हुआ।
2. भगवान जगन्नाथ।
3. नृसिंह अवतार, हिरणा कश्यप का वध।
4. ब्रह्मा का जन्म।
5. गोरख नाथ जी।
6. मत्स्य अवतार।
7. गणेश भगवान चूहे पर सवार।
8. दो देवों में युद्ध।
9. राम लक्ष्मण तथा सीता।
10. शिव पार्वती एक नन्दी पर बैठे हुए।
11. विष्णु भगवान तथा राजा बलि
12. बराह अवतार

केरणी जी के शब्दों में - एक लम्बी शिला को तराश कर आगे सिंह मुख बना कर लगभग छह फुट (अनुमानतः पौन दो मीटर) की ऊँचाई से बावली में जलधारा गिराने की व्यवस्था की गई है। सुद्ध महादेव पुस्तक के अनुसार बावली के निर्माण का कार्य विक्रमी सम्वत् 1980 (सन 1934 ई.) को सम्पन्न हुआ।

मूर्तिकारों के नाम प्रेम और नत्थु थे। ये दोनों पुरमंडल के थे।

अयोध्या नाथ केरणी के शब्दों में - इस बावली को 'मित्री बाँ' के नाम से भी जाना जाता है। डुग्गर में मित्र चयन करने की परम्परा बहुत पुरानी है। जो लोग इस बावली में स्नान करने आते हैं वे दूर से आए हुए श्रद्धालुओं में से किसी एक को मिष्ठान्न खिलाकर अपना मित्र

बनाते हैं। वे दोनों इस बावली के जल को अपनी अंजली से आचमन करते हैं और एक दूसरे को गले लगाते है। मैत्री न केवल पुरुषों में अपितु महिलाओं में भी की जाती है। महिलाएँ भी एक दूसरे को गले लगाती हैं। मिठाई खिलाती हैं और मित्र बन जाती हैं। बहुत पहले पुरुष महिलाओं को और महिलाएँ पुरुषों को भी अपना मित्र बना सकती थीं।

विद्‌यारत्न खजूरिया ने भी अपनी पुस्तक 'सम्भाल उस कल्ले दी' में लिखा है कि सुद्ध महादेव में 'मित्र मार्ग' का प्रचलन था। मंदिर के महंत इस मार्ग का परिपालन गुप्त रूप से करवाते थे। इस मार्ग में पुरुषों और महिलाओं में मेल-जोल बढ़ाने की अनुमति थी। यह बावली सम्भवतः मित्रमार्ग का केन्द्र थी।

अयोध्या नाथ केरणी के शब्दों में - पाप नाशनी बावली पर जनश्रुति के अनुसार महर्षि कश्यप ने तपस्या की थी अतः उस समय से ही इस को तीर्थ की संज्ञा दी गई है। चैत्रमास की चतुर्दशी और मार्गशीर्ष की कृष्ण चतुर्दशी को यहाँ छोटे-छाटे मेले लगते हैं। किन्तु यहाँ सब से बड़ा मेला ज्येष्ठ मास की चतुर्दशी और पूर्णिमा को लगता है। हज़ारों की संख्या में इस बावली में पुरुष और महिलाएँ स्नान करते हैं।

यह बावली डुग्गर का एक लोक तीर्थ है अतः इस के जल का स्पर्श करने हज़ारों श्रद्धालु यहाँ प्रति वर्ष आते हैं।

बरनोट की बावली

यह बावली चनैनी के अंतर्गत विनिसंग के निकट बरनोट स्थान में अवस्थित है। मूल बावली तो अब क्षतिग्रस्त है किन्तु फिर भी इस के निकट कई शिलाखंड बिखरे पड़े हैं। जहाँ बावली थी वहाँ अब एक छोटी सी तलाई रह गई है। इस तलाई में एक विशेष प्रकार की घास उगी हुई है जिसे 'बरेआं' कहते हैं।

स्थानीय लोग इस बावली को एक लोकतीर्थ के रूप में पूजते हैं। वे बरेआं की गाँठें बांध कर मन्नत मांगते हैं। मन्नत पूरी होने पर वे इस बावली में आते हैं ओर घास की गाँठें खोल कर बावली की पूजा करते हैं। इस बावली का निर्माण लोक परम्परा के अनुसार चनैनी के

राजा हठी पाल ने करवाया।

जनश्रुति है कि राजा हठपाल ने विनिसंग के ऊपरी भाग में एक बाग लगवाया। उसने उस बाग तक छोटी नहर पहुँचाने का बहुत प्रयास किया किन्तु पानी बाग तक न पहुँचा। राजा ने स्थानीय ज्योतिषियों को बुलाया और पानी ऊपर न चढ़ने का कारण पूछा। ज्योतिषियों ने एक मत से कहा कि पानी का देवता परिवार में किसी की बलि माँगता है।

राजा की एक बहू हिमाचल की थी। राजा ने कहारों को पालकी देकर बहू को मायके से राजमहल लाने का आदेश दिया। कहार पालकी उठा कर चल पड़े। वे बहू को पालकी पर बैठा कर राजमहल ले आए।

राजा ने ज्योतिषियों द्वारा बताये गए मुर्हुत पर अपनी बहू की चिनाई बरनोट में एक दीवार में करवाई। बहू की गोद में एक बच्चा भी था। राजगिरों ने उसे भी दीवार में चिन दिया।

कई दिनों बाद राजा को स्वप्न में बहू दिखाई दी। उसने राजा को उस की याद में स्मारक बनाने को कहा। राजा ने बहू के नाम से जो बावली बनवाई चनैनी के लोग उसे ही बरनोटी की बावली कहते हैं। इस बावली पर कई लोकगीत लिखे गए हैं। एक गीत की कुछेक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

जली-बली जायां मेरिए बरमोटी दी कूह्ले
चढ़दे नीं चंदरे नीर।
कियां नी चढ़दे नीर।
सद्दो जो पंतेगी पुच्छी तां लैन्ने आं
लैने नजूम लुआऽऽ।
पढ़दे जे पणत, झुणदे तां मुण्डियां,
गल्ल ते कीमती नेइयों जा।
मुख जे छोटा राजा, गल्ल जे बड्डी,
गल्ल ते आक्खी नेइयों जा
जेठा जे पुतर राजा
जेठी जे नूँह वे,

दौन्नें दा लगदा गल्हूर।
जली-बली जायां मेरिए ..... ।
राजा ते रानी दौमैं चेन्ता जे करदे,
गल्लां जे करदे,
कियुयां तां देना ऐ गलहूर
सिर जे होहङन राजा नूहां बतेहरियाँ
पुतर जे होहङन राजा नूहां बतेहरियाँ
नूहां दा देना ऐ गलहूर
जली-बली जायां मेरिए बरनोटी दी कूहले
चढ़दे नीं चन्दरे नीर ....।

दुशाला की बावली

यह बावली चनैनी से अनुमानतः तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थल मंदिर दुशाला में स्थित है। बावली तक पहुँचने के लिए पर्यटक चनैनी से पैदल पदयात्रा प्रारंभ करते हैं और तवी नदी के उतरी तट के साथ चलते-चलते दुशाला मंदिर पहुँचते हैं। मंदिर के निकट उग घने और ऊँचे छायादार वृक्षों के निकट ही यह बावली अवस्थित है।

पहले यह बावली चारों ओर से खुली थी किन्तु जब वृक्षों के पते इस में बड़ी मात्रा में गिरने लगे तो इससे जल में प्रदूषण होने लगा। बावली के जल में जब अधिक प्रदूषण फैला तो प्रबंधों ने इस बावली को छत डाल कर ढक दिया है। अब इस बावली का जल निर्मल और स्वच्छ है।

इस बावली के साथ लोक आस्था भी जुड़ी हुई है। बावली के सामने एक देहरी है। देहरी में दो पिण्डियाँ और एक मटका बना हुआ है। देहरी के बाहरी भाग में पीछे की ओर पत्थर का कुते की आकृति का सिर बना कर लगाया गया है।

'सुद्धमहादेव' पुस्तक के लेखक श्री अयोध्या नाथ केरणी के अनुसार यह देहरी और बावली अनुमानतः पाँच सौ वर्ष पुरानी है। इन

दोनों का निर्माण चनैनी के ही किसी राजा ने प्रायश्चित भावना से प्रेरित होकर करवाया। बताया जाता है कि बावली के निकट खड़े होकर चनैनी की किसी गर्भवती रानी ने राजा के व्यवहार से दुःखी होकर आत्मदाह किया। रानी के साथ कुता भी आग में कूद कर जल मरा।

राजा ने देहरी और बावली के अतिरिक्त इस स्थान पर एक शिव मंदिर का निर्माण भी करवाया। अब यह स्थान एक लोकतीर्थ के रूप में प्रसिद्ध है।

इस बावली के विषय में एक लोकश्रुति यह भी प्रचलित है कि भगवान शिव अपनी बारात लेकर जब मानतलाई की ओर जा रहे थे तो वे कुछ देर के लिए इस स्थान पर भी रूके। यहाँ उनकी वृहतिका गिर गई। उस समय से इस स्थान का नाम दोशाला प्रचलन में आया। शिव भक्तों ने यहाँ एक शिव मंदिर और भव्य बावली का निर्माण करवाया। शिव भक्त पहले बावली में स्नान करते थे और तदुपरान्त वे मंदिर जाते थे। दुशाला से संबंधित कई अभिलेख और शिलालेख उपलब्ध हैं। किन्तु विकृत होने के कारण इन्हें पढ़ा नहीं जा सकता।

तलड़सू की बावली

दुशाला से लगभग तीन किलोमीटर विनिसंग मार्ग पर एक प्राचीन बावली के पुरावशेष मिलते हैं। इस बावली को स्थानीय लोग 'तलड़सू बाँ' नाम से अभिहित करते हैं।

लगता है कि जो यात्री चनैनी से सुद्ध महादेव की यात्रा पर जाते थे वे पहले कुछ देर के लिए दुशाला में रूकते थे और वहाँ से चल कर तलड़सू पहुँचते थे। एक घंटा की पैदल यात्रा के बाद उन्हें विश्राम और जल की आवश्यकता पड़ती थी। किसी धनाढ्य व्यक्ति ने तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए लगता है यहाँ बावली का निर्माण करवाया।

इस बावली में जड़ित शिला खंडों का अवलोकन करने से लगता है कि मूल रूप से यह एक सुन्दर और भव्य बावली रही होगी। उपेक्षा के कारण बाद में जीर्ण-शीर्ण स्थित को प्राप्त हुई।

इस बावली के साथ ही एक प्राचीन तलड़सू माता का मंदिर था। यह बावली उसी मंदिर के परिसर में थी। किन्तु अब यहाँ जो नया मंदिर बना है उसे दुर्गा माता मंदिर कहते हैं। श्रद्धालु मंदिर जाने से पूर्व इस बावली के जल से अपना शरीर पवित्र करते हैं।

डोगरी लेखिका प्रेम प्यारी अध्यापिका के एक शोध लेख के अनुसार राजा केदारचन्द पर एक बार सिक्ख सेना ने आक्रमण करने के उद्देश्य से चनैनी की ओर प्रस्थान किया। राजा केदारचन्द तब मानतलाई में था। सिक्ख सेना राजा की तलाश में चनैनी से मानतलाई की ओर दोशाला मार्ग से आगे बढ़ी। सेना जब तलड़सू स्थान पर पहुँची तो एक युवा लड़की उनके मार्ग के बीच में आकर खड़ी होकर कहने लगी - 'आप वापस लौट जाओ। आप हमारे राजा को न तो पकड़ सकते हैं और न ही मार सकते हैं।' एक सिक्ख सैनिक लड़की को मार्ग से हटाने के लिए आगे बढ़ा। किन्तु लड़की जब अपने स्थान में डटी रही तो उस सैनिक ने उस लड़की का सिर काट दिया।

इस घटना के बाद वहाँ उड़ते हुए रिऊंगलों (विषैले छोटे उड़ने वाले कीड़े) का एक दल पहुँचा। वे सिक्ख सैनिकों को काटने लगे। सैनिक भी घबरा गए। वे वहाँ से वापस लौट गए। सिक्ख सैनिकों ने जिस लड़की का सिर काटा था। गाँव वालों ने बाद में उसको एक देवी के रूप में पूजा। उसके नाम की एक भव्य बावली बनवाई जिसे 'तलड़सू की बावली' कहते हैं।

इस बावली में कई मूर्तियाँ संस्थापित है। इन मूर्तियों में एक मूर्ति बिना सिर के है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह मूर्ति उसी लड़की की है। यहाँ उस लड़की के नाम पर एक मंदिर भी बना है जिसे देवी का मंदिर कहते हैं।

पांडवों का पानी (बावली)

यह छोटी सी बावली सुद्ध महादेव क्षेत्र में महामाया मंदिर के निकट अवस्थित है। मंदिर के कुछ ऊपर एक समतल मैदान है। स्थानीय लोग इस मैदान को ' पांडवों का सेर' कहते हैं। जन श्रुति है

कि बनवास काल में पांडवों ने इस स्थान में कुछ समय के लिए अपना शिविर स्थापित किया था। इस मैदान के साथ ही एक प्राचीन वृक्ष है। इस वृक्ष के नीचे अब तीन मूर्तियाँ द्रष्टव्य हैं। इनमें एक मूर्ति नागदेवता भुड़दार की है। दूसरी मूर्ति स्थानीय लोकदेवी करंजूट की और तीसरी मूर्ति गणेश की है। इस वृक्ष से कुछ ऊपर एक बावली है जिसे 'पांडवों का पानी' कहते हैं। बताया जाता है कि उपरोक्त तीनों मूर्तियाँ पहले इसी बावली में संस्थापित थीं किंतु किसी कारण बावली को क्षति पहुँची तो स्थानीय लोगों ने इसे वहाँ से उठाया और वृक्ष के नीचे स्थापित किया।

जनश्रुति है कि पांडव जब 'सेर' में रहते थे तो वे इसी बावली के जल का उपयोग करते थे। एक अन्य लोकश्रुति के अनुसार यह बावली नाग देवता भुड़दार के नाम समर्पित है। एक अन्य दन्त कथा के अनुसार यह बावली लोक देवी करजूट से संबंधित है। लोकदेवी करजूट के विषय में कहा जाता है कि वे शिवगढ़ पर्वत में जिस स्थान पर रहती थीं उसे 'चंगर' नाम से अभिहित किया जाता है। वहीं उन की गुफा थी।

एक बार वे कोसार के पाण्डु कोट स्थान पर घूमती फिरती आई। पाण्डुकोट में उन दिनों पाण्डु राणा राज्य करता था। वे उसके घर चली गई और उस की पत्नी से मिलीं। जब दोनों में मेल मिलाप बढ़ा तो इस की भनक पाण्डु राणा के कानों में भी पड़ी। उसने करंजूट पर सन्देह किया और उस की हत्या कर दी।

बाद में तांत्रिकों के सुझाव पर रोग मुक्त होने के लिए उसने करंजूट के नाम एक बावली बनवाई जिस का नाम रखा - 'राणा पाण्डु की बावली' इस बावली में उसने करजूट की मूर्ति प्रतिष्ठित की और उसे एक लोकदेवी के रूप में मान्यता दी।

राणा पाण्डु की बावली को ही बाद में लोग पाडु की बावली कहने लगे। अब इस बावली को पांडवों के नाम के साथ जोड़ दिया गया है। 'पाण्डु की बावली' अब एक लोक आस्था का केन्द्र है।

सुद्ध महादेव क्षेत्र के लोग सोमवती अमावस्था के दिन यहाँ स्नान करने आते हैं।

'सुद्धमहादेव' पुस्तक के लेखक अयोध्या नाथ केरणी के अनुसार यह स्थान पुरातत्व की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। बावली से कुछ दूर पत्थर की चट्टानों में प्राचीन गुफाएँ हैं। इस के निकट ही 'खुआ फाट' स्थान है। यहाँ भी एक गुफा और उसके भीतर एक शिलालेख है। बूढ़ी सुद्ध में भी एक गुफा है। वहाँ से कुछ दूर एक बड़ी सी गुफा है जिसमें कई लोग एक साथ बैठ सकते हैं। खुआ फाट में और भी कई छोटी-बड़ी गुफाएँ हैं। अत: यह स्थान अति महत्वपूर्ण है।

कुलासर की बावली

कुलासर की बावली चनैनी क्षेत्र की बावलियों में कई बातों में विशिष्ट है। इस बावली का वस्तु-विन्यास तथा शैली अन्य बावलियों से कुछ अलग ही है। इसमें जो शिलाखंड जड़ित हैं वे तक्षित तो हैं किंतु उन्हें तराशने की शैली विलक्षण है।

इस बावली का अवलोकन करने से ऐसा लगता है कि यह किसी देवालय का हिस्सा रही होगी। इस बावली के निकट ही एक लेटवां तक्षित मूर्ति है। इस मूर्ति के विषय में लोक अवधारणा यह है कि यह तांत्रिक मूर्ति है। कई इसे प्रेत शिला भी कहते हैं। इस मूर्ति को स्थानीय लोग बड़े ही आश्चर्य से देखते तो हैं किन्तु स्पर्श नहीं करते हैं। कुलासर की यह बावली तहसील चनैनी के अंतर्गत गाँव घड़िया के गुज्जरों के मुहल्ले में अवस्थित है। इस मुहल्ले को कुनकाड़ा मुहल्ला कहा जाता है।

गुज्जर परिवार अब भी इस बावली के जल का उपयोग किसी न किसी रूप में करते हैं। किन्तु वे लेटवां मूर्ति को स्पर्श नहीं करते हैं। लोक विश्वास है कि मूर्ति को स्पर्श करने से अहित होता है। वैसे दूर से देखने पर यह लेटवां मूर्ति किसी समाधिस्थ देवात्मा की लगती है।

पट्टन की बावली

पट्टन गढ़ चनैनी से 19 कि.मी. दूर एक प्राचीन सांस्कृतिक स्थल है। इस गाँव में एक प्राचीन मंदिर है। मंदिर के निकट ही एक बावली है जिस का निर्माण तक्षित शिलाखंडों से किया गया है। बावली

के मुख भाग में नाग मूर्ति जड़ित है। इस की अट्टारिकाएँ सामान्य हैं। बावली का जल दर्पण की भाँति निर्मल है। इस बावली की वास्तुकला चनैनी की बावलियों से कुछ भिन्न भी है। इस में जड़ित कई शिलाएँ अनालंकृत भी है।

बावली का अवलोकन करने से लगता है कि यह प्राचीन है। लोकश्रुतियों के अनुसार यह बावली राणा काल की है। इस बावली और मंदिर का निर्माण कहते हैं कि राणा काल में हुआ है। पट्टन गढ़ का क्षेत्र स्वतंत्रता से पहले बन्दरालता का एक भाग था।

अत: इस क्षेत्र के राणाओं ने जो निर्मितियाँ कीं उन पर बन्दरालता शैली का अधिक प्रभाव था। भारतीय पुरातत्व विभाग को इस क्षेत्र से कुछ प्राचीन शिलालेख भी मिल हैं जिन का अध्ययन किया जा रहा है। पट्टनगढ़ की बावली इस समय जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है। यह हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। इस का संरक्षण किया जाना चाहिए।

धनास की बावली

धनास चनैनी से 12 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है। जो सड़क चनैनी से पट्टनगढ़ जाती है, यह गाँव उसी सड़क से डेढ़ कि. मी. की दूरी पर है। यह एक पहाड़ी गाँव है।

इस गाँव का प्राकृतिक परिदृश्य अति मनोहर है। गाँव तक पहुँचने के लिए एक पगडंडी मार्ग भी बना है। इस गाँव के मध्य भाग में नाग देवता भुड़दार का एक नाग शैली में बना मंदिर है। यह बावली उसी मंदिर के निकट है।

यह बावली शिलाखंडों से निर्मित है। इस बावली का अवलोकन करने से लगता है कि इस का पुर्ननिर्माण हुआ है। स्थानीय लोग इस बावली को अति पावन मानते हैं। इस बावली के जल से लोग नागराजा भुड़दार का अभिषेक करते हैं।

बावली की सफाई का ध्यान गाँव के लोग रखते हैं। कई

श्रद्धालु पहले इस बावली में स्नान करते हैं, तत्पश्चात् वे भुड़दार देवता के दर्शन करके 'बुड्ढे केदार' तीर्थ जाते हैं। वहाँ एक गुफा में एक घुटना सा बना है, जो शिलाखंड को तक्षित करके बनाया गया है। कई विद्वान इस घुटना को भगवान शिव से संबंधित मानते हैं और कई इसे महात्मा बुद्ध की अधूरी मूर्ति मानते हैं। धनास की इस बावली के आसपास और भी कई पुरावशेष बिखरे पड़े हैं जिन का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है।

रूझार की बावली

रूझार तहसील चनैनी के अंतर्गत एक पहाड़ी गाँव है। इस गाँव से दो कि.मी. की दूरी पर एक स्थान 'बनी' है।

'बनी' एक छोटी सी वन्यस्थली है। इस में लोक शैली में निर्मित कई नाग स्तम्भ और एक बावली है। बावली जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इसके निकट कुछेक ही शिलाखंड उपलब्ध हैं। फिर भी इस बावली का विशेष महत्व है। इसके निकट जो स्तम्भ हैं, वे दो मीटर ऊँचे हैं और उनके ऊपर नाग मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं जो देखने में बहुत ही विलक्षण हैं। रूझार जाने के लिए पर्यटक 'चज्ज' स्थान पर उतरते हैं यहाँ तीन दुकानें है। दुकानों के निकट सड़क के नीचे बड़े-बड़े तीन नाग बने हैं जो देखने में बड़े ही विलक्षण हैं। ये चूने के पानी से निर्मित हैं। चज्ज से एक पहाड़ी पगडंडी रूझार की ओर जाती है। तीन किलोमीटर चढ़ाई चढ़ने के बाद रूझार गाँव दृष्टिगत होता है। यहाँ भी चश्में और बावलियाँ हैं।

रूझार से दो किलोमीटर दूर 'बनी' है और वहाँ से तीन किलोमीटर दूर खादराकुंद की गुफाएँ हैं। इन्हीं गुफाओं के निकट एक मंदिर और एक सर है। पर्यटक इस बावली, गुफा और सर के दर्शन करके लौट आते हैं।

कोसार की बावली

यह विशाल बावली तहसील चनैनी के अन्तर्गत बप्प पंचायत के लुलाट गाँव में स्थित हैं। इसे 'कोहसर' की बावली भी कहा जाता

है। डा. अशोक जेरथ ने अपनी पुस्तक फोक आर्ट ऑफ डुग्गर में इस बावली का नाम 'कोकसर' लिखा है। इस गाँव में कसरोर साग पर्याप्त मात्रा में उगता है, शायद इसी कारण इस का नाम कोसार प्रचलित है।

कोसर गाँव में पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य और बावली है। यह बावली इस क्षेत्र की मुख्य बावलियों में से एक है। यह बावली मूर्तियों से सुसज्जित है। इस में संस्थापित मूर्तियों में दर्शनीय मूर्तियाँ अवतारों की है।

अवतारों में भगवान राम लक्ष्मण और सीता की मूर्ति, विष्णु की मूर्ति मत्स्य अवतार की मूर्ति, कच्छ अवतार की मूर्ति, बराहावतार की मूर्ति, भगवान परशुराम की मूर्ति तथा कृष्ण की मूर्ति मूर्तिकला की दृष्टि से अति सुन्दर मूर्तियाँ हैं। इनके अतिरिक्त देवी दुर्गा की मूर्ति, हनुमान की मूर्ति और गणेश की मूर्तियाँ भी संस्थापित हैं।

कोसार की बावली में जल जीवों, पशु और पक्षियों की मूर्तियाँ भी प्रदर्शित हैं। इन मूर्तियों का अध्ययन करने से इतना सुस्पष्ट है कि किसी समय इस क्षेत्र में मूर्ति तक्षण कला उच्च शिखर पर थी।

पश्चिमोन्मुख यह बावली पहाड़ी शैली में निर्मित है। इस बावली की अट्टारिकाएँ प्रस्तर शिलाओं से निर्मित है। इस बावली के मुख-भाग में जो नाग मूर्ति जड़ित है, वह देखने में विलक्षण लगती है। स्थानीय लोग इस बावली की सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं।

बावली का जल शीतल है अतः लोग घरों में इस का उपयोग करते हैं। यह बावली हमारी एक अमूल्य धरोहर है।

मादा की बावलियाँ

चनैनी तहसील के अंतर्गत मादा एक पहाड़ी गाँव है। यह गाँव कुद्द से जुड़ा हुआ है।

इस गाँव का प्राकृतिक परिवेश अति रमणीक एवं सौंदर्यमय है। घने चीढ़ों के वृक्षों के लदे इस गाँव में जल के कई स्रोत हैं जिन में मुख्य इस गाँव की बावलियाँ हैं।

मादा की प्रसिद्ध बावलियाँ निम्न हैं :

1. कड़गोती की बावली

यह बावली इस क्षेत्र की पुरानी बावलियों में एक है। इस बावली में शिलाखंडों पर जो तक्षण कार्य हुआ है। वह दर्शनीय है। पूर्वोन्मुख इस बावली का जल स्वास्थ्यवर्द्धक है। इस बावली का निर्माण किसी 'राणा' ने करवाया है।

2. लुहार की बावली

यह बावली बजीरों के मुहल्ले में है। बताया जाता है कि मादा के ही एक बजीर ने जो चनैनी राजा का सामंत था, इस बावली का निर्माता है। यह बावली पूर्वोन्मुखी है।

3. कैंथली की बावली

यह बावली भी पूर्वोन्मुखी है। इस बावली के निकट एक पुराना कैदखाना था जिसके पुरावशेष अब भी इस क्षेत्र में द्रष्टव्य है। कैदियों को इसी बावली का जल पीने के लिए दिया जाता था।

4. लेस की बावलियाँ

लेस में तीन बावलियाँ थीं। इनमें एक बावली भूमिसात है। फिर भी उसके अवशेष बिखरे पड़े हैं। शेष दा बावलियों का उपयोग स्थानीय लोग आज भी करते हैं।

5. द्रमण की बावली

यह बावली ब्राह्मणों के मुहल्ले में है, अतः स्थानीय लोग इसे ब्राह्मणों की बावली भी कहते हैं। इस बावली पर अति सुन्दर तक्षण कार्य हुआ है।

मादा में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के कई पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। इन के संरक्षण की आवश्यकता है।

सूचक : जय कुमार हन्ताल सरपंच मादा - चनैनी

कुद्द की बावलियाँ

डुग्गर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल कुद्द में दो बावलियाँ हैं। एक बावली जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय मार्ग पर स्थित कुद्द बाजार के मध्य में और दूसरी कुद्द के वार्ड नम्बर एक में अवस्थित है।

जो बावली बाजार में है, वह पूर्वोन्मुखी है। इस बावली के सिंह मुख्य से जो जल धारा बावली में गिरती है उस का परिदृश्य अति सुन्दर है। प्राय: जितने भी पर्यटक कुद्द बाजार में रूकते हैं, वे इस बावली के शीतल जल से अपनी प्यास बुझाते हैं। इस बावली के ऊपरी भाग में बाबा कुद्द का मंदिर है। यह बावली उसी को समर्पित है।

दूसरी बावली जो कुद्द गाँव में है, उसके जल का उपयोग कुद्द के निवासी अपने घरों में करते हैं।

चम्पैड़ी की बावलियाँ

मोटर शैड से जो पगडंडी चनैनी की ओर जाती है, उस पगडंडी के साथ तीन प्राचीन बावलियाँ द्रष्टव्य है। ये बावलियाँ वास्तुकला की दृष्टि से अर्द्ध पहाड़ी शैली में हैं। इन बावलियों के निर्माण में जिन प्रस्तर शिलाओं का प्रयोग किया जाता है, वे स्थानीय लगते हैं।

इन बावलियों का विकास जन श्रुतियों के अनुसार चनैनी के हन्ताल राजाओं ने किया। अब ये बावलियाँ उपेक्षा का शिकार हैं।

लद्दा की बावलियाँ

लद्दा पंचायत में वैसे तो कई बावलियाँ हैं किन्तु मुख्य रूप से दो बावलियाँ अति प्रसिद्ध हैं। एक बावली लद्दा की धार में है। यह बावली नाग देवता को समर्पित है। दूसरी बावली लद्दा में है। इन दोनों बावलियों का जल हिम के समान शीतल है, अत: इस का उपयोग करने से ठंडक पहुँचती है। जो बावली लद्दा की धार में स्थित है उसका उपयोग मनुष्य, पशु, पक्षी, यात्री आदि सभी करते हैं। यह बावली घने छायादार वृक्षों से आच्छादित है, अत: इस स्थान का

प्राकृतिक परिदृश्य दर्शनीय है।

यह बावली भी शिलाखंडों से निर्मित है। इस का वास्तु-विन्यास विशुद्ध पहाड़ी है। बावली बताते हैं कि छह मीटर घेरे में है।

धार गद्दियाँ की बावलियाँ

धार गद्दियाँ में दो बावलियाँ हैं। एक बावली पखलाई पंचायत के अन्तर्गत है और दूसरी बावली पछोरी पंचायत में है। ये दोनों बावलियाँ पहाड़ी लोक शैली में निर्मित हैं। इन दोनों बावलियों का उपयोग मनुष्यों के साथ-साथ पशु भी करते हैं। प्राय: गर्मियों में पशुचारक जब अपने पशु लेकर धार गद्दियाँ की ओर जाते हैं तो वे दोपहर का समय इन बावलियों में बैठ कर व्यतीत करते हैं। वे मस्ती में आकर जब बाँसुरी की धुनें छेड़ते हैं तब सारा वातावरण संगीतमय हो उठता है।

कित्थर की बावली

कित्थर को जागीर कित्थर के नाम से भी जाना जाता है। यह गाँव पहले चिरड़ी पंचायत के अंतर्गत था। इस गाँव में 'राणा काल' के कई पुरावशेष उपलब्ध हैं।

कित्थर की बावली वास्तुकला की दृष्टि से कुछ अलग भी है। इसमें जो शिलाखंड जड़ित हैं उनमें कई अतक्षित भी हैं।

इस बावली का जल पीने में बहुत ही मज़ेदार है। गाँव के लोग घरों में इसी बावली के जल का उपयोग करते हैं। यह बावली हमारी जल-धरोहर है। इस का संरक्षण किया जाना चाहिए।

जम्बाली रानी की बावली

सुद्ध महादेव के मुख्य द्वार के सन्मुख एक ऐतिहासिक महत्व की बावली है। इस बावली का निर्माण चनैनी के राजा राम चन्द ने सम्वत 1990 (सन 1934) विक्रमी में करवाया।

बावली के पास ही एक प्राचीन चिनार का वृक्ष है। इस वृक्ष के नीचे एक सीध में प्रस्तर शिला पर उत्कीर्ण यक्षिणी की मूर्ति,

शिवलिंग तथा गणेश की मूर्ति स्थापित की गई है, ये मूर्तियाँ बावली बनने से भी पूर्व की लगती हैं।

बावली की अट्टारिका में एक शिलालेख भी जड़ित है जिसमें देवनागरी लिखा है :

ओं

श्री बुआ रानी साहिबा जम्बाली

सुद्ध महादेव

सम्वत् 1990 में

राजा राम चन्द जी ने तामीर करवाई।

अर्थात् बुआ रानी साहिबा जम्बाली जी की याद में राजा राम चन्द ने इस बावली का निर्माण सम्वत् 1990 तदनुसार सन् 1934 में करवाया।

यह बावली इतनी छोटी है कि इस पर किसी यात्री की दृष्टि कम ही पड़ती है। यह बावली कला-विहीन है, अत: किसी का भी ध्यान इसकी ओर नहीं जाता। फिर भी यह ऐतिहासिक महत्व की बावली है, अत: इस की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती। बुआ रानी साहिबा जम्बाली कौन थी? इसके उतर में यही माना जा सकता है कि वह राजा राम सिंह की पुत्री और राजा केदार नाथ की पत्नी तथा राजा राम चन्द्र की माँ रही होगी।

कोइया की बावली

यह बावली सिरा और पट्टन गाँव के निकट स्थित है। जिस स्थान पर यह बावली निर्मित है, वहां एक घना वन है। इस बावली वे निकट ही एक जलधारा प्रवाहित है जिसका जल बर्फ के समान ठंडा और दूध के समान सफेद है।

यह बावली भी अति शीतल जल से लबालब भरी रहती है। इस बावली में एक पतली जल धारा पत्थर की नालियों से गुजरती हुई सिंहमुख की ओर बढ़ती है। इस बावली का सिंहमुख अति कलात्मक है। उस पर बड़ी बारीकी से तक्षण कार्य हुआ है।

मरोठी की बावली

यह बावली अति प्राचीन है। इस में जड़ित शिलाखंडों का अनुशीलन करने से लगता है कि यह बावली नाग काल की है। इस बावली का एक नाम 'मरोठिया की बावली' भी है। इस बावली के निकट गुज्जरों के कुछेक घर हैं।

श्रावण मास के तीसरे ऐतवार को जो यात्री देहरा सर के दर्शन करने जाते हैं वे पहले कोइया की बावली के दर्शन करते हैं और बाद में वे 'मरोठी की बावली' में पहुँचते हैं।

इस बावली से संबंधित कई दंत कथाएँ हैं जिन में एक चनैनी के राजा दयालचंद से जुड़ी हुई है।

एक बार राजा दयालचंद 'देहरा तार' में नाग देवता के दर्शन करने आया। वहाँ उसने जल में तैरते सप्त मुखी नाग के दर्शन किए। उसने तत्क्षण अपनी एक अंगूठी भेंट स्वरूप नाग देवता की ओर फैंकी। दूसरे दिन राजा वहाँ से वापस लौटा और जल पीने के लिए मरोठी की बावली की ओर गया। राजा ने हाथ फैला कर बावली में सिंहमुख से गिरते पानी का स्पर्श किया तो उसके हाथ में वहीं अंगूठी आई जो उसने नाग देवता को भेंट की थी। राजा ने इसे एक बड़ा चमत्कार माना। उसने इस बावली तथा देवस्थान का विकास राज कोश से किया।

बैगड़ की बावली

यह बावली जखेड़ गाँव के निकट बैगड़ा में अवस्थित है। यह एक सांस्कृतिक स्थल भी है। बावली के निकट एक बड़ी शिला पर हनुमान की भव्य मूर्ति संस्थापित की गई है। इस मूर्ति बहुत ही आकर्षक और दर्शनीय है। दिछी, बैगड़, दबाना तथा सरोटा गाँव के निवासी इस बावली के निकट एकत्रित होकर हनुमान की पूजा करते हैं।

इस बावली में जो शिलाएँ जड़ित हैं, वे प्राचीन लगती हैं, अतः यह बावली भी पुरानी लगती है। स्थानीय लोग इस बावली के जल का उपयोग घरों में भी करते हैं।

कलाख गाँव की बावली

कलाख एक सांस्कृतिक पर्वतीय गाँव है। यह गाँव सुद्ध महादेव -लाटी सड़क के दक्षिण में सड़क से दो किलोमीटर दूरी पर स्थित 'सिरा' गाँव के निकट बसा है। सिरा तक वाहन सेवा उपलब्ध है। सिरा से कुलाख डेढ़ किलोमीटर दूर है। कलाख गाँव के नीचे एक नागर शैली का मंदिर है। यह बावली उसी मंदिर के निकट है। एक जनश्रुति के अनुसार मंदिर और बावली का निर्माण बाबा गणेश दास ने करवाया। बाबा गणेश दास चनैनी के राजा दयाल चन्द का समकालीन था।

यह बावली वास्तु विन्यास की दृष्टि से लोक-कला के अधिक निकट है। इसमें जो शिलाखंड जड़ित हैं उन में कई अतक्षित हैं। बावली का जल जो बाहर उछलता है, वह खेतों को सिंचित करता है। इस बावली के निकट एक और काली माता का मंदिर है। मंदिर के पुजारी के पास एक पत्थर का सन्दूक है जिसमें एक प्राचीन ग्रंथ सुरक्षित है। उस ग्रंथ के दर्शन श्रद्धालुओं को कार्तिक मास में लोकोत्सव के शुभ अवसर पर कराये जाते हैं। लोग इसी बावली के जल से पवित्र होकर जातर में भाग लेते हैं।

बसन्त गढ़ की बावलियाँ

बसन्तगढ़ ऊधमपुर जनपद के अंतर्गत एक तहसील है। इस पूरी तहसील का क्षेत्र पवर्तीय है। इसके पर्वत शरद ऋतु में हिमपात के कारण धबल दिखाई देते हैं। इन पर्वतों से कई जल धाराएँ निःसृत हैं जो तवी अथवा उज्झ नदी में समाहित होती हैं। इन्हीं नदियों और जल धाराओं के तटों के साथ-साथ इस क्षेत्र के गाँव बसे हैं।

बसन्तगढ़ सड़क से भी जुड़ा हुआ है। एक सड़क रामनगर से गंध-टॉप के मार्ग से बसन्तगढ़ से जुड़ी है और दूसरी सड़क सुद्ध महादेव, लाटी और डुडु को जोड़ती हुई बसन्त गढ़ पहुँचती है। यह क्षेत्र पर्वतीय संस्कृति का केन्द्र माना जाता है।

बसन्त गढ़ क्षेत्र में जल स्रोत के मुख्य साधन प्राकृतिक चश्में, सूह्टें और बावलियाँ हैं। वास्तु विन्यास की दृष्टि से ये बावलियाँ

शिवालिक क्षेत्र की बावलियों की ही अनुकृति लगती हैं। बसन्तगढ़ क्षेत्र में बीसियों बावलियाँ हैं किन्तु पुर्नोद्धार के नाम पर इनके साथ जो छेड़-छाड़ कर गई है उससे इन का मूल रूप विकृत हो चुका है। यह अब कला-विहीन हैं।

बसन्त गढ़ क्षेत्र में अर्द्ध पहाड़ी शैली में निर्मित जो बावलियाँ द्रष्टव्य हैं उनमें कुछेक इस प्रकार हैं :

खिरज की बावली (खिरज बावली)

यह बावली तहसील बसन्तगढ़ के अंतर्गत छतरेड़ी गाँव के अंतर्गत निर्मित है। दक्षिणोन्मुख यह बावली अनुमानतः अढ़ाई मीटर लम्बी और दो मीटर चौड़ी है। यह बावली तीन अट्टारिकाओं में समाहित है। इस बावली के ललाटमुख पर नाग मूर्ति शोभायमान है। यह बावली लोक शैली में निर्मित है।

बिरन बावली (बिरन बाँ)

यह बावली छतरैड़ी पंचायत के अंतर्गत रसली ठकराई गाँव में अवस्थित है।। इस बावली की भीतरी अट्टारिकाओं की संख्या पाँच है। बावली में जड़ित शिलाखंड तक्षित हैं। बावली की पीठिकाओं में स्थानीय लोक देवी-देवताओं के अतिरिक्त 'नाग मूर्ति' भी संस्थापित है। इस स्थान का प्राकृतिक परिदृश्य चिताकर्षक है।

लोसरू बावली (लोसरू बाँ)

यह बावली खनेड़ के अंतर्गत 'मग' गाँव में स्थित है। इस बावली पर लोक कवियों ने कई गीत भी लिखे हैं जिन्हें स्थानीय लोग आज भी पर्व त्यौहारों पर गाते हैं। एक लोकगीत की कुछेक पंक्तियाँ निम्न हैं :

ठंडा पानी लोसरू दी बाई
घुट्ट भरी रक्खें मेरे ताईं ....।

यह बावली लोक शैली में है।

बसन्तगढ़ की बावलियों का विवरण शिक्षा-विभाग में कार्यरत श्री सुभाष ब्राह्मणु ग्राम छतरैड़ी से उपलब्ध।

कुलाख बावली (कुलाख बाँ)

यह बावली छतरैड़ी के अन्तर्गत कैंस नालियाँ गाँव में स्थित है। इस बावली की वास्तुकला पहाड़ी है। इस बावली में जड़ित प्रस्तर शिलाएँ देखने में आकर्षक हैं। इस के ललाट में नाग मूर्ति सुशोभित है।

इस बावली का जल निर्मल और सुस्वादु है। यह बावली स्थानीय लोक देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित है।

पंचैरी-मोंगरी की बावलियाँ

पंचैरी का क्षेत्र दो तहसीलों-पंचैरी और मोंगरी में विभाजित है। यह भूखंड अनुमानत: 50 किलोमीटर लम्बा और 35 किलोमीटर चौड़ा है। यह पूरा क्षेत्र शिवालिक की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इस के मध्य में कई जलधाराएँ सुन्दर घाटियाँ बनाती प्रवाहमान हैं। इस क्षेत्र में अधिकांश गाँव पहाड़ी ढलानों में अथवा उपनदियों और जलधाराओं के तटों पर बसे हैं।

यह पूरा क्षेत्र उतुंग हिमशिखरों से युक्त पर्वत श्रृंखला से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र में बीस से अधिक धारें (पहाड़ियाँ) हैं जिन में प्रमुख हैं : सरौला धार, कन्धधार, सुखाल गली धार, बेसपत धार, सामनी धार, टिब्बा धार तथा कुंजधार आदि। इन पहाड़ियों से कई नदियाँ, उपनदियाँ और जलधाराएँ नि:सृत हैं जिन में अंजी, पिन्थर, कलसोत तथा मोंगरी इत्यादि उल्लेखनीय हैं । अंजी का उल्लेख ऋग्वेद के नदी -सूक्त में अंजसी नाम से हुआ है। इससे स्पष्ट है कि यह क्षेत्र वैदिक काल से विख्यात है। वन सम्पदा की दृष्टि से यह भूखंड अति समृद्ध है। इस क्षैत्र में जितने पहाड़ हैं, वे सभी घने वानों से आच्छादित हैं। इस भूभाग में कुल 38 गाँव अवस्थित हैं जिनमें सन 2011 की जन गणना के अनुसार कुल आबादी 46,604 है।

जलस्रोत

पंचैरी क्षेत्र जल का मुख्य स्रोत नदियाँ, जल धाराएँ, प्राकृतिक चश्में, सर, नाड़ू और बावलियाँ हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार इस क्षेत्र

में उपलब्ध कुल बावलियों की संख्या 36 है। ये सभी बावलियाँ वास्तु विन्यास की दृष्टि से पहाड़ी शैली में हैं। ये शिला खंडों से निर्मित हैं और देव मूर्तियों से सुसज्जित हैं। इस क्षेत्र की प्रसिद्ध बावलियाँ निम्न हैं :

लांदर की बावली

यह बावली ऊधमपुर के उतर-पश्चिम में पंचैरी से 15 कि.मी. की दूरी पर एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गाँव लांदर में मंदिर परिसर के भीतर परिसीमित है। ऊधमपुर से यह स्थान 56 कि.मी. दूर है। बावली तक पहुँचने के लिए वाहन सेवा उपलब्ध है। किसी समय यह एक आकर्षक एवं अलंकृत बावली थी। यह पीठिकाओं से सुसज्जित थी। इस में जड़ित प्रस्तर शिलाएँ अलंकृत थीं किन्तु अब यह बावली जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इसमें जड़ित कई शिलाखंड उखड़े हुए हैं। इस बावली में आज भी सबसे बड़ा आकर्षण एक बड़ी चट्टान में तक्षित नौ मुखी नाग की मूर्ति है। यह मूर्ति देखने में बड़ी ही विलक्षण किन्तु तांत्रिक मूर्ति लगती है। स्थानीय विद्वान शिवरत्न सारस्वत के अनुसार लांदर की यह नाग मूर्ति वासुकि नाग, काली नाग, अजय पाल, क्षेत्रपाल, शंखपाल आदि नाग देवताओं की प्रतीक है। किसी समय यह पूरा भूखंड नाग संस्कृति का केन्द्र था। नाग संस्कृति के अन्तर्गत जादू-टोना आदि समाहित था। अतः कई रोगी इस बावली में रोग निवारणार्थ स्नान करते हैं और नाग देवता का आर्शीवाद लेकर जाते हैं।

बावली के निकट ही लोकशैली में निर्मित एक देव मंदिर है। कहते हैं कि इस मंदिर का निर्माण डोगरा राजाओं के शासन काल में हुआ। स्थानीय लोग आज भी पहले इस बावली में स्नान करते हैं, तदुपरान्त वे मंदिर में पूजा-पाठ के लिए जाते हैं।

इस बावली के इर्द-गिर्द भूति वंश के कई पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। जो पर्यटक यहाँ आते हैं, वे भूति राजाओं के महल, दुर्ग आदि का अवलोकन भी करते हैं। शंखपाल देवता के लोकोत्सव में भाग लेने कई यात्री इस बावली से प्रस्थान करते हैं।

परंड की बावली

यह बिम्हाग क्षेत्र की सबसे विशाल, भव्य, कलात्मक, विलक्षण एवं अलंकृत बावली है। यह बावली बिम्हाग का 'एक अजुबा' कही जाती है। इस की एक-एक शिला तक्षित है। इस की पीठिकाएँ सुन्दर एवं आकर्षित मूर्तियों से सुशोभित हैं। इन मूर्तियों के अवलोकन से यह आभास मिलता है कि किसी समय इस क्षेत्र की तक्षण कला उच्च शिखर पर थी। इन मूर्तियों में कई मूर्तियाँ देवी-देवताओं की हैं तो कई मूर्तियाँ स्थानीय राजाओं, रानियों, लोक देवी-देवताओं, लोक नायकों तथा लोक नायिकाओं की हैं। इन मूर्ति में एक विचित्र मूर्ति एक राजा या देवता की है जो पलंग पर सोया हुआ है। पलंग के निकट दो अंगरक्षक खड़े दिखाए गए हैं। राजा या देवता ने एक टाँग ऊपर उठाई है। पलंग के पश्चिम में दो योद्धा हाथों में धनुष उठाये खड़े हैं। इन सब की कमर के ऊपरी भाग में वस्त्र हैं, शरीर का शेष भाग नंगा है। स्थानीय लोगों के अनुसार यह मूर्ति नाग राजा की है।

बावली के ऊपरी भाग में बड़ी शिलाओं के ऊपर पाँच पत्थर के मुख बने हैं जिनसे कभी जल की धाराएँ प्रवाहित होती थीं। किन्तु अब वे बंद है। अब एक ही मुख भाग है जिस की जल धारा बावली में गिरती है। मुख भाग के शिखर में कई मूर्तियाँ बनी हैं जो अप्सराओं की लगती हैं। इस बावली में एक अन्य देवता की मूर्ति भी है जिसके साथ गर्दन उठाये मयूर की मूर्ति भी बनी है।

इस बावली के निकट प्रस्तर-शिलाओं से निर्मित पहाड़ी शैली का मंदिर भी है। कहा जाता है कि इस बावली तथा मंदिर का निर्माण जम्मू के राजा ने करवाया था। वह राजा रणजीत देव या उस का पुत्र वृजराज देव रहा होगा। राज दर्शनी में उल्लेख मिलता है कि वृजराज देव कुछ समय के लिए रियासी के पहाड़ों में छुपा था।

बक्कल की बावली

यह कलात्मक बवली पंचैरी से चार कि.मी. उतर में पुराने पंचैरी-लांदर पैदल मार्ग पर स्थित है। इस बावली की शिलाओं को

शिल्पकारों ने बड़ी दक्षता से तक्षित करके इस में जड़ा है। जो यात्री सड़क बनने से पहले पंचैरी से लांदर जाते थे वे इस बावली की अट्टारिकाओं में बैठ कर कुछ पल विश्राम करते थे। इस बावली के निर्माण में चूना सुर्खी का प्रयोग हुआ है।

यह एक भव्य और विशाल बावली है। कहते हैं कि इस बावली का निर्माण डोगरा राजाओं ने यात्रियों की सुविधा के लिए करवाया था। डोगरा शासन काल में महाराजा प्रताप सिंह के शासन के अन्तिम दिनों तक राजवंश की महिलाएँ और पुरुष इसी मार्ग से यात्रा करते थे।

इस बावली की कलात्मक मूर्तियों पर डा. अशोक जेरथ और साहित्यकार इन्दू भूषण ने सराहनीय शोध कार्य किया है। डा. अशोक जेरथ के अनुसार यह डुग्गर की ऐसी बावली है जिस का एक-एक पत्थर अलंकृत है।

कोटला की बावली

यह बावली पुरानी भूति से अनुमानत: तीन किलोमीटर दूर एक पहाड़ी गाँव कोटला में अवस्थित है। कोटला ऊधमपुर से 60 कि.मी. और पंचैरी से 19 कि.मी. पूर्व उतर में अवस्थित है।

इस बावली के विषय में कहा जाता है कि अपने मूल रूप में यह कच्ची थी। भूति राजवंश के लोगों ने इसे उन दिनों पक्का करवाया जिन दिनों कोटला उनके राज्य की राजधानी थी।

इस बावली में जड़ित प्रस्तर अब भी पुराने लगते हैं। इन में कई घिस-पिट भी गए हैं किन्तु बावली फिर भी सुरक्षित है। गाँव के लोग इस की सफाई का ध्यान रखते हैं।

संगल की बावली

यह बावली कैंसगली से पाँच किलोमीटर दूरी पर एक पहाड़ी पर स्थित है। जिस स्थान पर यह बावली निर्मित है उस का प्राकृतिक परिवेश अति-उतम है। घने छायादार वृक्षों से घिरी यह बावली अनुपम

एवं अलौकिक सुख की अनुभूति करवाती है।

यह बावली आकार में चाहे सामान्य कोटि की है किन्तु इस में जड़ित प्रस्तर-शिलाएँ इस की प्राचीनता का बोध करवाती हैं। प्राय: आसपास में स्थित स्कूलों के बच्चे यहाँ पिकनिक मनाने आते हैं।

इस बावली के निकट ही महाकाली का मंदिर है। जो श्रद्धालु मंदिर में आते हैं। वे इस बावली का अवलोकन भी करते हैं। डोगरी कवि एवं अध्यापक मस्तान सिंह मस्ताना ने इस बावली के सौंदर्य पर जो कविताएँ लिखी हैं स्थानीय लोग उन्हें लोक धुनों में गाते हैं।

पुरानी भूति की बावली

पहाड़ी लोक शैली में प्रस्तर-शिलाओं से निर्मित यह एक ऐतिहासिक बावली है। इस बावली का निर्माण एक जनश्रुति के अनुसार भूति के राजाओं ने तब करवाया जब वे कोटला से प्रस्थान करके भूति में आ बसे। यहीं उन्होंने महल, दुर्ग आदि बनवाये। जल समस्या के समाधान के लिए उन्होंने इस बावली का निर्माण जनहित में करवाया।

पंचैरी से जो पैदल मार्ग 'कुडल' गाँव तक जाता था, यह बावली उसी मार्ग के निकट स्थित है।

इस बावली का जल पेट सम्बन्धी कई रोगों का निवारण करता है, अत: खाना खाने के पश्चात स्थानीय लोग इस बावली के जल का प्रयोग करते हैं।

अब उपेक्षा के कारण यह बावली भी जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है। इस के पुर्नोद्धार के लिए स्थानीय पंचायत को आगे आना चाहिए।

मीर की बावलियाँ

मीर की बावलियाँ ऊधमपुर-लांदर सड़क के साथ एक पहाड़ी ढलान में बनी हैं। ये बावलियाँ वास्तुकला की दृष्टि से अर्द्ध पहाड़ी शैली में हैं। इन बावलियों की पीठिकाएँ लोक-देवी देवाताओं, लोकनायकों की मूतियों से सुसज्जित हैं। इन मूर्तियों का अवलोकन करने से लगता है कि इस क्षेत्र में मूर्ति निर्माण कला कभी शिखर पर रही होगी।

मीर में मुख्य रूप से दो बावलियाँ हैं। दोनों शिलाखंडों से निर्मित हैं। दोनों पश्चिमोन्मुखी हैं। दोनों पानी से लबालब भरी रहती हैं। इन बावलियों से जो जल बाहर उछलता है वह नाड़ुओं से होता हुआ खेतों तक पहुँचता है। कृषक इन बावलियों के जल से अपने खेत सिंचित करते हैं।

डा. अशोक जेरथ ने अपनी पुस्तक 'फोक आर्ट आफ डुग्गर' में इन बावलियों के सौंदर्य पर जो प्रकाश डाला है उसके अध्ययन से लगता है कि प्राचीन समय से ही इस क्षेत्र के लोग बावलियों को मंदिरों की भाँति पावन मानकर इनमें प्रतिष्ठित देव-प्रतिमाओं की पूजा करते आ रहे हैं। इन में एक मूर्ति बावली के ललाट में जड़ित है। यह मूर्ति नाग देवता की है। मीर ऊधमपुर के उतर में स्थित है। ऊधमपुर से इस की दूरी 36 कि.मी. और पंचैरी से केवल तीन कि.मी. है।

मीर से एक सड़क सांकरी देव स्थान की ओर जाती है। जो यात्री सांकरी देव स्थान पर जाते हैं वे इन बावलियों का शीतल जल बोतलों में भरकर ले जाते हैं। इन बावलियों का जल सुस्वादु हैं।

घोरड़ी की बावलियाँ

घोरड़ी ऊधमपुर जनपद के अंतर्गत एक उप विकास खंड है। यह पूरा क्षेत्र पिछड़ा हुआ है और छोटी-बड़ी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। सन 2012 में यह पूरा क्षेत्र 27 पंचायतों में विभाजित था। इस क्षेत्र में कई जल धाराएँ प्रवाहित हैं, अधिकांश गाँव जल स्रोतों के निकट बसे हैं। इन जलस्रांतों में कईयों को बावलियों का रूप दिया गया है। इस क्षेत्र की प्रसिद्ध बावलियाँ निम्न हैं।

जनसी की बावली

यह एक भव्य, विशाल, अलंकृत और अति सुन्दर बावली है। यह बावली घोरड़ी गाँव के पश्चिम में शीतला माता मंदिर से कुछ नीचे निर्मित है। घोरड़ी सड़क से भी इस बावली को देखा जा सकता है।

दक्षिणोन्मुख इस बावली का निर्माण बताया जाता है कि शीतला

माता मंदिर के निर्माण के साथ-साथ ही हुआ। स्थापत्य की दृष्टि से शीतला माता मंदिर सात सौ वर्ष पुराना लगता है, अतः कहा जा सकता है कि यह बावली भी इतनी ही पुरानी होगी।

शीतला माता मंदिर में जिस प्रकार कलात्मक स्तम्भों तथा घट पल्लवों का प्रयोग हुआ है, कहा जाता है वैसा ही अलंकण शिल्पकारों ने इस बावली को सजाने के लिए किया था।

अनुमानतः दस मीटर क्षेत्र में परिसीमित यह बावली सुन्दर पीठिकाओं से सुशोभित है। कहते हैं कि पहले इस की पीठिकाएँ सुन्दर देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित थीं। किन्तु बाद में बावली का पुर्नोद्धार करते समय इन में कईयों को यहाँ से हटा लिया गया।

जनश्रुति है कि इस ऐतिहासिक बावली का निर्माण किसी कल्हैर राजा ने किया था। बताया जाता है कि इस क्षेत्र के कल्हैर राजाओं ने चार और बावलियाँ भी बनवाई थीं जिनके पुरावशेष इस क्षेत्र में अब भी उपलब्ध हैं।

सन्नी की बावली

यह बावली घोरड़ी गाँव के उतर में मरहाड़ा पहाड़ी में बसे अति सुन्दर नाला घोड़ा गाँव में अवस्थित है। यह गाँव घोरड़ी से 7 कि. मी. दूर है। नवरात्रों में जो यात्री मरहाड़ा देवी-दर्शन के लिए जाते हैं वे इस बावली के जल से अपनी प्यास बुझाते हैं। इस बावली का जल अति स्वादिष्ट और शीतल है। गाँव के लोग इसी बावली के जल का उपयोग करते हैं। वास्तु विन्यास की दृष्टि से यह लोक शैली में तक्षित शिलाखंडों से निर्मित है।

कौड़े की बावली

यह बावली आकार और वास्तु विन्यास की दृष्टि से सामान्य है। इसके निर्माण में शिल्पकारों ने शिला खंडों का प्रयोग किया है। इस का जल शीतल और निर्मल है।

दन्त कथा है कि इस बावली का निर्माण स्थानीय राणा कौड़ा

ने जनहित में करवाया।

सरले की बावली

यह बावली भी नाला घोड़ा में स्थित है। गाँव के लोग इस बावली के जल का प्रयोग घरों में करते हैं। यह छोटी बावली है।

भरमीन की बावली

यह बावली भरमीन गाँव में सड़क के निकट ही स्थित है। इस बावली की मुख्य अट्टारिका में एक शिलालेख जड़ित है जो पढ़ा नहीं जा सका। बावली शिलाखंडों से निर्मित है।

लाड की बावली

लाड भरमीन से तीन किलोमीटर दूर नाला के पार एक अति सुन्दर गाँव है। इस गाँव के मध्य में एक सुन्दर बावली है जो प्रस्तर शिलाओं से निर्मित है। यह स्कूल के निकट है, अतः विद्यार्थी और अध्यापक भी इसके शीतल जल का उपयोग करते हैं।

लाह्ड़सू की बावली

लाह्ड़सू घोरड़ी क्षेत्र का एक सांस्कृतिक स्थल है। कहते हैं कि कभी यहाँ एक सौ एक बावलियाँ थीं। इन बावलियों के कारण यह स्थान अति सुरम्य और मन मनमोहक लगता था। किन्तु अब यहाँ केवल दो-तीन ही बावलियाँ द्रष्टव्य हैं, शेष लुप्त हैं।

उपलब्ध बावलियाँ भी जीर्ण-शीर्ण स्थिति में हैं, फिर भी स्थानीय लोग इन का उपयोग करते हैं।

इन बावलियों का जल निर्मल और सुस्वादु है।

रामनगर की बावलियाँ

रामनगर का प्राचीन नाम बन्दरालता था। बन्दरालता एक पर्वतीय भूखंड है। इस भूखंड में सैंकड़ों की संख्या में जल स्रोत हैं। कहीं-कहीं इन जलस्रोतों को बावली का रूप दिया गया है। प्रायः प्रत्येक गाँव में छोटी-बड़ी बावली अवश्य होती है। बन्दरालता में भी ऐसी बीसियों बावलियाँ है जो मूल रूप में आज भी द्रष्टव्य हैं। इन बावलियों में निम्न अति प्रसिद्ध हैं।

डालसर की बावलियाँ

डालसर की बावलियाँ रामनगर से 7 कि.मी. पश्चिम में वृन्दावन नाला के पूर्वीय तट के साथ अवस्थित है। बावलियों तक पहुँचने के लिए बस सेवा उपलब्ध है।

लोक परम्परा के अनुसार डालसर क्षेत्र में पहले 365 बावलियाँ थीं। ये सभी बावलियाँ शिलाखंडों से निर्मित थीं। इन का निर्माण धर्म और आस्था से जुड़े लोगों ने लोक-कल्याण की भावना से करवाया था। वैसे भी लोक-आस्था इस स्थान में स्थित डालसर के साथ जुड़ी है। लोक इसे डुग्गर का 'पुष्कर राज' मानते हैं। अतः जो श्रद्धालु इस सर के दर्शन करने आते हैं वे इस सर के इर्द-गिर्द स्थित कलात्मक और सुदृढ़ शिलाखंडों से निर्मित बावलियों का अवलोकन भी करते हैं।

डालसर की अधिकांश बावलियाँ किसी न किसी कारण या तो भूमिगत हो गई हैं या इन के अवशेष कहीं-कहीं बिखरे शिलाखंडों के रूप में दिखाई देते हैं।

अब डालसर में एक ही बावली शेष बची है जो अनुमानतः 8 मी. परिसर में परिसीमित है। इस बावली में जो मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं, कला की दृष्टि से वे उत्कृष्ट हैं। इन में अधिकांश मूर्तियाँ तांत्रिक लगती हैं। यहाँ एक मूर्ति ऐसी भी जड़ित है जिस में देवता के कान बड़े ही लम्बे दिखाए गए हैं। इस बावली के निकट प्राचीन शिव मंदिर, स्मारक मंदिर तथा प्राचीन भवनों के अवशेष बिखरे पड़े हैं।

भटियारी की बावली

यह राम नगर की सबसे आकर्षक एवं अलंकृत बावली है। यह बावली रामनगर बस अड्डा से दो सौ मीटर पूर्व-उतर में और राजमहल के पश्चिम उतर में कोई सौ मीटर की दूरी पर अवस्थित है। पश्चिमोन्मुख यह बावली सुन्दर और सुसज्जित अट्टारिकाओं से सुशोभित है। बावली अनुमानतः बीस मीटर के घेरे में है।

बावली में जड़ित तक्षित प्रस्तर शिलाओं के अवलोकन से लगता है कि इस बावली का निर्माण सुदक्ष शिल्पकारों के हाथों से हुआ है। शिल्पकारों ने अपनी तीखी शैनी से एक-एक शिला को सजीव बना दिया है। इस बावली का परिदृश्य बहुत ही मनमोहक है। यह बावली घने छायादार वृक्षों से आच्छादित है, अतः इस का जल अति शीतल, स्वादिष्ट और पाचन प्रक्रिया को बढ़ाने वाला है।

इस बावली के निर्माण का भी अपना अलग ही इतिहास है। प्रख्यात साहित्यकार प्रकाश प्रेमी के अनुसार इस बावली का निर्माण जनहित के लिए बन्दरालता के पहले डोगरा राजा सुचेत सिंह ने करवाया। बावली के निकट ही राज महल है, अतः इस बावली का पानी राज महलों में भी प्रयोग होता था। आज भी 'टीचर नगर' के लोग घरों में इसी बावली के जल का प्रयोग करते हैं।

प्रातःकाल इस बावली में बड़ी भीड़ होती है। दर्जनों की संख्या में आसपास के पुरुष स्नानार्थ इसी बावली में आते हैं। इस बावली का ऐतिहासिक महत्व यह है कि रामनगर के भव्य महल, दुर्ग, राजकीय कार्यालय आदि इसी बावली के निकट हैं।

यह बावली डुग्गर की प्रस्तर तक्षिण कला का एक सुन्दर नमूना है। इस में तक्षित मूर्तियों की संख्या सात है। पहली मूर्ति एक विकसित पुष्प की है। दूसरी मूर्ति मत्स्यावतार की है। तीसरी मूर्ति अति आकर्षक एवं दर्शनीय है। यह मूर्ति नाग देवता की है। चौथी मूर्ति कच्छ अवतार की है। पाँचवी मूर्ति आठ पंखुड़ियों में विकसित एक फूल की है। छटी मूर्ति विकृत है। सातवीं मूर्ति भी अस्पष्ट है। इन में पहली चार मूर्तियाँ

डा. अशोक जेरथ के अनुसार 1'x9" की हैं।

डा. अशोक जेरथ ने अपनी पुस्तक 'फोक आर्ट आफ डुग्गर' में इस बावली के सन्दर्भ में एक जनश्रुति का उल्लेख किया है। इस लोक श्रुति के अनुसार यह बावली जिस स्थान पर अवस्थित है उस के स्वामित्व पर एक विधवा महिला का अधिकार था जिस का नाम पटियारी था। यह बावली राज महल के निकट थी अत: राजा सुचेत सिंह इस बावली को अपने महल परिसर के भीतर समाहित करना चाहता था। राजा ने बुढ़िया से सम्पर्क किया और उससे बावली का स्थान बेचने का आग्रह किया किन्त बुढ़िया ने राजा को बावली का स्थान सौंपने से इन्कार कर दिया।

राजा ने बुढ़िया को प्रलोभन दिया कि वह उसे इस स्थान के बदले बहुत धन देगा। बुढ़िया ने प्रत्युतर में कहा कि राजा के पास जो धन है वह पाप का है, मैं उसे स्वीकार नहीं कर सकती। मेरी बावली में पूरे गाँव के लोग जल भरने आते हैं, अपनी प्यास बुझाते हैं, इससे मुझे प्रसन्नता मिलती है, सुख मिलता है, पुण्य मिलता है। मैं थोड़े से धन के लिए अपने अर्जित पुण्य नहीं गंवा सकती, अत: मैं यह बावली नहीं बेच सकती। राजा ने बुढ़िया को कहा कि वह उसे राजकोष से धन नहीं देगा। उसे पंजाब नरेश रणजीत सिंह से पुरस्कार के रूप में जो सोने के कंगन मिले हैं, वे भूमि के मूल्य के रूप में उसे देगा।

राजा ने जैसे तैसे इस बावली पर अधिकार तो कर लिया किन्तु लोक आस्था विधवा पटियारी के साथ ही बनी रही। राजा ने नई बावली तो बनवाई किन्तु लोक समाज ने उसे नाम दिया - पटियारी दी बाँ। अर्थात् पटियारी की बावली।

मकालसू की बावली

यह बावली राजकीय डिग्री कॉलेज रामनगर से कुछ दूरी पर स्थित है। यह रामनगर की भव्य बावलियों में से एक है। इस बावली को शिल्पकारों ने अपने कौशल से सजाया है। इस की एक-एक शिला सजीव लगती है।

जन्द्रयाड़ी की बावली

यह बावली रामनगर से अनुमानतः सात किलोमीटर की दूरी पर जन्द्रयाड़ी गाँव में स्थित है। बावली तक पहुँचने के लिए वाहन सेवा तो उपलब्ध है किन्तु बावली सड़क के नीचे है, अतः थोड़ा पैदल चलना पड़ता है।

इस बावली के निकट ही गाँव का स्कूल है। यह बावली स्थानीय लोक शैली में निर्मित है। इस में जिन शिलाखंडों का प्रयोग हुआ है, वे तक्षित हैं। बावली का जल गर्मियों में शीतल और सर्दियों में गर्म रहता है, अतः स्थानीय लोग इस के जल का उपयोग पूरा वर्ष करते हैं। गाँव की पंचायत इस बावली की सफाई का पूरा ध्यान रखती है।

पिंगर की बावली

यह बावली ऊधमपुर रामनगर सड़क पर स्थित कावा-घागोट के दक्षिण में छह किलोमीटर की दूरी पर शक्ति स्थल पिंगर के निकट स्थित है। नवरात्रों में जो यात्री देवी की दर्शनार्थ आते हैं, वे इस सुन्दर बावली के जल का आस्वादन भी करते हैं। यह बावली शिलाखंडों से निर्मित है। कहा जाता है कि बावली के निकट जो गुफा है वह नाग-काल की है।

बताते हैं कि वासुकि पुराण में इस पावन स्थल का उल्लेख हुआ है। इस बावली का पुर्नोद्धार स्थानीय सूचनाओं के अनुसार रामनगर के राजा राम सिंह ने करवाया। इस बावली और शक्ति स्थल की देखभाल समैलिया ब्राह्मण कई दशकों से कर रहे हैं।

सन 1988 से इस पूरे स्थल का विकास रामनगर की एक सामाजिक संस्था कर रही है। इस बावली के निकट जो गुफा है उस में पत्थर का एक घड़ा बना है जो देखने में विलक्षण और विचित्र है।

सत्यां की बावली

डुग्गर की यह प्राचीन बावली बन्दरालता की आदि राजधानी सत्यां में अवस्थित है। सत्यां रामनगर के पूर्वोत्तर में चौदह कि.मी. दूर

है। यह बावली जिस स्थान पर स्थित है वहाँ पुरातत्व महत्व के दो प्राचीन मंदिर हैं जिन में एक मंदिर देवी जालन्धरा का और दूसरा शिव मंदिर है। बताया जाता है कि इस बावली का निर्माण भी इन्हीं मंदिरों के निर्माण के साथ-साथ हुआ। पुरावेता मंदिरों को 12वीं सदी का मानते हैं, अतः यह कहा जा सकता है कि यह बावली भी उतनी ही पुरानी होगी। जनश्रुतियों के अनुसार इन मंदिरों और बावली का निर्माण सत्यां के राणाओं ने बन्दराल राजवंश की स्थापना से पूर्व किया।

इस बावली का पुर्नोद्धार समय-समय पर स्थानीय लोगों और पंचायत द्वारा होता रहा है। अतः इस का स्वरूप भी बदलता रहा। सत्यां में शिव मंदिर के निकट प्रवाहित जलधारा के आसपास मूर्तियों के अवशेष बिखरे पड़े हैं उनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि इस क्षेत्र में भी कई बावलियाँ रही होंगी जो अब भूमिगत हैं।

चनूनता की बावली

यह बावली चनूनता गाँव में निर्मित एक भव्य और नागर शैली में निर्मित मंदिर के नीचे अवस्थित है। बावली तक पहुँचने के लिए मंदिर परिसर से एक सोपान पथ बना है।

चनूनता की यह बावली वास्तु-विन्यास की दृष्टि से अति उत्कृष्ट और आकर्षक है। यह बावली पूर्वोन्मुखी है। इस के तीनों ओर प्रस्तर शिलाओं को उकेर कर जो अट्टारिकाएँ बनाई गई हैं, वे दर्शनीय हैं। इस बावली में जो जलधारा गिरती है उस का मुख-भाग सिंहमुखी है। शिल्पकारों ने सिंहमुख तराशने में जिस दक्षता का परिचय दिया है, कला की दृष्टि से वह स्तुत्व है।

यह बावली अनुमानतः 12 मीटर के घेरे में है। यह वर्गाकार बावली है और इस की प्रत्येक भुजा अनुमानतः डेढ़ मीटर है। इस बावली की भीतरी अट्टारिकाएँ लघु-शिलाओं से निर्मित है।

बावली की पश्चिमी दीवार में जो पीठिका बनी है उसमें एक ओर देव मूर्तियाँ संस्थापित हैं और उन के मध्य में डोगरी का एक शिलालेख जड़ित है। इस शिलालेख में बावली के निर्माता का नाम

वजीर रामदास चनोतरा उल्लिखित है। वजीर रामदास चनोतरा जम्मू कश्मीर के महाराजा रणबीर सिंह (1856-85 ई) तथा महाराजा प्रताप सिंह (1885-1925 ई.) के शासन काल में एक उच्च पद पर आसीन था। शिला लेख में वजीर ने इस बावली के निर्माण का श्रेय डोगरा राजा प्रताप सिंह को ही दिया है। इस बावली के अतिरिक्त वजीर ने एक महल, एक मंदिर और एक कृत्रिम सर का भी इसी गाँव में निर्माण करवाया था।

यह बावली अपने मूलरूप में आज भी गाँव के लोगों की जल सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति करती है। चनूनता ऊधमपुर जनपद के अंतर्गत एक ऐतिहासिक गाँव है। यह ऊधमपुर के पूर्व में अनुमानतः 18 कि.मी. दूर है। बावली तक पहुँचने के लिए वाहन सेवा उपलब्ध है।

बडोई की बावली

यह अद्‌भुत और विलक्षण बावली धारा के चलारा स्थान में अवस्थित है। यह स्थान डालसर से अनुमानतः तीन किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। बावली ऊँचे स्थान पर है, अतः बावली तक पहुँचने के लिए चढ़ाई चढ़ना पड़ती है।

जिस स्थान पर यह बावली स्थित है वहाँ बड़ (पीपल) बोहड़ और आम के घने वृक्ष हैं। इन्हीं वृक्षों के मध्य में यह बावली द्रष्टव्य है। वास्तु कला की दृष्टि से यह बावली अर्द्ध पहाड़ी शैली में है। इस में जड़ित तक्षित शिलाएँ सुन्दर लगती हैं। इस बावली की पीठिकाएँ सुन्दर मूर्तियों से सुसज्जित हैं। अधिकांश मूर्तियाँ देवी-देवताओं और लोक नायक और लोक नायिकाओं की हैं। प्रसिद्ध डोगरी कलाकार रमालो राम के अनुसार गर्मियों में इस बावली के निकट मेला जैसा लगा रहता है।

देहाड़ी की बावली

यह सुन्दर बावली ऊधमपुर-रामनगर सड़क के निकट बसे देहाड़ी गाँव में स्थित है। जिस स्थल पर यह बावली निर्मित है वहाँ घने वृक्षों का एक छोटा सा उपवन है। यह स्थान पूरा वर्ष ठंडा रहता है, अतः

इस बावली का जल भी अति शीतल है।

देहाड़ी की इस बावली का जल अति शुद्ध और निर्मल है। यही कारण है कि गाँव के लोग पूरा वर्ष इस के जल का उपयोग अपने घरों में करते हैं। वास्तु-विन्यास की दृष्टि से यह बावली पहाड़ी शैली में है और देव-मूर्तियों से सुसज्जित हैं। इस बावली के निकट ही हनुमान का मंदिर है। श्रद्धालु स्नान करने के उपरान्त देव-दर्शनार्थ मंदिर में जाते हैं। इस बावली के निकट कई सांस्कृतिक और ऐतिहासिक और पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। बावली सहित इन के संरक्षण की आवश्यकता है।

माड़ता की बावली

माड़ता रामनगर से अनुमानतः पाँच किलोमीटर की दूरी पर रामनगर कलौंता सड़क के किनारे स्थित है। यह एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव में एक प्राचीन बावली है जिस का उपयोग पूरा गाँव करता है। यह बावली वास्तु-विन्यास की दृष्टि से अर्द्ध पहाड़ी शैली में है।इस बावली का घेरा अनुमानतः छह मीटर है। इस की अट्टारिकाएँ अलंकृत हैं और पीठिकाएँ सुन्दर मूर्तियों से सुशोभित हैं।

डोगरी लेखक हरदेव सिंह बन्दराल के अनुसार यह प्राचीन बावली है और बन्दराल राजाओं के समय की हो सकती है।

जलोह की बावली

यह बावली ऊधमपुर-रामनगर सड़क के किनारे पर स्थित है। इस बावली के निकट ही एक जलधारा प्रवाहित है। यह बावली पहाड़ी शैली में निर्मित है। इस बावली का जल निर्मल और स्वच्छ है। गाँव के लोग इस बावली का उपयोग नहाने-धोने के लिए करते हैं।

बावली के निकट ही एक छोटा सा मंदिर भी है। इस स्थान का परिवेश चिताकर्षक है।

चौकी जन्द्रौड़ की बावली

यह तहसील रामनगर की भव्य बावलियों में एक है। इस बावली के वास्तु-विन्यास पर ओम शर्मा जन्द्रैड़ी ने भी अपने लेखों में

प्रकाश डाला है। डोगरी के प्रसिद्ध लेखक नरेन्द्र खजूरिया तथा देशबन्धु डोगरा नूतन ने भी इस बावली की विशालता और सौंदर्य की प्रशंसा की है। इस बावली का जल अति निर्मल और पेट के रोगों के लिए हितकारी है। यह एक दर्शनीय बावली है।

मझालता की बावलियाँ

मझालता ऊधमपुर जनपद के अंतर्गत एक तहसील है जिस का मुख्यालय मझालता कस्बा है। यह स्थान जम्मू से 78 कि.मी., बट्टल से 8 कि.मी. और मानसर झील से 13 कि.मी. दूर है। इस क्षेत्र का प्राचीन नाम पमासता था।

यह क्षेत्र बावलियों के कारण बहुत ही प्रसिद्ध है। मझालता के आसपास कई बावलियाँ हैं जिनमें प्रमुख हैं : मझालता की बावली, पलेतर की बावली, पियुंनी की बावली, बेबोला की बावली, तजूर की बावली तथा सतरैड़ा की बावली आदि। इन बावलियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

मझालता की बावली

यह बावली मझालता बस अड्डा के उतर में दो-सौ मीटर की दूरी पर पियूंनी पहाड़ी के निचले भाग में बनी है। पूर्वोन्मुख इस बावली के मुख भाग से एक शीतल जलधारा बावली में गिरती है जिस से यह बावली पूरा वर्ष जल से भरी रहती है।

बावली की सुरक्षा के लिए तीन ओर से डेढ़ मीटर ऊँचे दीवारगिर शिलाखंडों से निर्मित हैं जिन पर तक्षण कार्य भी हुआ है। इस बावली का जल पीने में स्वादिष्ट, स्वच्छ, रूचिकर तथा पाचक शक्ति को बढ़ाने वाला है। यही कारण है कि स्थानीय लोग नल लगने पर भी घर में इसी बावली के जल का उपयोग करते हैं।

पंचायत विभाग समय-समय पर इस बावली की मुरम्मत करवाता है, अतः यह बावली आज भी मूल स्थिति में है। सन 1998 में लेखक ने इस बावली में डोगरी में लिखित एक शिलालेख देखा था जो अब लुप्त है। लगता है कि किसी स्थानीय दानी पुरुष ने इस बावली

का निर्माण जन कल्याण की भावना से करवाया होगा।

पलेतर की बावली

यह बावली मझालता से अनुमानतः दो कि.मी. दूरी पर पूर्व-दक्षिण में पलेतर गाँव में स्थित है। इस गाँव में शिलाखंडों से निर्मित एक छोटी सी बावली है। इस बावली की मुख्य अट्टारिका में एक शिलालेख जड़ित है जिसकी शब्दावली इस प्रकार है :

श्री रामायी

येह बाउली राम दिते झीरे जमूदे ने धर्मारथ बनी आई संवत 1962 कतक पृष्ठ 8 बाउली ते आर होई।

भावार्थ : यह बावली राम दिता नामक धीवर ने धर्मार्थ बनवाई। निर्माण समय सम्वत् 1962 (तदानुसार सन 1906)

यह बावली धीवरों के मुहल्ले के निकट है, अतः स्थानीय लोग इस का उपयोग आज भी करते हैं।

पियुंनी की बावली

यह बावली मझालता के निकट स्थित पियुंनी पहाड़ी पर राजपूतों के ऐतिहासिक गाँव पियुंनी में शिव मंदिर के निकट निर्मित है। इस बावली का भी एक विशिष्ट महत्व है। इस बावली का निर्माण स्थानीय शिलाखंडों से किया गया है। इस बावली की अट्टारिकाएँ अलंकृत हैं और वास्तु विन्यास स्थानीय है।

इस बावली का जल निर्मल, स्वच्छ, सुस्वादु, रोग-निवारक और बलवर्द्धक है। अतः स्थानीय लोग इस बावली के जल का प्रयोग आज भी अपने घरों में करते हैं। पियुंनी की यह बावली भव्य और विशाल है। इस बावली के जल से स्नान करने से जो सुखानुभूति होती है। वह अलौकिक है।

पंचाक की बावलियाँ

पंचाक की बावलियाँ डुग्गर के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गाँव थियाल के पश्चिम में गाँव से दो-सौ मीटर की दूरी पर पश्चिम

दिशा की ओर अवस्थित है। यहाँ बावलियों के साथ स्नान घाट और मंदिर भी बने हैं। श्रद्धालु इन बावलियों में पहले स्नान करते हैं तदुपरांत वे देव-आराधना के लिए मंदिरों में जाते हैं।

पंचाक में कुल पाँच बावलियाँ हैं जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न है :

बावली-एक

इसे 'बड़ी बावली' के नाम से भी अभिहित किया जाता है। इस बावली की पाँच भव्य अट्टारिकाएँ हैं जो अलंकृत और देखने में अति सुन्दर हैं।

वर्तमान में पहली अट्टारिका से किसी कारण मूर्तियाँ हटा ली गई हैं। दूसरी अट्टारिका में गरूढ़, हनुमान, शिव पार्वती, विष्णु मत्स्य, राम परिवार तथा भगवान नृसिंह की मूर्तियाँ द्रष्टव्य हैं। इसी अट्टारिका में स्थानीय राजा की मूर्तियाँ भी प्रदर्शित हैं। लगता है जिस राजा की ये मूर्तियाँ हैं यह बावली उसी की निर्मिति है।

तीसरी बावली की अट्टारिका में सर्प मूर्तियाँ संस्थापित हैं। इस में सर्पों को कुंडली मार कर आराम करते हुए दिखाया गया है। इन सर्प मूर्तियों के साथ ही सूर्य और नाग देवताओं की मूर्तियाँ द्रष्टव्य हैं। इसी अट्टारिका में एक मूर्ति देवी की भी है। चौथी अट्टारिका में दोमुखी साँपों की मूर्तियाँ रखी गई हैं।

पाँचवीं अट्टारिका में स्थानीय देव-देवताओं की मूर्तियाँ क्रम से सजाई गई हैं। इस बावली के निकट एक विशाल चट्टान पर किसी लोक देवता की मूर्ति तक्षित है जो देखने में बहुत ही विलक्षण है। इस देवता के एक हाथ में धनुष और दूसरे हाथ में नर मुंड है। इस चट्टान के निकट ही दूसरी बड़ी चट्टान है जिसमें वीर हनुमान की मूर्ति उत्कीर्ण है। हनुमान की मूर्ति के साथ एक और चट्टान है जिसमें एक पुराना शिलालेख उत्कीर्ण है। यह शिलालेख अभी तक पढ़ा नहीं जा सका। बावली परिसर में एक प्रवेश द्वार भी बना है जिसके तोरण धराशायी हैं।

बड़ी बावली में एक शिलालेख भी जड़ित है जिसके अनुसार इस बावली का पुर्नोद्धार तिथि 5 चेत 2015 में किसी धनाढ्य व्यक्ति ने लोक कल्याण की भावना से किया।

थियाल गाँव के पंचाक स्थान में निर्मित यह बड़ी बावली पमासता क्षेत्र में बहुत चर्चित रही है। इस बावली को देखने दूर-दूर से पर्यटक आते थे। वे इस बावली के अनुपम सौंदर्य को देखकर अभिभूत हो जाते थे। जिस स्थान पर यह बावली निर्मित है वहाँ का प्राकृतिक वातावरण बहुत ही शान्त एवं आनन्ददायक है। स्थानीय लोग यहाँ बड़े अनुशासन से आते हैं और बिना कलरव किए स्नान, पूजा ध्यान के बाद शांत भाव से चले जाते हैं। वैसे भी यह बावली वास्तुकला का अनुपलब्ध नमूना है।

बावली-दो

यह सामान्य कोटि की बावली है। शिलाखंडों से सुसज्जित है। इस बावली की मुख्य अटारी में कुंडली मारे हुए एक नाग देवता की मूर्ति जड़ित है। यह मूर्ति 38 कि.मी. लम्बी तथा 36 से.मी. चौड़ी है।

बावली-तीन

आकार में यह छोटी बावली है। इस बावली की एक अट्टारिका में सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित है। यह अति आकर्षक मूर्ति है। इसी के साथ एक अन्य लोक देवी की मूर्ति भी रखी गई है। यह प्राचीन बावली है और थियाल के राजाओं के शासनकाल की बताई जाती है।

बावली-चार

यह बावली भी देखने में पुरानी लगती है। इसके कुछ शिलाखंड घिसे लगते हैं। इसका उपयोग लगता है स्थानीय लोग वस्त्रादि धोने के लिए करते होंगे। इस में दो मुखी नाग की मूर्ति जड़ित है।

बावली-पाँच

यह बावली पहली चार बावलियों से कुछ नीचे है। आकार में यह छोटी है। लगता है कि इस का उपयोग कुछ अन्य जातियों के लोग

करते होंगे। पंजाक स्थान में इन के अतिरिक्त दो और छोटी-छोटी बावलियाँ हैं। एक बावली के शीश-भाग में सप्त फण वाले सर्प की मूर्ति जड़ित है। यह मूर्ति डुग्गर में उपलब्ध नाग मूर्तियों से अलग है, इस मूर्ति पर जो तक्षण कार्य हुआ है, वह सराहनीय है।

पंचाक की बावलियों की मूर्तियाँ कला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। लगता है कि पंजाक की बावलियों का निर्माण स्थानीय राजा और उसके वंशजों ने करवाया होगा।

तलसू की बावलियाँ

ये बावलियाँ थियाल गाँव से तीन किलोमीटर नीचे सड़क पर स्थित विलासपुर गाँव के नाले के तट के साथ-साथ निर्मित हैं। इन की श्रृंखला लम्बी है। इन बावलियों की संख्या पाँच है। इन में कई बावलियाँ बड़ी हैं और कुछ छोटी भी हैं। इन बावलियों की अट्टारिकाएँ पौराणिक तथा लौकिक देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित हैं। कुछ बावलियों के ललाट मुख में डोगरी तथा टाकरी के शिला लेख भी हैं, किन्तु वे अभी तक पढ़े नहीं जा सके।

यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियाँ : तलसू की मुख्य बावली के प्रवेश द्वार के साथ यक्ष और यक्षिणी की दो विलक्षण मूर्तियाँ संस्थापित हैं। मूर्तिकला की दृष्टि से ये उत्कृष्ट कलाकृतियां हैं। यक्ष की मूर्ति जो केवल एक ही शिलाखंड को तराश कर बनाई गई है वह 1.45 मीटर ऊँची है और 38 से.मी. चौड़ी है। यक्षिणी की मूर्ति 1.12 मीटर ऊँची है और 39 से.मी. चौड़ी है। इन दोनों मूर्तियों का अंग प्रदर्शन सराहनीय है। इन मूर्तियों के अतिरिक्त अन्य मूर्तियों को भी बावली की दीवारों के साथ सलीके से सजा कर लगाया गया है। लोक-कला की दृष्टि से ये मूर्तियाँ अपना सौंदर्य बिखेरने में सफल हैं।

कौरी देवता की मूर्ति

इन बावलियों में आकर्षण का मुख्य केन्द्र ग्राम देवता 'कौरी' की मूर्ति भी है। इस मूर्ति को डुग्गर की तक्षण-कला का एक अद्भुत तथा विलक्षण नमूना कहा जा सकता है। यह मूर्ति 82 से.मी. लम्बी तथा

48. से.मी. चौड़ी है। इस मूर्ति को भी एक ही शिला में तक्षित किया गया है। यह चतुर्भुजी देवता है। इसके एक हाथ में शंख, दूसरे में त्रिशूल, तीसरे में घट तथा चौथे में मशाल है। देवता का मुख लम्बा है। उसके नाक के नीचे लम्बी-लम्बी मूंछे हैं। देवता की कमर में कटार है। देवता की टाँगों में पंचमुखी सर्प लिपटा हुआ है। इस मूर्ति का अवलोकन करने से लगता है कि 'कौरी' नाग देवता रहा होगा।

बाड़ी गढ़ की बावली

यह बावली बाड़ीगढ़ गाँव से जो पगडंडी पंगारा तक जाती है उसके मध्य भाग में स्थित है। यह बावली पूर्वोन्मुखी है। इसमें जड़ित प्रस्तर शिलाएँ कई स्थानों से उखड़ भी गई हैं, अतः यह बावली अब जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है।

ऊधमपुर-बिलावर को मिलाने के लिए जो धार रोड बनाई गई है, पंगारा उसी सड़क के किनारे स्थित है। पंगारा के दक्षिण में बाड़ी गढ़ है। किसी समय मनकोट से एक पगडंडी बाड़ीगढ़ से होती मानसर पहुँचती थी। यात्रियों को मार्ग में प्यास बुझाने के लिए कोई साधन नहीं था। अतः जन साधारण की सुविधा के लिए गुज्जरू नगरोटा के एक महाजन शाहुकार ने इस बावली का निर्माण करवाया।

इस बावली की पश्चिमी पीठिका में एक शिलालेख आज भी जड़ित है। इस की लिपि डोगरी है। इसके कुछ अक्षर घिस गए हैं जिस कारण ठीक से यह शिलालेख पड़ा नहीं जाता। पंगारा से यह बावली दो कि.मी. और बावली से बाड़ीगढ़ एक कि.मी. दूर है। इस बावली तक पहुँचने के लिए एक मार्ग मानसर झील से भी जाता है। यात्री वाहन द्वारा चान्नी-पाटी गाँव से होते हुए बाड़ीगढ़ पहुँचते हैं और उसके बाद एक कि.मी. की यात्रा करके इस बावली का दिग्दर्शन करते हैं।

यह बावली घने वृक्षों के बीच में पगडंडी के पश्चिम में है। वास्तु विन्यास की दृष्टिं से यह साधारण कोटि की बावली है। किन्तु इस बावली का जल अति शीतल है, अतः यात्री इस का जल अपने साथ ले जाते हैं और प्यास बुझाते हैं। इस बावली के पुर्नोद्धार के लिए

बाड़ीगढ़ पंचायत को आगे आना चाहिए।

बबौर की बावलियाँ

बबौर डुग्गर का एक ऐतिहासिक नगर रहा है। राज तरंगिणी में इस का नाम बब्बापुर उल्लिखित है। यह प्राचीन नगर ऊधमपुर के पश्चिम में तवी नदी की पूर्वी पठार पर अवस्थित है। इस नगर में कई प्राचीन मंदिर तथा बावलियों के पुरावशेष उपलब्ध हैं। बावलियों में प्रसिद्ध नाम निम्न हैं :

पुरानी बावली

यह बावली बबौर मंदिर के अहाते में अवस्थित है। डा. ललित गुप्ता के शब्दों में - यह बावली मंदिर के पूर्व में बनी हुई है। जो चार वर्ष पूर्व (सन 1998 ई.) पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा किए गए उत्खनन द्वारा प्राप्त हुई है। माना जाता है कि यह बावली दसवीं सदी की है। आकार में छोटी दिखाई देने वाली इस बावली के ऊपर कदाचित कभी छत रही होगी जो समय के थपेड़ों से ढहकर अपना मूलरूप खो चुकी है। किन्तु मलबे में होने वाले छोटे-छोटे खम्भों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस की ऊँचाई ढाई तीन फुट रही होगी।

बावली की दीवार में स्थित गणेश और विष्णु की दो मूर्तियाँ बनी हुई हैं जबकि तीसरी मूर्ति के भुरभुरा जाने से उस का असली रूप पहचानना कठिन है। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की ओर से पत्थर को जोड़ कर इसे बंद कर दिए जाने से इस की गहराई का पता लगाना भी अब कठिन है।

इस की लम्बाई साढ़े तीन फुट और चौड़ाई अढ़ाई फुट नापी गई है। इस बावली की खुदाई से नन्दी गण और नागमणि की जो मूर्तियाँ मिली हैं, वे कलात्मक हैं। इस बावली के निकट जो समाधि मंदिर बना है वह दर्शनीय है। माना जाता है कि यह समाधि धरवंशीय किसी राजा की है। इस बावली के निकट जो जलधारा प्रवाहित है, उसे 'देवक' कहते हैं।

मनवाल की बावली

बबौर का एक नाम मनवाल भी है। राजस्व विभाग में से 'थलौड़ा' लिखा गया है। थलौड़ा में कहते हैं कि कभी एक दर्जन से अधिक बावलियाँ थीं जो भूस्खलन या अन्य किसी कारण से भूमिसात हो गई हैं। अब जो बड़ी बावली शेष बची है वह ऊधमपुर-मनवाल सड़क से दो सौ मीटर नीचे गाँव में है।

यह एक भव्य और विशाल बावली है किन्तु मूर्तियों से विहीन होने के कारण सूनी सी लगती हैं। पश्चिमोन्मुख इस बावली की अट्टारिकाएँ सुदृढ़ हैं और इनके ऊपर बैठने का स्थान बना हुआ है। इस बावली का जल निर्मल तथा स्वास्थ्यबर्द्धक है। गाँव के लोग आज भी घरों में इस बावली के जल का उपयोग करते हैं।

इस बावली के पूर्व में देवी भगवती का मंदिर तथा दक्षिण में काला देहरा मंदिर है। इनके अतिरिक्त तीन और मंदिर भी हैं। बावली के निकट जो खेत हैं उनकी खुदाई से कई शिलाखंड मिलते हैं, जो तक्षित हैं। इनका अवलोकन करने से लगता है कि बावली के आसपास कोई बहुत बड़ा नगर था जो अब धरती के अन्दर सोया पड़ा है।

इतिहास में उल्लेख मिलता है कि तैमूर सन 1399 ई. में मनु नगर (मनवाल) को नष्ट करके जम्मू की ओर बढ़ा था। तभी से इस नगर में मंदिरों, बावलियों तथा भवनों के पुरावशेष बिखरे पड़े हैं जिन्हें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग संरक्षित करने में प्रयासरत है।

जनसाल की बावलियाँ

जनसाल तहसील मझालता के अंतर्गत एक सांस्कृतिक गाँव है। यह गाँव ऊधमपुर से 46 कि.मी. और बट्टल मोड़ से 13 कि.मी. दूर है। इस गाँव में प्राचीन नृसिंह मंदिर है। मंदिर के साथ ही 'कलीथ' नामक एक गाँव है। इस गाँव में एक बाग है। बाग के साथ एक नाला प्रवाहित है। डोगरी लेखक हरदेव सिंह बन्दराल के अनुसार नाला और बाग में 101 बावलियाँ हैं। अब इन बावलियों में अधिकांश लुप्त हैं किन्तु इन बावलियों की शिलाएँ बाग और नाला के निकट बिखरी पड़ी

है। इन शिलाओं की लम्बाई दो फुट और चौड़ाई पौन फुट है।

जनश्रुति है कि इस बाग का विकास एक साधु ने किया था। साधु हनुमान का उपासक था। वह बड़ी-बड़ी शिलाओं को नाला से उठा लाता था। वह बटैहड़ों के सहयोग से एक के बाद एक बावलियों का निर्माण करवाता गया। साधु ने इस बाग में एक बड़ी सी शिला पर हनुमान की मूर्ति भी उत्कीर्ण करवाई। यह मूर्ति मूल रूप में आज भी द्रष्टव्य है। साधु ने अपने जीवन काल में जितनी भी बावलियाँ बनवाई उन्हें संरक्षित रखने का प्रयास भी किया। उसे लोगों का सहयोग भी मिला।

साधु बाग में दो अन्य प्राकृतिक चश्मों को भी बावली का रूप देना चाहता था किन्तु वह ऐसा नहीं कर सका। उसकी मृत्यु हो गई। बाबा के देहावसान के पश्चात् इन बावलियों की देखभाल कलीथ गाँव के कमल सिंह के पिता ने आयु पर्यन्त की। उनके देहावसान के बाद कमल सिंह और उनका परिवार इन बावलियों की देखरेख करता है। अधिकांश बावलियाँ तो अब लुप्त हैं। किन्तु जो बावलियाँ बची हैं उन की नियमित रूप से सफाई की जाती है।

लूनका पानी

यह पूरे डुग्गर-प्रदेश में एक ऐसी बावली है जिस का पानी नमकीन है। यह बावली सैल कौड़ी बेर गाँव में अवस्थित है। इस गाँव तक पहुँचने के लिए एक मार्ग बाड़ीगढ़ से जाता है। इस बावली के निकट ही 'लम्मा ग्रां' नामक एक गाँव भी है। यह स्थान रैपर के भी निकट है।

डोगरी के प्रख्यात लेखक देशबन्धु डोगरा नूतन के अनुसार इस बावली की प्रसिद्धि पूरे क्षेत्र में है। कई लोग इस बावली का अवलोकन करने आते हैं और इस का पानी बर्तनों अथवा बोतलों में भर कर ले जाते हैं। माना जाता है कि इस बावली के जल की धारा पृथ्वी के भीतर छुपी हुई धातुओं से गुजरती है जिससे इस के पानी का स्वाद ही बदल जाता है।

'लूनका पानी' स्थान अब एक पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित हो रहा है। यहाँ कई पर्यटक इस बावली का दिग्दर्शन करने आते हैं। अंजली में थोड़ा जल भर कर पी जाते हैं। यह बावली अपने पानी के कारण प्रसिद्ध तो है किन्तु असंरक्षित भी है।

इस बावली का एक अन्य नाम 'बुआ दी बाँ' भी है। इस बावली के निकट एक धर्मशाला भी है। पहले जो यात्री मानसर से बिलावर पैदल जाते थे, वे इस बावली के निकट निर्मित धर्मशाला में रूकते थे। किन्तु अब यह बावली असंरक्षित है।

सरैल चुआ की बावली

स्थानीय लोग इस बावली को 'बड्डी-बाँ' नाम से भी अभिहित करते हैं। इस का एक नाम बट्टन की बावली भी है। इस बावली तक पहुँचने के लिए एक मार्ग मानसर झील से भी जाता है। डोगरी के प्रसिद्ध कवि संतराम इसी बावली की पीठिका पर बैठ कर कभी-कभी लोगों को अपनी कविताएँ सुनाते थे। लोकश्रुति है कि एक बार बीबी चाँद कौर भी इस बावली को देखने आई थीं। यह एक विशाल बावली है। इस की अट्टारिकाएँ मूर्तियों से सुसज्जित है। वास्तुकला की दृष्टि से यह बावली अर्द्ध पहाड़ी शैली में निर्मित है।

धाम की बावली

इस बावली का उल्लेख डा. अशोक जेरथ ने अपनी पुस्तक फोक आर्ट आफ डुग्गर के पृष्ठ 57-58 में किया है। उनके अनुसार यह बावली थड़ा कुलवाल और ख्यून के बीच 'धाम' नामक स्थान पर अवस्थित है। यह स्थान थड़ा कुलवाल से अनुमानतः 4 कि.मी. ख्यून सड़क की ओर है।

यह बावली देव मूर्तियों के कारण प्रसिद्ध है। इस बावली में प्रदर्शित मूर्तियों में गणेश, नाग, चाँद, सूर्य, विष्णु, मत्स्य, ललित आसन पर आरूढ़ दुर्गा, अन्न पूर्णा, की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं। इन मूर्तियों में एक दैत्य की मूर्ति भी प्रदर्शित है।

यह बावली वास्तु कला की दृष्टि से वैभवशाली है। इस की प्रत्येक शिला अलंकृत लगती है।

लाहड़ी की बावली

यह बावली ख्यून और मानसर के मार्ग में स्थित है। ख्यून से इस की दूरी केवल 5 कि.मी. है। इस बावली का वास्तु विन्यास स्थानीय है। इस की पीठिकाएँ कलात्मक मूर्तियों से सुसज्जित हैं।

इन मूर्ति में सबसे आकर्षक मूर्ति नागदेवता की है। एक मूर्ति गणेश जी की भी इस बावली में जड़ित है। इस बावली के मुख भाग में एक शिलालेख जड़ित है जो टाकरी लिपि में है। यह शिलालेख अभी तक पढ़ा नहीं जा सका।

इस बावली में जो अन्य मूर्तियाँ जड़ित हैं वे विकृत लगती हैं। उन्हें पहचान पाना कठिन है। इस बावली का उल्लेख डा. अशोक जेरथ ने अपनी पुस्तक फोक आर्ट आफ डुग्गर में किया है। यह बावली हमारी जल धरोहर है। इसे संरक्षण मिलना चाहिए।

ख्यून की बावली

ख्यून डुग्गर का प्राचीन तीर्थ है। यह स्थान रामकोट से आठ किलोमीटर दूर है। यहाँ एक प्राचीन शिव मंदिर है। मंदिर परिसर में ही एक भव्य बावली है। यह बावली वास्तुकला की दृष्टि से जलकुंड आकार की है। बावली में मच्छलियाँ तैरती दिखाई देती हैं। इस बावली का जल विशुद्ध और निर्मल है, अतः जितने भी श्रद्धालु इस तीर्थ-स्थल पर आते हैं वे पहले बावली के जल से अपना शरीर पवित्र करते हैं तदुपरान्त वे इस बावली के जल से शिवलिंग का अभिषेक करते हैं।

इस बावली और तीर्थ स्थल का सम्बन्ध जनश्रुतियों के अनुसार महा भारत काल से है। कहा जाता है कि पांडवों द्वारा आयोजित अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा जब इस स्थान पर पहुँचा तो स्थानीय नाग राजा बभ्रुवाहन से उस घोड़े को पकड़ लिया और पांडवों को युद्ध के लिए ललकारा। पांडव पुत्र और बभ्रुवाहन के मध्य इसी स्थल पर भयंकर

युद्ध हुआ। इस युद्ध में पांडवों की एक अक्षौणी सेना का संहार करने के पश्चात् बभ्रुवाहन ने इस बावली (जलकुंड) के जल से स्नान किया।

ख्यून में एक जल धारा भी बहती है। इस जल धारा के अधिकांश पत्थरों पर छोटे-बड़े लाल रंग के निशान हैं। जनश्रुति है कि युद्ध में वीर योद्धाओं का जो रक्त इन पत्थरों पर पड़ा वह इन में जम गया जिस कारण ये पत्थर रक्त रंजित लगते हैं।

पर्व त्योहार पर स्थानीय लोग इस बावली में स्नान करने बड़ी संख्या में आते हैं। लोक-विश्वास है कि जो व्यक्ति इस बावली में स्नान करते हैं उस पर भगवान शिव अति प्रसन्न होते हैं। इस बावली के इर्द-गिर्द कई पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। इनका निरीक्षण करने से लगता है कि कभी यह क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र रहा होगा।

जगानु की बावलियाँ

जगानु में राधा की बावली के अतिरिक्त निम्न बावलियाँ और भी हैं :

1. पुरानी बावली : यह बावली पहले भूमिगत थी। जगानु के प्रकाश बलकार नाई ने भूमि खोद कर इसे बाहर निकाला। इस बावली का पुर्नोद्धार किया गया है।

2. जाड़ की बावली : यह बावली बाबा बोला देव स्थान के निकट है। यह भी प्राचीन बावली है।

3. सुलह की बावली : इस बावली का उपयोग स्थानीय लोग आज भी करते हैं।

4. हौज वाली बावली : यह बावली शिव-मंदिर के निकट है।

5. मोर्चा की बावली : इस बावली का उपयोग स्थानीय लोग आज भी करते हैं।

तृतीय अध्याय

कठुआ जनपद की बावलियाँ

कठुआ जनपद जम्मू-कश्मीर के उतर दक्षिण में अवस्थित है। इस की दक्षिण-पश्चिम की सीमाएँ पाकिस्तान से जुड़ी हुई हैं। इसके उतर-पूर्व में हिमाचल प्रदेश का चम्बा जनपद है।

भौगौलिक दृष्टि से यह जनपद तीन भूखंडों में विभाजित है। बसोहली, बिलावर तथा बनी का क्षेत्र पहाड़ी है। इस का अधिकांश भाग शिवालिक पर्वत श्रंखला के अंतर्गत परिगणित है। बनी का क्षेत्र लघु हिमालय के अंतर्गत परिगणित है। कठुआ तथा हीरानगर का कुछ भाग कंडी क्षेत्र के अंतर्गत परिसीमित है किन्तु इस का निचला भाग जो पाकिस्तान की सीमा को स्पर्श करता है, वह मैदानी है।

इस जनपद का ऐतिहासिक महत्व सदियों पुराना है। नागकाल में यह जनपद नाग संस्कृति का केन्द्र था। नागों की राजधानी 'एरावती' इसी जनपद के अंतर्गत थी। इस स्थान को अब 'एरमां' नाम से अभिहित किया जाता है। यहाँ नाग संस्कृति से सम्बन्धित कई पुरावशेष आज भी द्रष्टव्य है। कल्हण द्वारा विरचित राजतरंगिणी में इस जनपद के मुख्य केन्द्र बल्लपुर का उल्लेख भी हुआ है। इसी प्रकार सामंत काल में बसोहली और जसरोटा इस जनपद के मुख्य राजनैतिक केन्द्र रहे।

अब प्रशासनिक दृष्टि से यह जनपद पाँच तहसीलों यथा बनी, बसोहली, बिलावर कठुआ और हीरानगर में विभाजित है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह जनपद अति समृद्ध है। इस जनपद में एक ओर बल्लपुर और एरावती जैसे पुरातत्व स्थल हैं तो दूसरी ओर बाला सुन्दरी, शीतला माता, धौल माता, चंडी माता, सुकराला तथा ननकाना माता के दिव्य मंदिर हैं। वहीं भगवान शिव और नृसिंह के मंदिरों की संख्या भी पर्याप्त है। कठुआ में पौराणिक काल के दो पुरावशेष आज भी द्रष्टव्य हैं। इनमें से एक जम्दग्नि ऋषि का आश्रम जांडी (हीरानगर) में है और दूसरा कण्व ऋषि के नाम का एक मंदिर बनी के पेंथर गाँव में है। लोक आस्था आज भी इन स्थलों से जुड़ी हुई है।

इस जनपद का पवर्तीय भूखंड वन सम्पदा से समृद्ध है जबकि कंडी और मैदानी खंड में झाड़ियाँ तथा कुछ वृक्ष भी हैं।

जलस्रोत

कठुआ जनपद में रावी, उज्झ, बेई, सेवा आदि प्रमुख नदियाँ प्रवाह मान हैं। कई नाले और जलधाराएँ तथा नाज, भीनी आदि उपनदियाँ भी इस भूखंड की शोभा बढ़ाती हैं। इस जनपद के मैदानी क्षेत्र में तालाब और कूप पर्याप्त मात्रा में है। प्रकाशित आंकडों के अंतर्गत इस जिला में 1136 तालाब हैं जिन में प्रमुख नाम हैं :

गोविन्दसर, पलासी का तालाब, भड्डु का तालाब, बरवाल का तालाब, बुद्धि का तालाब, जगतपुर का तालाब, लुकेट का तालाब, तारड़ा का तालाब तथा ऐरमां का तालाब आदि। इसी प्रकार कठुआ के मैदानी भूखंड में कुंओं की भरमार है। गाँव-गाँव और मुहल्ले-मुहल्ले में कुएँ हैं। कई कुएँ इस जनपद के पवर्तीय क्षेत्र में भी हैं। इन में अधिकांश कुएँ पक्के हैं और इनका जलस्तर नीचे है।

कठुआ जनपद के पवर्तीय खंड में प्राकृतिक चश्में, जल प्रपात, जलकुंड भी पर्याप्त संख्या में द्रष्टव्य हैं। इस जनपद का जो भाग शिवालिक पहाड़ियों के अंतर्गत आता है, वहाँ बावलियों की संख्या भी पर्याप्त है। ये बावलियाँ वास्तु विन्यास की दृष्टि से भी उत्कृष्ट हैं। इन बावलियों में जड़ित मूर्तियों का अवलोकन करने से लगता है कि चित्रकला की भाँति मूर्ति कला भी इस क्षेत्र में विकासोन्मुखी थी। कठुआ जनपद की प्रसिद्ध बावलियाँ निम्न हैं :

क्होग की बावलियाँ

क्होग बिलावर के पश्चिम में बीस किलोमीटर और मांडली से केवल सात किलोमीटर उतर में अवस्थित है। यह एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव में एक पहाड़ी टीले पर एक दुर्ग है और इसके नीचे कई कलात्मक बावलियाँ हैं। ये बावलियाँ अनुपम प्रस्तर कला का एक नमूना मानी जाती हैं। इन की अट्टारिकाएँ देव मूर्तियों से सुसज्जित हैं। इन बावलियों का जल अति निर्मल और पारदर्शी है। क्होग गाँव के लोग

इन्हीं बावलियों के जल का प्रयोग करते हैं।

जनश्रुतियाँ इन बावलियों को बन्दराल राजाओं की निर्मितियाँ मानती हैं। कहा जाता है कि बन्दराल राजाओं ने मालती गढ़ के राणा को युद्ध में पराजित किया तो उन्होंने विजय उत्सव के उपलक्ष्य में क्होग में एक दुर्ग निर्मित किया। दुर्ग के सैनिकों का जल उपलब्ध करवाने के लिए उन्होंने इन बावलियों का निर्माण करवाया।

स्थानीय एक बुजुर्ग के अनुसार बावलियाँ वहाँ पहले से ही थीं। बन्दराल राजाओं ने उन का पुर्न-निर्माण करवा कर उन को नया रूप दिया। कहते हैं कि टीले के नीचे पहले कई बावलियाँ थीं किन्तु बन्दराल राजाओं ने केवल दो ही बावलियों को नवरूप दिया। इन बावलियों के निकट ही भगवान नृसिंह का एक ऐतिहासिक मंदिर है। श्रद्धालु पहले इन बावलियों में स्नान करते हैं और बाद में भगवान नृसिंह के दर्शन करने जाते हैं।

ये बावलियाँ हमारी अमूल्य जल धरोहर हैं। इन के संरक्षण की आवश्यकता है।

जलुए की बावली

यह ऐतिहासिक बावली थड़ा कुलवाल गाँव में दुर्ग के उतर में अवस्थित है। इस बावली का विशेष महत्व यह है कि सुमरता क्षेत्र की लोक देवी बुआ भागां का अन्तिम संस्कार इस बावली के निकट हुआ था। बुआ भागां के संस्कार में सैंकड़ों की संख्या में स्थानीय लोग सम्मिलित हुए थे। उन्होंने संस्कार के समय जो आँसू बहाये थे कहते हैं कि उससे इस बावली के निकट स्थित पत्थर भी पिघल गए थे।

बुआ भागां 16वीं शताब्दी की एक महान वीरांगना थी। वह थड़ा कलवाल के नम्बरदार प्रजा की पत्नी थी। वे एक विदुषी और समाज के प्रति समर्पित महिला थीं। वे गाँव के लोगों की सेवा में रत रहती थीं, अत: गावँ के लोग उन का बहुत आदर और सम्मान करते थे। उन्हीं दिनों उनके राजा सुम्बड़िया और भड्डु के राजा भड़वाल में लड़ाई चल रही थी। कभी भड़वाल राजा सुमरता पर आक्रमण करके

स्थानीय लोगों के घरों को जला देता तो कभी सुमरता का राजा भड्डू पर हमला करके कई गाँवों को उजाड़ देता। इस प्रकार दोनों राज्यों की प्रजा अति दुःखी थी।

एक बार राजा सुम्बड़िया ने अपनी प्रजा पर भारी कर लगाया और अपने सिपाहियों को कर उगहाने के लिए गाँव-गाँव भेजा। बुआ भागां ने इस नये कर का विरोध किया तो राजा के सिपाही उसे पकड़ कर राजमहल ले आए। भागां ने राजा को शाँति का पाठ तो पढ़ाया किन्तु वह नहीं समझा। वह उस की हत्या करने जैसे ही उसकी ओर दौड़ा बुआ भागां ने अपनी कुक्षि में छुपाया कटारा बाहर निकाला और अपने पेट में घोंप दिया। बुआ भागां के प्राण पखेरू उड़ गए।

लोगों ने बुआ भागां का संस्कार जलुए की बावली के निकट किया और वहाँ उस की मूर्ति भी स्थापित की। बुआ की याद में एक स्मारक भी बनवाया। इस क्षेत्र के लोग इस बावली और स्मारक को अति पावन मानते हैं और इन की पूजा करते हैं।

गूढ़ा कत्याल की बावलियाँ

गूढ़ा कत्याल डुग्गर का एक प्राचीन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गाँव है। कभी यह गाँव अति समृद्ध और वैभवशाली था। आज भी इस गाँव में कई पुरातत्व महत्व के पुरावशेष बिखरे पड़े हैं जिन में बावलियाँ भी हैं। ये बावलियाँ संख्या में तीन हैं।

डोगरी लेखक शिव देव सिंह सुशील के अनुसार पहले ये बावलियाँ भूमिगत थीं। एक बावली का जल खेतों में रिसता था। जब उस स्थान की खुदाई की गई तो भूमि के नीचे से पहले कुछ शिलाखंड मिले और बाद में अट्टारिकाएँ दिखाई देने लगीं। जब और नीचे खुदाई की गई तो एक बड़ी बावली के अवशेष मिले। बावली की खुदाई करने के बाद इस का पुर्न-निर्माण किया गया। अब यह बावली अपने क्षेत्र की बड़ी बावली है। स्थानीय लोग इसे 'बड्डा-नौन' भी कहते हैं।

इस बावली के निकट ही दो अन्य बावलियाँ भी हैं जो आकार में छोटी हैं। ये भी पानी से लबालब भरी रहती हैं। लोग इन बावलियों

के जल का भी उपयोग करते हैं। इन बावलियों के निकट ही एक प्राचीन शिव मंदिर है। इस मंदिर में शिव पार्वती की दुर्लभ युग्म मूर्ति संस्थापित है।

स्थानीय लोग इन बावलियों के जल से मूर्तियों का जलाभिषेक करते हैं। इन बावलियों से तीन सौ मीटर नीचे एक प्राचीन गुफा है। इस गुफा को शिव का प्रतीक मान कर पूजा जाता है। डोगरी लेखक सुशील के अनुसार गूढ़ा कत्याल राणा काल में एक राणा की राजधानी थी। यहाँ कई ऐतिहासिक स्मारक भूमिगत हैं।

द्रुंग की बावली

यह बावली मांडली से दो किलोमीटर की दूरी पर द्रुंग स्थान में उज्झ नदी के तट के साथ निर्मित है। यह मांडली क्षेत्र की सबसे बड़ी बावली है। यह बावली मानसर-चम्बा पैदल मार्ग पर अवस्थित है। डोगरा-काल में जो मार्ग जम्मू से चम्बा जाता था, उस मार्ग में कई पड़ाव थे। प्रत्येक पड़ाव में जल की व्यवस्था के लिए बावलियों का निर्माण किया गया था। अत: जो यात्री जम्मू से रवाना होते थे वे पहले मानसर पहुँचते थे और मानसर के बाद जो पड़ाव आते थे उनमें एक द्रुग भी था। द्रुंग में जो बावली निर्मित की गई है, स्थानीय लोग उसे 'बड्डा नौन' कहते हैं। इस बावली से जो जल नि:सृत होता है वह स्थानीय दो-तीन गाँवों की भूमि को सींचित करता है।

बावली की अट्टारिकाओं का अवलोकन करने से लगता है कि यह बावली सामंत कालीन है। इस बावली में जिन शिलाखंडों का प्रयोग हुआ है वे उज्झ नदी से लाए गए हैं। बावली अनुमानत: आठ मीटर वर्ग क्षेत्र में परिसीमित है। इस बावली की प्रस्तर-शिलाओं पर जो तक्षण कार्य हुआ है, वह साधारण कोटि का है। बावली के निकट यात्रियों के बैठने की व्यवस्था की गई है। यात्री अट्टारिकाओं में बैठ कर विश्राम करते थे और साथ लाया हुआ भोजन खाते थे। अब यह बावली उपेक्षित है। फिर भी कुछ पर्यटक जो मांडली में घूमने फिरने आते हैं, वे इस बावली को देखने भी जाते हैं। इस स्थान का परिदृश्य अति मनोहर है।

रामकोट की बावली

रामकोट की यह बावली कला वैभव की दृष्टि से एक उत्कृष्ट कोटि की है। इस बावली का वास्तु विन्यास अर्द्ध पहाड़ी शैली में है। इस बावली की अट्टारिकाएँ कलात्मक हैं। यह बावली अनुमानतः सात मीटर वर्ग क्षेत्र में परिसीमित है। इसके निर्माण में जो प्रस्तर-शिलाएँ प्रयुक्त हुई हैं, वे कुशल शिल्पकारों की दक्षता का दिग्दर्शन कराती हैं।

रामकोट एक ऐतिहासिक उप नगर है। इस में कई ऐतिहासिक और पुरातत्व से सम्बन्धित पुरावशेष बिखरे पड़े हैं जिन में मनकोटिया राजाओं के महल, जसवाल राजाओं के महल, मंदिर, दुर्ग के बुर्ज, सरोवर और बावलियाँ उल्लेखनीय हैं। ऐतिहासिक भवन तो धराशायी हैं किन्तु सरोवर और बावलियाँ अब भी द्रष्टव्य हैं।

रामकोट कठुआ जनपद की तहसील का मुख्यालय भी है। यह स्थान जम्मू से 83 किलोमीटर, ऊधमपुर से 54 कि.मी., कठुआ से 48 कि.मी. और बिलावर से 36 कि.मी. दूर है। जो पर्यटक रामकोट के पुरावशेष देखने आते हैं वे रामकोट की इस ऐतिहासिक बावली का अवलोकन भी करते हैं। यह बावली रामकोट के पुराने बाजार के अन्तिम छोर पर है।

सामंत काल में रामकोट के निवासी इस बावली के जल का उपयोग स्नान करने, कपड़े धोने, पशुओं को पानी पिलाने तथा घर की रसोई के लिए करते थे किन्तु नल लगने से यह बावली अब उपेक्षित है। इस बावली के अतिरिक्त रामकोट क्षेत्र में और भी कई छोटी-बड़ी बावलियाँ निर्मित हैं जिन का उपयोग गाँववासी आज भी करते हैं।

ठिल्ले की बावली

यह बावली भी थड़ा कुलवाल में दुर्ग के निकट अवस्थित है। लोक अवधारणा इसे सौमन्तक राजाओं की निर्मिति मानती है। इसमें जड़ित तक्षित प्रस्तरों के अवलोकन से भी यह लगता है कि यह इस क्षेत्र की प्राचीन बावली है। इस बावली का जल निर्मल, स्वच्छ और सुस्वादु है, अतः स्थानीय लोग इस के जल का उपयोग घरों में भी करते

थे। एक मत यह भी है कि थड़ा कुलवाल का दुर्ग बनाते समय इस बावली को नवरूप दिया गया। यह बावली वर्गाकार है और इस की प्रत्येक भुजा 5.30 मीटर है। यह छोटे जलाशय जैसी लगती है।

यह बावली रामकोट से 12 कि.मी. दूर पूर्व दिशा में है। इस बावली में एक शिलालेख जड़ित है।

भटवाड़ की बावली

यह बावली भड्डु-क्षेत्र में है। जिस स्थान पर यह बावली स्थित है उसे धर्मकोट नाम से भी अभिहित किया जाता है। इस बावली का ऐतिहासिक महत्व यह है कि इस की एक अट्टारिका में एक शिलालेख जड़ित है जिसकी लिपि डोगरी वर्ण माला से मिलती जुलती है। कहते हैं कि इस में किसी महाराजा राजा का नाम उत्कीर्ण है। वैसे स्थानीय लोग इसे रानी की बावली कहते हैं।

वास्तु -विन्यास की दृष्टि से यह एक कलात्मक बावली है। इस में जड़ित शिलाएँ तक्षित हैं। इस का जल निर्मल है। गाँव के लोग प्राय: इसी बावली के जल का प्रयोग अपने घरों में करते थे। इस बावली को सरंक्षित किया जाना चाहिए।

गुरनाल की बावली

यह प्रसिद्ध बावली बिलावर के दक्षिण-पश्चिम में आधा किलोमीटर की दूरी पर नाज नदी के दक्षिण तट के साथ निर्मित है। इस भव्य बावली को देखने के लिए पर्यटक वाहन से भी जा सकते हैं। मुख्यत: स्थानीय लोग यहाँ पैदल ही आते हैं।

बिलावर के पाल राजाओं ने बावली क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप देने का प्रयास किया है। वे इस स्थल को हरिद्वार जैसा रूप देना चाहते थे, अत: उन्होंने बावली के साथ ही एक शिव मंदिर भी निर्मित किया है। श्रद्धालु बावली में स्नान करने के बाद इसके जल से शिवलिंग का अभिषेक भी करते हैं। यह बावली आयताकार है। इस की लम्बाई अनुमानत: चार मीटर और चौड़ाई तीन मीटर है। यह बावली चारों ओर

से छोटी दीवार से घिरी हुई है। लगता है कि ऐसा इस की सुरक्षा के लिए किया गया होगा। इस में प्रवेश के लिए जो द्वार है उसकी लम्बाई 2.28 मीटर और चौड़ाई एक मीटर है। इस के ललाट में गणेश मूर्ति है।

इन स्तम्भों के विषय में अलग-अलग जनश्रुतियाँ हैं। एक श्रुति यह है कि इन स्तम्भों के ऊपर पाल राजा मंदिर बनवाना चाहते थे। दूसरी लोकश्रुति यह है कि भीषण गर्मियों में पाल राजा इन स्तम्भों के ऊपर अपनी चारपाई रखवा कर सोते थे। इससे उन्हें शीतलता अनुभव होती थी और उन्हें सोने में अलौकिक आनन्द आता था। इस बावली के इर्द-गिर्द खुला स्थान है। गर्मियों में बिलावर से कई परिवार दिन के समय यहाँ आते हैं। पूरा दिन विश्राम करने के बाद चले जाते हैं।

जो श्रद्धालु इस बावली के जल से शिवलिंग का अभिषेक करते हैं, वे इस जल से हनुमान की मूर्ति को भी स्नान करवाते हैं। हनुमान की मूर्ति नाज नदी के मध्य भाग में एक ऊँची चट्टान को उकेर कर बनाई गई है। इस चट्टान को हनुमान की शिला भी कहते हैं। यह शिला अनुमानत: 6 मीटर लम्बी डेढ़ मीटर चौड़ी और साढ़े पाँच मीटर ऊँची है। श्रद्धालु हनुमान शिला के दर्शन करने के बाद ही परौल के मार्ग से बिलावर में प्रवेश करने के बाद हरिहर मंदिर के दर्शन करने जाते हैं।

गुरनाल की यह बावली स्थानीय लोगों की आस्था का एक केन्द्र भी है, अत: लोग इसे अति पावन मानते हैं।

रिकियाँ की बावली

यह बावली ऐतिहासिक महत्व की है। इस का एक नाम 'राजा की बावली' भी है। जनश्रुति है कि बिलावर के किसी पाल राजा ने जन कल्याण की भावना से प्रेरित होकर इस का निर्माण करवाया। एक अन्य दंत कथा के अनुसार पालवंश के किसी एक राजा ने जनता पर अत्याचार किया तो एक साधु ने उसे ऐसा करने से मना किया किन्तु राजा नहीं माना।

साधु ने राजा को श्राप दिया कि यदि तुम अत्याचार बंद न

करोगे तो तुम्हारी मृत्यु साँप काटने से होगी। राजा डर गया। उसने साधु से क्षमा याचना करते हुए कहा –मुझे यह दंड मत दीजिए। अब मैं वहीं करूँगा जो आप कहेंगे। साधु ने कहा – जल का देवता नाग है। अत: नाग देवता के नाम कोई बावली बनवायोगे तो श्राप का कम प्रभाव होगा। राजा न ऐसे ही किया। उसने नाग देवता के नाम पर इस बावली का निर्माण करवाया और संकल्प करके इसे जनता को सौंप दिया।

यह अति आकर्षक और अलंकृत बावली है। इसमें जड़ित प्रस्तर शिलाएँ देखने में अति सुन्दर लगती हैं। इस का जल प्रपात डेढ मीटर ऊँचा है। इस बावली की लम्बाई 6.82 मीटर है। इस की मुख्य अट्टारिका में एक नागमूर्ति जड़ित है जो तक्षण कला का उत्कृष्ट नमूना है।

नाड़रियाँ की बावली

बिलावर की बावलियों में जो बावली कला की दृष्टि से सर्वोत्कुष्ट है, वह नाड़रियाँ की बावली है। यह बावली सुन्दर मूर्तियों के कारण पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इस बावली में एक मूर्ति भगवान गणेश की भी है। इस मूर्ति में गणेश को नृत्य मुद्रा में दिखाया गया है। ऐसी कलात्मक गणेश की मूर्ति सम्भवत: पूरे डुग्गर प्रदेश में अन्य कहीं नहीं है। लोक श्रुति के अनुसार इस बावली का निर्माण भी पालवंशीय राजाओं के शासन काल में ही किया गया है। गणेश की मूर्ति अनुमानत: तीन सौ वर्ष पुरानी लगती है। इस मूर्ति को देखकर लगता है कि किसी समय बिलावर में प्रस्तर शिल्प कला चरमोत्कर्ष पर थी।

नाड़रियाँ बावली का जल पीने में सुस्वादु है। अत: स्थानीय लोग इसी बावली के जल का उपयोग घरों में करते हैं किन्तु नलके लगने के बाद अब बावलियों की उपेक्षा की जाने लगी है। बिलावर के कला इतिहास में नाड़रियाँ बावली का विशेष महत्व है। इस बावली में प्रदर्शित मूर्तियाँ पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

यह बावली भी अब अन्य बावलियों की भाँति उपेक्षित है। इसे संरक्षित किया जाना चाहिए।

सुकराला की बावलियाँ

शक्ति स्थल सुकराला गाँव में जो दो बावलियाँ द्रष्टव्य हैं, डा. अशोक जेरथ के अनुसार वे वास्तु विन्यास की दृष्टि से ऊधमपुर क्षेत्र की बावलियाँ से कई दृष्टियों से भिन्न हैं। इन बावलियों में वह कलात्मक शैली दिखाई नहीं देती जो ऊधमपुर क्षेत्र की बावलियों में है। हमारे विचार में इसके दो कारण हैं एक कारण यह है कि जो बलुआ पत्थर ऊधमपुर में उपलब्ध है वह बिलावर में नहीं है। दूसरा कारण यह है कि प्रस्तर कला में जितने दक्ष ऊधमपुर के बटैहड़े रहे हैं उतने इस क्षेत्र में नहीं हैं। ऊधमपुर में तो बटैहड़ों का एक वर्ग है जिसकी आजीविका का मुख्य साधन पत्थर तराशना ही है। शायह यही कारण है कि जितनी जीवन्त ऊधमपुर की बावलियाँ लगती हैं, उतनी डुग्गर के अन्य क्षेत्रों में नहीं लगती हैं।

किन्तु जो बावलियाँ सुकराला गाँव में हैं, वे कला-विहीन भी नहीं हैं। इन की पीठिकाओं में भी मूर्तियाँ जड़ित हैं किन्तु इनमें वह सौंदर्य नहीं झलकता जो ऊधमपुर की बावलियों में है।

सुकराला गाँव में दो ही बावलियाँ हैं। एक बावली गाँव के नीचे बस अड्डा के साथ है और दूसरी बावली उससे कुछ दूर है।

बावली-एक

यह एक वर्गाकार बावली है। यह बावली पश्चिमोन्मुखी है। इस बावली में जो तीन पीठिकाएँ बनी हैं, वे सुन्दर मूर्तियों से सुसज्जित हैं। इन मूर्तियों का विवरण इस प्रकार है :

बायें से दायें ओर

बावली की बायीं पीठिका में डा. अशोक जेरथ के अनुसार कुल 12 मूर्तियाँ जड़ित हैं जिनका क्रम इस प्रकार है :

1. एक लम्बा और छायादार वृक्ष
2. मत्स्यावतार जिस में ऊपरी भाग मनुष्य का है और नीचे का भाग मछली का है।

3. हनुमान की मूर्ति
4. एक वृक्ष की मूर्ति
5. सूर्य और चाँद की मूर्ति
6. नृसिंहावतार की मूर्ति
7. विकृत मूर्ति
8. पालकी पर सवार नायिका। एक शस्त्रधारी अश्वरोही पालकी के पीछे चलते हुए।
9. एक छायादार वृक्ष
10. सिंहारूढ़ दुर्गा की मूर्ति
11. मच्छली की मूर्ति
12. नाग देवता की मूर्ति

इस बावली के निकट ही एक शिव का छोटा मंदिर भी है। इस बावली के जल का उपयोग यात्री, श्रद्धालु तथा गाँव के लोग भी करते हैं।

बावली-दो

यह बावली गाँव से कुछ बाहर है। आकार में यह बावली वर्गाकार है। इनके भीतर प्रस्तर शिलाओं की छोटी अट्टारिकाएँ हैं। बावली के तीनों ओर जो पीठिकाएँ बनी हैं, वे मूर्तियों से सुसज्जित हैं।

इस बावली में सब से आकर्षक मूर्ति भगवान शिव पार्वती की है। मूर्ति में शिव के बालों से गंगा निकलती हुई दिखाई गई है। दूसरी मूर्ति ब्रह्मा की है जिनके चारों हाथों में चार वेद हैं। तीसरी मूर्ति शेष शैय्या पर विश्राम करते भगवान विष्णु की है। लक्ष्मी को उनके चरणों के निकट बैठा दिखाया गया है। एक मूर्ति बावली के देवता नाग की है। यह मूर्ति भी आकर्षक है।

बावली में सिंहमुख से जो जल धारा गिरती है। उससे यह बावली पानी से लबालब भरी रहती है। जितने भी यात्री सुकराला में आते हैं वे इन बावलियों के दर्शन करके अति प्रसन्न होते हैं। इन बावलियों का जल अमृत तुल्य माना जाता है।

कट्टल की बावली

कट्टल सुकराला से तीन किलोमीटर सड़क के नीचे एक जल धारा के तट के साथ बसा एक छोटा सा गाँव है। यह गाँव बिलावर के ऊपर पश्चिम में 9 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

इस गाँव में एक जलकुंड आकार में एक पक्की बावली है जिस का जल दर्पण के समान निर्मल है। इस बावली के साथ ही एक बड़ी सी चट्टान पर हनुमान की मूर्ति उत्कीर्ण है। मूर्ति में एक शिलालेख देवनागरी लिपि में उत्कीर्ण है। यह शिलालेख 11 पंक्तियों में समाहित है। इसकी भाषा संस्कृत लगती है। इस शिलालेख की प्रारम्भिक पंक्ति है :

ओं नमों नारायण श्री मन्नाय।

बताया जाता है कि इस बावली का विकास एक साधु ने किया जो बाहर से आकर इस गाँव में कई वर्षों तक रहा। इस स्थान का प्राकृतिक परिवेश चिताकर्षक है।

गंगा मैय्या की बावली

यह छोटी सी बावली बिलावर के दक्षिण में प्रवाहित नाज उप नदी के तट के साथ ही निर्मित है। यह बावली बताते हैं कि बहुत ही प्राचीन है। पर्व-त्योहार के अवसर पर बिलावर क्षेत्र के लोग बड़ी संख्या में इस बावली में स्नान करने आते थे किन्तु अब श्रद्धालुओं की संख्या बहुत घट गई है।

यह बावली आकार में बहुत ही छोटी है अत: एक ही व्यक्ति इस बावली में प्रवेश कर सकता है। इस बावली का जल गंगा के समान पावन माना जाता है, अत: कई लोग इस बावली का जल बर्तनों में भरकर घर ले जाते हैं।

पहले इस बावली के जल के छिट्टों से घर को पवित्र किया जाता था। माना जाता था कि जल छिड़कने से प्रेतात्माओं का घर में प्रवेश नहीं होता।

सुन्दरी कोट की बावली

यह बावली सुन्दरी कोट गाँव में प्रसिद्ध शक्तिस्थल बाला सुन्दरी मंदिर के प्रांगण में एक बड़ी सी चट्टान को कुरेद कर बनाई गई है। बाला सुन्दरी का मंदिर कालीधार पहाड़ी के उच्च शिखर पर है। सामंतकाल में बिलावर से एक पगडंडी जो कठुआ की ओर काली ध ार से होती हुई जाती थी, यह बावली उसी मार्ग पर स्थित थी। अब यह बावली बिलावर से अनुमानत: 9 किलोमीटर और भड्डु से पाँच किलोमीटर दूर है। बाला सुन्दर गाँव में एक और भी छोटी सी बावली निर्मित है जिसका उपयोग गाँव के लोग करते हैं।

जनश्रुति है कि यह बावली और मंदिर अखनूर के किसी शाहूकार ने मनौती पूरी होने के बाद बनवाया। मंदिर में माता के मुकुट पर एक अभिलेख भी उत्कीर्ण था किन्तु वह मुकुट अब लुप्त है।

फैंतर की बावलियाँ

फैंतर तहसील बिलावर का एक व्यवसायिक केन्द्र है। यहीं से एक सड़क भड्डु को जाती है और दूसरी सड़क बिलावर सुकराला की ओर तथा तीसरी सड़क महानपुर बसोहली की ओर जाती है। जिन दिनों सड़कें नहीं थीं तब लोग पैदल जाते थे। यात्रियों के लिए स्थान-स्थान पर बावलियाँ बनाई गई थीं जिनका वजूद अभी तक बना हुआ है।

फैंतर के निकट जो बावलियाँ निर्मित हैं उनमें दो ही प्रसिद्ध हैं जिनके नाम हैं :

1. पंजाए की बावली

यह छोटी बावली सड़क के निकट स्थित है। फैंतर से इस की दूरी केवल एक कि.मी. है। यह बावली देखने में सुन्दर है।

2. लाकड़ी की बावली

यह पक्की बावली है। यह शिलाखंडों से निर्मित है। यह बावली भडवाल राजाओं के समय की बताई जाती है। इस बावली की वास्तु कला क्षेत्रीय है।

भड्डु की बावलियाँ

भड्डु की बावलियाँ भड्डु उप नगर के इर्द-गिर्द स्थित हैं। कहते हैं कि भड़वाल राजाओं के शासनकाल में इन की संख्या दर्जनों में थी। फिर भी आधी दर्जन के लगभग यह किसी न किसी रूप में द्रष्टव्य हैं। इन बावलियों की सबसे बड़ी विशिष्टता यह है कि वे पूरा वर्ष जल से लबालब भरी रहती हैं। इन बावलियों के जल में औषधीय गुण हैं, अतः स्थानीय लोग इन बावलियों के जल का उपयोग स्वस्थ रहने के लिए भी करते हैं।

इन बावलियों की दूसरी बड़ी विशेषता यह है कि ये जिन शिल्पकारों द्वारा निर्मित की गई हैं वे प्रस्तर तक्षण कला में निपुण थे।

इस बावलियों की अट्टारिकाओं में जो मूर्तियाँ संस्थापित की गई हैं, वे पौराणिक देवी-देवताओं, लोक देवताओं, लोक देवियों, लोक नायक और लोक नायिकाओं से संबंधित हैं। इनकी मुख्य अट्टारिका के ललाट भाग में नाग मूर्तियाँ भी जड़ित हैं। स्थानीय लोक आस्था नागों को जल का देवता मानती है। लोक विश्वास है कि नागों की पूजा से समय पर बारिश होती है। अच्छी बारिश से फसल भी अच्छी होती है, अतः नाग पूजन स्थानीय परम्परा के अनुसार जीवन जीने के लिए अनिवार्य है। भड्डु एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल है। कभी यह उपनगर भड़वाल राजाओं की राजधानी भी था। भड़वाल राजाओं ने जल संरक्षण की ओर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने कई तालाब खुदवाए जिन में बड़ा तालाब, शिव मंदिर का तालाब, गुसाइयों का तालाब, पाधों का तालाब, भाटों का तालाब, पुंगाल मुहल्ले के तालाब, झीवरों का तालाब, चुगान का तालाब, त्रुऐं वाला तालाब आदि मुख्य हैं।

जल के अभाव को दूर करने के लिए सामंत काल में यहाँ कई कुएँ भी खोदे गए जिन में पारली भड्डु वाला कुआं, त्राहलों का कुआँ, फंगाल वाला कुआं तथा पाधों का कुआँ मुख्य हैं।

बावलियाँ

भड्डु में निम्न बावलियाँ शिव दोवलिया के अनुसार बहुत प्रसिद्ध है :

बौटुएँ की बावली

यह स्वच्छ जल की बावली हैं। इस बावली में जड़ित शिला खंडों का अध्ययन करने से लगता है कि यह बावली सामंत कालीन है।

डुब्बे की बावड़ी

दोवलिया जी के अनुसार यह बावली भी प्राचीन है। इस बावलियों में जो भव्य मूर्तियाँ जड़ित थीं उनमें अधिकांश लुप्त हैं या किसी ने शरारत के कारण तोड़ दी हैं।

बारें की बावली

इस बावली का सांस्कृतिक दृष्टि से अत्याधिक महत्व है। इस बावली के निकट म्योड़ वाली माता का मंदिर है। श्रद्धालु पहले इस बावली के जल से अपने को पवित्र करते हैं और बाद में मंदिर के भीतर पूजा करने जाते हैं। इसी मंदिर में गोदेड़े महाजनों की मेल आयोजित होती है। यहाँ भव्य भंडारे का आयोजन भी किया जाता है।

नाड़ू वाला सूहटा (बावली)

इस का एक नाम नेआरू का नाड़ा भी है। यह स्थान नाग देवता वासुकि नाग से सम्बन्धित है। स्थानीय लोग नाग देवता को प्रसन्न करने के लिए यहाँ पशु (भिड्डु) की बलि भी देते हैं। भिड्डु को पहले ध र्मकोट ले जाते हैं। वहाँ से घुमाते हुए वे इस बावली पर आते हैं। इस अवसर पर यहाँ एक लोकोत्सव भी आयोजित होता है।

इस बावली का अवलोकन करने से लगता है कि यह बावली इस क्षेत्र में नाग संस्कृति का एक केन्द्र रही होगी। इस की भव्यता देखने योग्य है।

किशनपुर नगरोटा की बावली

यह बावली बिलावर के ऐतिहासिक उप नगर किशनपुर नगरोटा में अवस्थित है। इस बावली तक पहुँचने के लिए जो सड़क फैंतर से जाती है वह अनुमानतः चार किलोमीटर लम्बी है। यह बावली गाँव के बीच स्थित है, अतः पूरा गाँव इस बावली के जल का उपयोग करता

है। वास्तु शिल्प की दृष्टि से यह बावली बसोहली शैली में है।

इस बावली में एक शिलालेख जड़ित है जो डोगरी भाषा और लिपि में है। इस शिलालेख के कई वर्ण घिस गए हैं, अतः इसू पूरी तरह पढ़ा नहीं जा सकता। फिर भी शिलालेख में बावली के निर्माण का समय वि. सम्वत् 1813 तदानुसार सन 1707 अंकित है। अतः यह अनुमान लाया जा सकता है कि यह बावली तीन सौ वर्षो से भी अधिक पुरानी है।

कला-शिल्प की दृष्टि से यह एक सुन्दर अलंकृत बावली है। इस बावली के अन्दर तक्षित प्रस्तर शिलाओं से जो अट्टारिकाएँ बनाई गई हैं, वे आज भी मूल रूप से द्रष्टव्य हैं। बावली की अट्टारिकाओं को अलंकृत शिलाखंडों से सजाया जाता है। इस बावली के कला वैभव की प्रशंसा डोगरी के प्रसिद्ध कवि प्रकाश प्रेमी और लेखक श्री देश बन्धु डोगरा ने भी की है। शिव दोवलिया के अनुसार तहसील बिलावर में जितनी भी बावलियाँ हैं उन में कृष्णपुर नगरोटा की बावली वास्तु कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है।

इस बावली में स्थापित मूर्तियाँ स्थानीय लोक- आस्था का प्रतीक हैं। यह बावली हमारी अमूल्य धरोहर है। इसे संरक्षित रखने के लिए पंचायत विभाग को विशेष प्रयास करने चाहिए।

परनाला की बावलियाँ

डुग्गर का यह ऐतिहासिक गाँव तहसील बिलावर के अन्तर्गत बिलावर -बसोहली सड़क के साथ ही बसा हुआ है। इस गाँव का एक नाम नगरोटा पृथ्वीपाल है। लोकश्रुति है कि गाँव को भड्डु नरेश पृथ्वी पाल ने बसाया।

राजा पृथ्वी पाल भडवाल ने इस गाँव में जो निर्मितियाँ करवाई उन में इस गाँव की बावलियाँ और नृसिंह मंदिर है। राजा पृथ्वी पाल जम्मू नरेश महाराजा रणजीत देव (सन 1742-1781) का समकालीन था। उस का देहावसान सन 1820 ई. में हुआ। लगता है कि राजा पृथ्वी पाल ने सन 1780 के लगभग इन बावलियों का निर्माण करवाया होगा।

अतः यह माना जा सकता है कि परनाला की बावलियाँ लगभग अढ़ाई सौ वर्ष पुरानी हैं।

परनाला में बावलियों की संख्या दो है। एक बावली नृसिंह मंदिर के निकट है और दूसरी बावली नाला के पार है। जो बावली नृसिंह मंदिर के निकट है वह वास्तु कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है। इस की अट्टारिकाएँ और पीठिकाएँ अलंकृत हैं। इस बावली का जल भी स्वच्छ है। किन्तु जो बावली जलधारा के दूसरी ओर है, उस का उपयोग गाँववासी वस्त्र धोने, बर्तन साफ करने और पशुओं को पानी पिलाने के लिए करते हैं।

बड़ी बावली के निकट ही बाबा लच्छी राम की समाधि है। कहते हैं कि बाबा लच्छी राम स्नान करने के बाद भगवान नृसिंह की पूजा इन बावलियों के जल से करते थे।

डुग्गर के प्रसिद्ध संगीतकार मन मोहन पहाड़ी को भी इन बावलियों से विशेष लगाव था। वे इसी गाँव के थे। वे अपने मित्रों की टोली के साथ इन बावलियों में स्नान करते और इन की सफाई का भी पूरा ध्यान रखते थे।

मांडली की बावली

मांडली उज्झ नदी के तट पर बसा एक अति सुन्दर गाँव है। कहते हैं कि राणा-काल में यह गाँव एक राणा की राजधानी था। इस गाँव में कई प्राचीन पुरावशेष उपलब्ध हैं जिन में एक प्राचीन बावली भी है।

इस बावली का उल्लेख डा. अशोक जेरथ ने अपनी पुस्तक फोक आर्ट आफ डुग्गर में भी किया है। डा. अशोक जेरथ के अनुसार इस बावली के निकट जो शिलाखंड बिखरे पड़े हैं, उनका अनुशीलन करने से लगता है कि यह बावली अति प्राचीन है। इस बावली की पीठिकाओं में जो मूर्तियाँ स्थापित हैं उन मूर्तियों में नाग देवता की मूर्ति, शेषशायी मूर्ति व भैरव की मूर्ति दर्शनीय हैं। भैरव की मूर्ति का अध्ययन करने से लगता है कि इस क्षेत्र में तांत्रिकों का प्रभाव रहा है।

बुगदादू (बुगदादू दी बाँ) की बावली

जम्मू कश्मीर के प्रख्यात पुरावेता रामचन्द काक ने अपनी पुस्तक 'एंटीक्वीटिज आफ बसोहली एण्ड राम नगर' में इस बावली का भी उल्लेख किया है। इस बावली की भौगोलिक स्थिति का पता नहीं चला। यह बावली पुस्तक के अनुसार महानपुर और ख्यून के बीच में है। डा. अशोक जेरथ ने भी इस बावली का उल्लेख फोक आर्ट आफ डुग्गर में किया है।

डा. अशोक जेरथ के अनुसार इस बावली में एक मूर्ति ब्रह्मा की दूसरी विष्णु की और तीसरी मूर्ति नाग देवता की है। लगता है कि यह बावली लुप्त है।

महानपुर की बावली

महानपुर डुग्गर का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गाँव है। इस गाँव को बिलावर के एक राजा मान शक्य ने अपने नाम पर बसाया और इसका नाम रखा महानपुर।

महानपुर में आज भी कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरें द्रष्टव्य हैं जिन में मुख्य जगदम्बा मंदिर और मंदिर परिसर में निर्मित एक बावली है। मंदिर तो अपने मूल रूप में आज भी विराजमान है किन्तु बिलावर-बसोहली सड़क के नवीनीकरण के कारण बावली का एक भाग सड़क का हिस्सा बना है।

जनश्रुति है कि महानपुर का जगदम्बा मंदिर और बावली का निर्माण साथ-साथ हुआ। मंदिर की दीवार में जो शिलालेख जड़ित है उसके अनुसार मंदिर का निर्माण वि. सम्वत 1583 तदानुसार 1527 ई. में हुआ। यह बावली भी उसी समय बनी। बाद में इस बावली का पुर्नोद्धार मियां किशोर सिंह की पत्नी और महाराजा गुलाब सिंह की माता महादेवी ने भी करवाया। महादेवी बसोहली के अन्तर्गत माह्ड़ता के जागीरदार राणा कृष्ण पाल भड़वाल की कन्या थी। महादेवी को इस स्थान से विशेष लगाव था। बताते हैं कि जिस प्रकार जगदम्बा मंदिर की दीवारें भव्य मूर्तियों से अलंकृत हैं, वैसे ही इस बावली की पीठिकाएँ

भी देवी-देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित थीं किन्तु उपेक्षा और लापरवाही के कारण बावली का बहुत बड़ा भाग क्षतिग्रस्त हो गया।

आज स्थिति यह है कि यह टूटी-फूटी बावली अपने गौरवमय अतीत को भूल चुकी है। यह बावली असंरक्षित है, इसे संरक्षित किया जाना चाहिए।

पांडव बावली

यह बावली महानपुर क्षेत्र के अन्तर्गत कर्ण वाड़ा में अवस्थित है। यह अति प्राचीन बावली है। इस बावली को स्थानीय लोग लोक तीर्थ के रूप में पूजते हैं। बावली स्थल पर आषढ़ मास की पूर्ण माशी के दिन एक बड़ा मेला आयोजित होता है जिसमें बड़ी संख्या में लोग भाग लेने आते हैं।

इस बावली के निकट ही एक पुराना शिव मंदिर है। श्रद्धालु बावली के जल से शिवलिंग का अभिषेक करते हैं। लोकश्रुति है कि बनवास काल में पांडव अल्पकाल के लिए यहाँ रहे थें उन्होंने ही इस बावली का निर्माण किया। यह बावली शीतल जल के कारण पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध है।

डंगीसधार की बावली

यह भी एक विशाल और भव्य बावली है। यह बावली बिलावर-चम्बा पैदल मार्ग पर स्थित डंगीस धार स्थान में अवस्थित है। इस बावली का वास्तु विन्यास पहाड़ी है।

इस बावली का निर्माण भड्डु के एक तहसीलदार मियां मोहर सिंह बलौरिया की बेटी ने करवाया। तहसीलदार की बेटी का विवाह जम्मू-कश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह से हुआ तो यह लड़की महारानी बिलौरिया के नाम से प्रसिद्ध हुई। महारानी बलौरिया को अपनी जन्मभूमि से विशेष लगाव था। अतः उन्होंने पलासी में एक तालाब बनवाया। रानी ने यात्रियों के लिए डंगीसधार में एक बावली भी बनवाई जिसे लोग 'रानी की बावली' क नाम से अभिहित करते हैं। कला सौंदर्य की दृष्टि से यह बावली साधारण कोटि की है।

जसधार की बावली

यह बावली गुजरू नगरोटा के निकट तलैन खड्ड के तट के साथ निर्मित है। यह एक दर्शनीय बावली है। इस बावली में जिन शिलाखंडों का प्रयोग हुआ है वे तलैन से लाए गए हैं। इस बावली का निर्माण जम्मू-चम्बा मार्ग पर यात्रियों की सुविधा के लिए किया गया था। अब यह बावली उपेक्षित है।

थड़ा कलवाल की बावली

यह सामान्य कोटि की बावली है। यह बावली गढ़ी का किला से जो सड़क उच्चा-पिण्ड की ओर जाती है उसके मार्ग में बनी है। प्रस्तर शिलाओं से निर्मित यह बावली लोक शैली में है। इस बावली का जल शीतल और निर्मल है।

ठैंडू की बावली

यह बावली जम्मू-चम्बा पैदल मार्ग पर ठैंठू नामक स्थान में निर्मित है। इस का निर्माता अज्ञात है। वास्तु-विन्यास की दृष्टि से यह एक अलंकृत बावली है। इस की पीठिकाएँ दर्शनीय हैं। बावली निर्माण में शिल्पकारों ने अपनी दक्षता का परिचय दिया है।

इस बावली का जल स्वच्छ, निर्मल, सुस्वादु तथा पेट के रोगों को दूर करता है। यह बावली उपेक्षित है, अतः इसके संरक्षण की आवश्यकता है।

सूहे की बावली

यह बावली बिलावर-बसोहली सड़क मार्ग पर स्थित ऐतिहासिक गाँव नगरोटा प्रहेता के निकट स्थित है। इस बावली को 'चमारी की बावली' भी कहते हैं। डोगरी लोक मंत्रों में चमारी और सरैरी का उल्लेख कई बार आया है, यथा : धरत खोहलै, समान खोहलै, नजर खोहलै, शरीर खौह्ले, शस्त्र खोहलै, हथियार खोहलै, लोहने की साने खोहलै, जल खोहलै, घाड खोहलै, गौ, भैंस का सीर खोहलै, न खोहलै, लूना चमारी के कुंड में गलै।

यह लूना चमारी कौन थी जिसके नाम पर यह लोक मंत्र नगरोटा प्रहेता में आज भी प्रचलित है। इस का कोई सन्तोष जनक उतर तो नहीं मिलता। लोक परम्परा के अनुसार वह इस क्षेत्र की बहुत बड़ी तांत्रिक थी। वह लोगों का हित करती थी या अहित, यह भी विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता। किन्तु लोक मानस में उसके जलकुंड को बहुत महत्व दिया गया है।

बाद में लगता है कि लूना चमारी के इस जलकुंड को बावली का रूप दिया गया। यह बावली प्रसिद्ध डोगरी साहित्यकार खजूर सिंह के अनुसार विशाल और भव्य है। यह बावली चार मीटर लम्बी और तीन मीटर के लगभग चौड़ी है। इस बावली का जल स्वच्छ और निर्मल है। इस बावली में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सामंत काल में भी सभी जातियों के लोग इस बावली में पानी भरते थे।

यह बावली एक चमत्कारिक बावली भी है। गाँव के लोग आषाढ़ मास में इस बावली में इक्ट्ठे होकर इसकी सफाई करते हैं। सफाई के बाद वे जल के स्रोत में हाथ डालते हैं। वहाँ उन्हें जिस अन्न के बीच मिलें वे उसी की बुआई करते हैं। लोक विश्वास है कि ऐसा करने से फसल भरपूर होती है।

भविष्य वक्ता बावली (दन्नी की बावली)

इस बावली का उल्लेख शिव दोवलिया ने अपनी पुस्तक 'बसोहली' के पृष्ठ 182 और 183 में सविस्तार किया है। डोगरी साहित्य कार खजूर सिंह ने भी इस बावली की चर्चा 'दन्नी' की बावली के नाम से की है।

शिव दोवलिया के अनुसार बसोहली बिलावर जाने के लिए जो पुराना पैदल मार्ग था वह दन्नी से था। दन्नी बसोहली से 18 कि.मी. दूर पश्चिम-दक्षिण में कर्णवाड़ा के निकट एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव के पीछे और आगे पहले सात बावलियाँ थीं। इन बावलियों का निर्माण 'बसोहली' पुस्तक के अनुसार चम्बा के राजा ऊमीद सिंह ने यात्रियों की सुविधा के लिए करवाया। किन्तु कई विद्वान इन बावलियों

को 'पाल' राजाओं की निर्मिति मानते हैं। 'पाल' पहले बसोहली और बिलावर के शासक थे। पाल राजाओं के बाद इन बावलियों की देखभाल किसी ने नहीं की, अतः इन में छह बावलियाँ टूट-फूट गई और अब एक ही बावली बची है जिसे स्थानीय लोग 'छुआरे दी बाँऽ' अथवा 'दन्नी की बावली' नाम से अभिहित करते हैं।

शिव दोवलिया के शब्दों में - 'इस बावली में ऐसी अदृश्य शक्ति है जिसके द्वारा आने वाले समय की अनुभूति होती है, यह पूरे वर्ष का भविष्य बताती है। इसलिए इसे भविष्य वक्ता बावली कहा गया है।

प्रतिवर्ष आषाढ़ मास के अन्तिम सप्ताह में अथवा धर्मदिवस (धमदेह) के एक दिन पूर्व इस बावली की सफाई की जाती है। दूसरे दिन बावली की पूजा करने के बाद बावली में भोग लगाया जाता है। उसके बाद भंडारा होता है जिसमें सभी जातियों के लोग एक पंक्ति में भोजन करते हैं।

दूसरे दिन गाँव के पुरोहित और बुद्धिजीवी इस बावली में एकत्रित होते हैं। बावली की श्रद्धा-भाव से पूजा करने के बाद सफाई अभियान चलाया जाता है। बावली के निकास को खोलकर बावली का जल बर्तनों में भर दिया जाता है। तदुपरांत गाँव के सभी लोग हाथ जोड़ कर खड़े हो जाते हैं। कुछ समय के उपरान्त पानी में कुछ बीजों के दाने यथा इलायची, जामुन के बीज, अनाज के दाने बर्तन में आ जाते हैं। बर्तन उठा कर सबके सामने रखा जाता है। लोक विश्वास है कि यदि बर्तन में धान, मक्की, कालनी (काला धान), के बीज बर्तन में आएं तो फसल अच्छी होती है। उस वर्ष बरसात भी अच्छी होती है। यदि सफेद धान के बीज बर्तन में आएं तो इससे यह अभिप्राय लिया जाता है कि मक्की की फसल अधिक होगी। यदि काला जामुन निकले तो यह समझा जाता है कि दुर्भिक्ष पड़ेगा। यदि इलायची निकले तो माना जाता है कि गाँव में कोई रोग फैलेगा। यदि डडर घास निकले तो माना जाता है कि बरसात कम होगी।

विशेषताएँ : इस बावली में सभी धर्मों, वर्गों, सम्प्रदायों के लोगों को पानी भरने की अनुमति है। यदि किसी को रोका जाए तो पानी में कीड़े पड़ जाते हैं। यदि पुनः बावली की पूजा की जाए तो पानी निर्मल हो जाता है। यदि कोई प्रसूता इस बावली में वस्त्र धोये तो बावली का जल सूख जाता है। किन्तु पूजा करने पर पुनः जल भर जाता है।

यह बावली पक्की है। इस का प्रवेश द्वार तीन विशाल शिलाखंडों से निर्मित है। यह बावली अट्टारिकाओं से सुशोभित है। अट्टारिकाएँ देव-मूर्तियों से सुसज्जित है। अधिकांश मूर्तियाँ शिव परिवार से सम्बन्धित हैं। कई मूर्तियाँ विकृत भी हैं इन्हें पहचाना नहीं जा सकता। इस बावली का जल गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म होता है। इस बावली के निकट ही एक मंदिर है। जो पर्यटक इस बावली को देखने आते हैं, वे मंदिर के दर्शन भी करते हैं। इस बावली के साथ लोक-आस्था जुड़ी हुई है, अतः गाँव के लोग इसे अति पावन मानते हैं।

बसोहली की बावलियाँ

बसोहली डुग्गर का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और अध्यात्म की दृष्टि से विख्यात नगर है। इस नगर को कला नगरी के नाम से भी अभिहित किया जाता है। चित्रकला के अतिरिक्त तक्षण कला का भी यह नगर एक केन्द्र रहा है। तक्षण कला बसोहली की बावलियों में परिलक्षित है। बसोहली नगर में जो प्रसिद्ध बावलियाँ हैं उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

परगने वाली बावली

यह बावली बसोहली-बनी सड़क के निकट बसोहली से एक किलोमीटर दूर है। इस बावली में जो तक्षित-प्रस्तर शिलाएँ जड़ित हैं, उनमें कई अब भी इस की अट्टारिकाओं में देखी जा सकती हैं। निकट पहाड़ी से निःसृत एक जलधारा इस में गिरती है।

कैंसी की बावली

यह बावली नील कंठ मंदिर से नदी तक जाने वाली पगडंडी के साथ बनी है। स्थानीय निवासी पहले इस बावली में स्नान करते थे,

तदुपरान्त नीलकंठ भगवान का इस बावली के जल से अभिषेक करते थे। इस में जड़ित शिलाखंड स्थानीय थे अब यह बावली झील में डूब गई है।

भट्टों की बावली

बसोहली में भट्ट प्रजाति के ब्राह्मणों के मुहल्ले में भी एक बावली है। किन्तु अब यह जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इस की कुछेक शिलाएँ ही बची हैं।

खड़ातनी वाली बावली

यह बावली रावी नदी के निकट स्थित विश्वेश्वर गुफाओं के निकट स्थित थी। यह कलात्मक प्रस्तर खंडों के कारण बहुत प्रसिद्ध थी। किन्तु अब यह झील में समा गई है।

गोपाल राम की बावली (सूहटा)

यह छोटी सी कच्ची बावली है। किन्तु अब इस का अस्तित्व खतरे में है।

पाधों की बावली (सूहटा)

यह बावली पाधों के मुहल्ले में है। इस का प्रयोग अब स्थानीय लोग नहीं करते।

बड्डा नाड़ा

यह बावली बसोहली में बहुत प्रसिद्ध है। इस में बड़ी ऊँचाई से बावली में जल गिरता है।

चन्न ग्रां की बावली

यह बावली कठुआ के अंतर्गत चन्न ग्राम में अवस्थित है। स्थानीय लोग इस बावली को 'बुआ दी बाँ' नाम से अभिहित करते हैं। इस बावली के साथ ही एक देहरी है। इस देहरी के गर्भगृह के भीतर बुआ की पिण्डी स्थापित है।

यह बावली एक चमत्कारिक स्थल है। डा. ओम गोस्वामी के

शब्दों में जनन-प्रजनन के कष्टों अथवा रोगों से ग्रस्त स्त्रियाँ यहाँ स्नान करने से ठीक होती हैं। कठुआ का लोक मानस इस बावली को तीर्थ के रूप में मान्यता देता है। यहाँ श्रद्धालु मन्नत माँगने आते हैं और लाभ पहुँचने पर फुल्लियाँ, गुड़ियाँ, गेंद और वस्त्र चढ़ाते हैं। देहरे के पुजारी कौशल गोत्रीय गगन्होत्रा ब्राह्मण हैं।

चन्न ग्रां की बावली का सम्बन्ध नारी रोगों के निवारण से जुड़ा है, अतः इस बावली में नारियों का तांता लगा रहता है। जिनके घरों में संतान नहीं होती है, वे अपने घर की महिलाओं को इस बावली में स्नानार्थ लाते हैं। उन का विश्वास है कि ऐसा करने से उनके घर संतान अवश्य होगी। यदि किसी गर्भवती महिला को कोई कष्ट महसूस हो उसे भी इस बावली में लाया जाता है।

डुग्गर में ऐसी बावलियों का जल औषधीय गुणों से युक्त माना जाता है। ऐसी बावलियों के जल का सेवन करने से व्यक्ति स्वस्थ और निरोग रहता है। 'चन्न ग्रां' की यह बावली कठुआ नगरी सड़क के किनारे पर कठुआ से तीन किलोमीटर पश्चिम की ओर स्थित है। जिस स्थान पर यह बावली है, वहाँ कहा जाता है कि किसी समय एक सौ एक बावलियाँ और भी थीं जो भूस्खलन के कारण भूमिगत हो गई।

भूगर्भ शास्त्रियों के अनुसार जिस स्थान पर यह बावली है, वहाँ भूमि के नीचे अपार जल का भण्डार है। अब स्थिति यह है कि इस स्थल को सरकार की ओर से एक पर्यटन-स्थल के रूप में विकसित किया गया है। कई पर्यटक यहाँ भ्रमणार्थ आते हैं।

छतर शाही की बावली

यह बावली कठुआ के अंतर्गत 'नगरी' नामक एक ऐतिहासिक उपनगर में स्थित है। इस बावली के निकट ही सूफी दरवेश छतर शाह की दरगाह भी है। यह बावली 'छतर शाह की बावली' के नाम से पूरे कठुआ जनपद में प्रसिद्ध है।

लोक विश्वास है कि इस बावली में स्नान करने से त्वचा रोग ठीक होता है। अतः इस बावली में स्नान करने के लिए पंजाब, हरियाणा

और हिमाचल प्रदेश से भी बड़ी संख्या में त्वचा रोगी स्नान करने के लिए आते हैं और वे ठीक होकर जाते हैं। यह बावली कठुआ से 12 कि.मी. दूर है। बावली तक पहुँचने के लिए बस सेवा उपलब्ध है।

साध की बावली

यह बावली कठुआ में वृद्धाश्रम के निकट स्थित है। इस बावली के पास ही राम-लीला का मैदान भी है। जिन दिनों राम लीला का आयोजन होता है उन दिनों सांय काल के समय इस बावली में भारी भीड़ होती है। कहते हैं। कि इस बावली का निर्माण एक साधु ने जनहित में करवाया।

अम्मा बाई

यह बावली हटली मोड़ कठुआ के निकट विजत में अवस्थित है यह बावली कूप शैली में निर्मित है। बावली का जल शीतल और सुस्वादु है, अत: स्थानीय लोग इस जल का उपयोग अपने घरों में भी करते हैं।उपरोक्त इन बावलियों के अतिरिक्त कठुआ जनपद में और भी कई बावलियाँ हैं जिन की मान्यता स्थानीय स्तर पर है।

झांडी की बावलियाँ

झांडी जिला कठुआ का एक सांस्कृतिक स्थल है। यहां एक भव्य प्राचीन बाग है। इस बाग को 'झांडी का बाग' नाम से अभिहित किया जाता है। इस बाग में एक प्राचीन जलकुंड है। इस जलकुंड का सम्बन्ध पैराणिक काल से जोड़ा जाता है। कहा जाता है है कि यह वही स्थान है जिसे जमदग्नि का आश्रम कहा जाता था। डुग्गर की लोक मानसिकता इस पावन स्थल से जुड़ी हुई। पर्व त्योहार के अवसर पर सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालु इस जलकुंड में स्नान करने आते हैं।

इस बाग में इस जलकुण्ड के अतिरिक्त कहते हैं कि किसी समय एक सौ एक बावलियाँ थीं किन्तु अब स्थिति यह है कि केवल पाँच-छह बावलियाँ ही द्रष्टव्य हैं, शेष बावलियाँ लुप्त हैं।

शेष बची हुई बावलियों के शिलाखंडों का अध्ययन करने से

लगता है कि ये बावलियाँ बहुत ही प्राचीन हैं। इन की वास्तुकला शेष बावलियों से भिन्न हैं। इन बावलियों के धार्मिक महत्व को देखते हुए इन से छेड़ खानी नहीं की गई है। इन्हें यथावत रूप में रखने का प्रयास किया गया है।

इन बावलियों के निकट ही बाबा सहजनाथ का स्थान है। डुग्गर की झंडेयाल जाति बाबा सहज नाथ को अपना कुल देवता मानती है, अतः इस जाति के लोगों द्वारा यहाँ कई धार्मिक आयोजन भी किए जाते हैं। झांडी में महाराजा गुलाब सिंह के सेनानायक देवी सिंह की हवेलियों के पुरावशेष भी द्रष्टव्य हैं। गर्मियों में बड़ी संख्या में पर्यटक और श्रद्धालु झांडी की बावलियों में स्नान करने आते हैं। वे इस स्थल का प्राकृतिक सौंदर्य देख कर अति प्रसन्न होते हैं।

धन्यवाद

जिला कठुआ की बावलियों के चित्र डॉ. के.सी. शर्मा से सधन्यवाद प्राप्त।

चतुर्थ अध्याय

साम्बा जनपद की बावलियाँ

'सांबा' कई दशकों तक जम्मू जनपद के अंतर्गत एक तहसील थी। सन 2006 मे जम्मू-कश्मीर राज्य का प्रशासनिक दृष्टि से पुर्नगठन हुआ तो साम्बा को एक जनपद (जिला) के रूप में मान्यता दी गई।

भौगोलिक दृष्टि से सांबा को 'कंडी' क्षेत्र माना गया है। इस जनपद में तालाब और कुएँ तो पर्याप्त मात्रा में है किन्तु बावलियों का अभाव है। इस का मुख्य कारण यह है कि इस क्षेत्र में जल भूमि तल में बहुत ही नीचे है।

इस क्षेत्र में जो बावलियां उपलब्ध हैं उनमें अधिकांश नागकाल की हैं, अथवा नाग संस्कृति से सम्बन्धित हैं। माना जाता है कि इस क्षेत्र की अधिकांश बावलियाँ भूमिगत हो चुकी हैं और कई बावलियों के अवशेष भी मिट चुके हैं।

सांबा क्षेत्र में एक स्थान है- 'नागौर' माना जाता है कि यह स्थान कभी नागों का केन्द्र था। इस क्षेत्र के निकट नाग संस्कृति के अवशेष आज भी उपलब्ध हैं जिनमें उल्लेखनीय हैं, राजा बभ्रुवाहन की बावली (बब्बर बाँ) और गंगा माता का मंदिर। इतिहास में उल्लेख मिलता है कि बलवन के पुत्र महमूद ने सन 1294 ई. में साम्बा पर आक्रमण किया तो वहाँ के नाग राजा गौर सेन ने महमूद का सामना बड़ी वीरता से किया। अन्ततः पराजित होने के बाद वह मानसर की ओर भाग गया। साम्बा कई शताब्दियों तक मल्लदेव के वंशजों के अधि कार में रहा। मल्लदेव के वंशज साम्बा में रहने के कारण 'सम्बेयाल' कहलाए। सम्बेयालों की सांबा में वाईस मंडियाँ हैं।

सांबा का उल्लेख मुगल इतिहास में भी मिलता है। डुग्गर के जिन राजाओं ने मुगल-सम्राट अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया उनमें सांबा का राजा भी सम्मिलित था। मुगलों ने सांबा के राजा की सेना को लड़ाई में पराजित करने के बाद सांबा से छह किलोमीटर की दूरी पर एक किला भी बनवाया।

सन 1822 में सांबा का क्षेत्र राजा सुचेत सिंह को एक जागीर के रूप में मिला। सन 1844 ई. में राजा सुचेत सिंह की मृत्यु के बाद सांबा का पूर्ण विलय जम्मू के साथ हुआ। जम्मू-कश्मीर के महाराजा रणबीर सिंह ने अपने शासन काल में सांबा को तहसील का दर्जा दिया। सन 1947 के बाद इसे उप जिला बनाया गया। सन 2006 में सांबा पूर्ण जिला बना।

यह जनपद भौगोलिक दृष्टि से तीन खंडों में विभाजित है और वे हैं : पहाड़ी खंड, कंडी का खंड था मैदानी खंड तथा सीमांत खंड। इस जनपद में मुख्य रूप से बसन्तर नदी तथा बेई नदी प्रवाहमान है। इनके अतिरिक्त और भी कई छोटी बड़ी जलधाराएँ और नाले प्रवाहित हैं।

जलस्रोत

साम्बा जनपद में मुख्य रूप से तीन ही जलस्रोत उपलब्ध हैं और वे हैं : तालाब, कुएँ और बावलियाँ।

साम्बा जनपद में एक सौ से अधिक तालाब हैं। इन में 38 तालाबों का विवरण डुग्गर के तालाब पुस्तक में उपलब्ध है। मुख्य तालाबों में महेश्वर तालाब, दियानी तालाब, चन्दा का तालाब, त्रिलोक तालाब, गढ़ी मण्डी का तालाब, सुनारकी तालाब, गुआला तालाब, राजा का तालाब आदि उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार इस क्षेत्र में कूपों की संख्या भी बीसियों है। मैदानी और कंडी क्षेत्र में शायद ही ऐसा कोई गाँव हो जिसमें कुआं न हो। तालाबों और कूपों में अधिकांश का निर्माण स्थानीय दानवीरों ने लोक कल्याण की भावना से करवाया है।

साम्बा में जो कुएँ अति प्रसिद्ध हैं, उनके नाम हैं : चन्नन खूह, किले वाला खूह, कैह्ली वाला खूह, हिरखे दा खुह, देई वाला खूह, फातो दा खूह, मंदिर वाला खूह, मसीत का खूह, घगवाल का खूह, जतवाल का खूह, सांधी का खूह, रंघवाल का खूह, सनूरा का खूह तथा राजपुरा का खूह आदि।

साम्बा जनपद में जलस्रोत बहुत ही कम हैं, अतः इस क्षेत्र में बावलियाँ भी बहुत कम हैं। जो बावलियाँ इस क्षेत्र में उपलब्ध हैं, उन का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

बभ्रुवाहन की बावली

यह बावली हीरानगर के पश्चिम में सात किलोमीटर, घगवाल से पाँच किलोमीटर और झांडी से अढ़ाई किलोमीटर की दूरी पर ऐतिहासिक नगर राजपुरा के पश्चिम में अनुमानतः दो किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। जिस स्थान पर यह बावली स्थित है, लोक मानस उसे 'त्रेली तीर्थ' के नाम से अभिहित करता है। यह बावली एक छोटी सी पहाड़ी पठार के नीचे अवस्थित है।

बावली आयताकार है। यह अनुमानतः अढ़ाई मीटर लम्बी, डेढ़ मीटर चौड़ी और एक मीटर गहरी है। इस में जड़ित प्रस्तर शिलाएँ स्थानीय बलुआ पत्थर की हैं। ये शिलाएँ देखने में अति प्राचीन लगती हैं और कई शिलाएँ घिस भी गई हैं।

पर्व त्योहार के अवसर पर स्थानीय लोग इस बावली में स्नान करने आते हैं। लोक आस्था है कि इस बावली में स्नान करने और बावली के निकट खेतों की मिट्टी के सेवन करने से त्वचा सम्बन्धी रोगों का निवारण होता है जिन लोगों को त्वचा रोग होता है, वे तो बड़ी संख्या में इस बावली में स्नान करते देखे जा सकते हैं। सन 1947 से पूर्व स्यालकोट, शक्कर गढ़ के लोग भी इस में स्नान करने आते थे।

इस बावली में जल पूरा वर्ष लबालब भरा रहता है और वर्षा ऋतु में तो उछल कर खेतों में बिखर जाता है। आज के इस दौर में भी इस बावली में स्नान करने के लिए महिलाओं की भीड़ देख कर यह अनुमान सहज में ही लगाया जा सकता है कि लोक आस्था इस बावली के साथ जुड़ी हुई है।

इस बावली के निकट पहाड़ी पठार पर एक गंगा माता का मंदिर भी है। श्रद्धालु बावली में स्नान करने के बाद गंगा माता मंदिर भी जाते हैं। जिस स्थान पर यह बावली स्थित है उसके पश्चिम में एक

छोटी सी पहाड़ी पर अंरगल और मटोर नामक दो नगरों के पुरावशेष भी बिखरे पड़े हैं। यह नगर कहा जाता है कि जसरोटिया राजाओं से भी बहुत पहले के हैं। कई विद्वान इन नगरों को नाग कालीन मानते हैं। इसी क्षेत्र में भूमितल से 6 मीटर नीचे एक प्राचीन कुआँ और टूटे-फूटे मिट्टी के बर्तन भी मिले जिन के विषय में कहा जाता है कि ये किसी प्राचीन नगर के पुरावशेष हैं। जिस स्थान में ये पुरावशेष उपलब्ध हैं उसका नाम है 'नागौर' अर्थात् नागों का नगर।

इस बावली को राजा बभ्रुवाहन के नाम से जोड़ा जाता है। लोक परम्परा के अनुसार बभ्रुवाहन नाग कन्या अलूपी का पुत्र था। उसने मानसर झील के निकट 'बभ्रु पुर' बसाया जो बाद में ऐतिहासिक ग्रंथों में बब्बापुर नाम से प्रसिद्ध हुआ। पूरा सांबा का क्षेत्र जो उन दिनों नन्दक के नाम से प्रसिद्ध था नाग वंशीय राजाओं के अधीन था। घगवाल का क्षेत्र भी साम्बा के निकट ही है अतः यह क्षेत्र भी नागों के अधिकार में था। इतिहास में उल्लेख मिलता है कि नन्दक (सांबा) के अन्तिम राजा गौर सेन को बलवन के पुत्र महमूद ने युद्ध में पराजित किया तो वह भाग कर मानसर की ओर चला गया। उसने लगता है कि नागों के नगर 'नागौर' को नष्ट-भ्रष्ट किया होगा जिस कारण यह स्थान उजड़ गया। फिर भी हम यह निःसंकोच कह सकते हैं कि इस बावली का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व शताब्दियों से बना हुआ है।

सुजाना की बावलियाँ

ये बावलियाँ घग्वाल के अन्तर्गत सुजाना नामक स्थान में एक जल धारा के निकट अवस्थित हैं। राजपुरा से भी इन बावलियों तक एक मार्ग जाता है। ये बावलियाँ बभ्रुवाहन (बब्बर बावली) बावली से अनुमानतः 7 कि.मी. दूर हैं।

सुजाना का लोक तीर्थ शताब्दियों से अति प्रसिद्ध है। कहते हैं कि पहले इस तीर्थ को नाग राजाओं ने विकसित किया था। बाद में शल्य कोटला के राजाओं ने इस का विकास किया। जसरोटा के राजाओं ने भी इस स्थान के विकास में समुचित योगदान दिया। किन्तु

भारत-पाकिस्तान के विभाजन के बाद शक्करगढ़ के लोगों ने इस ओर आना छोड़ दिया जिस कारण यह स्थान उपेक्षित रहा। घगवाल के लेखक श्री रोहित शर्मा के अनुसार गत पाँच दशकों से स्थानीय लोगों के प्रयासों से इस स्थान को नवरूप दिया है। उन्होंने इस स्थान में श्मशानघाट के साथ-साथ लोगों के स्नानार्थ बावलियों का निर्माण करवाया है। अब इस क्षेत्र में कुल छह बावलियाँ हैं जिन का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं :

बावली-एक

इस बावली का एक नाम 'पुरोहितों की बावली' है। इस बावली का निर्माण सन 1995 ई. में हरिदत सुपुत्र सूर्य प्रकाश राजपुरा निवासी ने लोक-कल्याण की भावना से करवाया है। इस बावली के निकट ही बदेयाल उपजाति के ब्राह्मणों की कुल देवी का देहरा है।

वदेयाल ब्राह्मण इस बावली के जल को अति पावन मानते हैं। वे इस के जल से अपनी कुलदेवी की पूजा करते हैं। इस के जल को वे अमृत-समान मानते हैं और इस का सेवन धार्मिक संस्कारों को सम्पन्न करते हुए भी करते हैं। यह बावली भव्य और विशाल है। इस में जड़ित शिलाएँ तक्षित हैं।

बावली-दो

यह बावली पहली बावली के अति निकट है। यह एक दर्शनीय एवं कलात्मक बावली है। इस की अट्टारिकाएँ तक्षित शिलाओं से अलंकृत हैं। यह बावली अनुमानत: चार मीटर लम्बी और तीन मीटर चौड़ी है। यह दो मीटर के लगभग गहरी है। इस बावली का निर्माण सन 1960 ई. में श्री हंसराज सढोतरा ने जन कल्याण की भावना से करवाया। इस बावली में सब से बड़ी विशेषता यह है कि प्रियजनों के संस्कार के बाद लोग इस बावली में स्नान करना उतम मानते हैं।

बावली-तीन

यह बावली आकार में सबसे बड़ी बावली है। यह अनुमानत: 5 मीटर लम्बी चार मीटर चौड़ी और अढ़ाई मीटर गहरी है।

इसके निकट ही एक प्राचीन शिव मंदिर है। इस बावली का निर्माण सन 1999 ई. में श्री ध्यान चंद सुपुत्र मेगाराम ने जनहित में करवाया। शवों का दाह संस्कार करने के बाद स्थानीय लोग इस बावली में भी स्नान करते हैं। बावली के साथ जो शिव मंदिर है, वहाँ प्रतिदिन पूजा होती है।

बावली-चार

इस बावली का निर्माण किशोरी लाल सुपुत्र बद्री नाथ ने अपने परिवार के एक मृत किशोर की याद में सन 1999 में करवाया। मृत किशोर अविवाहित था। अत: उसने उस की अशान्त आत्मा की शांति के लिए तांत्रिकों के सुझाव पर इस बावली का निर्माण करवाया।

यह भी एक विशाल बावली है। इस की लम्बाई अनुमानत: तीन मीटर और चौड़ाई अढ़ाई मीटर है। यह लगभग डेढ़ मीटर गहरी है। दाह संस्कार के बाद स्थानीय लोग इस बावली में भी स्नान करते हैं। इस बावली के निकट एक शिव मंदिर भी है। श्रद्धालु इसी बावली के जल से देवी-देवताओं तथा शिवलिंग का अभिषेक भी करते हैं। बावली के निकट एक प्राचीन पीपल का वृक्ष है जो यात्रियों को छाया प्रदान करता है।

बावली-पाँच

इस बावली का निर्माण प्रेम नाथ सुपुत्र देसराज ने लोक कल्याण की भावना से करवाया। किसी कारण निर्माता इस बावली को पूर्ण नहीं कर पाया और इसे आधी-अधूरी छोड़ कर चला गया। फिर भी इस बावली में जल है। प्राय: पशु पक्षी इस के जल का उपयोग करते हैं। कहते हैं कि सुजाना क्षेत्र में और भी कई बावलियाँ थीं जो किसी कारण भूमिगत हो गई है।

सांस्कृतिक दृष्टि से इस क्षेत्र का बहुत ही महत्व है। माना जाता है कि प्राचीन काल में इस पूरे क्षेत्र में नागवंशी राजाओं का राज्य था। उनकी राजधानी नगौर थी। उनके समय की कई बावलियाँ इस क्षेत्र में लुप्त है जिन्हें स्थानीय लोगों द्वारा ढूंढा जा रहा है।

सुजाना की बाविलयाँ भी पहले भूमिगत थीं इन बावलियों को स्थानीय लोगों ने ढूंढ निकाला और इन का पुर्नोद्धार भी किया। सुजाना की बावलियों के निकट ही पौराणिक भिद्‍य (बेई) नदी प्रवाहित है। इस नदी का भी डुग्गर में विशेष महत्व रहा है। जो जल धारा इन बावलियों के निकट प्रवाहमान है, वह भी बेई नदी की ही एक धारा है। अतः इसे इस क्षेत्र के लोग बहुत ही पावन मानते हैं।

इन बावलियों के इर्द-गिर्द जो मंदिर और देहरे हैं उन का महत्व भी इन्हीं बावलियों के कारण है। इन बावलियों के जल का उपयोग स्थानीय लोग धार्मिक कार्यों में भी करते हैं।

रेई की बावली

यह बावली साम्बा जनपद के अंतर्गत उपजिला घगवाल के रेई गाँव में स्थित है। यह स्थान बेई नदी के पश्चिम में राष्ट्रीय राजमार्ग से दो किलोमीटर दूरी पर अवस्थित है। इस गाँव में सज्योति माता रेई के देव स्थान के परिसर में खुदाई में एक प्राचीन बावली के पुरावशेष शिलाओं के रूप में उपलब्ध हुए हैं। इन पुरावशेषों के साथ ही एक प्राकृतिक जलस्रोत है। माना जाता है कि यहाँ जलस्रोत है, वहाँ पहले कोई बावली रही होगी जो भूस्खलन के काण लुप्त हो गई होगी।

जिस स्थान पर यह बावली चिह्नित की गई है, उसे 'गगन' नाम से अभिहित किया गया है। मंगलदास डोगरा के अनुसार जिस स्थान पर यह देव स्थान है, वहाँ पौराणिक काल में एक नगर था जिस का नाम वेदपुरी था। वेदपुरी पर शोध कार्य मंगलदास डोगरा ने दया कृष्ण गर्दिश से प्रेरित हो कर किया। बावली की खोज 90 वर्षीय कृष्ण कुमार दुबे और बड़ाह निवासी काबला सिंह ने लम्बे प्रयास के बाद की। अब 'गगन स्थल' एक लोक तीर्थ के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है। श्रद्धालु इस बावली का स्पर्श लोक आस्था के अनुरूप करते हैं।

राजपुरा की बावली

राजपुरा घगवान से 2 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण दिशा में अवस्थित है। यह एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव में राम मंदिर के

निकट एक कलात्मक बावली है। इस बावली में जड़ित प्रस्तर खंड कुशल शिल्पियों की कृति माने जाते हैं। इस बावली और मंदिर के विषय में कहा जाता है कि इन का निर्माण जम्मू-कश्मीर के महाराजा प्रताप सिंह (1885-1925 ई.) ने जन कल्याणार्थ करवाया।

इस बावली के निकट ही जसरोटिया राजाओं की भी कुछेक निर्मितियाँ हैं जो अब खंडहरों के रूप में द्रष्टव्य हैं।

सनूर की बावलियाँ

सनूर में दो बावलियाँ हैं। एक बावली ठंडे पानी की है और दूसरी बावली गर्म पानी की है। गर्म पानी की बावली में स्नान करने से कई शारीरिक व्याधियाँ दूर होती हैं। वायु रोग का शमन होता है। जिन लोगों को हड्डियों का दर्द हो, वे भी यहाँ स्नान करते हैं। त्वचा-रोगी भी यहाँ स्नान करने आते हैं। ये दोनों बावलियाँ रोगियों को आकर्षित करती हैं, अत: यहाँ भीड़ देखी जाती है।

बाड़ी-खड्ड की बावली

यह बावली बरोड़ी गाँव में अवस्थित है। इस बावली का एक नाम 'राजा की बावली' भी है। स्थानीय समाज सेवक श्री बलकार सिंह के अनुसार यह बावली राजस्थानी शैली में है। इस बावली में जल स्तर तक पहुँचने के लिए नीचे उतरना पड़ता है। नीचे जाने के लिए सोपान-पथ बना है। इस में 26 सोपान निर्मित हैं। इस बावली के निकट ही एक जलाशय भी है जिसे 'शाहें दा तालाब' नाम से अभिहित किया जाता है। उपलब्ध सूचनाओं के अनुसार इस बावली का निर्माण जम्मू-कश्मीर के महाराजा रणबीर सिंह (1856-1985 ई.) के शासन काल में हुआ। इस बावली का जल निर्मल और स्वास्थ्यवर्द्धक है। गाँव के लोग आज भी इस बावली के जल का उपयोग अपने घरों में करते हैं। वार्टर शैड योजना के अंतर्गत इस बावली का पुर्नोद्धार किया गया है।

बड़ी-ब्राह्मणा की बावली

यह बावली जम्मू-पठानकोट राष्ट्रीय मार्ग में स्थित बड़ी-ब्राह्मणा के उतर में अवस्थित मंदिर परिसर में द्रष्टव्य है। यह एक विशाल

बावली है। स्थापत्य की दृष्टि से यह राजस्थानी शैली में निर्मित है। बावली के जल की सतह तक पहुँचने के लिए प्रस्तर-शिलाओं से एक सोपान पथ बना है। बावली में जड़ित सभी प्रस्तर शिलाएँ तक्षित हैं और इन्हें बड़े सलीके से शिल्पकारों ने जड़ा है।

इस बावली के जल से मंदिर में स्थापित मूर्तियों का अभिषेक किया जाता है, अतः इस के जल को अति पावन माना जाता है। इस बावली का एक नाम ध्यान सर या राजा ध्यान सिंह की बावली भी है। राजा ध्यान सिंह जम्मू कश्मीर के महाराजा गुलाब सिंह के कनिष्ठ भाई थे। उन्होंने जन कल्याण की भावना से प्रेरित होकर इस बावली का निर्माण बड़े श्रद्धा-भाव से करवाया।

तलैड़ की बावली

यह बावली पुरमंडल के उतर में अनुमानतः 5 कि.मी. की दूरी पर तलैड़ गाँव में इन्द्रेश्वर मंदिर के निकट अवस्थित है। यह बावली एक कूप आकार में है और इस का जल स्तर कुछ नीचे है। इस बावली के पश्चिम में तीन विचित्र गुफाएँ हैं जो स्थापत्य की दृष्टि से बौद्ध-कालीन लगती हैं।

यह बावली पक्की है और केवल वर्षा ऋतु में ही इस से पानी उछलता है। लोक विश्वास है कि पुरमंडल की देविका इसी बावली से निःसृत है। स्थानीय लोग इसे भगवान शिव का जलकुण्ड मानते हैं। विश्वास किया जाता है कि इस कुंड के जल-स्पर्श से कई प्रकार की व्याधियाँ दूर होती हैं।

मदून की बावली

यह बावली घगवाल के अन्तर्गत मदून गाँव में अवस्थित है। यह पक्की बावली है और शिलाखंडों से निर्मित है। इस बावली की अट्टारिकाएँ देवी-देवताओं, नाग मूर्तियों और लोक नायकों के मौह्‌रों (मूर्तियाँ) से सुसज्जित हैं।

डोगरी लेखक चन्दू भाऊ के अनुसार घगवाल की बावलियों में

जो मूर्तियाँ पहले जड़ित थीं वे अब धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं। अब मूर्ति विहीन ये बावलियाँ अनालंकृत सी लगने लगी हैं। मदून फ्लूरा गाँव के निकट है। इस गाँव में 190 घर हैं और कुल जनसंख्या 1008 है। मदून गाँव के लोग इस बावली के जल का उपयोग आज भी अपने घरों में करते हैं।

पंचम अध्याय

जम्मू जनपद की बावलियाँ

शताब्दियों से जम्मू डुग्गर प्रदेश के इतिहास, संस्कृति और धर्म का मुख्य केन्द्र रहा है। इस का इतिहास पाषाण काल से प्रारम्भ होता है। इस जनपद में कई राजनैतिक उछाल आये। वैदिक संस्कृति से लेकर आधुनिक काल तक इस क्षेत्र में कई सांस्कृतिक आन्दोलन उभरे जिन का प्रभाव जन-साधारण पर भी पड़ा।

इस जनपद में कई प्रजातियों ने बाहर से आकर यहाँ शरण ली। इस से इस भूखंड की संस्कृति में संमिश्रण तो हुआ किन्तु मूल-स्वरूप में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। भौगोलिक दृष्टि से जन्द्राह तहसील को छोड़ कर इस का शेष भाग मैदानी है।

रणबीर सिंह पुरा तथा बिश्नाह तहसीलें पंजाब की ही भाँति सपाट मैदानी हैं किन्तु जम्मू तहसील का कुछ भाग कंडी क्षेत्र में परिगणित है। इस जनपद की अखनूर और खौर तहसीलें भी मैदानी-भाग के अंतर्गत परिगणित हैं। फिर भी अखनूर का उतरी-भाग छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

जम्मू जनपद में मुख्य रूप से दो ही नदियाँ प्रवाहमान हैं और वे हैं : तौषी नदी तथा चन्द्रभागा नदी। तौषी पौराणिक नदी है जबकि चन्द्रभागा वैदिक नदी है। इस नदी का उल्लेख असकिनी नाम से ऋग्वेद के नदी सूक्त में हुआ है। इन के अतिरिक्त इस जनपद में और भी कई छोटी-छोटी उपनदियाँ और जलधाराएँ प्रवाहमान हैं जो इस की भूमि को सींचित करती हैं।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से यह जनपद चर्चा में रहा है। इस जनपद में कई छोटे-छोटे राज्य भी अस्तित्व में आए किन्तु वे जम्मू राज्य के आगे टिक न सके। वे इसी में विलीन हो गए।

जम्मू राज्य को बाईस पहाड़ी राज्यों का सरदार माना जाता रहा है, अतः यह सदियों से राजनीति का केन्द्र रहा है।

जलस्रोत

जम्मू जनपद में जल संसाधान के मुख्य पाँच स्रोत रहे हैं और वे हैं : तालाब, कुएँ, नहरें, बावलियाँ और चश्में। एक समाचार पत्र में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार केवल जम्मू नगर के आसपास किसी समय 95 तालाब थे। पूरे जनपद में तालाबों की संख्या तीन सौ से भी अधिक थी। मुख्य तालाबों में तालाब तिलो, नागबनी का तालाब, रानी का तालाब, बुआ बुटानी का तालाब, दाती का तालाब, बाबा जितो का तालाब, वीरपुर का तालाब, बाटली तालाब, नत्थु का तालाब आदि उल्लेखनीय हैं।

पूरे जम्मू जनपद में कुओं की संख्या भी सैंकड़ों में है। जम्मू जनपद का शायद ही ऐसा कोई गाँव हो जहाँ कुआं न हो। पूरे जनपद में पक्के कुएँ हैं। कई कुओं में निर्माताओं के नाम के शिलापट्ट भी जड़ित हैं। अधिकांश कुओं का निर्माण राजपरिवार से जुड़े लोगों ने करवाया है। कई कुओं का निर्माण धनाढ्य व्यक्तियों ने लोक कल्याण की भावना से करवाया है। इन कुओं में जल का स्तर नीचे है, अतः बाल्टी में रस्सी बांध कर पानी निकालना पड़ता है।

जम्मू जनपद में जल आपूर्ति के लिए तवी तथा चन्द्रभागा नदियों से कई छोटी-बड़ी नहरें भी निकाली गई हैं जिनमें से स्थानीय कृषक अपने खेत सीचिंत करते हैं। इस जनपद में बावलियों की संख्या भी पर्याप्त है। अधिकांश बावलियाँ तूतें दी खूई से जो मार्ग माता वैष्णो देवी के दरबार को जाता था उसके साथ-साथ बनी हैं। ये बावलियाँ धनाढ्य लोगों ने यात्रियों की सुविधा के लिए बनवाई हैं। कुछ बावलियाँ देवस्थानों के निकट भी द्रष्टव्य हैं। ये बावलियाँ प्रायः राजस्थानीय शैली में हैं। जम्मू जनपद का जो क्षेत्र पहाड़ी है वहाँ जो बावलियाँ बनी हैं उनकी शैली स्थानीय है। जम्मू जनपद की प्रमुख बावलियाँ निम्न हैं :

बाई बझालता की बावली

बझालता डुग्गर का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गाँव है। कभी यह गाँव विजयाल राजपूतों की राजधानी रहा। इस गाँव में कई

ऐतिहासिक और पुरातत्व से संबंधित पुरावशेष द्रष्टव्य हैं जिन में एक भव्य और विशाल बावली भी है।

यह बावली राजस्थानी शैली में है। इसे 'कूप बावली' भी कहा जाता है। बावली में नीचे उतरने के लिए सोपान निर्मित हैं। इन सोपानों की संख्या 19 है। इस बावली के प्रथम सोपान पर पाँव रखते ही सामने की दायीं दीवार के बीच चार फुट ऊँचा एक ताकचा बना हुआ है जिस पर पतीदार बेलकारी का काम हुआ है। ताकचे के ठीक ऊपर कुंडली धर नाग की प्रतिमा बनी है। कलाविद डा. ललिता गुप्ता ने इस बावली के वास्तु विन्यास की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि भले ही यह बावली राजस्थान की बावलियों की भाँति उतनी गहरी और बहु मंजिली नहीं है पर वास्तु कला की दृष्टि से काफी कुछ उन से मेल खाती है।

इस बावली का निर्माण उपलब्ध जानकारी के अनुसार वजीर रामदास ने करवाया। वजीर राम दास मूलतः चनूनता (राम नगर) का निवासी था। उसके पिता का नाम संगारा था। वह महाराजा रणवीर सिंह (1856-1855 ई.) के शासन काल में वजीर पद पर नियुक्त था। महाराजा रणवीर सिंह उस की प्रशासनिक सेवा से अति प्रसन्न थे। उन्होंने रामदास को पुरस्कार के रूप में 'बाई-बझालता' का क्षेत्र एक जागीर के रूप में प्रदान किया। वजीर रामदास ने अपने गाँव चनूनता में एक बावली और मंदिर का निर्माण करवाया था। इससे उसे बहुत प्रसिद्धि मिली थी।

वजीर रामदास ने बाई-बझालता का जागीरदार बनने के बाद इस गाँव में यात्रियों की सुविधा के लिए एक विशाल बावली बनवाने का निर्णय लिया। उसने स्थानीय बटैहरों का मार्गदर्शन करने के लिए राजस्थान से भी कुशल शिल्पकार बुलाये। अन्ततः सभी ने मिलकर इस बावली का निर्माण किया।

वजीर रामदास ने इस बावली में एक शिलालेख भी जड़ित करवाया था। जो बताते हैं डोगरी में था। वजीर रामदास द्वारा निर्मित यह बावली कला की दृष्टि से उत्कृष्ट है। इस की एक-एक शिला तक्षित

है। इस की भव्यता और विशालता को देखकर लगता है कि डुग्गर की वास्तुकला डोगरा काल में उच्च शिखर पर रही होगी।

बेईं में इस बावली के निकट ही एक कुआँ है। कुएँ में एक शिलालेख जड़ित है जिसमें सम्वत् 1960 (सन 1903) अंकित है। यह कुआँ महाराजा प्रताप सिंह के शासनकाल के समय निर्मित हुआ।

परगालता की बावली

परगालता में एक बड़ा तालाब, एक कुआँ और एक बावली है। यह बावली लोक शैली में है और यात्रियों की सुविधा के लिए बनवाई गई है। वास्तु कला की दृष्टि से यह सामान्य कोटि की बावली है। इस बावली के जल का उपयोग गाँव के लोग आज भी करते हैं किन्तु जीर्ण-शीर्ण होने के कारण अब इस के पुर्नोद्धार की आवश्यकता है।

सगून की बावलियाँ

सगून की बावलियाँ ऐतिहासिक महत्व की है। बताया जाता है कि इन बावलियों का निर्माण महाराजा रणबीर सिंह की पुत्रियों की सुविधा के लिए किया गया था। राज कुमारियाँ जम्मू से रामकोट सगून के मार्ग से आती जाती थीं। महाराजा ने जम्मू रामकोट मार्ग पर यात्रियों की सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर जलाशय, कुएँ और बावलियाँ पक्की कीं ताकि यात्रियों को मार्ग में जल के कारण असुविधा न हो।

सगून जम्मू से अनुमानतः 40 कि.मी. दूर है। यह स्थान प्रसिद्ध पावन सर सरूईसर के पूर्व में अनुमानतः चार कि.मी. दूर है। यहाँ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पर्यटन से सम्बन्धित कई दर्शनीय स्थान हैं जिनका अवलोकन करने हजारों की संख्या में यात्री आते हैं।

सगून में यात्रियों की सुविधा के लिए निम्न दो बावलियों का निर्माण किया गया है :

1. उरखल की बावली

यह बावली सगून के निकट उरखल गाँव में अवस्थित है। लोक श्रुति के अनुसार इस बावली का निर्माण महाराजा रणवीर सिंह के

आदेश पर स्थानीय सगैनियाँ जागीरदार ने करवाया। सगैनियाँ जागीरदार सगून क्षेत्र के भूपति थे।

2. रानी की बावली

उरखल से दो किलोमीटर आगे मानसर मार्ग में 'चोहा' नामक स्थान में एक अन्य भव्य बावली है। इस बावली को 'रानी की बावली' कहते हैं। यह शिलाखंडों से निर्मित है। इस की पीठिकाएँ अलंकृत हैं।

इन बावलियों के निकट कई मंदिर और ऐतिहासिक एवं पुरातत्व महत्व के पुरावशेष उपलब्ध हैं जिनमें नृसिंह मंदिर शिव मंदिर और रघुनाथ मंदिर उल्लेखनीय हैं। यहाँ एक पहाड़ी पर एक विशाल वृक्ष है जिसके नीचे पाषाण के अस्त्र यथा 'गदा' आदि प्रदर्शित हैं। कहा जाता है कि ये पांडव कालीन हैं।

तूतें दी खुई की बावलियाँ

जम्मू के अंतर्गत जम्मू-सरूईसर सड़क के साथ डुग्गर का एक सांस्कृतिक गाँव है - 'तूतें दी खुई। यह गाँव बहुत पहले पुरमंडल से माता वैष्णो देवी के यात्रियों के लिए एक विश्राम स्थल भी था। इस गाँव में कई पुरावशेष बिखरे पड़े हैं जो इस के महत्व का दिग्दर्शन कराते हैं। इन पुरावशेषों में मंदिर, भवन और बावलियाँ भी हैं। इस स्थल में आज भी जिन बावलियों के निशान मिलते हैं, वे निम्न हैं :

बड़ी बावली

यह बावली राजस्थानी शैली में है। इस का जल स्तर बहुत ही नीचे है, अत: यात्रियों को पानी लेने के लिए नीचे उतरना पड़ता है। नीचे जाने के लिए एक सोपान पथ बना है जिस की सीढ़ियों की संख्या 33 है। कहते हैं कि एक बार इस बावली में एक ऊँट गिर कर मर गया था। तब से यह बावली बहिष्कृत है।

चारजियों की बावली (आचार्यों की बावली)

इस बावली का निर्माण मृत्यु संस्कार से संबंधित पुरोहित वर्ग के किसी व्यक्ति ने जन कल्याण की भावना से करवाया था। अब यह

बावली जीर्ण-शीर्ण अवस्था में देखी जा सकती है।

गुरगानी की बावली

स्थानीय लोग इस बावली को 'गुरगानी बाँ' नाम से अभिहित करते हैं। यह बावली भी अब सूनी पड़ी हुई है। इस की कुछेक शिलाएँ ही बची हैं। यह भी जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है।

पुरानी बावली

इस क्षेत्र में एक और पुरानी बावली के पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। इस का उपयोग स्थानीय लोग नहीं करते हैं। अतः इस स्थान पर एक उदासी सी छाई रहती है।

विधां की बावली

यह बावली 'गूल्लू का बाड़ा' बाग से कुछ ही दूरी पर रघुनाथ मंदिर और शीतला माता मंदिर के निकट अवस्थित है। इस बावली का निर्माण स्थानीय एक विधां नामक ब्राह्मण ने करवाया। अतः इस का नाम विधां की बावली प्रचलन में आया।

यह बावली पहाड़ी शैली में निर्मित है। इस बावली के ललाट-भाग में एक नाग मूर्ति जंड़ित है जो देखने में चमत्कारी दिखाई देती है। बावली की पीठिकाओं में कुछेक मूर्तियाँ भी द्रष्टव्य हैं किन्तु वे अब इतनी विकृत हैं कि उन्हें पहचान पाना भी कठिन है। जिन दिनों पुरमंडल और सरूईसर के मार्ग से माता त्रिकूट देवी के श्रद्धालु पगडंडी के मार्ग से यात्रा करते थे, वे विधां की बावली में भी विश्राम करते थे। इस बावली के जल में बताया जाता है कि फास फोर्स की मात्रा पर्याप्त है। अतः यह बावली त्वचा रोगियों के लिए एक वरदान भी है।

जम्मू तथा पंजाब क्षेत्र के बहुत से त्वचा रोगी इस बावली में स्नान करने से त्वचारोग से मुक्त भी हुए। अतः इस बावली की प्रसिद्धि दूर-दूर तक थी। किन्तु अब जम्मू के लोग इस बावली को भूल गए हैं। इस बावली को संरक्षण प्राप्त न होने के कारण इस का मूलरूप भी विकृत हो चुका है। यह बावली जीर्ण-शीर्ण स्थिति में दिखाई देती है।

इस बावली के निकट कई सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्मारक हैं जिनमें राजा जीत सिंह का मंदिर, शीतला माता मंदिर, मोती मंदिर, सरकारी बाग, बजीर पुन्नु की हवेली इत्यादि। यदि इस बावली स्थल को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाए तो इस का महत्व बढ़ सकता है।

नानकी की बावली

इस बावली को 'नानकी बाँ' के नाम से भी अभिहित किया जाता है। यह बावली नगरोटा में स्थित है। डा. ललित गुप्ता के अनुसार इस बावली की पिछली दीवार पर बाबा भैड़ की जो मूर्ति जड़ित है वह मूर्तिकला की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट है। इस मूर्ति में बाबा भैड़ को मछली पर खड़े दिखाया गया है। उन की वेशभूषा विशुद्ध डोगरा है। उन्होंने पगड़ी अचकन, पाजामा पहना हुआ है।

एक मत यह भी है कि यह मूर्ति जम्मू के राजा हरदेव (सन 1650-1687) की है। राजा हरदेव का नानकी से घनिष्ठ सम्बन्ध था। वह उसकी प्रेयसी थी।

एक लोक श्रुति के अनुसार नानकी एक निर्धन परिवार की कन्या थी। किन्तु वह अति रूपवती थी। जो भी उसकी ओर देखता उस की ओर आकर्षित होता। एक बार जम्मू के राजा हरदेव ने भी उसे देखा। वह उसे देखते ही उस पर मोहित हो गया। उस रात उसे नींद नहीं आई। उसके स्वप्नों में भी नानकी ही छाई रही।

प्राय: ऐसा होता था कि राजा अपने राज्य की जिस यौवना पर मोहित होता था, उसे जैसे तैसे अपने महल में बुला लेता था। राजा हरदेव ने भी अपने मंत्री को भेज कर नानकी को महल में बुला लिया। राज महल में नानकी का पद एक दासी का था किन्तु राजा उसे अपने शयन कक्ष में बुला लेता था।

राजा की रानियों को नानकी और राजा के सम्बन्ध पसंद नहीं थे। उन्होंने एक षडयंत्र रचा। नानकी को खाने में विष दिया। नानकी मर गई। शिकार से राजा महल में लौटा तो उसने नानकी की मृत्यु का

समाचार सुना। उसने भरे आसुओं से उस का संस्कार करवाया। किन्तु मरने के बाद भी नानकी बार-बार राजा के सपनों में आने लगी तो राजा ने तांत्रिकों की सलाह पर उस की जो बावली बनवाई उस का नाम रखा 'नानकी बाँ', इस बावली में राजा हरदेव और नानकी के प्यार की कहानी छुपी हुई है।

नगरोटा की बावली

यह भव्य बावली जम्मू से 12 कि.मी. की दूरी पर कंडोली नगरोटा मंदिर परिसर में अवस्थित है। इस मंदिर और बावली का निर्माण जम्मू कश्मीर के महाराजा प्रताप सिंह (सन 1885-1925) ने लोक कल्याण की भावना से करवाया।

बावली के साथ जो मंदिर है वह भगवान शिव को समर्पित है। जो श्रद्धालु इस मंदिर में देव-अराधना के उद्देश्य से आते हैं, वे इसी बावली के जल से शिवलिंग का जलाभिषेक करते हैं। वास्तु विन्यास की दृष्टि से यह बावली राजस्थानी शैली में है। बावली का जल निचले स्तर पर है। अत: श्रद्धालु सोपान उतर कर जल प्राप्त करते हैं।

इस बावली के निर्माण में शिल्पकारों ने अपने कौशल का प्रदर्शन बखूबी किया है। प्रत्येक शिला तक्षित है। बावली का बाह्य सौंदर्य दर्शनीय है। बावली मंदिर के पार्श्व में खुले स्थान पर निर्मित है, अत: यहाँ एक साथ कई व्यक्ति खड़े हो सकते हैं। इस बावली के साथ ही यात्रियों के ठहरने की भी व्यवस्था है। प्राय: जो यात्री भगवती त्रिकूट देवी के दर्शनार्थ पगडंडी मार्ग से नगरोटा में विश्राम करते हैं वे इसी बावली के निकट अपना डेरा जमाते हैं। इस बावली से अढ़ाई सौ मीटर की दूरी पर डुग्गर की प्रसिद्ध लोक देवी 'कंडोली' का एक मंदिर है। श्रद्धालु उस मंदिर में भी माता की भेंटे गाते हुए जाते हैं :

'पहला दर्शन कोल कंडोली दूजा देवा माई।'

कंडोली देवी के दर्शन करने के बाद यात्री आगे बढ़ते हैं। कोल 'कंडोली' की यह बावली यात्रियों की प्यास बुझाती है, अत: इस बावली का लोक समाज में बड़ा महत्व है।

जगटी की बावली

जगटी गाँव जम्मू के उतर में 12 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है। इस गाँव का पूरा नाम जगदम्बर जगटी है। यह एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव में एक पुरानी बावली है जिसे स्थानीय लोग 'बोला नाग की बावली' के नाम से भी अभिहित करते हैं। इस बावली में जिस नाग देवता की मूर्ति जड़ित है, उसके विषय में कहा जाता है कि वह वर्षा का देवता है, किन्तु बहरा है।

प्राचीन काल से ही यह परम्परा रही है कि जगटी में यदि किसी कारण समय पर वर्षा न होती तो गाँव के लोग ढोल और नगारे बजाते हुए इस बावली में इक्ट्ठे हो जाते। वे जोर-जोर से ढोल, नगारे इत्यादि इस आशय से बजाते कि उन की ध्वनि नाग देवता के कानों में पड़े और वे वर्षा बरसा कर लोगों का कष्ट दूर करें।

कई बार ऐसा भी होता कि लोग दो-तीन दिन तक ढोल पीटते किन्तु वर्षा फिर भी नहीं होती। वे अन्न-जल का परित्याग कर के बावली पर बैठ जाते। अन्ततः वर्षा होती तो वे बोला नाग के जयकारे लगते हर्ष और उल्लास से अपने-अपने घरों में चले जाते।

'जगटी की बावली' वास्तु विन्यास की दृष्टि से 'नाग-काल' की लगती है। इसमें जो शिलाएँ जड़ित हैं वे भी अति पुरानी हैं।

जगटी की इस बावली को स्थानीय सामंतों ने संरक्षण दिया है। यह क्षेत्र मियां दिलीप सिंह की जागीर के अंतर्गत था। मियां दिलीप सिंह को 'राजा' की पदवी प्राप्त थी। वह जम्मू के राजा हरि देव (1650-1685 ई.) का पाँचवा बेटा था। उसने युद्ध में वीरगति प्राप्त की तो उसकी रानियाँ सति हो गई।

जिस स्थान पर उनका संस्कार हुआ उसे 'सतियों का बाग' कहते हैं। यह बाग इस बावली के निकट ही स्थित है। जो पर्यटक जगटी में आते हैं वे बोला नाग की बावली, सतियों का बाग और मियां डीडो का स्मारक भी देखते हैं। मिया डीडो भी जगटी गाँव का था।

पंघाली की बावली

यह बावली जगटी से अनुमानतः तीन कि.मी. की दूरी पर पंघाली गाँव में अवस्थित है। इस बावली का निर्माण माता वैष्णो देवी के यात्रियों की सुविधा के लिए किया गया।

यह बावली राजस्थानी शैली में है। इस बावली का जलस्तर भूमितल से अनुमानातः आठ मीटर नीचे है। भूमितल से जल स्तर तक पहुँचने के लिए सोपन पथ बने हुए हैं। यात्रियों की सुविधा के लिए सोपान पथ में छोटे छोटे चौक इस उद्देश्य से बनाये गए हैं कि यात्री सुविधा से आ जा सकें। इस बावली का निर्माण लाहौर के एक प्रसिद्ध वैद्य सूरज मल क्षत्री ने विक्रमी सम्वत् 1966 अर्थात् सन 1910 ई. में जन-कल्याण की भावना से करवाया।

वैद्य सूरज मल ने जम्मू-कश्मीर के महाराजा प्रताप सिंह (1885-1925 ई.) के शासनकाल में इस गाँव में चालीस कनाल भूमि क्रय की। वैद्य ने इस भूमि में एक माता वैष्णो देवी का मंदिर और एक सराय का निर्माण करवाया। मंदिर और सराय के लिए उसने इस बावली का निर्माण भी करवाया।

सन 1920 तक प्रायः माता वैष्णो देवी के यात्री पंघाली मार्ग से ही कटड़ा पहुँचते थे। वे इस बावली के जल का उपयोग भी करते थे। किन्तु जब दोमेल-कटड़ा सड़क का निर्माण हुआ तो यात्री पहले टाँगों पर और बाद में वाहनों से कटड़ा पहुँचने लगे। इससे यह मार्ग उपेक्षित रहा। पंघाली गाँव में स्थित यह बावली, मंदिर और सराय आज भी द्रष्टव्य हैं किन्तु असंरक्षित और असुरक्षित हैं। इन्हें संरक्षण की आवश्यकता है।

शिवा की बावलियाँ

पंघाली से तीन किलोमीटर के दूरी पर शिवा गाँव है। यह गाँव भी माता वैष्णो देवी के पुराने पगडंडी मार्ग पर स्थित है। जो यात्री पंघाली से प्रस्थान करते थे वे एक घंटे के पश्चात् शिवा गाँव में पहुँचते थे। शिवा गाँव में दो बावलियाँ हैं एक बावली नाला के एक ओर है और

दूसरी बावली दूसरी ओर है। इन का विवरण इस प्रकार है :

बावली-एक

यह बावली राजस्थानी शैली में है। इस बावली में जल स्तर भूमितल से सात मीटर नीचे है। बावली में सोपान बने हैं। यात्री सोपान उतर कर पानी ग्रहण करते हैं।

यह बावली आकार में पंघाली बावली से छोटी है किन्तु कला स्थापत्थ्य की दृष्टि से पंघाली बावली की शैली पर ही निर्मित है। इस बावली के निकट ही यात्रियों की सुविधा के लिए एक सराय भी निर्मित है। इस बावली और सराय का निर्माण डा. अशोक जेरथ के अनुसार राजवंश की एक महिला ने करवाया। यह बावली अनुमानतः डेढ़ सौ वर्ष पुरानी है।

बावली-दो

यह बावली शिबा नाला के दूसरी ओर निर्मित है। वास्तु कला की दृष्टि से यह बावली भी राजस्थानी शैली में है। इस बावली में जल स्तर भूमि तल से दस मीटर गहराई में है।

डा. अशोक जेरथ ने इस बावली का उल्लेख अपनी पुस्तक फोक आर्ट आफ डुग्गर में करते हुए लिखा है कि यह बावली खेतों के बीच में है। माता वैष्णो देवी के यात्री बहुत पहले जब इस मार्ग से गुजरते थे तो वे इस बावली के जल का उपयोग भी करते थे। अब भी यह बावली मूल स्थिति में है।

ठंडा पानी

शिवा से माता वैष्णो देवी के यात्री ठंडा पानी स्थान पर पहुँचते थे। यह स्थान शिवा से अनुमानतः दो कि.मी. दूर है। ठंडा पानी में भी कभी एक बावली हुआ करती थी जो अब भूमिगत है। किन्तु जिस स्थान पर वह बावली थी उस का नाम आज भी ठंडा पानी है।

स्थानीय लोगों के अनुसार गर्मियों में इस बावली में बड़ी भीड़ होती थी। लोग मटके लेकर आते थे और उन्हें भर कर ले जाते थे। फिर

ऐसा हुआ कि बावली का पानी धीरे-धीरे सूखता गया। किसानों ने इसे भरा और खेत में मिला लिया। अब इस बावली का नाम लोकाख्यानों में तो है किन्तु बावली का अस्तित्व मिट गया है।

द्राबी की बावली

ठंडा पानी स्थल का एक नाम द्राबी भी है। द्राबी में भी राजस्थानी शैली में निर्मित एक बावली के पुरावशेष उपलब्ध हैं। सन 1990 में डा. अशोक जेरथ ने इस बावली का अवलोकन किया तो यह बावली अपने मूल रूप में तो थी किन्तु भूमितल में इस का जल सूख गया था। यह बावली सूनी-सूनी सी लग रही थी।

गोंडला की बावली

द्राबी ने डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर गोंडला गाँव के निकट एक और बावली के पुरावशेष उपलब्ध हैं। यह बावली भी माता वैष्णो देवी मार्ग पर स्थित है। वास्तु-कला की दृष्टि से यह राजस्थानी शैली में है। यह बावली एक बड़े वृक्ष के नीचे निर्मित है। डा. जेरथ के अनुसार यह तीस फुट लम्बी और सात फुट चौड़ी है। इन बावली में नीचे उतरने के लिए जो सोपाना बने हैं उन की संख्या सोलह है। इस मार्ग से अब कोई यात्री नहीं आता है। अतः यह बावली और स्थान सूना-सूना सा लगता है।

बमियाल की बावली

गोंडला से बमियाल अनुमानतः तीन कि.म. दूर है। यह स्थान भी माता वैष्णो देवी के पगडंडी मार्ग में एक पड़ाव रहा है। यहाँ एक ठाकुरद्वारा, एक शिव मंदिर और एक बावली है। यह बावली राजस्थानी शैली में है। इस बावली में नीचे उतरने के लिए जो सोपान बने हैं उन की संख्या चौदह है। वास्तु कला की दृष्टि से यह बावली शिबा की बावली की अनुकृति लगती है। इस बावली का निर्माण किसी दासी ने करवाया जिसे स्थानीय लोग वजीरनी कहते हैं। प्रायः जो महिलाएँ रानी की सलाहकार होती थीं उन्हें वजीरनी कहा जाता है। अब यह बावली उजड़ी-उजड़ी सी लगती है।

उर्लियाँ की बावली

यह स्थान बमियाल से लगभग दो कि.मी. दूर है। इसे 'ओली' नाम से भी अभिहित किया जाता है। यह स्थान श्री माता वैष्णो देवी के पुराने पगडंडी मार्ग पर अवस्थित है।

उर्लियाँ में एक महालक्ष्मी का मंदिर, एक सराय और एक भव्य बावली है। वास्तु कला की दृष्टि से यह बावली राजस्थानी शैली में है। इस बावली की लम्बाई 35 फुट और चौड़ाई 8 फुट है। इस बावली में नीचे उतरने के लिए 17 सोपान बने हैं।

डा. अशोक जेरथ के अनुसार यह बावली भी शिबा बावली जैसी लगती है। इस बावली के निकट जो शक्ति मंदिर है उसमें एक शिलालेख जड़ित है जिसके अनुसार मंदिर परिसर का विकास वि. सम्वत् 1922 (सन 1866) में ज्वाला सहाय के पुत्र अमीं चंद के पौत्र दीवान बिशन दास ने करवाया। अतः यह माना जाता सकता है कि यह बावली डेढ़ सौ वर्ष से भी अधिक पुरानी है।

झिड़ी की बावली

यह बावली जम्मू तहसील के अन्तर्गत काह्ना चक्क गाँव के निकट डुग्गर के सांस्कृतिक स्थल झिड़ी के झाड़ में अवस्थित है। वास्तु कला की दृष्टि से यह राजस्थानी शैली में है, अतः इसे 'कूप बावली' के नाम से भी अभिहित किया जाता है। माना जाता है कि इस बावली का निर्माण पंजाब के किसी श्रद्धालु ने लोक कल्याण की भावना से करवाया। किसी कारण यह बावली लुप्त हो गई और लोग भी इसे भूल गए। डा. ओम गोस्वामी के एक लेख के अनुसार झिड़ी के मंदिर में मोहन दास वैरागी नाम का एक साधु रहता था। उसे स्वप्न में बुआ कौड़ी ने दर्शन दिए और कहा कि उन के खिलौने बावली में दबे पड़े हैं। वह उन्हें नीचे से निकाले।

साधु मोहनदास वैरागी ने काह्ना चक्क के मियां खेल सिंह के सहयोग से एक निश्चित स्थान की खुदाई करवाई तो वहाँ एक भूमिगत बावली से बुआ कौड़ी के खिलौने मिल गए।

बाबा मोहनदास वैरागी और मियां खेल सिंह ने लुप्त बावली को तो ढूंढ लिया किन्तु बावली के पुर्नोद्धार के लिए उन्हें बाबा जितो और बुआ कौड़ी के श्रद्धालुओं से सहयोग लेना पड़ा। अन्ततः सब ने मिलकर इस बावली को नवरूप दिया।

झिड़ी के मेले के अवसर पर हजारों श्रद्धालु इस बावली के दर्शन करने भी आते हैं। वे इस बावली के जल को अति पावन मानते हैं। वे बोतलों में पानी भर कर घर ले जाते हैं। लोक आस्था है कि इस बावली के जल के छीटें यदि घर के कमरों में फैंके जाए तो घर पवित्र हो जाता है।

सुकेतर की बावली

यह बावली तहसील जम्मू के अंतर्गत सुकेतर गाँव में जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय राजमार्ग के निकट स्थित है। यह स्थान कटड़ा-दोमेल के भी निकट है। सुकेतर में यात्रियों के लिए भोजनालय भी खुले हैं। जो यात्री सुकेतर में रूकते हैं, वे इस बावली का अवलोकन भी करते हैं।

डा. ललिता गुप्ता के अनुसार यह बावली वास्तु कला की दृष्टि से राजस्थानी शैली में है। इस बावली में भी नीचे उतरने के लिए सोपान पथ बना है। इस बावली की परिगणना कूप बावली के रूप में की जा सकती है। इस बावली का निर्माण किसी दानी व्यक्ति ने जनहित में किया है। अब इस बावली का पानी बहुत कम लोग प्रयोग करते हैं। अतः यह बावली सुनेपन का अहसास कराती है।

सुनाड़ा की बावली

यह विशाल बावली झज्झर कोटली के पूर्व उतर में एक किलोमीटर की दूरी पर सुनाड़ा नामक स्थान पर स्थित है। यहाँ एक जलस्रोत है। जलस्रोत का पानी एक लम्बी नाली द्वारा सिंह मुख से तीन मीटर की ऊँचाई से बावली में गिरता है। बावली एक लघु तालाब जैसी लगती है।

स्थानीय लोग इस बावली में स्नानार्थ प्रतिदिन आते हैं। बावली के ऊपरी भाग में एक मंदिर भी बना है। स्थानीय लोग स्नान करने के

पश्चात् पूजा-अर्चना के लिए मंदिर जाते हैं। वास्तु शैली की दृष्टि से यह बावली अलग कोटि की है। इस बावली से जो जल बाहर उछलता है किसान उससे अपने खेतों में सिंचाई करते हैं।

पाली की बावली

पाली तहसील जन्द्राह के अंतर्गत एक पहाड़ी गाँव है। यह गाँव काह पोता से तीन किलोमीटर दूरी पर स्थित है। गाँव जाने के लिए नाला पार करना पड़ता है।

इस गाँव के उतर में एक छोटी पहाड़ी की तलहटी में पाली की बावली स्थित है। यह बावली दक्षिणोन्मुखी है। इसके तीनों ओर अट्टारिकाएँ बनी हैं। पूर्वी भाग में स्थानीय लोग नायकों, देवी-देवताओं की कुछेक मूर्तियाँ (मोहरे) द्रष्टव्य हैं।

बावली की पूर्वी दीवार के मध्य में एक शिलालेख जड़ित है जिस की लिपि डोगरी वर्ण माला से मिलती जुलती है। यह शिलालेख अभी तक पढ़ा नहीं जा सका। लगता है कि इस में बावली के निर्माण तथा सम्वत् का अंकन होगा। यह बावली काह्पोता और चनास-टिक्करी पैदल मार्ग पर स्थित है। लगता है इसका निर्माण यात्रियों की जल समस्या को ध्यान में रख कर किया गया है। बावली के आसपास कुछ पुरावशेष भी बिखरे पड़े हैं शायद यह धर्मशाला या विश्रामालय के होंगे। इस स्थान का परिदृश्य अति सुन्दर है।

बड़सू की बावली

यह बावली कराई धार के नीचे स्थित है। इस के उतर-दक्षिण में झज्झर नाला प्रवाहित है। बड़सू एक नाग देवता का नाम है, अत: यह बावली भी बड़सू नाग देवता के नाम समर्पित है।

बावली की मुख्य अट्टारिका में नाग देवता की एक सुन्दर मूर्ति भी जड़ित है। इसके अतिरिक्त लोक-देवी देवताओं की मूर्तियाँ भी प्रदर्शित हैं। लोटा निवासी कृष्ण सिंह समसाल के अनुसार मुख्य बावली के आसपास और भी कई बावलियाँ हैं। मुख्य बावली के निकट ही समसालों की मंडी है। इस मंडी में राजा का महल था। बावली की एक

ओर बावा हुस का देहरा है। यह समसालों का का कुल देवता है। बड़सू की बावली से देवता का अभिषेक किया जाता है।

जन्द्राह की बावलियाँ

जन्द्राह डुग्गर का एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक उप नगर है। जम्मू से इस की दूरी अनुमानत: 42 किलामीटर है। इस उप नगर के दक्षिण में एक साथ छोटी-बड़ी तीन बावलियाँ हैं। इन बावलियों को देवक नाम से अभिहित किया जाता है।

इन बावलियों का आकार गोल जल कुंड जैसा है। इनको छोटी दीवारों से तीन ओर से घेरा गया है। एक ओर से प्रवेश के लिए स्थान खुला रखा गया है। इन बावलियों का जल निर्मल, स्वच्छ और पीने में स्वादिष्ट है। यह जल रोग नाशक भी है। पर्वों पर जन्द्राह क्षेत्र के लोग इन बावलियों में स्नानार्थ आते हैं। एक बावली पुरुषों के लिए और दूसरी बावली महिलाओं के लिए है। स्थानीय लोग इन बावलियों को अति पावन मानते हैं। इन बावलियों के जल से देवी-देवताओं का अभिषेक करते हैं।

इन बावलियों के निकट ही दो मंदिर हैं। एक मंदिर अति प्राचीन है। इस का स्थापत्य बबौर मंदिरों से मिलता जुलता है। यह मंदिर प्रस्तर शिलाओं से निर्मित है। इस की ऊँचाई अनुमानत: तीन मीटर है। दूसरा मंदिर अर्वाचीन है और यह जम्मू कश्मीर के महाराजा रणबीर सिंह (1856-1885 ई.) की निर्मित है। ये दोनों मंदिर भगवान शिव को समर्पित हैं। श्रद्धालु इन बावलियों में स्नान करने के पश्चात् मंदिर में जलाभिषेक के लिए जाते हैं।

डन्साल की बावली

डन्साल एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव में बस अड्डा के निकट एक प्राचीन बावली के शिलाखंड बिखरे पड़े हैं। कहते हैं कि इसी बावली के निकट ही मियां मोटा का महल था। महल के लिए जल की व्यवस्था इसी बावली से की गई थी। महल उजड़े के बाद बावली भी उपेक्षित रही जिस कारण इस की अट्टारिकाएँ ध्वस्त हो गई। अब

कुछ शिलाएँ ही बावली के निकट बिखरी पड़ी हैं।

जखाना की बावली

यह बावली राष्ट्रीय राजपथ मार्ग के पूर्व में स्थित रामसर तालाब के उतर-पश्चिमी कोने में निर्मित है। यह स्थान जम्मू से अनुमानत: तीस किलोमीटर और नन्दनी से केवल पाँच किलोमीटर दूर है। जखाना की बावली वास्तु शिल्प की दृष्टि से एक अलग ही शैली में निर्मित है। इस बावली के तीनों ओर ऊँची दीवारगिर हैं। इस का केवल पूर्वी भाग खुला है। इस बावली से जो जल बाहर की ओर उछलता है वह राम सर तालाब में गिरता है। इस बावली और रामसर का निर्माण जड़ित शिलालेख के अनुसार रानी पठानियां (राजा राम सिंह की पत्नी) ने 11 अप्रैल 1912 में करवा कर संकल्पित किया।

नन्दिनी की बावली

यह छोटी सी बावली पुराने नन्दनी टनल के निकट स्थित है। यह बावली आकार में एक जल कुंड जैसी है। इसे पक्का किया गया है। जब नन्दनी मार्ग से गाड़ियाँ चलती थीं तो कुछ समय के लिए वाहक अपने-अपने वाहनों को नन्दनी टनल के निकट रोकते थे तो सवारियाँ गाड़ी से उतर कर दुकानों में चाय-पानी पीती थीं और इस बावली के शीतल जल से अपनी प्यास बुझाती थीं। किन्तु अब यहाँ सिवाय चरवाहों के कोई नहीं आता। इस बावली से जो जल उछलता है वह नालियों में बह जाता है।

शवा की बावली

यह बावली कोट भलवाल उप विकास खंड के अंतर्गत शवा नामक एक सांस्कृतिक स्थल में स्थित है। यह स्थान जम्मू से तीस किलोमीटर तथा अम्ब गरोटा से 14 कि.मी. दूर है। शवा गाँव तक वाहन सेवा उपलब्ध है। सड़क से यह बावली तीन सौ मीटर दूर है। इस बावली तक पहुँचने के लिए सड़क से उतरना पड़ता है। यह बावली वास्तु कला कला की दृष्टि से पहाड़ी शैली में है इस बावली में जड़ित प्रस्तर शिलाएँ काले पत्थर की हैं। यह पत्थर गाँव के आसपास उपलब्ध

नहीं हैं। माना जाता है कि बावली के निर्माता ने यह पत्थर बाहर से मंगवाया है।

इस बावली की अट्टारिका में एक शिलालेख जड़ित है जो संस्कृत, टाकरी और फारसी लिपि में है। यह शिलालेख विकृत है, अतः पढ़ा नहीं जा सका। किन्तु माना जाता है कि यह बावली और शिलालेख जम्मू-कश्मीर के महाराजा रणवीर सिंह (1856-1885 ई) के समय के हैं। इस बावली के निकट एक शिव मंदिर है और वट वृक्ष है। यहाँ से एक संकरा मार्ग माता नेहाल की गुफा की ओर जाता है। माता के श्रद्धालु जब माता के दर्शनार्थ यहाँ आते हैं तो वे इसी बावली के जल का उपयोग पूजा अर्चना के लिए करते हैं।

एक लोक श्रुति के अनुसार शवा की बावली और माता नेहाल के स्थान का विकास राजन गाँव के एक सम्पन्न नन्दा परिवार ने किया। बताया जाता है कि इसी परिवार के एक व्यक्ति को सब से पहले गुफा में माता के दर्शन हुए। बाद में देवी प्रेरणा से इस परिवार ने माता का मार्ग और बावली का निर्माण किया।

लेखक केवल कृष्ण शाकिर के अनुसार इस श्रद्धा स्थल के साथ लोक आस्था सदियों से जुड़ी हुई है।

डोरी डगेर की बावली

यह बावली तहसील अखनूर के अंतर्गत डोरी डगेर में अवस्थित है। यह स्थान अखनूर से 35 कि.मी. की दूरी पर उतर-पश्चिम दिशा में अवस्थित है। इस गाँव में एक प्राचीन बावली के पुरावशेष उपलब्ध हैं। डोगरी के प्रख्यात लेखक ध्यान सिंह के अनुसार उन्होंने अपने सेवा काल में इस बावली के निकट स्काऊट शिविर भी लगाया था। तब भी उन्होंने इस बावली को भग्नावस्था में ही देखा था।

इस बावली का सांस्कृतिक महत्व यह है कि इस बावली के निकट ही बलिदानी बाबा महीमल्ल का देवस्थान है। बाबा मही मल्ल 15वीं शताब्दी के महान बलिदानी पुरुष थे। उन्होंने सत्य, न्याय और स्वाभिमान के लिए अपना बलिदान दिया।

बाबा मही मल्ल के कई श्रद्धालु इस बावली के जल से अपने कुल देवता की मूर्ति का जलाभिषेक करते हैं। इस बावली का जल निर्मल और स्वास्थ्यवर्द्धक है। प्राय: कई श्रद्धालु इस का जल बोतलों अथवा अन्य बर्तनों में भर कर घर ले जाते हैं और अपने कक्षों में इस आशय से छिड़कते हैं कि उन से दुरात्माएँ भाग जाएं।

जिस स्थान पर यह बावली स्थित है उसका प्राकृतिक परिदृश्य चिताकर्षक है। बावली तक पहुँचने के लिए वाहन सेवा उपलब्ध है। देवस्थान पर छह-छह मास के अन्तराल के बाद वर्ष में दो बार जब लोकोत्सव आयोजित होता है तो श्रद्धालु इस बावली का अवलोकन भी करते हैं।

षष्टम अध्याय

रियासी जनपद की बावलियाँ

रियासी जनपद का अधिकांश भूखंड शिवालिक पर्वत श्रंखला के अंतर्गत परिगणित है। किन्तु इस का कुछ भाग तहसील अरनास और म्हौर के अंतर्गत आता है वह लघु हिमालय का एक हिस्सा है।

रियासी के पश्चिम में पौनी तहसील है। यह तहसील भी रियासी, कटड़ा की भाँति छोटी-छोटी पहाड़ियों से घिरी हुई है। इन पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में 'धार' नाम से अभिहित किया जाता है। रियासी जनपद को यह श्रेय प्राप्त है कि विश्व प्रसिद्ध त्रिक कुंभ (अर्थात् त्रिककूद) पर्वत इसी जनपद में समाहित है। ऋग्वेद के अनुसार इन्द्र-वृत्र युद्ध इसी त्रिक कुंभ पर्वत के निकट हुआ था जिसमें इन्द्र ने वृत्र को युद्ध में पराजित किया था।

अथर्ववेद में भी त्रिककुद पर्वत का उल्लेख हुआ है। इसी प्रकार शतपथ ब्राह्मण में भी इस पर्वत का उल्लेख मिलता है। अब इसी पर्वत को त्रिकूट पर्वत के नाम से अभिहित किया जाता है। इस पर्वत की अधिष्ठात्री देवी भगवती त्रिकूट का पावन स्थान भी इसी जनपद में है।

यह भूखंड वैदिक काल से विख्यात है, अतः इस भूखंड का इतिहास और संस्कृति अति प्राचीन है। कभी यह क्षेत्र देवताओं के अधिकार में तो कभी यक्षों के अधिकार में रहा। राज दर्शनी में भानु-यक्ष का नाम मिलता है जो इस क्षेत्र के आदि शासकों में था। इस क्षेत्र पर नागों, खसों, डामरों आदि का भी अधिकार रहा। वे भी इस क्षेत्र के अधिपति रहे। किन्तु मुस्लम काल में मेवाड़ के राणा रसपाल ने इस क्षेत्र पर अधिकार करके एक नया राज्य स्थापित किया जिस की राजधानी रियासी बनाई गई। बाद में जम्मू के राजा हरिदेव (1656-92) ने रियासी पर अधिकार करके इसे जम्मू राज्य का एक भाग बनाया। रियासी का इतिहास बनता और बिगड़ता रहा। अन्त में यह जम्मू-कश्मीर राज्य का एक भाग बना। इस नये राज्य की संस्थापना रियासी के ही

जागीरदार राजा गुलाब सिंह ने सन 1846 ई. में अमृतसर संधि के अंतर्गत की।

जलस्रोत

रियासी पर्वतीय भूखंड है। इस भूभाग में कई नदियाँ और जलधाराएँ प्रवाहित हैं जिनमें चन्द्रभागा, अंजसी, अंस, चरणावती, भूमिका, झज्झर, डगाला, गैहर, खैरल, तरसु, कौरी, करखान, खिमती, भरोनी, कोठरी, नरोड़ दराबी, इक्खनी, परसाल, नरलू, पलासू तथा बठोई आदि उल्लेखनीय हैं।

इस पूरे जनपद में और विशेषरूप से पर्वतीय क्षेत्र में स्थान-स्थान पर जल के चश्में उपलब्ध हैं। ये चश्में स्थानीय लोगों की जल पूर्ति करते हैं। इनके अतिरिक्त जलकुंड और जलप्रपात भी हैं। इस जनपद में कुओं की संख्या बहुत ही कम है।

रियासी जनपद में जल-आपूर्ति का एक मुख्य साधन बावलियाँ हैं। ये बावलियाँ गाँवों के भीतर अथवा निकट इस ढंग से निर्मित की गई हैं कि अधिक से अधिक लोग इन से लाभान्वित हो सकें। रियासी जनपद की बावलियों में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अलंकृत मूर्तियों से सुसज्जित हैं। प्राय: प्रत्येक बावली में नाग की मूर्ति जड़ित है। कई बावलियों में लोक नायकों की मूर्तियाँ अस्त्रों-शस्त्रों के साथ तक्षित हैं। इन मूर्तियों में स्थानीय भीम देवता की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं।

रियासी जनपद में वैसे तो बावलियों की संख्या सैंकड़ों में है किन्तु प्रमुख बावलियाँ निम्न हैं :

भूमिका-हन्साली की बावलियाँ

ये बावलियाँ कटड़ा वैष्णो देवी के पूर्व-उतर में कटड़ा बस अड्डा से दो किलोमीटर की दूरी पर हन्साली गाँव में प्रवाहित भूमिका जलधारा के तटों के निकट अवस्थित है। इन बावलियों की संख्या पाँच है। जिन दिनों माता वैष्णो देवी की यात्रा भूमिका से प्रारम्भ होती थी, उन दिनों इन बावलियों का विशेष महत्व था। प्राय: तीर्थ यात्री भूमिका और इन बावलियों के जल मे स्नान करने के बाद ही यात्रा के लिए प्रस्थान

करते थे। अब ये बावलियाँ उपेक्षा के कारण जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। इन बावलियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

बावली-एक

यह बावली इस स्थल की सबसे आकर्षक और कलात्मक बावली है। इस बावली को अब एक जलकुंड का रूप दिया गया है। यह जलकुंड सप्त कोणीय है। इस बावली में नलेहा की ओर स्थित छोटी पहाड़ी से निःसृत एक पतली जलधारा गिरती है। इससे यह जलकुंड सदैव पानी से लबालब भरा रहता है। जल कुंड से जो जल बाहर की ओर उछलता है, वह एक धारा के रूप में भूमिका में गिरता है। यह जलकुंड अनुमानत: 5 मीटर घेरे में है। इस की गहराई एक मीटर है। इस के उतर में एक छोटी अट्टारिका है। इस अट्टारिका में स्थानीय कुल देवता एवं लोक देवी-देवताओं की 11 मूर्तियाँ संस्थापित हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में मोहरे कहते हैं। स्थानीय लोक इस बावली को अति पावन मानते हैं। इसके जल से देवी-देवताओं का अभिषेक भी करते हैं।

बावली-दो

स्थापत्य की दृष्टि से यह बावली भी बावली-एक की ही अनुकृति लगती है। इस बावली में एक विशेषता यह है कि इस की पूर्वी अट्टारिका के साथ ही एक छोटा सा मंदिर निर्मित है जिसके गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है। इस बावली की एक धारा इसी मंदिर की ओर प्रवाहित है।

बावली की दूसरी ओर एक विशाल चट्टान अवस्थित है जिसे सन्दूरी रंग से आवेष्टित किया गया है। बावली से चट्टान तक जाने के लिए एक छोटा सा पुल भी बना है। कहा जाता है कि इसी चट्टान पर आसन जमा कर एक वैष्णव-भक्त बैठा करते थे और जो मंदिर है वह उनकी समाधि है।

बावली एक और बावली-दो को अब टाइलों से आवेष्टित किया गया है। इससे इन दोनों के बाह्य सौंदर्य में अभिवृद्धि हुई है।

बावली-तीन

यह बावली आकार में आयताकार है। इस में जड़ित प्रस्तर-शिलाएँ स्थानीय भूमिका जलधारा के तट से ही लाई गई हैं। यह बावली भूमितल से नीचे है। बावली के जल की सतह तक पहुँचने के लिए ग्यारह सोपान निर्मित हैं। इस बावली में एक पतली जलधारा पहाड़ी से गिरती है।

इस की पूर्वी अट्टारिका अलंकृत है। इस में देवी-देवताओं की सात मूर्तियाँ संस्थापित हैं जो स्थानीय बलुआ पत्थर पर निर्मित हैं। इनमें पहली मूर्ति एक लोक नायक की है। वह अश्वारूढ है। उसके हाथ में गदा है। यह मूर्ति अनुमानतः आधा मीटर ऊँची है। दूसरी मूर्ति किसी लोक देवी की है। उसे पालकी में बैठा दिखाया गया है। पालकी को दो कुम्हार उठाए हुए हैं। मूर्ति चार भी किसी लोक नायक की है और मूर्ति पाँच किसी लोक नायिका की है। छटी मूर्ति भी किसी लोक देवी की है। सातवीं मूर्ति नाग देवता की है जो कुंडली मार कर बैठे हैं। उनका फण पूर्वोन्मुख है। यह मूर्ति अनुमानतः आधा मीटर x आधा मीटर में है। इस पर जो तक्षण कार्य हुआ है, वह सराहनीय है। इस बावली के ऊपरी भाग में लोकदेवी और लोकदेवता की देहरियाँ हैं। यह बावली प्राचीन लगती है। लोक आस्था इस बावली के साथ जुड़ी है।

बावली-चार

यह बावली आयताकार है। इस की लम्बाई अनुमानतः डेढ़ मीटर और चौड़ाई एक मीटर है। इस की अट्टारिका उतरोन्मुखी है। अट्टारिका पर पहले मूर्तियें थीं किन्तु अब हटा ली गई हैं। इस बावली के सन्मुख भूमिका मंदिर है जो शिखर शैली में है। अब इस बावली को टाइलों से सुसज्जित किया गया है।

बावली-पाँच

यह वर्गाकार बावली है। इस की प्रत्येक भुजा अनुमानतः डेढ़ मीटर है। इस में पहाड़ी से निःसृत एक जलधारा गिरती है। इस से यह बावली जल से भरी रहती है। अब इस अट्टारिका को चित्रों से अलंकृत

किया गया है। इस बावली के निकट ही एक छोटा मंदिर है जिसके प्रांगण में 13 प्रस्तर मूर्तियाँ संस्थापित हैं। इन मूर्तियों में दो माताओं को शिशुओं के साथ अंकित किया गया है।

इस बावली के निकट एक कुटिया है। कुटिया के बाहर एक लेख है जिसमें लिखा है कि माता वैष्णो देवी ने श्रीधर को यहीं दर्शन दिए थे। इस के साथ ही एक कक्ष है जिसमें लिखा है - पंडित श्रीधर जी सुलोचना माता के साथ। इस के निकट ही भूमिका मंदिर है। ये बावलियाँ एक देव स्थान पर अवस्थित हैं। अत: श्रद्धालुओं के लिए ये आस्था और श्रद्धा का केन्द्र हैं।

तनसू की बावलियाँ

ये बावलियाँ कटड़ा वैष्णो देवी के पूर्वोत्तर में सात किलोमीटर पैंथल गाँव से 2 कि.मी. उतर में कुनेआं गाँव की 'बन्नी' में अवस्थित हैं। ये संख्या में तीन हैं। पंचायत विभाग द्वारा इन का पुर्नोद्धार किया गया है, अत: अब ये अपने मूलरूप में नहीं है। इन बावलियों का संक्षिप्त विवरण निम्न है:

बड़ी बावली

यह बावली घने जामुन के वृक्षों के मध्य में अवस्थित है। यह वर्गाकार बावली है जिस की प्रत्येक भुजा चार मीटर के लगभग है। यह बावली डेढ़ मीटर के लगभग गहरी है। इस बावली का पुर्नोद्धार सन 1940 के लगभग ऋषि कुटीर के निर्म्बांक संत बाबा जगन्नाथ दास ने करवाया था। उससे पहले किसी अज्ञात राजा ने सन 1785 के लगभग इस बावली को अनगढ़ प्रस्तर शिलाओं से बनवाया था। स्वयं राजा मंडी में रहता था जो इन बावलियों से दो किलोमीटर दूर एक पहाड़ी टीले पर स्थित थी।

सन 1980 के लगभग पंचायत विभाग ने इस बावली पर छत डाला। इस से बड़ा लाभ जो पहुँचा वह यह था कि इस के अन्दर वृक्षों के पते गिरना बंद हो गए। इस का जल निर्मल हो गया। किन्तु छत डालने से एक हानि यह हुई कि इस का मूल स्वरूप ही बदल गया।

इस की अट्टारिकाओं को तोड़ा गया और उन में संस्थापित मूर्तियों को हटा कर निकट स्थित एक कक्ष में रखा गया। इन मूर्तियों में एक मूर्ति तनसू-नाग देवता की है। यह मूर्ति बहुत ही विलक्षण और अद्‌भुत है। इस में नाग-देवता को कुंडली के रूप में दिखाया गया है। इस के अतिरिक्त एक प्राचीन मूर्ति एक अश्वारोही की है। कुनेआ के कन्याल प्रजाति के लोगों का कहना है कि यह मूर्ति उन के पूर्वज की है। ये दोनों मूर्तियाँ पाँच सौ वर्षों से भी पुरानी लगती हैं। कक्ष में एक मूर्ति महात्मा तुलसी दास जी की और दूसरी बाबा नन्द की है। ये दोनों संगमरमर की हैं। इन्हें सन 2008 के लगभग स्थापित किया गया है।

छोटी-बावली

बड़ी बावली के पश्चिम में छोटी बावली है। यह बावली जलकुंड जैसी लगती है। इसका घेरा चार मीटर के लगभग है। प्राय: वस्त्र धोने, पशुओं की प्यास बुझाने के लिए इसके जल का उपयोग किया जाता रहा है। यह बावली दो मीटर के लगभग गहरी है। यह अट्टारिकाओं से रहित है, अत: इस में कला सौंदर्य का अभाव है।

पाधों की बावली

इस स्थान में सब से बड़ी बावली पाधों की बावली है। इस बावली में पहली बावली का जल एक जल-प्रपात बनाता हुआ गिरता था। कभी यह बावली पानी से लबालब भरी रहती थी किन्तु आज स्थिति यह है कि इस में बारिश का ही पानी ठहरता है। यह बावली अट्टारिकाओं से अलंकृत है। इस की अट्टारिकाओं में शिलाओं पर तक्षित कई पुरानी मूर्तियाँ रखी गई थीं, किन्तु बावली की मुरम्मत करते समय उन्हें वहाँ से हटा लिया गया।

इस बावली का मुख-भाग दक्षिण की ओर है। बावली के शिखर-भाग में पाधा परिवार के कुल देवता का स्थान है। इस स्थान को हेमराज पाधा ने सन 2012 में विकसित किया और यहाँ शिखर शैली का मंदिर बनवाया। यह मंदिर भी दक्षिणोन्मुख है।

पाधों के अतिरिक्त इस क्षेत्र में सात-आठ छोटी बड़ी अन्य

जातियों की देहरियाँ हैं जिनकी पूजा लोक आस्था के आधार पर की जाती है। सन 1935 से पहले पैंथल गाँव के लोग घरों के लिए पानी भरने इन्हीं बावलियाँ में आते थे किन्तु बाद में नल लगने के बाद उन्होंने यहाँ आना छोड़ दिया।

इन बावलियों का जल औषधीय गुणों से युक्त है। प्राय: प्रसूताओं को इसी बावली का जल पिलाया जाता था। अब ये बावलियाँ तो हैं किन्तु यहाँ बहुत कम लोग आते हैं। ज्येष्ठ मास की पूर्णमाशी के दिन इस बावली के निकट नाग देवता के सम्मान में एक भव्य लोकोत्सव आयोजित होता है जिसे देवता की जातर कहते हैं। उस दिन इस बावली के निकट पशु बलि देने की प्रथा रही है।

बन्नी की इन बावलियों को लोकतीर्थ के रूप में लोक समाज में मान्यता प्राप्त है।

चम्बा की बावलियाँ

चम्बा त्रिकूट पर्वत श्रंखला के अंतर्गत पहाड़ी ढलान के नीचे बसा एक अति सुन्दर, रमणीक और चिताकर्षक पर्यटन स्थल है। यह स्थान कटड़ा के पूर्व में तीन कि.मी. और पैंथल के पश्चिम में चार किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है।

यहाँ एक सुन्दर बाग है जिस कारण इस स्थान का एक नाम 'चम्बे दा बाग' भी प्रसिद्ध है। इसी बाग में तीन सुन्दर निर्मल जल की बावलियाँ हैं जिन का जल पीने में बहुत ही सुस्वादु है। इन बावलियों में एक छोटी बावली मुगलों के मुहल्ले में है। इस बावली के अब पुरावशेष ही बचे हैं। इन पुरावशेषों का अवलोकन करने से लगता है कि इस का निर्माण कुशल कारीगिरों ने किया होगा। मुगलों के मुहल्ले के साथ ही गुज्जरों के भी कई घर हैं। वे भी कभी इस बावली के जल का उपयोग करते थे। अब इस बावली के निकट एक जलधारा जल-प्रपात बनती हुई कटड़ा-पैंथल सड़क पर प्रबल वेग से गिरती है। इस जलधारा का उपयोग इन दिनों कटड़ा के होटलों में होता है। पानी के टैंक दर्जनों की संख्या में यहाँ खड़े होते हैं, वे यहीं जल भरते हैं

और कटड़ा ले जाते हैं।

यह जल धारा जिस स्थान से निःसृत है, कहते हैं कि वहाँ भी पहले एक बावली थी। भूस्खलन के कारण वह भूमि के भीतर लुप्त हो गई किन्तु उसके अवशेष आज भी उपलब्ध हैं।

पक्की बावली

यह बावली पैंथल कटड़ा सड़क से मुख्य-जलधारा से पच्चास मीटर नीचे है। यह बावली नीचे से लेकर ऊपर तक पक्की है। यह तीन ओर से अट्टारिकाओं से सुसज्जित है। दक्षिणोन्मुख इस बावली के मुख-भाग से जो जलधारा बहती है उसका उपयोग स्थानीय किसान भूमि सींचने के लिए करते हैं। यह बावली चारों ओर से घने छायादार वृक्षों से आवेष्टित है, अतः यह स्थान ग्रीष्म ऋतु में बहुत ही सुखद लगता है। स्थानीय लोग इस की अट्टारिकाओं में बैठ कर विश्राम करते हैं।

स्थापत्थ्य की दृष्टि से यह बावली वर्गाकार है। यह दस मीटर के घेरे में है। इस की अट्टारिकाएँ अन्दर और बाहर से पक्की हैं, अतः स्थानीय लोग इसे पक्की बावली के नाम से भी अभिहित करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में कई विद्यालयों के छात्र यहाँ पिकनिक मनाने आते हैं। यहाँ खेलते हैं और नाचते कूदते हैं।

तीसरी बावली दुकानों के नीचे है। यहाँ मुगल मुहल्ला से जो जलधारा वेग से नीचे आती है, वह यहीं गिरती है। जिस जगह यह गिरती है वहाँ जलकुंड आकार की एक बावली है। इस बावली में भी लोक नहाते हैं। इस का जल भी शीतल है। इस का उपयोग भूमि सींचने के लिए किया जाता है। इस स्थान का सांस्कृतिक महत्व भी है। इन बावलियों के निकट ही पीर बाबा का मजार है। पीर बाबा का पूरा नाम पीर वली शाह था। वे पंजाब से यहाँ घोड़े पर सवार होकर आए थे। उन्होंने यहाँ एक चम्बा का वृक्ष लगाया था जिस कारण इस स्थान का नाम 'चम्बा' ही प्रसिद्ध हो गया।

इस बावलियों के निकट पीर बाबा की दरगाह में ज्येष्ठ मास की पूर्णमाशी के शुभ अवसर पर त्रिदिवसीय एक सांस्कृतिक उत्सव का

आयोजन होता है। उसमें सैंकड़ों की संख्या में लोग भाग लेते हैं। लोग इन बावलियों में स्नान भी करते हैं और इन का जल बर्तन अथवा बोतलों में भर कर ले जाते हैं। लोक आस्था है कि यह जल पीने से कई शारीरिक रोग दूर होते हैं।

कड़केयाल की बावली

यह बावली माता वैष्णो देवी विश्व विद्यालय और माता वैष्णो देवी नारायणा हस्पताल के अति निकट स्थित है। पूर्वोन्मुखी यह बावली वर्गाकार है और इसकी प्रत्येक भुजा अनुमानतः अढ़ाई मीटर है। बावली के निचले भाग में छोटी-छोटी प्रस्तर निर्मित अट्टारिकाएँ हैं जिन के कारण इस बावली का जल स्वच्छ रहता है।

इस बावली का जल ऊपरी सतह तक रहता है, अतः जल ग्रहण करने में कोई कठिनाई नहीं आती है। बावली के तीनों ओर जो छोटी-छोटी पीठिकाएँ बनी हैं, वे देव मूर्तियों से सुसज्जित हैं। ये मूर्तियें स्थानीय एवं पौराणिक देवी-देवताओं की हैं, अतः स्थानीय लोग स्नान करने के पश्चात् इस बावली के जल से मूर्तियों का जलाभिषेक करते हैं। जिस स्थान पर यह बावली निर्मित है, वहाँ कई छायादार वृक्ष हैं जो इस बावली को आच्छादित रखते हैं, इससे यह बावली का जल शीतल रहता है।

बावली के निकट ही एक पीपल के वृक्ष के नीचे तीन समाधियाँ द्रष्टव्य हैं जो वास्तुकला की दृष्टि से शेष समाधियों से भिन्न हैं। इन समाधियों में जो अलंकृत शिलाखंड जोड़े गए हैं वे बौद्ध समाधियों जैसे लगते हैं। इस बावली के निकट ही एक पुराने दुर्ग के अवशेष भी मिलते हैं। इस स्थान को गढ़ी नाम से अभिहित किया जाता है। सामंत काल में इस क्षेत्र के शासक ममोच और सढोच थे। कहा जाता है कि इस बावली का निर्माण उन्होंने ही किया है।

छछरें की बावली

यह भव्य बावली कटड़ा वैष्णो देवी के उतर में द्रूड़ ग्राम में अवस्थित है। यह गाँव कटड़ा वैष्णो देवी से पाँच किलोमीटर तथा चरण

पादुका से दो कि.मी. दूर पूर्व-उतर में है। इस गाँव में एक विशाल बावली है जिसे 'महारानी की बावली' के नाम से अभिहित किया जाता है।

बताया जाता है कि इसी गाँव में जम्मू-कश्मीर के महाराजा गुलाब सिंह के गुरू महात्मा मंगल गिरि जी महाराज रहते थे। उनकी इच्छानुसार महाराजा ने उन के लिए एक गुफा बनवाई जिसे छछरें की गुफा कहते हैं। यह गुफा मानव निर्मित है और इस में तपस्या करने की व्यवस्था की गई है।

गुफा से थोड़ी दूर पर गाँव के निकट एक बावली है जो तक्षित शिला खंडों से निर्मित है। इस बावली का वास्तु कला सौंदर्य अवलोकनीय है। यह बावली पानी से लबालब भरी रहती है। स्थानीय लोगों के अनुसार इस बावली का निर्माण महाराजा गुलाब सिंह की महारानी (सम्भवतः रानी रक्वाल) ने अपने परम गुरू तथा गाँव के लोगों की सुविधा के लिए करवाया।

एक मत यह भी है कि महाराजा रणजीत देव के पोते दलेल देव की हत्या अखनूर के एक सामंत ने राजा वृजराज देव के उकसावे पर चरण पादुका के इसी क्षेत्र में की थी। महाराजा गुलाबसिंह ने राजा दलेल देव की आत्मा की शाँति के लिए अपनी रानी को प्रेरित करके यह बावली बनवाई। यह बावली अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है अतः इस का पुर्नोद्धार किया जाना चाहिए।

भरथल की बावली

भरथल की भव्य और विशाल कलात्मक बावली जिला रियासी तहसील कटड़ा के अंतर्गत अग्हार जितो गाँव के पूर्वोत्तर में तीन किलोमीटर की दूरी पर एक पहाड़ी ढलान में अवस्थित है। पहले इस बावली को देखने पर्यटक पैदल जाते थे किन्तु अब सड़क बन जाने के कारण वहाँ वाहन से भी पहुँचा जा सकता है।

यह बावली वर्गाकार है। इस की लम्बाई अनुमानतः चार मीटर और चौड़ाई भी चार मीटर है। यह डेढ़ मीटर के लगभग गहरी है। इस

की अट्टारिकाएँ भव्य और विशाल हैं। दक्षिणोन्मुखी इस बावली का जल निर्मल और पीने में स्वादिष्ट है। इसकी उतरी अट्टारिका में कई मूर्तियाँ संस्थापित हैं। इनमें पौराणिक देवी-देवताओं, स्थानीय लोक देवी-देवताओं की मूर्तियों के अतिरिक्त लोक नायकों की मूर्तियाँ भी क्रम से सजाई गई हैं। इन सब के मध्य में जल देवता नाग की बड़ी मूर्ति है।

स्थानीय लोक नायकों में एक मूर्ति पुरो द्रोड़ा की है और दूसरी मूर्ति मानकू द्रोड़ा की है। एक मूर्ति दायीं ओर है तो दूसरी मूर्ति बायीं ओर है। दोनों को उतिष्ठावस्था में दिखाया गया है। दोनों के हाथों में बन्दूकें हैं। कहा जाता है कि इस कलात्मक बावली का निर्माण पुरो द्रौड़ा ने करवाया था। उसने बावली के निकट ही एक मंदिर भी बनवाया जो मूल-अवस्था में आज भी अपने स्थान पर द्रष्टव्य है।

पुरो और मानकू दोनों सगे भाई थे। वे महाराजा गुलाब सिंह की सेवा में थे। मानकू म्हौर क्षेत्र का और पुरो बिम्हाग क्षेत्र का प्रशासक था। मानकू की विद्रोहियों ने थोरू पट्टियाँ में हत्या कर दी। पुरो ने अपने भाई की स्मृति में अपने ही गाँव में यह बावली और मंदिर बनवाया। भरथल के लोग इस बावली की अट्टारिकाओं में बैठ कर दोनों भाईयों की वीरता के गीत गाते हैं।

सूहला की बावली

यह बावली रियासी के अंतर्गत अंजसी नदी के पूर्वी तट पर नदी से अनुमानतः सौ मीटर दूर एक छोटी सी पहाड़ी की ढलान के नीचे स्थित है। आकार में यह बावली वर्गाकार लगती है और इस की प्रत्येक भुजा अनुमानतः चार मीटर है। यह बावली डेढ़ मीटर के लगभग गहरी है।

सुन्दर अट्टारिकाओं से सुसज्जित यह बावली प्रस्तर कला का एक अद्भुत नमूना है। शिल्पकारों ने बड़े परिश्रम से शिलाओं को तक्षित करके इस में जड़ा है। इस बावली का जल गर्मियों में अति शीतल और पीने में सुस्वादु होता है। अतः गर्मियों में इस बावली में एक मेला सा

लगा रहता है। इस बावली के कारण सूलह रियासी का एक पर्यटन स्थल बन गया है। सरकार की ओर से भी यहाँ एक रम्य वाटिका विकसित की गई है। इस वाटिका के चारों ओर पथ बने हैं जिन के दोनों ओर सुगन्धित पुष्पों की महक पर्यटकों को समोहित करती है।

वाटिका के भीतर एक छोटा सा जलाशय भी बना है जिसमें पर्यटक नहाते हैं, तैरते हैं और प्रसन्नता से इस के जल से अठखेलियाँ करते हैं। यह बावली नाग देवता के नाम समर्पित है। इस बावली के मुख-भाग में अन्य मूर्तियों के साथ नाग-मूर्ति भी जड़ित है। इस बावली के साथ एक छोटी सी गुफा भी है। पश्चिमोन्मुख इस गुफा के भीतर एक छोटा सा कक्ष बना है। कक्ष में साधक के बैठने का स्थान है। इसके आगे शिवलिंग है जिस का इसी बावली के जल से अभिषेक किया जाता है। माना जाता है कि यह गुफा और बावली नाग कालीन है। वैसे भी इस स्थान पर नाग संस्कृति के कई चिह्न उपलब्ध हैं। रियासी का लोक समाज इस बावली को अति पावन मानता है। यहाँ कई लोकोत्सव भी आयोजित होते हैं जिसमें स्थानीय लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

बजीर की बावली

यह बावली रियासी से अनुमानतः दो किलोमीटर दूरी पर दसानु-रियासी मार्ग के मध्य में स्थित है, इस का स्थापत्य स्थानीय पहाड़ी शैली से प्रभावित है। इस की अट्टारिकाओं में बड़े-बड़े शिलाखंड जड़ित हैं। जिनमें देव मूर्तियाँ सुसज्जित हैं। यह एक भव्य और विशाल बावली है। यह छह मीटर के घेरे में परिसीमित है। इस बावली का जल सुस्वादु है। दसानु गाँव के लोग अंजी पार करके जब रियासी आते थे तो वे आधी ढक्की चढ़कर इस बावली में विश्राम करते और इस का पानी पी कर प्यास बुझाते थे। लोक परम्परा के अनुसार इस बावली का निर्माण किसी वजीर ने लोक कल्याण की भावना से करवाया। वह वजीर कौन था?

डोगरी लेखक राज राही के अनुसार वह वजीर जोरावर सिंह ही हो सकता है। मूल स्थिति में यह बावली आज भी द्रष्टव्य है।

दसानु की बावली

यह बावली रियासी में प्रवाहित अंजी नदी के पार बसे एक प्राचीन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गाँव दसानु में स्थित है।

आकार में यह बावली वजीर की बावली से तो छोटी है किन्तु लोक आस्था से जुड़ी होने के कारण इस का महत्व अत्याधिक है। इस बावली के निकट ही क्षेत्रीय देवता अर्जुन का देव स्थान है। देवस्थान में इसी बावली का जल पहले प्रयोग में लाया जाता था, अत: इस का महत्व भी अत्याधिक रहा है।

अर्जुन और भीम दोनों सगे भाई थे। भीम देव की रियासी क्षेत्र में कई मंडियाँ हैं किन्तु अर्जुन देव की मंडी दसानु में है। इसी बावली के निकट स्थानीय लोग लोकोत्सव आयोजित करते हैं और बावली के जल से अपना शरीर पवित्र करते हैं।

त्रैंथा की बावली

यह बावली रियासी बस अड्डा के पूर्व-उतर में एक कि.मी. की दूरी पर ऐतिहासिक गाँव त्रैंथा में अवस्थित है। बावली सड़क से दस मीटर नीचे घने वृक्षों के बीच में है। दक्षिणोन्मुख इस बावली में दो मीटर ऊँचाई से सिंहमुख से जो जलधारा गिरती है, उसका परिदृश्य अति आकर्षक है। यह बावली अनुमानत: छह मीटर के परिवेश में है। इसकी अट्टारिकाएँ ऊँची किन्तु सादी हैं। स्थानीय मास्टर संसार सिंह के अनुसार यह बावली रसियाल राजाओं द्वारा निर्मित है। समय-समय पर इस बावली का पुर्नोद्धार होता रहा है।

रणसू की बावली

यह बावली रियासी जनपद की तहसील पौनी के अंतर्गत रणसू स्थान पर स्थित है। इस बावली तक पहुँचने के लिए वाहन सेवा उपलब्ध है। यह बावली जम्मू के उतर पश्चिम में 122 कि.मी. दूर है। कटड़ा वैष्णो देवी से भी जो यात्री शिव खोड़ी के दर्शनार्थ आते हैं। वे पहले रणसू से ही इस बावली के जल से पवित्र होकर आगे बढ़ते हैं। इस बावली का जल स्वच्छ और निर्मल है। इस के निकट ही एक

जलधारा भी प्रवाहित है। यह बावली बताया जाता है कि अति प्राचीन है। तीर्थ स्थल के निकट स्थित होने के कारण इस का समय-समय पर पुर्नोद्धार होता रहा है। यह बावली अनुमानतः पाँच मीटर घेरे में है।

गोदर की बावली

यह प्राचीन बावली डोगरी लेखक गोपाल कृष्ण कोमल के अनुसार बहुत ही पुरानी है। इस बावली में जो मूर्ति जड़ित हैं, वह अद्‌भुत और विलक्षण हैं। इस बावली के निकट ही दुग्धाधारी आश्रम है। यह बावली पौनी से 30 कि.मी. पांवला के निकट है। इस बावली के निकट जो आश्रम है, वहाँ प्रति संक्रांति को हवन-यज्ञ आयोजित होता है। यह बावली पुराने पौनी-पांवना मार्ग पर यात्रियों के लिए निर्मित की गई थी।

ठंडा पानी की बावली

यह बावली रियासी जनपद की पौनी तहसील के अंतर्गत रियासी से अनुमानतः 16 कि.मी. पौनी-रियासी सड़क के उतर में स्थित ठंडा पानी नामक गाँव में अवस्थित है।

जिन स्थल पर यह बावली स्थित है, उसका अवलोकन करने से लगता है कि वहाँ कभी कोई नगर अथवा नगरोटा रहा होगा। बावली के निकट ही एक प्राचीन मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में अब भी खड़ा है। किन्तु मंदिर की मूर्तियाँ लुप्त हैं। लगता है श्रद्धालु कभी बावली में स्नान करने के पश्चात् पूजा अर्चना के लिए मंदिर जाते होंगे।

अब जिस रूप में यह बावली द्रष्टव्य है, उससे लगता है कि पंचायत-विभाग ने इस का पुर्नोद्धार किया है। इससे इस के प्राचीन चिह्न सिमेंट के पलस्तर से छुप गए हैं। आयताकार इस बावली का जल आज भी पीने में स्वादिष्ट और शीतल है। ग्रीष्म ऋतु में भी इस बावली का पानी हिमवत ठंडा रहता है, सम्भवतः इसी कारण इस बावली का नाम 'ठंडा-पानी' प्रचलन में आया। वैसे भी यह बावली छायादार वृक्षों के नीचे है।

इस बावली के आगे-पीछे गुज्जरों के कई घर हैं। वे आज भी

इसी बावली के जल का उपयोग अपने घरों में करते हैं। कई बार यात्री भी यहाँ केवल इसका जल सेवन करने आते हैं। बावली के निकट गुज्जरों के मुहल्ले में पुराने महल के पुरावशेष आज भी मिलते हैं। इनका अनुशीलन करने से लगता है कि यह स्थान कभी बहुत ही चर्चा में रहा होगा।

गणेश दास भटैहड़ा रचित राज दर्शनी में यह उल्लेख मिलता है कि पहली-दूसरी सदी में इस क्षेत्र में यक्षों का राज्य था। भानुयक्ष पौनी का तब राजा था। सम्भव है कि यह स्थान कभी उसी की राजधानी रहा हो। वैसे लोक परम्परा इस स्थान का सम्बन्ध शाकल के राजा साल वाहन से भी जोड़ती है। ठंडा पानी गाँव की पहाड़ी पर आज भी एक प्राचीन दुर्ग के अवशेष बिखरे पड़े हैं। सम्भव है वहाँ भी कोई राजा रहता हो। वहाँ पानी नहीं है। जो लोग ऊपर जाते हैं वे इसी बावली का जल साथ ले जाते हैं।

चिन्काह की बावली

यह बावली रियासी जनपद के अंतर्गत तहसील अरनास की पंचायत चिन्काह में अवस्थित है। यह शिलाखंडों से निर्मित निर्मल जल की बावली है। इस बावली के विषय में कई दन्त कथाएँ प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार एक राजा ने इस बावली में कुछ समय के लिए विश्राम किया। उसके सेवक ने थैले से गिलास निकाला। गिलास में जल भरा और पीने के लिए राजा को दिया। राजा ने जल पिया और गिलास वहीं रहने दिया। राजा विश्राम करने के बाद अपने गंतव्य स्थान की ओर बढ़ा। राजा के जाने के बाद उस बावली में पानी भरने एक ब्राह्मण आया। ब्राह्मण ने वहाँ एक चाँदी का गिलास देखा। उसे पता चला कि यह गिलास राजा का है। राजा बावली में गिलास छोड कर चला गया है। ब्राह्मण ने उस गिलास को उठाया और वह दौड़ता हुआ राजा के काफिले की ओर बढ़ा। वह शीघ्र ही राजा के निकट पहुँच गया।

ब्राह्मण ने राजा को गिलास दिखाते हुए कहा – 'महाराज आप का गिलास बावली में रह गया था। मैं आप को सौंपने आया हूँ। राजा

ने क्रोध से ब्राह्मण की ओर देखते हुए पूछा - 'तुम ने किस हाथ से गिलास उठाया।' ब्राह्मण ने अपना दायां हाथ दिखाते हुए कहा - 'महाराज इस हाथ से उठाया।' राजा ने अपने एक सैनिक से कहा - 'इस का दायां हाथ काट दो।'

ब्राह्मण चिल्लाया - महाराज मैंने ऐसा क्या अपराध किया है? आप मेरा हाथ क्यों कटवा रहे हो।'

'तुमने हमारा गिलास क्यों उठाया। हमने यह देखने के लिए गिलास रखा था कि हमारे राज्य में कोई चोरी तो नहीं करता। तुमने गिलास वहीं रहने देना था। हम उसे वापसी पर उठाते'

सिपाही ने राजा के आदेश पर ब्राह्मण का हाथ काट दिया। तब से यह बावली अभिशप्त है।

थोरू की बावली

यह गाँव अरनास तहसील की थोरू पंचायत के अंतर्गत एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव में ऐतिहासिक महत्व के दो स्थल हैं।

1. मियां मानकु की समाधि तथा बावली

मियां मानकु की समाधि और बावली आसपास ही हैं। कहते हैं कि इन दोनों समाधि और बावली का निर्माण महाराजा गुलाब सिंह के आदेश पर किया गया।

स्थानीय इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि महाराजा गुलाब सिंह के एक सामंत मियां मानकु का वध स्थानीय विद्रोहियों ने जब थोरू पट्टियाँ में किया तो इस घटना ने महाराजा गुलाब सिंह को विचलित कर दिया। उन्होंने मियां मानकु की स्मृति में इस स्थान में एक समाधि बनवाई और उसके निकट बावली का निर्माण भी कराया। समाधि में एक शिलालेख डोगरी-भाषा और लिपि में जड़ित है।

यह शिलालेख अपठित है। इस बावली का उपयोग गाँव के लोग आज भी करते हैं।

सलाल की बावलियाँ

सलाल रियासी से आठ किलोमीटर की दूरी पर उतर दिशा की ओर स्थित एक अति सुन्दर पर्वतीय गाँव है। यह गाँव रियासी-अरनास सड़क से जुड़ा हुआ है। यह एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक गाँव है।

इस गाँव में दर्जनों की संख्या में प्राकृतिक जल स्रोत हैं। जिन में कईयों को बावली का रूप दिया गया है। डोगरी लेखक शिव दोवलिया के एक लेख 'सलाल' में यह उल्लेख मिलता है कि इस गाँव में छोटी-बड़ी कुल बारह बावलियाँ हैं जो शिलाखंडों से निर्मित हैं।

इन बावलियों में चरैना देवता के मंदिर के निकट जो बावली है, उस का एक विशेष महत्व है। श्रद्धालु इस बावली के जल से पहले पवित्र होते हैं और बाद में मंदिर जाते हैं। बावली के निकट देव स्थान में जो आदमकद मूर्तियाँ हैं, वे इस क्षेत्र की उन्नत मूर्ति कला का प्रतीक हैं। शेष बावलियाँ लोक शैली में हैं और रियासी-अरनास पगडंडी के साथ-साथ यात्रियों की सुविधा के लिए निर्मित की गई है।

म्हौर की बावली

यह बावली म्हौर बस अड्डा से 50 मीटर नीचे राजपूतों के मुहल्ले में है। यह बावली म्हौर के मध्य में है, अतः पूरा म्हौर इस का उपयोग करता है। स्थानीय लोगों के अनुसार यह बावली अति प्राचीन है। इस बावली में जड़ित मूर्तियों का अवलोकन करने से भी यही आभास मिल रहा है कि इन का सम्बन्ध किसी ऐतिहासिक घटना से रहा होगा। बावली मे जड़ित शिलाखंड स्थानीय है। इन पर जो तक्षण कार्य हुआ है वह उत्कृष्ट है। बावली मे जल का स्रोत बावली के भीतर है। इस बावली का जल अति शीतल है। समाज सेवक टाकन दास के अनुसार यह बावली सात सौ वर्ष पुरानी है।

कंठी की बावली

यह बावली रियासी जनपद के अंतर्गत दरमाड़ी से अनुमानतः 4 किलोमीटर दूरी पर अंस नदी के पुल के पार बसे कंठी गाँव में अवस्थित है।

पूर्वोन्मुख यह बावली शिलाखंडों से निर्मित है। इस बावली की

पीठिका में जो मूर्तियाँ संस्थापित हैं वे स्थानीय युद्धवीरों और लोकदेवी-देवताओं से सम्बन्धित हैं। तेहार जाति के लोग इस बावली के साथ अपना घनिष्ठ सम्बन्ध बताते हैं।

डुब्बरी की बावलियाँ

डुब्बरी दरमाड़ी से 12 कि.मी. दूर पहाड़ी पर बसा एक सुन्दर गाँव है। इस गाँव में दो बावलियाँ हैं। इन में एक बावली ऊपर और दूसरी बावली नीचे है। ये दोनों बावलियाँ सुन्दर मूर्तियों से सुसज्जित हैं। इन में पानी ऊपर से सिंहमुख से नीचे गिरता है। बावलियों का प्रयोग पूरा गाँव करता है।

ये बावलियाँ स्थानीय शिलाखंडों से निर्मित हैं। इन का शिल्प ठेठ पहाड़ी है। हरिराम तेआर के अनुसार कंठी और डुब्बरी की बावलियाँ प्राचीन हैं।

वागछू की बावली

यह बावली रियासी जलपद के अंतर्गत तहसील चसाना के 'वागछू' गाँव में अवस्थित है। यह एक विशाल बावली है और शिलाखंडों से निर्मित है। इस का पानी अति शीतल, निर्मल और सुस्वादु है। जो यात्री कौंसर नाग यात्रा के लिए रियासी से प्रस्थान करते हैं, वे छोटी-बड़ी गाड़ियों से चसाना पहुँचते हैं। वहाँ से यात्री इच्छनी नदी का पुल पार कर के मल्ली कोट पहुँचते हैं। मल्ली कोट एक दर्शनीय स्थल है। मल्लीकोट में नाश्ता करने के बाद यात्री सरसोत में दोपहर का खाना खाते हैं। इस के बाद यात्री साईं नाला का पुल पार करके 'वागछू' पहुँचते हैं। 'वागछू' में बावली के निकट उनके विश्राम की व्यवस्था की जाती है।

इस बावली के निकट ही 'हारछु' का ग्लेशियर है। यात्री वागछू से हारछु की यात्रा प्रायः पैदल करते हैं। वागछू बावली का प्राकृतिक परिदृश्य अति मनमोहक एवं चिताकर्षक है। यात्री वागछू की बावली का जो जल बोतलों में भर कर साथ लाते हैं, उसका प्रयोग वे यात्रा मार्ग में करते हैं। इस बावली की सफाई का ध्यान सरसोत और सरी गाँव के

राजपूत रखते हैं। वे यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व बावली की सफाई करने आते हैं।

बावली स्थल के विकास में रियासी के समाज सेवक टाकनदास, अजय भारती तथा गिरधारी लाल की भूमिका भी सराहनीय रही है। वे इस बावली के निकट गाँव के लोगों के सहयोग से शिविर लगाते हैं और यात्रियों को बावली का मीठा शीतल पानी पिलाते हैं।

बाण गंगा की बावली

कटड़ा से जो मार्ग माता वैष्णो देवी की गुफा की ओर जाता है, बाण गंगा पुल से वह दो भागों में विभाजित हो जाता है। एक मार्ग सीढ़ियों का है और दूसरा मार्ग घोड़े खच्चरों के लिए बना है। एक तीसरा मार्ग भी है जो बाण गंगा के साथ-साथ चलता है। बस इसी मार्ग पर बाण गंगा पुल से पौन किलोमीटर की दूरी पर एक पुरानी बावली है। यह बावली पूर्वोन्मुखी है। इस बावली में दो मीटर ऊँचाई से सिंहमुख से एक जलधारा बावली में गिरती है। यह बावली अनुमानतः छह मीटर घेरे में है।

इस बावली के विषय में कई दन्त कथाएँ प्रचलित हैं। एक जनश्रुति यह है कि जिस स्थान पर यह बावली निर्मित है वहीं जम्मू नरेश महाराजा रणजीत देव के छोटे पुत्र राजा दलेल देव और उसके पुत्र भगवान देव का एक षडयंत्र द्वारा कत्ल करवाया गया था। बाद में उनकी भटकती आत्माओं को शाँति पहुँचाने के लिए इस बावली का निर्माण करवाया गया।

एक अन्य लोक श्रुति में कहा गया है कि इस बावली का निर्माण किसी साधु ने जन कल्याणार्थ करवाया। जिस स्थान पर यह बावली निर्मित है, वहाँ अब कोई भी व्यक्ति दिखाई नहीं देता, अतः यह स्थान सुनसान सा लगता है। इस बावली से जो जल बाहर को उछलता है, वह बाण गंगा की धारा में समाहित हो जाता है।

सप्तम अध्याय

चिनाब घाटी (रामबन-डोडा-किश्तवाड़) की बावलियाँ

चिनाब घाटी से अभिप्राय डुग्गर का वह भूखंड है जिसके पहाड़ों को चीरती हुई चन्द्रभागा नदी बड़े वेग से आगे बढ़ती है। इस क्षेत्र के बुद्धिजीवियों ने इस घाटी के अंतर्गत रामबन, जनपद, डोडा जनपद और किश्तवाड़ जनपद को समाहित किया है।

इस घाटी का अधिकांश भाग लघु या मध्य हिमालय के अंतर्गत परिगणित है। चन्द्रभागा नदी के साथ सटा पूरा क्षेत्र पवर्तीय है। इस भूखंड का पूर्वीय क्षेत्र नागन शेरू पर्वत श्रंखला से घिरा हे। इस पर्वत का जो सब से ऊँचा शिखर है उसकी समुन्द्र तल से ऊँचाई 4090 मीटर है। इसी प्रकार किश्तवाड़ और जंस्कार के बीच जो सबसे ऊँची चोटी है वह 7135 मीटर ऊँची है। उसे नून-खुन नाम से अभिहित किया जाता है। मड़वा में स्थित ब्रह्म पहाड़ की चोटी की ऊँचाई 6416 मीटर और उसकी पत्नी की चोटी 6110 मीटर ऊँची है। इसी प्रकार अर्जुन पर्वत का शिखर 6200 मीटर, बरनाज पर्वत का शिखर 6290 मीटर है। किथार नाला के साथ जो पर्वतीय श्रंखला है उसका सबसे ऊँचा शिखर 6575 मीटर ऊँचा है। इसी प्रकार भद्रवाह क्षेत्र में स्थित कपिलास पर्वत 45 कि.मी. लम्बा और 10 से 12 कि.मी. चौड़ा है। इस का सबसे ऊँचा शिखर 4341 मीटर समुन्द्र तल से ऊँचा है। इस भूखंड के उतर में पीर पंचाल पर्वत है जो इस भूभाग को कश्मीर से अलग करता है।

इतिहास और संस्कृति की दृष्टि से यह क्षेत्र अति समृद्ध रहा है। इस क्षेत्र में वैदिक-कालीन संस्कृति के कुछेक अवशेष लोक परम्परा के रूप में मिलते हैं। नाग संस्कृति का भी यह भूखंड केन्द्र रहा है। वासुकि-पुराण तथा राजतरंगिणी में इसके कई ऐतिहासिक स्थानों का उल्लेख भी मिलता है। बनिहाल, पोगल, परिस्तान, रामबन गूल, डोडा, भद्रवाह, किश्तवाड़, पाडर तथा मड़वा आदि का क्षेत्र इसी में समाहित है। इस क्षेत्र की लोक संस्कृति में स्थानीय परम्पराएँ भी समाहित हैं।

जलस्रोत

इस घाटी में नदियों का जाल सा बिछा है। इस क्षेत्र की मुख्य नदी चन्द्रभागा है। इस की सहायक नदियों में भोटना, मरूद-वृदा, शातोदरी, भलेषा, नीरू आदि उल्लेखनीय हैं। इन के अतिरिक्त इस भूखंड में कई जलधाराएँ प्रवाहमान हैं जिनमें दिग्गी, कंडेरी, देसा वग्गु, नाशरी, खौसी, परिस्तान, पोगल, नील, बिचलरी, चैंजी, इन्द, सेदु, गरोत तथा इन्द आदि उल्लेखनीय हैं।

यह पूरा क्षेत्र सर और सरोवरों से भरा पड़ा है। केवल कपिलास पर्वत में वास कुंड, सूर्य कुंड, बेहाली कुंड, सौहल कुंड, दुर्गा डल, ऋषि डल, डेन डल, सरस्वती कुंड, पांडव कुंड, राक्षस कुंड आदि अवस्थित हैं। इसी प्रकार किश्तवाड़ में बडनाज सर, ततवरसर, नैनां देवी सर, सरनाई सर, शेरोठ सर, हाकशोसर, ब्रह्मसर आदि स्थित हैं। इसी प्रकार सरकूट, विमल नाग, डक्कसर, जासर नाग, वोटसर, काली नाग सर, मेहल नाग सर, जब्बड़सर, टंगसर, म्यानसर, संगलीसर, वोट गगाम सर, डल द्रमण आदि इस क्षेत्र के प्रसिद्ध जलाशय हैं।

चिनाब घाटी में दर्जनों की संख्या में जल कुंड, चश्में और जल प्रपात हैं। किन्तु चिनाब घाटी में बावलियों का अभाव है। इस क्षेत्र में बावली को 'नोन' नाम से अभिहित किया जाता है। गूल, सराज और रामबन में बड़े-बड़े 'नोन' निर्मित हैं जो वास्तु विन्यास की दृष्टि से शिवालिक की बावलियों से कुछ भिन्न भी लगते हैं। जो अलंकरण बावलियों में मिलता है, नोन में उसका अभाव है।

भद्रवाह में बावली के नाम के साथ नाग उपनाम जोड़ने की परम्परा भी रही है। चिनाब घाटी में जो बावलियाँ उपलब्ध हैं उन का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

डैंगकोट की बावलियाँ

ये बावलियाँ रामबन जनपद के अन्तर्गत तहसील गूल के ऐतिहासिक गाँव डैंग कोट में अवस्थित हैं। इन की संख्या दो है। तक्षण कला की दृष्टि से इन बावलियों की अट्टारिकाओं में जड़ित मूर्तियाँ

अनुपम एवं उत्कृष्ट हैं। ये सभी मूर्तियाँ स्थानीय लोक देवी-देवताओं की तथा लोक नायकों की हैं। इन मूर्तियों का अवलोकन करने से लगता है कि ये सिद्धहस्त शिल्पकारों की कृतियाँ हैं।

ये बावलियाँ स्थानीय शासकों के राजमहल के अति निकट हैं। लगता है कि इन का निर्माण राजादेश से किया गया होगा। शिल्पकारों ने जिस चतुरता और निपुणता से इन बावलियों की शिलाओं को गढ़ा है, उस से लगता है कि इस क्षेत्र में तक्षण कला उच्च शिखर पर रही होगी।

इन बावलियों के मुख-भाग भी कलात्मक हैं। निकट स्थित पहाड़ी से निःसृत जलधाराओं को पत्थर की नालियों से इन बावलियों में गिराया गया है। ये बावलियाँ निर्मल और स्वच्छ जल के कारण बहुत ही आकर्षक लगती हैं। इन दोनों बावलियों की अट्टारिकाओं में शिलालेख जड़ित हैं किन्तु अभी तक ये शिलालेख पढ़े नहीं जा सके। किन्तु इन के वर्ण 'पुरानी डोगरी अक्खर माला' से मिलते जुलते हैं।

स्थानीय शिक्षा विद् बिशन सिंह राय के अनुसार उनके पूर्वज बर्तुल देश के राजा थे। इस राज्य को डिंग-बट्टल नाम से भी अभिहित किया जाता था। यह राज्य बाईस गाँवों में परिसीमित था। इस राज्य के राजा डिंग पाल को 'राय' की उपाधि प्रदान की गई थी। राजा का एक भाई और भी था। उसका नाम छतर पाल था।

दोनों भाइयों को भवन निर्माण में रूचि थी। अतः उन्होंने पुराने महलों का परित्याग किया और डैंगकोट में नया महल बनवाया। उन्होंने ही इन बावलियों का निर्माण जन कल्याणार्थ करवाया। राज महल में भी इन्हीं बावलियों से जल ले जाया जाता था। इन बावलियों में जो शिलाखंड जड़ित हैं उनका अवलोकन करने से लगता है कि वे सैंकड़ों वर्ष पुराने हैं।

इन्हीं बावलियों के निकट घोड़ा गली स्थान भी है। यहाँ दर्जनों की संख्या में पत्थर के बने अश्वारोही प्रदर्शित हैं जिनके विषय में कहा जाता है कि वे स्थानीय योद्धाओं की प्रतिमाएँ हैं। ये योद्धा अपने राज्य की सुरक्षा के लिए रणभूमि में शहीद हुए थे। इन शहीदों को इन

बावलियों के जल से इस अभिप्राय से नहलाया जाता है कि उन्हें सद्गति प्राप्त हो।

इन बावलियों का अवलोकन करने जो पर्यटक जम्मू से जाते हैं, वे पहले रामबन पहुँचते हैं। रामबन जम्मू से 148 कि.मी. दूरी पर अवस्थित है। श्रीनगर से इस की दूरी 146 कि.मी. है। पर्यटक रामबन से वाहन द्वारा गूल जाते हैं। गूल रामबन से केवल 42 कि.मी. दूर है। उपनगर प्राकृतिक सौंदर्य के कारण अति प्रसिद्ध है। यहाँ एक छोटा सा बाजार भी है जिसमें उपयोगी वस्तुएँ उपलब्ध हैं। पर्यटकों के ठहरने की भी इस उपनगर में व्यवस्था है।

पर्यटक गूल से इन बावलियों को देखने पैदल जाते हैं। वे ऐतिहासिक घोड़ा गली के स्मारक, बावलियाँ और प्राचीन महल के पुरावशेषों का अवलोकन करते हुए प्रसन्न लौट आते हैं।

देबल की बावली

जिला रामबन तहसील गूल के अंतर्गत एक ऐतिहासिक गाँव है – देबल। यह गाँव सड़क द्वारा गूल से जुड़ा हुआ है। म्हौर से भी इस गाँव तक पहुँचा जा सकता है। इस गाँव में एक प्राचीन बावली है। इस बावली में जड़ित शिलाखंड सैंकड़ों वर्ष पुराने हैं। अत: बावली भी बहुत ही पुरानी रही होगी।

कहते हैं कि तुगलक काल में राजौरी के मार्ग से सुलतान की सेना ने पहले राजौरी पर आक्रमण किया बाद में यह सेना देबल की ओर बढ़ी। देबल के मार्ग से फिरोजशाह (1356-88 ई.) तुगलक की सेना कश्मीर की ओर प्रस्थान करना चाहती थी किन्तु भारी हिमपात के कारण उसे अपना शिविर देबल में इसी बावली के निकट लगाना पड़ा। कुछ दिनों बाद सुलतान की सेना दिल्ली वापस लौट गई।

रियासी के लेखक अब्दुल रशीद जोन के अनुसार सन 1960 के आसपास स्थानीय लड़के इस बावली की सफाई कर रहे थे तो खुदाई में उन्हें तीरों के कई बंडल मिले। ये तीर एक हाथ के लगभग लम्बे थे। उन तीरों को जिस भी विद्वान ने देखा उसने यही अनुमान

लगाया कि ये तीर तुगलक सैनिकों के हो सकते हैं।

इस खोज के बाद कई विद्वानों का ध्यान देबल की ओर गया और उन्होंने स्थानीय इतिहास पर शोध भी किया। इससे ज्ञात हुआ कि देबल किसी हिन्दू राजा की राजधानी थी। उसी राजा ने इस बावली का निर्माण करवाया होगा। वैसे भी इस बावली की अट्टारिकाओं में जड़ित मूर्तियाँ हिन्दू देवी-देवताओं की ही हैं। इन मूर्तियों में स्थानीय छाप भी देखी जा सकती है। अब यह बावली अपने मूलरूप में देबल में ही स्थित है किन्तु उपेक्षा के कारण इस का पुर्नोद्धार नहीं किया गया। इस बावली को भी संरक्षित किया जाना चाहिए।

छजरू की बावलियाँ

छजरू म्हौर-गूल क्षेत्र का पर्वतीय गाँव है। इस गाँव में भी कई बावलियाँ हैं जो पर्यटकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। ये बावलियाँ कला और आकार में चाहे इतनी भव्य नहीं हैं फिर भी इनकी अट्टारिकाओं में प्रदर्शित पत्थर की मूर्तियाँ दर्शनीय हैं।

कहते हैं कि इन बावलियों को किसी स्थानीय सामंत ने जन-कल्याण की भावना से निर्मित करवाया था। जो यात्री पर्वतीय यात्रा पर निकलते थे वे कुछ क्षण इन बावलियों के निकट बैठ कर खाना पकाते तथा इन का जल सेवन करते। इन बावलियों में रखी गई मूर्तियाँ स्थानीय देवी-देवताओं तथा लोक नायकों की हैं। इन मूर्तियों का अवलोकन करने से लगता है कि ये सदियों पुरानी हैं।

डुमकी बावली

यह बावली रामबन जनपद के अंतर्गत संगलदान से 6 कि.मी. की दूर पर उतर दिशा में डुमकी गाँव में अवस्थित है। यात्री, रामबन से जो वाहन गूल की ओर जाते हैं उस पर सवार होकर पहले संगलदान पहुँचते हैं। संगलदान एक रमणीक पर्वतीय गाँव है। इस गाँव से एक सड़क डुमकी बावली की ओर जाती है। कई यात्री वाहन से और अधिकांश यात्री पैदल डुमकी गाँव में पहुँचते हैं। इस गाँव में गर्म पानी की एक बावली है जिसे 'ततापानी' नाम से भी अभिहित किया जाता

है। इस बावली का जल हड्डियों के रोगियों के लिए एक वरदान है। जिन लोगों को गठिया रोग होता है वे भी इस बावली में स्नान करने आते हैं। प्राय: वायु रोग से ग्रस्त रोगी भी यहाँ नहाने आते हैं और ठीक होकर चले जाते हैं।

डुमकी बावली के जल में कहते हैं कि गंधक धातु का मिश्रण है। अत: इस के जल में स्नान करने से शरीर में पीड़ाओं का अन्त होता है। हड्डियों के जोड़ खुलते हैं जो रोगी इस बावली में स्नान करने आते हैं, वे प्राय: स्वस्थ होकर घर लौटते हैं। बावली स्थल में यात्रियों के ठहरने की पूरी व्यवस्था है। गाँव में जीवनोपयोगी सभी वस्तुएँ उपलब्ध हैं, अत: यहाँ ठहरने में कोई कठिनाई नहीं होती है। प्राय: शीत ऋतु में कश्मीर तथा रामबन से कई यात्री यहाँ स्नान करने आते हैं। शीतकाल में यहाँ भीड़ भी देखी जाती है। इस स्थान को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

करौल की बावली

करौल की बावली जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय मार्गपर रामबन पुल (नया) के निकट स्थित करौल गाँव में द्रष्टव्य है। यह बावली जलकुंड आकार में है। इस बावली का जल भी गर्म है, अत: यात्री इस बावली को गर्म पानी का चश्मा भी कहते हैं। करौल से रामबन अनुमानत: छह किलोमीटर दूर है।

कई वायु के रोगी इस बावली में भी स्नान करने आते हैं। लोक-विश्वास है कि बावली में स्नान करने से शरीर के कई रोग दूर होते हैं। हड्डियों की पीड़ा का अन्त होता है। इसमें स्नान करने से शरीर में स्फुर्ति आती है। प्राय: शीत ऋतु में इस बावली के आसपास बहुत भीड़ देखी जा सकती है। यह बावली जम्मू से अनुमानत: 142 कि.मी, श्रीनगर से 152 कि.मी. और डोडा से 76 कि.मी. दूर है।

इस बावली को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। रामबन में चन्द्रभागा नदी के तट के साथ-साथ भी कई बावलियाँ हैं जिन का उपयोग स्थानीय लोग पहले तो करते थे किन्तु

अब नल लगने के कारण ये बावलियाँ उपेक्षित हो गई हैं। इन के पुर्नोद्धार के लिए भी अभियान चलाया जाना चाहिए।

सिराज क्षेत्र की बावलियाँ

पूर्व की ओर से ठाठरी के मुतसल, बरशाला के ग्राम से प्रारम्भ होकर रामबन के कष्ठी तक का सारा क्षेत्र जगदेव सिंह बंदराल के अनुसार सिराज कहलाता है। चन्द्रभागा नदी इस क्षेत्र को शिवालिक की पर्वत श्रंखला से अलग करती है। पीर पंचाल की पर्वत श्रंखला इस को कश्मीर घाटी से पृथक करती है। यह क्षेत्र शताब्दियों से पृथक होने के कारण उपेक्षित, अविकसित और पिछड़ा रहा है। राजस्व विभाग में यह रामबन और डोडा जनपद में विभाजित है।

इस क्षेत्र के मूल-निवासी मेघ और ठाकुर थे। मुगलकाल में मुगलों से पराजित होने के बाद कई राजपूत परिवार भी छुपते-छुपाते इस क्षेत्र में आ बसे। वे जिस-जिस स्थान पर बसे उन्होंने अपने-अपने गाँवों का नामकरण राजस्थानी में किया यथा जोधपुर, राजगढ़, कष्ठी, पोगल, भरतपुर और उदयानपुर आदि।

मुगलकाल में इस क्षेत्र में कई मुस्लिम परिवार भी बसे। सन 1841-42 में जब कश्मीर में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा तो कई कश्मीरी मुसलमान भी यहाँ आकर बस गए। ब्राह्मणों और महाजनों के भी इस क्षेत्र में कुछ घर हैं। थोड़े से घर हरिजनों के भी हैं। इस क्षेत्र की प्रमुख भाषा सिराजी है। सिराज 77 गाँवों तक परिसीमित है। इस में डोडा जनपद के अंतर्गत 55 ग्राम परिगणित हैं और 22 ग्राम रामबन जनपद के अन्तर्गत आते हैं।

सन 2001 की जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र में 2205 घर थे। कुल जनसंख्या 14626 थी। इस पूरे क्षेत्र का क्षेत्रफल 7956.61 हे. था। किन्तु अब इन आंकड़ों में बड़ा परिवर्तन आ गया है। इस पूरे क्षेत्र में जल संरक्षण के लिए स्थानीय लोगों ने अपने-अपने गाँव में बावलियों का निर्माण किया। इन बावलियों की स्थापत्य कला राजस्थानी और पहाड़ी शैली पर आधारित थी। बावलियों के निर्माण में शिल्पकारों ने

बड़े-बड़े प्रस्तर खंडों को तराशा और उन्हें बड़ी कुशलता से बावलियों की अट्टारिकाओं में जड़ा। सिराज की अधिकांश बावलियाँ सिंहमुख शैली में हैं।

प्रसिद्ध बावलियाँ

सिराज की बावलियों पर डोडा के शोधकर्ता फरीद अहमद फरीदी ने सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने जिन बावलियों को अपने शोध में सम्मिलित किया है उनमें कुछेक निम्न हैं :

राजगढ़ की बावली

यह बावली रामबन जनपद के अंतर्गत चन्द्रकोट से अनुमानतः 6 कि.मी. की दूरी पर प्राचीन राजगढ़ दुर्ग के पुरावशेषों से कुछ दूरी पर स्थित है। स्थानीय भाषा में इसे 'नोन' नाम से अभिहित किया जाता है। 'नोन' निर्माण में बड़े-बड़े शिलाखंडों को जोड़कर उन्हें स्नानागार का रूप दिया जाता है। स्नानागार में चश्में की जलधारा को परनाले की भाँति गोलाकार शिला के बीच में से गिराया जाता है।

कई स्थानों में शिला का मुखाकार सिंहमुख जैसा है और कई स्थानों में मुख-भाग को केवल तक्षित किया गया है। चश्में का जल कुरेदी गई शिला से होकर या तो बावली में गिरता है या खुले स्थान में भी गिर सकता है। इस जल का उपयोग स्नान करने, घर के लिए घड़ा भरने, कपड़े धोने के लिए भी किया जा सकता है। किन्तु जो जल घड़े में भरा जाता है उसकी शुद्धता का ध्यान रखा जाता है।

राजगढ़ की बावली का जल भी अतिशुद्ध है। इस में जड़ित शिलाखंड प्राचीन लगते हैं। लोकश्रुति के अनुसार इस बावली का निर्माण डोगरा काल से पहले किसी स्थानीय राणा ने लोक-कल्याण की भावना से करवाया था। इस बावली के इर्द-गिर्द कई ऐतिहासिक पुरावशेष बिखरे पड़े हैं जिनमें प्राचीन दुर्ग और राज महल के पुरावशेश उल्लेखनीय हैं। इस के अतिरिक्त बुद्दनी, हेलूर, दयारगली आदि गाँवों में भी छोटे-छोटे 'नोन' हैं जिन का उपयोग स्थानीय लोग अब भी करते हैं।

काश्तीगढ़ की बावली

यह भव्य और विशाल बावली डोडा से 12 कि.मी. दूरी पर ऐतिहासिक गाँव काश्तीगढ़ में अवस्थित है। सिराज क्षेत्र की उत्कृष्ट बावलियों में इस की परिगणना की जाती है। इस बावली में पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध है। अतः स्थानीय लोग इस बावली का भरपूर उपयोग करते हैं।

यह बावली सामंत-कालीन लगती है। इसमें जड़ित शिलाखंड उत्कृष्ट प्रस्तर तक्षण कला के नमूने हैं। बावली का जल भूख बढ़ाता है और कई रोगों को दूर करता है। यात्री काश्तीगढ़ जाने के लिए पहले डोडा से गनिका गाँव पहुँचते हैं और वहाँ से लुद्दर गंगा (लिद्दर-खोल नदी) पार कर के कास्तीगढ़ पहुँचते हैं।

काश्तीगढ़ में स्थित इस बावली के निकट ही प्राचीन दुर्ग के अवशेष भी द्रष्टव्य हैं। कई विद्वानों का मत है कि जिस राणा ने कास्तीगढ़ का किला बनवाया था उसने यह बावली भी बनवाई है। सन 2001 में कास्तीगढ़ में कुल 157 घर थे और जनसंख्या 1068 थी। अब घर भी बढ़ें हैं और आबादी भी बढ़ी है। यह बावली आज भी कई घरों के लिए जल का मुख्य स्रोत है।

कास्तीगढ़ के अतिरिक्त गणिका, जलवास, भागवा, ब्योली और भभहोता में भी छोटी बड़ी कई बावलियाँ हैं।

बरशाला की बावली

बरशाला की बावली ठाठरी के पूर्वोत्तर में चन्द्रभागा नदी के पूर्वी-भाग से अनुमानतः पाँच किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह बावली गाँव के निकट है, अतः स्थानीय लोग इस का उपयोग आज भी करते हैं। इस बावली का निर्माण कई लोगों के अनुसार किसी स्थानीय राणा ने करवाया। किन्तु कुछ लोग यह मानते हैं कि जोरावर सिंह ने बरशाला पर अधिकार करने के बाद इस गाँव में एक मंदिर और बावली का निर्माण करवाया। वैसे यह बावली मंदिर के निकट ही है। बरशाला वैसे बहुत ही सुन्दर और रमणीक गाँव है। इस गाँव में सन 2001 की

जनगणना के अनुसार 199 घर थे और कुल जनसंख्या 1207 थी।

बरशाला के लोग गर्मियों में बावली के निकट बैठ कर अपने युद्धवीर रण बांकुरों की वीर गाथाएँ सुनाते हैं।

देसा की बावली

देसा की बावली का अनुपम सौंदर्य है। शेर मुख नाड़ा से जब ऊपर से इस में जल धारा गिरती है तो इस का परिदृश्य अति मन मोहक लगता है। इस बावली का उपयोग देसा के नागरिक अपनी दिनचर्या में बड़ी श्रद्धा से करते हैं। वे इस बावली को नाग देवता की कृपा मानते हैं। देसा वैसे भी घनी आबादी वाला गाँव है। सन 2001 में यहाँ 936 घर थे और कुल आबादी 6307 थी।

जोधपुर की बावली

जोधपुर सिराज का एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव में सन 2001 में 358 घर थे और जन संख्या 2170 थी। इस गाँव में जो बावली है, स्थापत्य कला की दृष्टि से वह सामान्य कोटि की है। बावली का उपयोग स्थानीय लोग आज भी करते हैं।

सामठी की बावली

यह एक सुन्दर बावली है। इस के निर्माण में शिलाखंडों का बड़ी कुशलता से प्रयोग हुआ है। इस बावली का जल निर्मल और रोग नाशक है। सामठी गाँव की आवश्यकता यह बावली पूरी करती है। सामठी गाँव में सन 2001 में 252 घर थे और कुल आबादी 1850 थी। इनके अतिरिक्त सिराज के कुड़धार, सिलधार, भरत, उदयानपुर, लुडना, कोटि, भभोर, डोंगरू, गदभाड़ी, कोटि, बुंदना, गंडेतर, काली हांड, टांटना, अरनोडा, देसवाल, छुंदराठ, टँगर, भभहोता, गादी, महाला, सेरी, बलिहोत, ब्योली, टापनील, घाड़ी, रामबन वेरून, मरोग, तेली, कोरड़ा भखना आदि गाँवों में भी छोटी बड़ी बावली, नोन, चश्में, जलकुंड आदि उपलब्ध हैं जिनसे स्थानीय लोग अपनी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं।

किश्तवाड़ की बावलियाँ

किश्तवाड़ में बावली को 'नोन' नाम से अभिहित किया जाता है। इन का वास्तु विन्यास जम्मू क्षेत्र की बावलियों से मिलता जुलता है। दोनों का निर्माण शिलाखंडों से होता है। दोनों में ऊँची-ऊँची अट्टारिकाएँ तथा पीठिकाएँ निर्मित की जाती हैं। बावली और नोन की भीतरी अट्टारिकाएँ छोटी-छोटी प्रस्तर-शिलाओं से निर्मित की जाती है। बावली और नोन का निर्माण किसी प्राकृतिक चश्मा को आधार मानकर किया जाता है। कई विद्वान इन दोनों में थोड़ा बहुत अन्तर भी मानते हैं। कलाविद् डा. ललित गुप्ता का मत है कि बावली छोटी होती है और नोन आकार में बड़ा होता है। इस में एक साथ कई व्यक्ति नहा सकते हैं। इन दोनों में दूसरा बड़ा अन्तर यह है कि बावलियाँ पौराणिक देवी-देवताओं, लौकिक देवी-देवताओं, लोक नायकों, लोक नायिकाओं, युद्धवीरों आदि की मूर्तियों से अलंकृत होती हैं। यह देखने में अति सुन्दर लगती हैं। इनकी शिलाओं पर जो तक्षण किया जाता है वह बेजोड़ होता है जबकि 'नोन' में बड़े-बड़े शिलाखंड तो जड़ित रहते हैं किन्तु उनमें तक्षण कार्य नाम-मात्र का होता है।

बावलियों और चश्मों की दृष्टि से किश्तवाड़ अति समृद्ध है। पूरा किश्तवाड़ जनपद पवर्तीय श्रंखलाओं से घिरा हुआ है। इन्हीं पवर्तीय घाटियों में किश्तवाड़ के नगर और गाँव बसे हुए हैं। इस गाँवों के निकट नदियाँ, उप नदियाँ, जल धाराएँ प्रवाहित हैं। गाँवों में जलस्रोत चश्मों के रूप में भी हैं। इन्हीं चश्मों को स्थानीय लोगों ने बावली या नोन का रूप दिया है। गाँवों के लोग इन बावलियों का उपयोग युगों-युगों से करते आ रहे हैं। आज भी इन का उपयोग किश्तवाड़ में होता है। ये 'नोन' हमारी धरोहर भी हैं, अतः इनके संरक्षण की आवश्यकता है। किश्तवाड़ में वैसे तो बीसियों बावलियाँ हैं किन्तु उन में अति प्रसिद्ध निम्न हैं ':

1. अरसी की बावलियाँ

अरसी में प्राकृतिक चश्मों की संख्या सात है। इन चश्मों में अधिकांश को शिलाखंडों से आवेष्टित करके बावलियों का रूप दिया

गया है। ये शिलाखंड बहुत भारी हैं। लगता है शिल्पकारों ने बड़ी कुशलता से इन का प्रयोग बावली निर्माण में किया है।

अरसी किश्तवाड़ के चौगान से केवल दो ही कि.मी. दूर है। इन बावलियों का अवलोकन करने पर्यटक भी आते हैं। स्थानीय लोग नहाने के लिए अब भी यहाँ आते हैं। वे नहाते भी हैं और घड़ों मे जल भर कर घरों में भी ले जाते हैं।

2. तिलमुछी की बावलियाँ

तिलमुछी में दो बावलियाँ हैं। इन बावलियों में स्नानार्थ बीसियों लोग प्रतिदिन आते हैं। यह स्थान भी अति रम्य है। छायादार वृक्षों से आवेष्टित ये बावलियाँ शीतल और सुस्वादु जल के कारण पूरे किश्तवाड़ में प्रसिद्ध हैं।

इन बावलियों के निर्माण में बड़े-बड़े शिलाखंडों का प्रयोग किया गया है। ये बावलियाँ अनुमानतः दस मीटर के घेरे में है। इन की अट्टारिकाएँ सुदृढ़ किन्तु सादी हैं। शिल्पकारों ने इन बावलियों के निर्माण में बड़ी दक्षता का परिचय दिया है। तिलमुछी किश्तवाड़ चौगान से केवल डेढ़ किलोमीटर दूर है। जो पर्यटक इन बावलियों का अवलोकन करने जाते हैं, वे इन के सौंदर्य से अभिभूत होते हैं।

ये बावलियाँ बताया जाता है कि किश्तवाड़ के राजाओं के समय की हैं। इन का समय-समय पर पुर्नोद्धार होता रहा है। इसी कारण ये अभी तक अपनी मूल स्थित में है।

तता पानी की बावली

यह बावली पाडर क्षेत्र में कुंदल गाँव से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। किश्तवाड़ से इस की दूरी पर 59 कि.मी. गुलाबगढ़ से 5 कि.मी. और हठोली से तीन कि.मी. है। बावली तक पहुँचने के लिए सड़क से एक पगडंडी भी जाती है। यह एक भव्य और विशाल बावली है। यह अनुमानतः पन्द्रह वर्ग मीटर में परिव्याप्त है। पहले यह खुली बावली थी किन्तु अब इस पर छत डाल दी गई है। इस बावली से एक जल धारा नल से नीचे गिरती है। इस जलधारा का

पानी गर्म है और इसमें एक विशेष प्रकार की गंध भी अनुभव होती है। जो रोगी हड्डियों के रोग से ग्रस्त होते हैं या जिन के शरीर में असहनीय पीड़ा होती है, वे इस बावली में स्नान करते हैं।

लोक विश्वास है कि इस बावली के जल से जो व्यक्ति एक सप्ताह स्नान करता है, वह वायु रोग से मुक्ति पाता है।

इस बावली की एक जलधारा नीचे भी जाती है। यह धारा महिलाओं के स्नानागार में गिरती है। महिलाएँ भी इस बावली के जल से रोग मुक्त होती हैं। उतरोन्मुख इस बावली के निकट ही नाग देवता शेषनाग का मंदिर है।

लोक-विश्वास है कि स्नान के बाद नाग देवता के मंदिर में पूजा करने से व्यक्ति शीघ्र रोग मुक्त होता है। वैसे स्थानीय लोग नाग देवता को प्रसन्न करने के लिए पशु-बलि का आयोजन भी करते हैं। इस बावली को एक विशेष परिवार के लोग वर्ष में एक बार प्रायः जनवरी मास में सफाई करते हैं। इससे बावली का जल निर्मल रहता है। बावली के निकट ही एक धर्मशाला है। जो यात्री बाहर से आते हैं, उनके ठहरने की व्यवस्था इसी धर्मशाला में की जाती है। इस स्थान का प्राकृतिक परिदृश्य अति रम्य है।

रेनाई की बावली

यह बावली मड़वा क्षेत्र में यारदू से सात किलोमीटर दूरी पर अवस्थित है। यह भी गर्म पानी की बावली है। स्थानीय लोग इसे 'गर्म-चश्मा' भी कहते हैं। जिस स्थान पर ये गर्म-पानी के चश्में हैं उसे अंजेर गाँव कहते हैं। इस चश्में के निकट ही रेनाई की जलधारा प्रवाहित है जो बड़े वेग से मड़वा नदी में यारदू स्थान पर गिरती है।

रेनाई की बावलियाँ पूरे मड़वा क्षेत्र में प्रसिद्ध हैं। वायु तथा हड्डियों के रोगी बड़ी संख्या में इन बावलियों में स्नानार्थ आते हैं, वे स्वस्थ होकर जाते हैं। इस स्थान का प्राकृतिक परिदृश्य अति आकर्षक है। यहाँ की सुन्दर चरागाहें यात्री का मन मोह लेती हैं।

त्रेयान की बावली/चश्मा

यह बावली किश्तवाड़ के हिरेयाल गाँव के निकट बिमरनाग स्थान पर अवस्थित है। यहाँ एक बावली है जिसे स्थानीय लोग 'बिमरनाग का चश्मा' कहते हैं। चश्मा का जल कई शारीरिक व्याधियों को दूर करता है। लोकाआस्था है कि विभिन्न रोगों से ग्रस्त जो रोगी इस बावली में स्नान करते हैं, वे ठीक हो जाते हैं। किन्तु अब रोगी धीरे-धीरे हस्पताल में जाने लगे हैं अब यह बावली सुनी-सुनी सी लगने लगी है।

इनके अतिरिक्त अगराल से सात किलोमीटर की दूरी पर धान नामक स्थान में भी एक बड़ा चश्मा है जिस का पानी एक जल प्रपात की भाँति नीचे गिरता है। इसी प्रकार पलमार के जोमन धार में भी एक सुन्दर चश्मा है। सिंहपुर के चश्में भी पर्यटकों को बहुत आकर्षित करते हैं। सत्य यह है कि पूरा किश्तवाड़ जनपद जल धरोहर से समृद्ध है।

कुलिन्द की बावली

किश्वाड़ के अंतर्गत कुलिन्द एक ऐतिहासिक गाँव है। इस गाँव में एक बड़ा सा चौगान है। चौगान के साथ ही एक बावली है। यह एक भव्य बावली है। स्थापत्य की दृष्टि से यह 'नोन' शैली में निर्मित है। इस का जल निर्मल और स्वच्छ है।

इस बावली में एक शिलालेख जड़ित है जिस की लिपि बताया जाता है डोगरी है। यह शिलालेख अपठित है। बताया जाता है कि इस बावली का कोई न कोई सम्बन्ध 'कोकी देवी' से भी है। कोकी-देवी किश्तवाड़ की वीरांगना थी। उसने मुगल मजार के निकट कई मुगल सेनानियों को मार गिराया था।

नाग :

किश्तवाड़ में कई ऐसी बावलियाँ और चश्में हैं जिन के नाम के साथ नाग उपपद जुड़ा है। ऐसी बावलियों में निम्न अति प्रसिद्ध हैं:

1. काली नाग
2. डाबर नाग

3. दमोल नाग
4. कम्मी नाग
5. गोरदश नाग
6. परिनाग
7. गुमाई नाग
8. प्रिंगस नाग
10. पूत नाग
11. महल नाग इत्यादि

भद्रवाह की बावलियाँ

भद्रवाह, डोडा जनपद के अन्तर्गत एक तहसील का मुख्यालय है। यह नगर जम्मू के पूर्वोत्तर में जम्मू से 201 कि.मी. दूर है। श्रीनगर से इसकी दूरी 252 कि.मी. और किश्तवाड़ से 73 कि.मी. है। बसोहली से भी यह पगडंडी मार्ग से जुड़ा है। इस मार्ग की लम्बाई 96 कि.मी. है। पूरी भद्रवाह तहसील पहाड़ी है। इस क्षेत्र का प्राकृतिक परिदृश्य अति मनमोहक है। भद्रवाह का प्राचीन नाम भद्रावकाश था। पुराविद रामचन्द काक के अनुसार भद्रावकाश का अर्थ है - सुन्दर स्थान। सचमुच भद्रवाह बहुत ही सुन्दर है। इसी कारण इस क्षेत्र का एक नाम छोटा कश्मीर भी है।

भद्रवाह नाग संस्कृति का केन्द्र भी है। नाग संस्कृति के पुरावशेष इस क्षेत्र में आज भी बिखरे पड़े हैं। इस क्षेत्र में सबसे अधिक मंदिर नाग देवताओं के हैं। नाग देवताओं में प्रमुख वासुकि नाग हैं। भद्रवाह में वासुकि नाग के कई मंदिर हैं जिनमें प्रमख हैं : गाडा का मंदिर और भद्रवाह नगर का मंदिर।

भद्रवाह में नागों से सम्बन्धित कई त्योहार आयोजित होते हैं जिनमें एक प्रमख है : 'नाग जुहारणों' भद्रवाह क्षेत्र में जितनी भी बावलियाँ हैं, वे किसी न किसी रूप में नाग देवता से जुड़ी हुई हैं। उन का नाम करण भी नागों के नाम पर हुआ है। वैसे भी इस क्षेत्र में नागों को पानी का देवता माना जाता है। 'नाग-जुहारणों' पर्व पर भद्रवाह के

लोग अपने-अपने गाँवों की बावलियों में जाते हैं और बावलियों की सफाई करते हैं। भद्रवाह में कई बावलियाँ हैं, जिन में प्रमुख निम्न हैं:

पांडव बावली

यह बावली भद्रवाह में गुप्त गंगा तीर्थ के अन्तर्गत एक गुफा के भीतर अवस्थित है। डुग्गर के शोधकर्ता डा. सत्यपाल 'श्री वत्स' ने इस बावली का उल्लेख 'भद्रवाह' के सन्दर्भ में अपने एक शोध लेख में किया है।

डा. श्री वत्स के अनुसार स्थानीय लोग इसे 'पांडव बौल्ली' के नाम से अभिहित करते हैं। यह बावली गुफा मंदिर के बाहर फर्श के साथ एक कोने पर थोड़ी सी जगह खोद कर बनाई गई है। गुप्ता गंगा की धारा सबसे पहले इसी बावली में गिरती है। इस के बाद यह धारा नीरू नदी में समाहित होती है।

एक लोकश्रुति के अनुसार बनवास काल में पांडवों ने कुन्ती के स्नानार्थ तथा कपड़े धोने के लिए इस बावली का निर्माण किया। इस बावली के कुछ ऊपर ब्राह्मी में एक शिलालेख है। डा. प्रियतम कृष्ण कौल के अनुसार इस शिलालेख का देवनागरी में रूपान्तरण इस प्रकार है :-

गोप पाष देव धाम यम केतु

डा. कौल के अनुसार 'गोप पाश' उत्कीर्णकर्ता का नाम है। देव धाम से अभिप्राय देवताओं का आवास है, यम-केतु से अभिप्राय मृत्यु का देवता है।

एक अन्य व्याख्या के अनुसार गोप (राजा) पाश (राजा का नाम) का अन्तिम धाम यही स्थान है। इस पांडव बौल्ली के निकट ही बुद्ध सत्व की मूर्ति भी स्थापित थी। कई विद्वानों का मत है कि गोप पाश बौद्धाचार्य था और उसका अंतिम संस्कार यहीं हुआ था। तथ्य कुछ भी रहे हों किन्तु इतना तो सुस्पष्ट है कि जिस स्थान पर यह बावली स्थित है, उस का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व रहा है।

आशापति

भद्रवाह के अंतर्गत आशापति पर्वत पर एक चश्मा है जो स्थानीय शिलाखंडों से सुसज्जित है। कई लोग इसे आशापति बावली के नाम से भी अभिहित करते हैं। स्थानीय लोगों की इस के प्रति अत्याधिक आस्था है। वे इस स्थान को आशापति तीर्थ भी कहते हैं। यह स्थान भद्रवाह के दक्षिण में 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

श्राद्धों की अमावस्या के दिन तीसरे वर्ष इस तीर्थ पर लोग एकत्रित होते हैं और अपने पितरों का तर्पण करते हैं। इस स्थान का प्राकृतिक दृश्य अति मनमोहक है। श्रद्धालु जब आशापति पर्वत की चढ़ाई चढ़ते हैं तो वे भजन गाते हुए आगे बढ़ते हैं। इससे उन्हें थकान नहीं होती।

चावर नाग

यह शीतल जल की बावली है। यह बावली नाग देवता चावर नाग देवता के नाम समर्पित है। स्थानीय लोग इस बावली को एक मंदिर की भाँति पावन मानते हैं। इस बावली के जल से नाग देवता का अभिषेक भी करते हैं। इस स्थान का प्राकृतिक परिदृश्य अति चिताकर्षक है। स्थानीय लोग इस बावली की सफाई का विशेष ध्यान रखते हैं। वे नाग जुहारणों पर्व पर बड़ी संख्या में इस बावली में एकत्रित होते हैं और सामूहिक रूप से इस बावली की सफाई करते हैं। भद्रवाह की सुन्दर बावलियों में इस की भी परिगणना की जाती है।

बुन नाग

यह भद्रवाह क्षेत्र का एक प्राकृतिक चश्मा है जिसे स्थानीय लोगों ने अपनी सुविधा के लिए शिलाखंडों से आवेष्टित किया है। इसे बुन नाग की बावली भी कहा जाता है। यह एक दर्शनीय बावली है। कहते हैं कि कभी यह क्षेत्र बुन नाग के अधिकार में था। उसी ने इस स्थान का विकास किया। इस बावली का जल अति स्वादिष्ट और अजीर्ण रोग के लिए उपयोगी है। स्थानीय लोग इस स्थान की स्वच्छता का पूरा ध्यान रखते हैं।

वेरी नाग

वेरीनाग नाम के पश्चिमी हिमालय में कई स्थान हैं। एक वेरी नाग कश्मीर में है। इस जलकुंड से कहा जाता है कि वितस्ता नदी नि:सृत है। एक वेरी नाग उतराखंड के पिथौरागढ़ जनपद में भी है। यहाँ भी जल स्रोत है।

एक वेरी नाग भद्रवाह में भी है। भद्रवाह के वेरी नाग चश्में का जल अति निर्मल, रोग निवारक, पुष्टिदायक और बलवर्द्धक है। स्थानीय लोग इस चश्में को अति पावन मानते हैं। यह चश्मा प्रसिद्ध नाग देवता वेरी नाग को समर्पित है।

केसर नाग

भद्रवाह क्षेत्र में जितने भी चश्में अथवा बावलियाँ हैं, वे नागों द्वारा विकसित हैं। यह चश्मा भी केसरनाग के नाम पर समर्पित है। कहते हैं कि नागों को भूमिगत जल को चिह्नित करने की विद्या का परिज्ञान था। उन्होंने स्थान-स्थान पर भूमि में संचित जल को बाहर निकाला। केसर नाग ने भी इस चश्में का जनहित में विकास किया।

स्थानीय लोग आज भी इस चश्में का उपयोग करते हैं। प्राय: घरों में इसी चश्में के जल का प्रयोग किया जाता है।

भलेष की बावलियाँ

भद्रवाह की भाँति भलेष में जो बावलियाँ और चश्में हैं, उनका नाम करण भी नागों के नाम पर किया जाता है। इस क्षेत्र के प्रसिद्ध चश्में और बावलियाँ निम्न हैं :

कईनाग

यह भलेष की प्रसिद्ध बावली नाग देवता कई के नाम समर्पित है। लगता है अखनूर का काई नाग ही भलेष में कई नाग के नाम से प्रसिद्ध है। यह बावली स्वादिष्ट और निर्मल जल के लिए पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध है।

गल्लू नाग

नाग देवता गल्लू नाग के नाम पर निर्मित यह बावली दर्शनीय है। इस का जल कई रोगों को दूर करता है। अत: स्थानीय लोग घरों में इसी चश्में के जल का प्रयोग करते हैं।

बैंसर नाग

यह बावली भलेष क्षेत्र में अति प्रसिद्ध है। इस का जल अति गुणकारी है। इस बावली का विकास नाग देवता बैंसर नाग ने किया है, अत: स्थानीय लोग बावली के साथ-साथ देवता के स्थान की सफाई का पूरा ध्यान रखते हैं।

भौतड़ नाग

इस चश्में को महल नाग के नाम से भी अभिहित किया जाता है। यहाँ जो जलकुंड है, वह अति पावन माना जाता है। बावली के निकट ही नागदेवता का भव्य मंदिर है। यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ कई ऐतिहासिक और पुरातत्व से सम्बन्धित पुरावशेष बिखरे पड़े हैं। पर्यटक भौंतड़ नाग के साथ-साथ अन्य स्थलों का अवलोकन भी करते हैं। इस चश्मे के जल से नाग देवता के अभिषेक करने की परम्परा भी है।

अष्ठम अध्याय

राजौरी-पुंछ की बावलियाँ

सन 1947 में राजौरी और पुंछ एक ही जनपद के अंतर्गत थे। ये दोनों क्षेत्र इतिहास और संस्कृति की दृष्टि से भी प्राचीन काल में एक ही थे। इस पूरे क्षेत्र को अभिसार नाम से अभिहित किया जाता था। किन्तु बाद में ये दोनों राजनैतिक दृष्टि से अलग-अलग हो गए। एक को परनोत्स और दूसरे को राजापुरी राज्य कहते थे। राजापुरी के आदि शासक पहले पाल थे और बाद में जराल इस क्षेत्र के शासक बने। अंत में डोगरा शासकों ने इस पर अधिकार कर लिया।

पुंछ के विषय में कहा जाता है कि सिकन्दर के आक्रमण के समय राजा सेवासेन का इस क्षेत्र में शासन था। सन 850 ई. में राजा नर इस क्षेत्र का राजा बना। किन्तु 858 ई. में राजा सिंह राज पुंछ का राजा बना तो उसने लोहर कोट को अपनी राजधानी बनाया। सिंहराज के वंशजों ने कई सदियों तक यहाँ राज्य किया।

सन 1594 ई. में सिराजुद्दीन पुंछ का राजा बना। उसके वंशजों ने सन 1798 तक पुंछ में राज्य किया। उसके बाद पुंछ का राज्य गुर्जर राजा के हाथ आया। सन 1819 में पंजाब नरेश रंजीत सिंह ने पुंछ पर अधिकार किया। राजा रंणजीत सिंह ने बाद में पुंछ क्षेत्र को एक जागीर के रूप में अपने सामंत राजा ध्यान सिंह को भेंट किया। उसके वंशजों ने सन 1947 तक राज्य किया।

डोगरा शासकों के शासन काल में पुंछ प्रशासनिक दृष्टि से चार तहसीलों तहसील बाग, तहसील सुदनूती, तहसील हवेली और तहसील मेंढर में विभाजित था। रजबाड़ा पुंछ का कुल रकबा 1627 वर्ग मील था। किन्तु 1947 के बाद यह रजबाड़ा दो भागों में विभाजित हो गया। इस का एक हजार वर्ग मील क्षेत्र एल.ओ.सी के उस पार चला गया जबकि 627 वर्ग मील का क्षेत्र राज्य के साथ जुड़ा रहा। सन 1968 में राजौरी पुंछ से अलग हुआ। कोटरंका, कालाकोट, सुन्दरबनी, नौशहरा, थन्ना मंडी, दरहाल और मंझाकोट इस जनपद की तहसीलें बनाई गईं।

यह जिला सुन्दरबनी से लेकर भिम्बर गली तक परिसीमित है। इस की लम्बाई 125 किलोमीटर पूर्वी और पश्चिमी भाग में है। उतर और दक्षिण में यह जनपद 110 कि.मी. लम्बा है। ये दोनों जलपद मुख्य रूप से पर्वतीय खंड में समाहित हैं।

इतिहास के संदर्भ में राजौरी का राजपुरी के नाम से उल्लेख राज दर्शनी में कई बार हुआ है। इस राज्य के आदिशासक पाल थे। इस वंश का अन्तिम शासक राजा अमन पाल था। उसके बाद इस राज्य में मुसलमानों का शासन रहा। सन 1819 ई. में राजौरी पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह के अधीन आया। 16 अप्रैल 1846 में अमृतसर संधि के अतंर्गत राजौरी जम्मू-कश्मीर राज्य का अंग बना।

जलस्रोत

राजौरी पुंछ में जल संसाधन के रूप में नदियों, उप नदियों, जलधाराओं, सरों और चश्मों की परिगणना की जा सकती है। नदियों में पुंस तौषी, राजौरी तवी, मनावर तवी, सुन्दरबनी तवी आदि का नाम लिया जा सकता है। उप नदियों में भिम्बर गली सरिता, थन्ना मंडी सरिता, खांडल, दरहाल, लोरन, घाघरिया, प्रुलस्त, सुरन नदी, चिट्टा पानी, मेंढरी, महाल, द्रौगली, गोई, चमर आदि उपनदियाँ और जल सरिताएँ उल्लेखनीय हैं।

राजौरी और पुंछ में सरों की संख्या भी पर्याप्त है। केवल गिरिगण क्षेत्र में 17 सर हैं। जिन में चन्दन सर, नन्दन सर, कतूरी सर, भागसर, कटोरियासर, गुमसर, पदयारन सर, दयासर, सुखसर, समोटसर, अकालदर्शीसर, कोकरसर, नील सर, डिंगसर, चामरसर तथा कामसर आदि उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त मनसर और रामकुंड सांस्कृतिक केन्द्र हैं। राजौरी और पुंछ में कूप नहीं के बराबर हैं। किन्तु बावलियों की संख्या भी अधिक नहीं है। शिवालिक क्षेत्र में जो बावली स्थापत्य हमें अन्य क्षेत्रों में मिलता है, वह इस क्षेत्र में कालाकोट तक ही द्रष्टव्य है। कुछ बावलियाँ थन्ना मंडी क्षेत्र में भी उपलब्ध हैं। कई बावलियाँ लावारिस सी पड़ी हैं और कई अति जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं।

इस क्षेत्र में जो बावलियाँ उपलब्ध हैं, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

सुन्दरबनी की बावली

यह बावली सुन्दरबनी उपनगर के निकट अवस्थित है। सुन्दरबनी जम्मू के पश्चिम में 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह बावली अति प्राचीन लगती है। इसके शिलाखंड घिस गए हैं। इस का स्थापत्य पहाड़ी शैली में है। इस की अट्टारिकाओं में संस्थापित देव मूर्तियाँ भी देखने में पुरानी लगती हैं।

इस बावली से सम्बन्धित कई दन्त कथाएं इस क्षेत्र में प्रचलित है। एक दन्त कथा के अनुसार इस बावली का निर्माण 10वीं सदी में शाकल कोट (स्यालकोट) के राजा साल वाहन ने अपनी पत्नी सुन्दरां रानी के नाम से करवाया।

दूसरी दन्त कथा के अनुसार भजवाल राज्य के एक अधिकारी 'सुन्दर' ने इस बावली का निर्माण लोक कल्याण की भावना से करवाया। भजवाल एक छोटा सा राज्य था जिस की राजधानी सुन्दरबनी के निकट 'नगर' में थी। सुन्दर इसी गाँव का था। उस का समय बालक राम बराल के अनुसार 18वीं सदी था। सुन्दर ने इस बावली के साथ ही एक बनी (बाग) का भी विकास किया और इसी कारण इस स्थान का नाम सुन्दरबनी प्रचलन में आया।

सन 1947 ई. में भारत के विभाजन के बाद बहुत से शरणार्थी कोटली, मीरपुर और भिम्बर से इस क्षेत्र की ओर आए तो उन्हें इसी बावली के निकट ठहराया गया। धीरे-धीरे यहाँ एक उपनगर विकसित हुआ जिसे 'सुन्दरबनी' कहा जाने लगा।

इस नगर में इस बावली के पुरावशेष आज भी बिखरे पड़े हैं। स्थानीय लोग इस बावली को एक लोकतीर्थ के रूप में मान्यता देते हैं। वे पर्व और त्योहारों पर इस बावली में स्नान करने भी आते हैं। कभी वैसाखी का मेला भी यहाँ आयोजित होता था किन्तु अब यहाँ सूनेपन का आभास होता है।

बाजी की बावली

यह बावली तहसील सुन्दरबनी के अंतर्गत लौहारकोट नामक स्थान में अवस्थित है। प्रस्तर खंडों से निर्मित यह बावली शीतल जल के लिए प्रसिद्ध थी किन्तु बाद में स्थानीय लोगों ने इस बावली का जल इसलिए पीना बंद किया क्योंकि यह अभिशप्त है।

इस का कारण यह था कि इस बावली में चरगाल ब्राह्मण जाति की एक महिला ने अपने बच्चे के साथ आत्महत्या की थी। चरगाल जाति की यह महिला लुहारों के घरों में पंडितायन की काम करती थी।

इस बावली में माँ और पुत्र की मूर्तियों के अतिरिक्त और भी कई लोक देवी-देवताओं के मौहरे (मूर्तियाँ) संस्थापित हैं। स्थानीय लोग इस बावली को एक लोक तीर्थ के रूप में मान्यता देते हैं और दाती की पूजा-अर्चना इस उद्देश्य से करते हैं कि उस की प्रेतात्मा गाँव वासियों को कोई कष्ट न दे और शाँत रहे।

संडला वाली बावली

यह बावली भी तहसील सुन्दरबनी में ही स्थित है। इस बावली का सम्बन्ध भी चरगाल जाति की बुआ दाती चन्नु से है। कहा जाता है कि इस बावली के जल से बुआ चन्नु के शव को दाह करने से पहले नहलाया गया था। वैसे बुआ दाती की देहरी डगेर गाँव में है। चरगाल जाति के ब्राह्मण इस बावली को पावन मानते हैं और इस के जल का उपयोग देवी-आराधना के लिए करते हैं।

कौआं की बावलियाँ

ये बावलियाँ तहसील कालाकोट के अंतर्गत कौआं गाँव में अवस्थित हैं। जो पर्यटक इन बावलियों को देखने जाते हैं वे जम्मू-राजौरी राष्ट्रीय मार्ग पर स्थित राजल मोड़ पर उतरते हैं। राजल से यह गाँव दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इन बावलियों तक पहुँचने के लिए वाहन सेवा उपलब्ध है।

कौआं में तीन बावलियाँ है जो देखने में प्राचीन लगती हैं। इन बावलियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

बावली-एक

यह बावली उतरोन्मुख है। इस बावली का निर्माण स्थानीय शिलाखंडों से किया गया है। शिलाखंड देखने में प्राचीन लगते हैं। इन पर हल्का तक्षण कार्य हुआ है। इस बावली की अट्टारिकाएँ मूर्तियों से सुसज्जित हैं। ये मूर्तियाँ पत्थर की शिलाओं को उकेर कर बनाई गई हैं। इन मूर्तियों का अनुशीलन करने से लगता है कि ये स्थानीय सामंतों, लोक देवी देवताओं तथा लोक नायकों की रही होंगी। कुछ मूर्तियाँ अब विकृत भी हैं।

इन मूर्तियों को जिन शिल्पकारों ने तराशा है वे स्थानीय लगते हैं। इन में सूक्ष्मता एवं कलात्मकता का अभाव है। स्थानीय विद्वान डा. सुदेश कुमार के अनुसार इन बावलियों को स्वच्छ और निर्मल रखने के लिए इन पर टीन का शैड डाला गया है। इस का लाभ यह पहुँचा है कि वृक्षों के पते अब बावली में नहीं गिरते हैं। यह बावली अनुमानत: आठ मीटर क्षेत्र में परिव्याप्त है। इस बावली का जल स्रोत बावली के नीचे है।

बावली-दो

यह बावली भी कालाकोट के कौआ गाँव में स्थित है। यह पहली बावली से कुछ नीचे है। पूर्वोन्मुख यह बावली वर्गाकार है। इस की प्रत्येक भुजा सवा मीटर के लगभग है। इस में जड़ित शिलाखंडों का अनुशीलन करने से लगता है कि यह प्राचीन बावली है। इस बावली की पीठिका में जो पत्थर की मूर्तियाँ सुसज्जित हैं वे स्थानीय प्रस्तर मूर्ति कला का उत्कृष्ट रूप है। इस बावली की छत पर भी टीन डाली गई है। इस से इस बावली की जल स्वच्छ रहता है।

बावली-तीन

यह बावली वास्तु-विन्यास की दृष्टि से दूसरी बावली की ही अनुकृति लगती है। यह भी एक वर्गाकार बावली है। इस बावली का

जल स्रोत बावली के भीतर है, अतः यह सारा वर्ष जल से लबालब भरी रहती है। बावली के जल को स्वच्छ और निर्मल बनाये रखने के लिए इस के ऊपर टीन का शैड डाला गया है। इस बावली का जल अजीर्ण-रोग को दूर करता है, अतः स्थानीय लोग घरों में इस बावली के जल का उपयोग करते हैं। गाँव निवासी इन तीनों बावलियों की सफाई का पूरा ध्यान रखते हैं।

तता पानी की बावलियाँ

तता पानी राजौरी जनपद के अंतर्गत तहसील कालाकोट का एक गाँव है। यह गाँव जम्मू के पश्चिम में अनुमानतः 140 कि.मी. और कालाकोट से 16 कि.मी. दूर है। तता पानी गाँव तक वाहन सेवा उपलब्ध है।

इस पर्वतीय गाँव में गर्म पानी की बावलियाँ हैं जिन में सर्दियों में स्नान करने दूर-दूर से लोग आते हैं। इनमें एक बड़ी बावली है और दूसरी छोटी बावली है।

बड़ी बावली

यह बावली अनुमानतः 6 मीटर लम्बी और 5 मीटर चौड़ी है। इस बावली के मध्य में एक दीवार खड़ी की गई है। दीवार के एक भाग में पुरुष और दूसरे भाग में महिलाएँ स्नान करती हैं। यह बावली तीन ओर से दीवारगिर से आवेष्टित है। इस के पश्चिमी भाग में एक ऊँची अट्टारिका है। इस बावली में जिन शिलाखंडों का प्रयोग किया गया है, वे इस क्षेत्र में अब उपलब्ध नहीं हैं। लगता है कि ये शिलाखंड अति प्राचीन हैं, अतः यह कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही स्थानीय लोगों को इन बावलियों का परिज्ञान था।

इन बावलियों के जल में औषधि जैसे गुण हैं। प्रायः त्वचा रोगी, गठिया तथा जोड़ों के रोग से पीड़ित रोगी इन बावलियों में स्नानार्थ आते हैं। वे दिन में तीन बार इन बावलियों में लगातार एक सप्ताह स्नान करते हैं और ठीक हो कर जाते हैं। सर्दियों में इन बावलियों में मेला जैसा लग जाता है।

इस बावली के निकट दूसरी बावली भी है। यह आकार में छोटी है। इस बावली में विलक्षणता यह है कि इसके एक कोने से गर्म तथा दूसरे कोने से ठंडा पानी निकलता है। इस बावली में स्नान करना मना है। तता पानी गाँव में यात्रियों के ठहरने के लिए सरकारी और गैर सरकारी विश्रामालय बने हैं जिन में यात्री सुविधा से रह सकते हैं। यहाँ एक छोटा बाजार भी है जिसमें जीवनोपयोगी वस्तुएँ उपलब्ध हैं।

बरनोटी की बावलियाँ

बरनोटी राजौरी जनपद की तहसील नौशहरा के अंतर्गत एक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक क्षेत्र है। इस क्षेत्र में कई मंदिर और धार्मिक स्थल हैं। इन धार्मिक स्थलों के आसपास कई बावलियाँ हैं। इन बावलियों के साथ लोक आस्था जुड़ी हुई है।

श्री ओम प्रकाश सेवानिवृत्त कृषि अधिकारी के अनुसार यह बावलियाँ पांडव-काल की हैं। कहा जाता है कि अपने बनवास-काल में घूमते-फिरते पांडव जब इस क्षेत्र में आए तो उन्होंने समय व्यतीत करने के लिए इन बावलियों का निर्माण किया।

एक अन्य मत यह भी है कि इन बावलियों का निर्माण राजौरी के पाल वंशीय राजाओं ने जन कल्याण के लिए अपने शासन काल में करवाया। पाल पांडव वंशी थे, अतः इन बावलियों को पांडवों की बावलियाँ भी कहा जाता है।

राजौरी में पालवंश का शासन दसवीं सदी से लेकर बारहवीं सदी तक माना जाता है। अतः कहा जा सकता है कि ये बावलियाँ एक हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी हैं। बरनोटी में दो बावलियाँ द्रष्टव्य हैं। एक को बड्डी बाँ और दूसरी को छोटी बाँ कहते हैं।

इन बावलियों का समय-समय पर पुर्नोद्धार होता रहा, अतः इन के वास्तु-शिल्प में भी बदलाव आता रहा। मूल रूप में इन बावलियों का वास्तु विन्यास शिवालिक की बावलियों से मिलता जुलता है। इन बावलियों के जो शिलाखंड हैं वे तक्षित हैं। इन की अट्टारिकाएँ अलंकृत हैं। इन के ललाट मुख्य पर प्रायः नाग देवता की मूर्ति जड़ित

है। ये बावलियाँ भी देव मूर्तियों से सुसज्जित हैं।

राजौरी की बावलियाँ

राजौरी जनपद में जलस्रोत के मुख्य साधन प्राकृतिक चश्में हैं। इन चश्मों के जल को जब पत्थर की छोटी-छोटी तक्षित नालियों से नीचे गिराया जाता है तो इन का परिदृश्य अति सुन्दर और लुभावना लगता है। ऐसे चश्मों को स्थानीय भाषा में 'नाड़ू' कहा जाता है। राजौरी जनपद में गाँव-गाँव में सैंकड़ों नाड़ू हैं जिन के मुख भाग तक्षित हैं।

राजौरी जनपद में शिवालिक क्षेत्र में निर्मित बावलियों का वास्तु विन्यास भिन्न है। इन जनपद में उपलब्ध बावलियों की अट्टारिकाएँ प्राय: लोक देवी-देवताओं की मूर्तियों से शून्य हैं। इन में प्रस्तर तक्षण कला का वह समुन्नत रूप दिखाई नहीं देता जो शिवालिक क्षेत्र में है। शिवालिक क्षेत्र की बावलियाँ प्रथम दृष्टि में ही लोक संस्कृति का केन्द्र दिखाई देती हैं। ये बावलियाँ वनस्थलियों के मध्य में बनी हैं। यहाँ प्राय: यज्ञ-हवन तथा जातर-उत्सवों का आयोजन होता रहता है। किन्तु राजौरी में अब कहीं-कहीं ही ऐसे आयोजन होते हैं। वहाँ धीरे-धीरे प्राचीन परम्पराएँ घिसने लगी हैं।

राजौरी जनपद में केवल सुन्दरबनी, कालाकोट और नौशहरा की तहसीलें ही ऐसी हैं यहाँ बावलियों का अस्तित्व अब भी बना हुआ है। इन की शैली शिवालिक क्षेत्र की बावलियों का अनुसरण करती प्रतीत होती हैं। इस क्षेत्र की बावलियों की अट्टारिकाओं में देव मूर्तियाँ अब भी द्रष्टव्य हैं। राजौरी की मुख्य बावलियाँ निम्न हैं :

लिरन वाली बावली

यह बावली राजौरी की प्रसिद्ध बावली है। बताया जाता है कि यह इस क्षेत्र की प्राचीन बावली है। यह बावली मार्ग के निकट स्थित है, अत: इस का निर्माण किसी धनाढ्य व्यक्ति अथवा सामंत ने लोक-कल्याण की भावना से किया। इस बावली का जल बताते हैं कि उदर सम्बन्धी रोगों के निवारणार्थ बहुत ही उपयोगी है, अत: स्थानीय लोग इस बावली के जल का उपयोग घरों में आज भी करते हैं। बावली

की शिलाओं का अवलोकन करने से लगता है कि बावली प्राचीन है। इस बावली की शिलाओं पर जो हल्का तक्षण कार्य हुआ है उससे लगता है कि स्थानीय शिल्पकार अपने क्षेत्र में पूर्ण दक्ष नहीं थे। इस बावली का उल्लेख स्थानीय लेखकों ने किया है अतः लगता है यह बावली अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध रही है।

लाह वाली बावली

यह बावली बताया जाता है कि राजौरी जनपद के प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपनगर थन्ना मंडी में सड़क मार्ग के निकट स्थित है। यह भी अति प्राचीन बावली है। बताते हैं कि जब मुगलों के काफिले थन्ना मंडी से कश्मीर की ओर प्रस्थान करते तो वे भी इस बावली के जल का उपयोग करते थे। इस बावली के इर्द-गिर्द कई ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल हैं। मुगलों की सराय और शहादरा शरीफ जैसे स्थल देखने जो पर्यटक थन्ना मंडी आते हैं, वे इस बावली का दिग्दर्शन भी करते हैं।

लोक परम्परा के अनुसार यह बावली नाग-कालीन है। इस बावली में प्रायः तैरती हुई मच्छलियों को देखा जा सकता है। किन्तु इस बावली से मच्छलियाँ पकड़ना वर्जित है। किन्तु बावली की एक दीवार किसी ने इस उद्देश्य से तोड़ दी है कि उछलते बावली के जल से जो मच्छलियाँ बाहर गिरें उन्हें पकाने और खाने के लिए उठा लिया जाए।

डा. भारत भूषण के अनुसार जिन दिनों वे सरकारी डिग्री कालेज थन्ना मंडी में प्राचार्य थे तो वे अपने मित्रों के साथ इस बावली को भी देखने गए थे। तब उन्हें भी लगा था कि स्थानीय लोगों की आस्था इस बावली के साथ आज भी जुड़ी हुई है। नाग मत्स्य पूजक थे, अतः यह माना जा सकता है कि बावली किसी न किसी नाग देवता के नाम समर्पित रही होगी। राजौरी के बुद्दल क्षेत्र में भी प्राचीन बावलियों के अवशेष द्रष्टव्य हैं। बताया जाता है कि वे बावलियाँ सामंत काल की हैं। पुंछ क्षेत्र में भी कहीं-कहीं बावलियों के अवशेष द्रष्टव्य

हैं। उन पर श्री खुशदेव मैंनी की पुस्तकों में सदंर्भ मिलते हैं।

मीनियाँ की बावली

यह बावली राजौरी जनपद के अंतर्ग तरयाठ क्षेत्र में अवस्थित है। इस बावली के ललाट मुख में जो नाग देवता की मूर्ति जड़ित है, वह देखने में अति आकर्षक और कलात्मक है।

इस बावली का अवलोकन करने से लगता है कि यह प्राचीन बावली है। वास्तु विन्यास की दृष्टि से यह अर्द्ध पहाड़ी शैली में है।

जन श्रुति है कि इस बावली का निर्माण स्थानीय मीनिया नामक एक व्यक्ति ने लोक कल्याण की भावना से किया है।

देव नगरी की बावली

यह बावली हन्जाना गाँव में अवस्थित है। बताया जाता है कि यह बावली पांडव कालीन है। इस में जड़ित प्रस्तर शिलाएँ प्राचीन लगती हैं। लोक परम्परा के अनुसार देव नगरी एक प्राचीन लोक तीर्थ है।

जावा की बावली

यह बावली नौशहरा के पूर्व में राजला गाँव के दक्षिण में वहाँ से दो कि.मी. दूर है। इस बावली के निकट मंदिर और घने वृक्षों की वनस्थली है। लोक परम्परा इसे पांडव कालीन मानती है।

इस बावलियों का शिल्प विन्यास बरनोटी की बावलियों से मिलता जुलता है। श्री ओम प्रकाश (कृषि अधिकारी) के अनुसार इन बावलियों का इस क्षेत्र में सांस्कृतिक दृष्टि से अत्याधिक महत्व है।

सुथरां वाली बावली

यह पुंछ की प्रसिद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक बावली है। इस बावली के निकट आज भी कई धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

सदर्भ ग्रंथ

ग्रंथ	लेखक
1. फोक आर्ट ऑफ डुग्गर - भाग एक	डा. अशोक जेरथ
2. फोक आर्ट ऑफ डुग्गर - भाग दो	डा. अशोक जेरथ
3. बिलावर : इतिहास और संस्कृति	शिव दोवलिया
4. बसोहली दर्शन	शिव दोवलिया
5. हमारा साहित्य अंक 2003	जे.के. अकादमी आफ आर्ट कल्चर एण्ड लैंग्वोजीज
6. डुग्गर के मंदिर	शिव निर्मोही
7. डुग्गर के गुफा मंदिर	शिव निर्मोही
8. पंचैरी : समाज और संस्कृति	शिव निर्मोही
9. जम्मू के धार्मिक स्मारक	केवल कृष्ण शाकिर
10. सुद्ध महादेव	अयोध्या नाथ केरणी
11. सम्भाल उस कल्लै दी	विद्या रत्न खजूरिया
12. बावा जितमल बुआ कौड़ी	डा. ओम गोस्वामी
13. वासुकि पुराण	डा. ओम गोस्वामी
14. डुग्गर का सांस्कृतिक इतिहास	सम्पादक अशोक गुप्ता
15. मोक्ष दायिनी गुप्त गंगा : पुरमंडल उत्तर वाहिनी	सम्पादक डा. नीलम सरीन
16. वन्दरालता दर्पण	ओम प्रकाश जन्द्रयाड़ी
17. डुग्गर का इतिहास	शिव निर्मोही
18. जम्मू-दर्शन	केवल कृष्ण 'शाकिर'
19. गुढ़ा सलाथिया दा इतिहास	पवित्र सिंह सलाथिया
20. डुग्गर तरंगिणी	मंगलदास डोगरा
21. भद्रवाह	डा. प्रियतम कृष्ण कौल
22. टुरिस्ट अट्रैक्शन इन किश्तवाड़	डी.सी. शर्मा
23. साढ़ा साहित्य 2008	सम्पादक वृज मोहन
24. डुग्गर के देव स्थान	शिव निर्मोही
25. किश्तवाड़ दर्पण	केवल कृष्ण शर्मा
26. राजदर्शनी	गणेशदास बटैहड़ा
27. जसरोटा	मनसा राम चंचल
28. डुग्गर का स्वर्ग : बनी	ओंकार पाधा
29. पुंछ	खुश देव 'मैनी'
30. खिता-ए-कोशार	सैयदुल्ला शाद फरीदाबादी
31. तारीख डोगरा देश	नृसिंह दास नगगिस
32. डुग्गर की लोकगाथाएँ	शिव निर्मोही
33. डोगरी लोक कथां	सम्पादक ओम गोस्वामी
34. तारीख-ए-राजगान जम्मू व कश्मीर	काह्न सिंह बलोरिया
35. वासुकि पुराण	डा. प्रियतम कृष्ण 'कौल'
36. ए शार्ट हिस्टरी आफ जम्मू किंगडम	डा. सुखदेव सिंह चाड़क
37. भीमू (उपन्यास)	देशबन्धु डोगरा 'नूतन'
38. दस लेख	यशपाल 'निर्मल'
39. लोक लेखै	ध्यान सिंह
40. डुग्गर दे लोक मंत्र	खजूर सिंह
41. डुग्गर के सर	शिव निर्मोही
42. डुग्गर के तालाब	शिव निर्मोही
43. डुग्गर के लोक देवता	शिव निर्मोही
44. डुग्गर के देव स्थान	शिव निर्मोही
45. डुग्गर की संस्कृति	शिव निर्मोही
	शिव निर्मोही

लेखक परिचय

नामः शिवदत

लेखकीय नामः- शिव निर्मोही

माता-पिता का नामः आसो देवी- सावनमल जन्म

तिथिः- 19-04-1937

जन्म स्थानः- पैंथल (कटड़ा- वै[illegible] देवी)

व्यवसायः अध्यापन

रचनाएँ:-

1. डुग्गर की लोक गाथाएँ (पुरस्कृत)
2. डुग्गर का लोक साहित्य (पुरस्कृत)
3. डुग्गर की संस्कृति (पुरस्कृत)
4. पाडर लोक और संस्कृति (पुरस्कृत)
5. किश्तवाड़ संस्कृति और परम्परा
6. डुग्गर का भाषायी परिचय
7. डुग्गर के लोक देवता
8. डुग्गर के अमर सेनानी
9. डुग्गर के देवस्थान
10. डुग्गर की दन्त कथाएँ
11. डुग्गर का इतिहास
12. डुग्गर के दुर्ग
13. डुग्गर के गुफा मंदिर
14. डुग्गर के मंदिर
15. डुग्गर के लोक गीत
16. डुग्गर के दरवेश
17. डोगरा गाँव- पैं[illegible]
18. डुग्गर के नग[illegible]
19. डुग्गर की ऐतिहासिक नारियाँ
20. डुग्गर में बुद्धमत
21. डुग्गर के निम्बार्क संत
22. डुग्गर की नदियाँ
23. दाता रणपत की अमर कथा
24. कश्मीर की कहानी
25. डुग्गर की जातियाँ
26. स्वामी नित्यानन्द
27. जीवन चक्र (डोगरी)
28. जातराचक्र (डोगरी)
29. पंचैरीः समाज और संस्कृति
30. डुग्गर के राज महल
31. डुग्गर के तालाब
32. डुग्गर के सर
33. डुग्गर की समादिया
34. डुग्गर के शहीदी स्मारक
35. डुग्गर की परा-विद्या

₹ 350/-

अक्षय प्रकाशन

अंसारी रोड, नई दिल्ली।